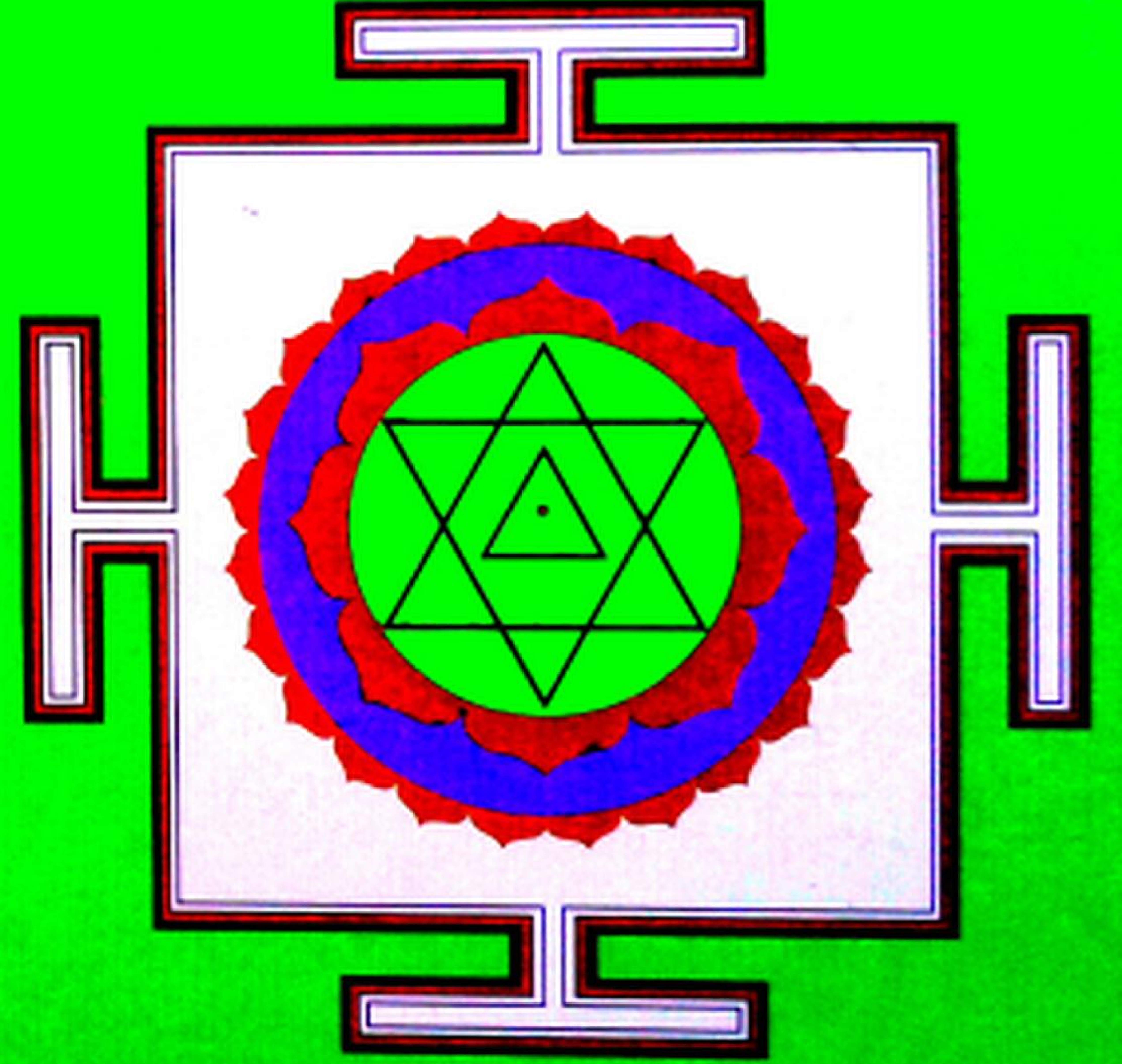
ॐ

# श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः

संकलनकर्ता

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती



ॐ

# श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः

संकलनकर्ता

## स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

**सत्यं साधना कुटीर**

**कैलास गेट, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती**

**तहसील-ऋषिकेश, जिलाः टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड**

**चलदूरभाष्: 9557130251**

ईपत्रः swsdsr@gmail.com Web: www.satyamsadhana.org

ग्रन्थनामः-दुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः
प्रकाशक :- **श्री सत्यं साधना कुटीर समिति**, ऋषीकेश.


प्रथम संस्करण : शनिवार, 1 अक्टूबर 2016, आश्विन शुक्लपक्ष, प्रतिपदा संवत् 2073.

प्रतियां : 500 (पांचसौ)

प्रधान सम्पादक : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती
सम्पादक मण्डलः स्वामी सर्वेशानन्द सरस्वती, पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल और चौ. विजयपाल सिंहजी.
अक्षर संयोजन : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती
पुस्तक प्राप्ति स्थान-
**श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,**
कैलास गेट, डाकः मुनि की रेती, तहसीलः ऋषिकेश, जिलाः टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) 249137.
दूरभाष संख्याः- 91-9557130251, ईपत्रः swsdsr@gmail.com Web: www.satyamsadhana.org

सहयोग राशि : 250/= मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश

# प्रस्तावना

मानवमात्र के इहलोक व परलोक के सुखप्राप्ति और जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्षप्राप्ति हेतु ऋषिमुनियों ने निष्कामकर्मयोग और ज्ञानयोग के बीच में पंचदेव उपासना रूपी निष्कामभक्तियोग को रखा है। वैदिक सनातन धर्म में पंचमहाभूतों (पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के अधिष्ठात्री देवताओं को पंचदेव कहा है - गणेश, विष्णु, सूर्य, शक्ति और शिव। प्रस्तुत ग्रन्थ शक्ति को प्रधान देवता, शेष चार को अधिदेवता और अन्यों को प्रत्यधिदेवता मानकर पूजा पाठ व उपासना करनेवाले शाक्त संप्रदाय के अनुसार है। पूर्व में मुद्रित शिवपूजापद्धतिप्रकाशः, पूर्णिका सहित श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः और वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः को पढ़कर पाठकों, जिज्ञासुओं, कर्मकाण्डी ब्राह्मणों एवं उपासकों ने दुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः, सप्तशतीपाठविधिः और दुर्गासप्तशतीहोमविधिः को भी प्रकाशित करने केलिये निवेदन किये। लेकिन गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश द्वारा मुद्रित 'श्रीदुर्गासप्तशती' में संकलित पाठविधिः निर्दोष व पर्याप्त है। इसलिये हमने 'सप्तशतीपाठविधिः' को मुद्रित न करने का निर्णय लिया है। शेष दोनों ग्रन्थों को यानि 'दुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः' और 'दुर्गासप्तशतीहोमविधिः' को क्रमशः मुद्रित करने का निर्णय लिया है। अतः पूर्वोक्त उन सब की प्रेरणा से सर्व प्रथम इस ग्रन्थ 'दुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः' का संकलन करने केलिये प्रयास करने लगा तो पूर्ववत् दक्षिण व उत्तर भारत के अनेकों पण्डितों ने सहयोग दिये हैं। विशेषतः पं. ज्योतिप्रसाद उनियालजी ने तो संशोधन कार्य में भी पूर्ण सहयोग दिये हैं जो कि अविस्मरणीय ही नहीं अपितु अत्यन्त श्लाघनीय है। इसकी सफलता में अनेक प्रकार से सहयोग देनेवाले सभी का मैं अत्यन्त आभार व्यक्त करता हूँ। पूर्ववत् इस ग्रन्थ से सभी को मार्गदर्शन मिले और सभी लाभान्वित हो ऐसी माँ भगवती से प्रार्थना करते हुये माँ के चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

सभी की आत्मा

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

# विषयानुक्रमणिका

ॐ

।। मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम् ।।

# श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः

## उपक्रमप्रकरणम् भाग 1

**1. कर्म/उपासना के संबंध में कुछ जानने योग्य विषय :-**

**1.1-1** पूजा - पाठ आदि शुभ कर्म करने केलिये व्यक्ति को ब्रह्ममुहूर्त में ही उठना चाहिये। जैसे कि मनुस्मृति में कहा है -

**'ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्ध्येत धर्मार्थावनुचिन्तयेत्। कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमेव च।।'**

अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ईश्वर, धर्म, अर्थ और शरीर के क्लेशों व उनके मूल कारणों का चिन्तन करें (वेदतत्त्वार्थ = ईश्वर)। अतः **यह** जानना जरूरी है कि ब्रह्ममुहूर्त किस समय को कहा जाता है।

**1.1-2 अतः ब्रह्ममुहूर्त का निर्णय** जानें - ब्रह्ममुहूर्त का निर्णय विष्णुपुराण में दिया है -

**'रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः। स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने।।**
**पंचपंच उषःकालः सप्तपंचारुणोदयः। अष्टपंच भवेत्प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः।।'**

अर्थात् रात्री के अन्तिम याम (अन्तिम 3 घण्टा) के तीसरे मुहूर्त को ब्रह्म मुहूर्त समझें, वह समय उठने केलिये विहित है। यानि 6 बजे को सूर्यास्त माने तो 6 से 9 प्रथम याम, 9 से 12 द्वितीय याम, 12 से 3 तृतीय याम और 3 से 6 अन्तिम याम माना जायेगा। अतः चतुर्थ याम (3-6) में 45 मिनट का मुहूर्त मानकर तीसरा मुहूर्त होगा 4.30 बजे से 5.15 बजे तक का समय - यही ब्रह्म मुहूर्त है। उसके बाद के 25 कला यानि 10 मिनट (5.15-5.25) उषाकाल है, तदनन्तर 35 कला यानि 14 मिनट (5.25-5.39) अरुणोदय काल है, उसके बाद

के 40 कला यानि 16 मिनट (5.39–5.55) प्रातः काल है, तत्पश्चात्काल (5.55–6.00) को सूर्योदय काल कहा गया है।

**1.1–3** रत्नावली में **ब्रह्ममुहूर्त में न उठने के दोष** के बारे में कहा है –

**'ब्राह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी। तां करोति द्विजो मोहात्पादकृच्छ्रेण शुध्यति।।**

अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त में जो निद्रा है वह पुण्य का क्षय करनेवाली है, लेकिन मोहवशात् जो द्विज उस (ब्रह्म मुहूर्त) में सोता है वह पादकृच्छ्र व्रत (1 पाद यानि 1 पाव, अर्थात् सूर्यास्त तक 1 पाव जल पीकर ही रहना है) से ही शुद्ध होता है।

**1.2 प्रातःकाले दर्शनीयादर्शनीयपदार्थाः** – आचारप्रदीप में कहा है –

**'श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितं तथा। प्रातरुत्थाय यः पशेदापद्भ्यः स प्रमुच्यते।।'**

अर्थात् प्रातः जागने के बाद श्रोत्रिय ब्राह्मण, सौभाग्यवती स्त्री, वैदिक अग्नि और आहिताग्नि त्रैवर्णिक का दर्शन करें उससे वह सकल आपदाओं से मुक्त होता है। अन्यग्रन्थ में भी कहा है –

**'भारद्वाजमयूराणां चाषस्य नकुलस्य च। प्रभाते दर्शनं श्रेष्ठं वामपृष्ठे विशेषतः।।'**

अर्थात् प्रातःकाल अपने बार्यी ओर से निकलता हुआ चक्रवाक (चातक) पक्षी, मयूर, नीलकण्ठ पक्षी और नेवला को देखें तो वह अत्यन्त शुभ है। नागदेव ने भी कहा है –

**'पापिष्ठं दुर्भगं चान्धं नग्नमुत्कृत्तनासिकम्। प्रातरुत्थाय यः पश्येत्तत्कलेरुपलक्षणम्।।**
**भल्लातकं★ कर्षफलं काकमार्जारमूशकम्। क्लीबं च गर्दभं चैव न पश्येत्प्रातरेव हि।।'**

अर्थात् प्रातः उठकर जो व्यक्ति पापी, दुर्भग, अन्धा, नग्न अथवा कोढ़ी को देखें तो समझें की वह दर्शन लड़ाई का सूचक है। प्रातः उठकर भिलावे का पौधा (★ भल्लाटकं – ऐसा भी पाठभेद है जिसका अर्थ है गंजा।), खाई में उत्पन्न जंगली कड़वा (जहरीला)फल,

कौवा, बिल्ली, चूहा, नपुंसक और गदहा को नहीं देखना चाहिये।

**1.3-1 शौचकरणे दिशानिर्णयः** - यमस्मृति में कहा है -

**'प्रत्यङ्मुखस्तु पूर्वाह्णेऽपराह्णे प्राङ्मुखस्तथा। उदङ्मुखस्तु मध्याह्ने निशायां दक्षिणामुखः।।'**

अर्थात् पूर्वाह्ण में (सूर्योदय से 10 बजे तक) पश्चिमाभिमुख, मध्याह्न में (10 बजे से 2 बजे तक) उत्तराभिमुख, अपराह्ण में (2 बजे से सूर्यास्त तक) पूर्वाभिमुख और रात्रि में दक्षिणाभिमुख बैठकर शौच कर्म करें।

**1.3-2 शौचकाले यज्ञोपवीत धारणनिर्णयः** - आह्निककारिका में कहा है -

**'मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे वामकर्णके ★। उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत्।।'**

अर्थात् मूत्रविसर्जन काल में दाहिने कान पर, मलत्याग काल में बायें कान पर (★ कर्णयोर्द्वयोः - पाठभेद के अनुसार दोनों कानों पर) यज्ञोपवीत को धारण करे और मैथुन काल में उपवीति ही रहे। सायणीय में कहा है -

**'मलमूत्रं त्यजेद्विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्। उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यन्नवं तदा।।'**

अर्थात् जो द्विज यदि कान पर डालना भूलकर मल मूत्र को त्यागता है तो वह उसी समय उस धारित यज्ञोपवीत का विधिवत् उत्सर्जन कर नया यज्ञोपवीत धारण करे।

**1.4 कुल्ला (गण्डूष) कर शुद्ध होना** - आश्वलायन में कहा है -

**'मूत्रे(4) पुरीषे(12) भुक्त्यन्ते(16) रेतःप्रस्रवणे(8) तथा। चतुरष्टद्विषट्द्व्यष्टगण्डूषैः शुद्धिमाप्नुयात्।।'**

अर्थात् मूत्र त्यागने पर 4 बार, मल त्याग करने पर 12 बार, भोजन के बाद 16 बार और स्वप्न दोष होने पर 8 बार कुल्ला करने से ही द्विज शुद्ध होता है।

**1.5 मौनपूर्वक करने योग्य कर्म** – हारीतस्मृति में कहा है –

**'उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने। श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत्।।'**

अर्थात् मल-मूत्र त्याग, मैथुन, स्वप्नदोष, दन्तधावन, श्राद्ध और भोजन काल इन छः कर्मो को करते वक्त मौन आचरण करें।

आङ्गिरसस्मृतिः – **'सन्ध्ययोरुभयोर्जाप्ये भोजने दन्तधावने। पितृकार्ये च दैवे च तथा मूत्रपुरीषयोः।।**

**गुरूणां सन्निधौ दाने योगे चैव विशेषतः। एतेषु मौनमातिष्ठन्स्वर्गं प्राप्नोति मानवः।।'**

अर्थात् जो मनुष्य दोनों सन्ध्यावन्दन काल में तथा जप, भोजन, दन्तधावन, श्राद्ध, देवपूजन, मल–मूत्र त्याग, दान और योगसाधना काल में और गुरु के सान्निध्य में मौन रहता है वह निश्चित ही स्वर्ग को प्राप्त करता है।

**1.6 दन्तधावन विधिः – 1.6–1 दन्तधावन में दिशाज्ञान** –

**'प्राङ्मुखस्य धृतिः सौख्यं शरीरारोग्यमेव च। दक्षिणेन तथा कष्टं पश्चिमेन पराजयः।।**

**उत्तरेण गवां नाशः स्त्रीणां परिजनस्य च। पूर्वोत्तरे तु दिग्भागे सर्वान्कामानवाप्नुयात्।।'**

अर्थात् दन्त शोधन करते समय पूर्वाभिमुख हो तो उसे धृति, सुख और शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है तथा ईशानकोणाभिमुख हो तो समस्त कामनायें पूरी होंगी। यदि दक्षिणाभिमुख हो तो कष्ट, पश्चिमाभिमुख हो तो पराजय, उत्तराभिमुख हो तो गौ आदि धन सहित स्त्री और परिजनों का नाश होता है।

**1.6–2 दन्तमार्जनी** (दातून) **प्रार्थना मन्त्र** –

दातून (टूथब्रश) को हाथ में लिये हुये विश्वामित्रकल्प में बताये गये प्रार्थना मन्त्र का पाठ करे –

**'आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून्वसूनि च। ब्रह्म प्रज्ञां मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते।।'**

अर्थात् हे वनस्पते! तुम मुझे आयु, बल, यश, वर्चस्व, सन्तान, पशु, धन, प्रज्ञा, मेधा और वेद को दो। चकार अनुक्त सकल शुभ के समुच्चय केलिये है।

**1.6-3** दन्तमंजन करते हुये पारस्करगृह्यसूत्र (2.6.17) में कहे गये इस **दन्तधावन मन्त्र** का मानस पाठ करे-

**'अन्नाद्याय व्यूहध्वꣳसोमो राजाऽयमागमत्। स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च।।'**

तत्पश्चात् मुखप्रक्षालन करके गणेश, गौ, सूर्य, तुलसी, नारायण (विष्णु), देवी, शिव, राम, नवग्रह इत्यादि की स्तुति द्वारा उन्हें स्मरण करें।

**1.7 उष्णोदकस्नानविधिः** - यमस्मृति में कहा है -

**'आप एव सदा पूतास्तासां वह्निर्विशोधकः। तस्मात्सर्वेषु कालेषु उष्णाम्भः पावनं स्मृतम्।।'**

अर्थात् यद्यपि जल अपने आप में पवित्र है फिर भी अग्नि उसका शोधक है। इसलिये सभी काल में गरम जल ही पवित्रकारक होने से सालभर गरम जल से ही नहाना चाहिये। मारीचकल्प में कहा है -

**'भूमिष्ठमुद्धृतं वापि शीतमुष्णमथापि वा। गांगं पयः पुनात्येव पापमामरणात्कृतम्।।'**

अर्थात् भूमि (कुंआ) में स्थित अथवा रेहट (पम्प आदि) से उद्धृत जल ठण्डा हो अथवा गरम का आमरण पर्यन्त सेवन करने (स्नानादि में प्रयोग करने) से वह गंगा जल के समान पापों का नाश करता है। अन्यत्र भी कहा है -

**'सरित्सु देवखातेषु तीर्थेषु नदीषु च। क्रियास्नानं समुद्दिष्टं स्नानं तत्रामलाः क्रिया:।।'**

अर्थात् झरने, मन्दिर का कुंआ, तीर्थ और नदी में ही क्रिया (कर्म) और स्नान करने का विधान है। उनमें व उनसे कृत कर्म व स्नान अत्यन्त पवित्र कारक होते हैं। तथा

**'वाप्यां कूपे तडागे वा नद्यां वा चोष्णवारिणा। प्रातःस्नानं सदा कुर्यादुष्णेनैव सदातुरः।।'**

अर्थात् बावड़ी, कुंआ, तालाब, नदी अथवा गरम जल से ही प्रातः स्नान करना चाहिये। आतुर यानि रोगी हो तो सदा गरम जल से ही स्नान करें।

## उपक्रमप्रकरणम् भाग 2

**2.1 अनुष्ठानलक्षणम् :-** जैसे कि स्मृतिसन्दर्भ में कहा है -

**'शास्त्रस्य विहितं कर्म सम्यक्संपादनन्तु यत्। तद्धि ज्ञेयमनुष्ठानं नित्यनैमित्तिककर्मसु।।'**

अर्थात् शास्त्र में प्रतिपादित विधि विधान से काम्य, नित्य अथवा नैमित्तिक कर्म और उपासना करने को अनुष्ठान कहते हैं।

**2.2-1 कालनिर्णयः-** रुद्रयामल में अनुष्ठान आरम्भ करने योग्य **मास** के बारे में कहा है-

**'कार्तिकाश्विनवैशाखमाघेऽथ मार्गशीर्षके। फाल्गुने श्रावणे मन्त्रपुरश्चर्या प्रशस्यते।।'**

अर्थात् वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास में मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करना श्रेष्ठ है।

**पक्ष** के बारे में कालोत्तर नामक ग्रन्थ में कहा है-

**'मुक्तिकामैः कृष्णपक्षे भूतिकामैः सिते सदा।।'**

अर्थात् मुक्ति की कामनावाले साधकों को कृष्णपक्ष में और सब प्रकार के ऐश्वर्य की कामना करने वाले मनुष्य को शुक्ल पक्ष में अनुष्ठान करना चाहिये। **तिथि** के बारे में स्मृतितत्त्वरहस्य में कहा है-

**'पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा। त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता सर्वकामदा।।'**

अर्थात् द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी और पूर्णिमा तिथियों में ही अनुष्ठान आरम्भ करना श्रेयस्कर है।

**वार** के विषय में पुरश्चरणदीपिका में कहा है–

**'मन्त्रारम्भो रवौ शुक्रे बुधे जीवे विशेषतः। शनौ मृत्युः क्षयो भौमे सोमे मध्यफलं स्मृतम्।।'**

अर्थात् विशेष तौर पर कहा जा सकता है कि रविवार, बुधवार, गुरुवार (बृहस्पतिवार) और शुक्रवार मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करने केलिये श्रेष्ठ है। जब कि सोमवार को आरम्भ किया गया कर्म मध्यम फल ही देगा, मंगलवार को आरम्भ किया गया कर्म क्षीण होगा और शनिवार को आरम्भ किया गया कर्म विनाश को प्राप्त होगा। अतः मंगलवार और शनिवार को अनुष्ठान अथवा कोई भी कर्म आरम्भ नहीं करना चाहिये। किन्तु कालसर्पयोगदोष की शान्ति शनिवार को भी आरम्भ कर सकते हैं।

**नक्षत्र** के बारे में तन्त्रसार में कहा है–

**'आर्द्रायां कृत्तिकायां च मन्त्रारम्भः प्रशस्यते।'**

अर्थात् आर्द्रा और कृत्तिका नक्षत्र में मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करना श्रेष्ठ होता है। किन्तु 'पुरश्चरणदीपिका' में कुछ अन्य नक्षत्रों के नाम भी गिनाते हुये कहा गया है कि–

**'अश्विनीरोहिणीस्वातीविशाखाहस्तभेषु च। ज्येष्ठोत्तरात्रयेष्वेव कुर्यान्मन्त्राभिषेचनम्।।'**

अर्थात् अश्विनी, रोहिणी, स्वाति, विशाखा, हस्त, ज्येष्ठ, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रों में ही मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करना चाहिये। उपरोक्त मास, पक्ष, तिथि, वार और नक्षत्र को पंचांग में देखकर उचित मुहूर्त में ही कर्म व उपासना को आरम्भ करना चहिये।

**2.2 नवरात्रपूजन कब-कब करें?**

देवीपुराण (3.24.21) में कहा गया है –

**'चैत्रेऽऽश्विने तथाऽऽषाढे माघे कार्यो महोत्सवः। नवरात्रे महाराज पूजा कार्यो विशेषतः।।'**

तथा देवीभागवत, माहात्म्य (1.31) में भी कहा है -

**'आश्विने मधुमासे वा तपोमासे शुचौ तथा। चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषफलदायकम्।।'**

अर्थात् हे महाराज! चैत्र, आषाढ, आश्विन् और माघ इन चार महिनों के नवरात्रों में यानि शुक्लपक्ष का प्रतिपत्तिथि से नवमीतिथि तक विशेष महोत्सव यानि व्रत आदि के साथ पूजा-पाठ-हवन करना चाहिये। वह विशेष फल दायक होता है।

**2.3 गुरु/आचार्य का लक्षण**:- मन्त्र का अनुष्ठान आदि कोई भी कर्म करना हो अथवा उपासना करनी हो तो किसी न किसी योग्य व दक्ष गुरु अथवा आचार्य के मार्गदर्शन में ही करना चाहिये। अतः गुरु/आचार्य का लक्षण जानना जरूरी है। शारदातिलक (2.141 -144) में गुरु का लक्षण इस प्रकार है-

**'मातृतः पितृतः शुद्धः शुद्धभावो जितेन्द्रियः। सर्वागमानां सारज्ञः सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित्।।**
**परोपकारनिरतो जपपूजादितत्परः। अमोघवचनो शान्तो वेदवेदार्थपारगः।।**
**योगमार्गानुसंधायी देवताहृदयंगमः। इत्यादिगुणसंपन्नो गुरुरागमसंमतः।।'**

अर्थात् मातृकुल और पितृकुल से शुद्ध (यानि संस्कारहीन, बहिष्कृत अथवा वर्णसंकर नहीं हो।), सरल स्वभाव, इन्द्रियजयी, सकल आगमों के रहस्य का ज्ञाता, संपूर्ण शास्त्रों के वास्तविक अर्थ का ज्ञाता, परोपकारी, जप-पूजा आदि कर्म का अनुष्ठाता, अमिथ्यावादी, शान्त चित्त, वेद-वेदार्थ का मर्मज्ञ, योगमार्ग का अनुसंधाता, देवताओं का प्रिय (कर्मकाण्डी) इत्यादि सकल सद्गुणों से संपन्न व्यक्ति ही गुरु/आचार्य के रूप में स्वीकार करने योग्य है। मत्स्यपुराण (265.2-4) में आचार्य का लक्षण इस प्रकार कहा गया है-

'सर्वावयवसंपूर्णो वेदमन्त्रविशारदः। पुराणवेत्ता तत्त्वज्ञो दम्भलोभविवर्जितः।।
कृष्णसारमये देशे उत्पन्नश्च शुभाकृतिः। शौचाचाररतो नित्यं पाखण्डकुलनिःस्पृहः।।
ऊहापोहार्थतत्त्वज्ञो वास्तुशास्त्रविशारदः। आचार्यश्च भवेन्नित्यं सर्वदोषविवर्जितः।।'

अर्थात् विकलांग न हो ऐसा जो वेद के मन्त्रों का ज्ञाता, पुराणों को जानने वाला, तत्त्ववेत्ता, ढोंग और लोभ रहित, भारत देश में जन्म लिया हुआ (यानि म्लेच्छ देश में जन्म नहीं लिया हो), देखने में सुन्दर (सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शुभ लक्षण वाला), नित्य ही शुद्धता-अशुद्धता का विवेक पूर्वक निश्चयकर पवित्रता आदि युक्त सदाचारी, पाखण्डी कुल के लोगों से किसी भी प्रकार के संबंध से रहित, ऊहापोह कर सकल शास्त्रों के रहस्यपूर्ण अर्थ का ज्ञाता, वास्तुशास्त्र का ज्ञाता और सकल दोष रहित व्यक्ति ही आचार्य के रूप में स्वीकार करने योग्य है।

**2.4 जापक का लक्षण**:-जब साधक स्वयं मन्त्र जपते हुये भी किसी अन्य का वरण कर जप कराना चाहता हो अथवा स्वयं एक मन्त्र को जपने में व्यस्त होने के कारण स्वकर्म/उपासना के उपयोगी अन्यमन्त्र का जप दूसरे से कराना चाहता हो अथवा किसी कारणवश स्वयं जप न कर सके अथवा स्वयं को किसी मन्त्र को जपने का अधिकारी न मानता हो तब किसी जापक (जपनेवाले) का वरण कर लेना पड़ता है। अतः जापक का लक्षण जानना जरूरी है, जो कि पुरश्चरणदीपिका में बताया है-

'जापकाश्च द्विजाश्शुद्धाः कुलीना ऋजवस्तथा। स्नानसंध्यारता नित्यं शौचाचारपरायणाः।।
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च वेदशास्त्रार्थकोविदाः। अक्रोधनाः पुराणज्ञाः सततं ब्रह्मचारिणः।।
देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा। इत्यादिगुणसंपन्ना जापका मन्त्रसिद्धिदाः।।'

अर्थात् द्विज, शुद्ध, कुलीन, सरल, नित्य ही त्रिकाल स्नान पूर्वक सन्ध्या आदि कर्म निष्ठ, शुद्ध-अशुद्ध विषयक आचरण युक्त, श्रोत्रिय

[**'जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैः द्विज उच्यते। विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते।।'** अर्थात् मातृ-पितृ कुलों से विशुद्ध ब्राह्मण कुल में जन्म होने से जो ब्राह्मण कहा गया है, गर्भाधान से आरम्भ कर समय समय पर सब संस्कारों से संस्कारित है जो, वह द्विज कहा जाता है और विधि विधान से वेद आदि विद्या को प्राप्त कर लेने पर वह विप्र कहा जाता है। जिस व्यक्ति में ये तीनों ब्राह्मणत्व, द्विजत्व, विप्रत्व का संगम है उसी को श्रोत्रिय कहा जाता है।], सत्य बोलनेवाला, वेद आदि शास्त्रों सहित पुराणों का ज्ञाता, क्रोध न करनेवाला, अखण्ड ब्रह्मचारी, नित्य इष्टदेवता का ध्यान करनेवाला, सदा प्रसन्नचित्त रहनेवाला, इत्यादि सद्‌गुणों से संपन्न जापक ब्राह्मण ही मन्त्र को जपकर यजमान के लिये सर्व फल दिलाने वाला होता है।

**2.5 अनुष्ठान योग्य देश:** शारदातिलक (2.138) में अनुष्ठान योग्य देश के बारे में बताया है कि-

**'पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं गुहा पर्वतमस्तकम्। तीर्थप्रदेशाः सिंधूनां संगमः पावनं वनं।।**
**उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः। देवतायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहं।।**
**साधनेषु प्रशस्यन्ते स्थानान्येतानि मन्त्रिणाम्।।'**

अर्थात् पुण्यक्षेत्र, नदी का तट, गुफा, पर्वत की चोटी पर, तीर्थस्थान, नदियों के संगम स्थान, पवित्र वन, एकान्त (विशेषतः स्त्रियों के आवागमन रहित) बगीचा, बेल के पेड़ के नीचे, पहाड़ की तलहटी, मन्दिर, समुद्र तट और अपना घर - ये मन्त्र के अनुष्ठान यानि कर्म और उपासना के लिये श्रेयस्कर हैं। उस स्थान में पूर्व, उत्तर अथवा ईशान दिशा में कर्म के योग्य स्थान का चयन करें। गोबर आदि से लीप कर पवित्र कर लें। यजमान का मुख किस ओर हो इस विषय में कर्मप्रदीप में निर्णय दिया गया है कि -

**'यत्र दिङ्नियमो न स्याज्जपहोमादिकर्मसु। तिस्रस्तत्र दिशः प्रोक्ता ऐन्द्री सौम्याऽपराजिता।।'**

अर्थात् जिस जप, होम आदि कर्म में दिशा विशेष का नियम विधान नहीं किया गया है उस कर्म को करने केलिये तीन दिशाओं को श्रेष्ठ बताया है - पूर्व, उत्तर और ईशान।

**2.6-1 आसन विषयक विचार**: व्यास स्मृति में कर्म व उपासना केलिये आसन तीन प्रकार के बताये हैं-

**'आसनं त्रिविधं तत्र चाद्यमास्तरणं स्मृतं। देहसाध्यं स्वस्तिकादि देवार्थं तृतीयकम्।।'**

अर्थात् बिछानेवाले (कुशा, रेशम, सूती या ऊन का), शरीर के अंगों को एक विशेष रूप से स्थिर रखना (स्वस्तिक आदि योग आसन) और देवताओं केलिये विशेष आसन। साधक द्वारा बिछाकर बैठने योग्य आसनों के बारे में व्यासस्मृति में ही कहा है-

**'कौशेयं कम्बलं चैव ह्यजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं च आसनं परिकल्पयेत्।।'**

अर्थात् रेशम का बना हुआ वस्त्र, कम्बल, मृग आदि के चर्म, सूत से बना कपड़ा, वल्कल (पेड़ की छाल से बना) अथवा ताड़ के पेड़ के पत्तों से बना आसन श्रेष्ठ होता है।

**2.6-2 आसन के गुणों** के बारे में कहा गया है -

**'कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि। वंशासने व्याधिनाशः कम्बले दुःखमोचनम्।।'**

अर्थात् कृष्णमृग के चर्म के आसन से ज्ञानसिद्धि, बाघ के चर्म के आसन से मोक्ष व ऐश्वर्य, बांस के आसन से व्याधि नाश और कम्बल के आसन से दुःख का नाश होता है।

**'अभिचारे नीलवर्णं रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्।।'**

अर्थात् अभिचार कर्म में काले रंग का आसन, वश्य आदि कर्म में लाल रंग और शान्तिक कर्म में कम्बल का आसन प्रयोग करने को कहा गया है। लेकिन पूर्वोक्त असम्भव हो तो सकल कर्मों में आसन केलिये चित्रकम्बल (रंगबिरंगे कम्बल) का प्रयोग करें।

**'वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः। धरण्यां दुःखसम्भूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रिदारुजे।।**
**तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः। आयसं वर्जयित्वा तु कांस्यसीसकमेव च।।'**

अर्थात् बांस के आसन से (व्याधि नाश होने पर भी) दारिद्र्य, पत्थर के आसन से व्याधि उत्पत्ति, जमीन को ही आसन के रूप में प्रयोग

करने से दु:ख उत्पत्ति, छेद युक्त छाल (सछिद्र वल्कल) के आसन से दौर्भाग्य, घास के आसन से धन और यश की हानि और पत्तों के आसन से चित्त अशान्त होगा। अत: इन आसनों का तथा लोहा, कांस्य व सीसा से बने हुये आसन का प्रयोग न करें।
आचारमयूख में कहा है –

**'दानमाचमनं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढ़पादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्।।'**

अर्थात् प्रौढ़पाद आसन में बैठकर आचमन, दान, होम, भोजन, देव आदि पूजा, पितृतर्पण और स्वाध्याय न करें।
(प्रौढ़पाद आसन का लक्षण आह्निककारिका में कहा है –

**'आसनारूढपादस्तु जानुनोर्वाथ जङ्घयो:। कृतावसक्थिको यश्च प्रौढपाद: स उच्यते।।'**

अर्थात् दाहिने अथवा बायें पैर को घुटने अथवा जंघा पर एक दूसरे पर लाद कर वैठने को प्रौढपाद आसन कहा गया है।) फिर किन आसनों में बैठना श्रेष्ठ है, इस विषय में देवीभागवत में कहा है –

**'पद्मासनं स्वस्तिकं च भद्रं वज्रासनं तथा। वीरासनमिति प्रोक्तं क्रमादासनपंचकम्।।'**

अर्थात् सकल कर्म केलिये पद्मासन, स्वस्तिकासन, भद्रासन, वज्रासन और वीरासन क्रमश: उत्तरोत्तर श्रेष्ठ पांच आसन हैं।
**2.7-1 माला विषयक विचार:** तन्त्रसार में माला के विषय में कहा है कि-

**'रुद्राक्षशंखपद्माक्षपुत्रजीवकमौक्तिकै:, स्फाटिकैर्मणिरत्नैश्च सौवर्णैर्विद्रुमैस्तथा।**
**राजतै: कुशमूलैश्च गृहस्थस्याक्षमालिका।।'**

अर्थात् साधक कर्म और उपासना में मन्त्रों को जपने केलिये रुद्राक्ष, शंख, कमल के दाने, पुत्रजीविका पेड़ का फल, मुक्तामणि, स्फटिकमणि, सोने की मणि, मूंगा की मणि, चांदी की मणि और कुशा की जड़ से बनायी हुयी माला से जप कर सकते हैं। किन्तु गृहस्थ

को गायत्री आदि मन्त्रों के नित्य जप करने केलिये रुद्राक्ष माला का ही उपयोग करना चाहिये। कालिका पुराण में कामना भेद से माला भेद की व्यवस्था इस प्रकार दी गयी है –

**'रुद्राक्षमालिका सूते जपेन स्वमनोरथान्। पद्माक्षैर्विहिता माला शत्रूणां नाशिनी मता।।**
**कुशग्रन्थिमयी माला सर्वपापप्रणाशिनी। पुत्रजीवफलैः क्लृप्ता कुरुते पुत्रसंपदम्।।**
**निर्मिता रूप्यमणिभिर्जपमालेप्सितप्रदा। प्रवालैर्विहिता माला प्रयच्छेद्विपुलं धनम्।।**
**हिरण्मयी विरचिता माला कामान्प्रयच्छति। सर्वैरेभिर्विरचिता माला स्यान्मुक्तये नृणाम्।।'**

अर्थात् सूती धागे से गुंथित रुद्राक्ष माला का उपयोग कर जपने से अपने सकल मनोरथ पूरे होते हैं। पद्माक्षों से निर्मित माला से शत्रुओं का नाश होता है। कुशाग्रन्थियों से निर्मित माला से समस्त पापों का नाश होता है। पुत्रजीविका पेड़ के फलों से निर्मित माला से पुत्र/सन्तान की प्राप्ति होगी। चांदी के दानों से निर्मित माला से वांछित फल प्राप्त होगा। प्रवालों से निर्मित माला से बहुत धन प्राप्त होगा। सोने के दानों से निर्मित माला से कामनायें पूरी होंगी। उक्त सब प्रकार की मणियों से निर्मित माला से मुक्ति मिलेगी (यानि मुक्ति का साधन ब्रह्मज्ञान प्राप्त होगा)।

**2.7-2 माला को किस प्रकार के धागे से किस प्रकार बनाना चाहिये?**

सनत्कुमारसंहिता में इस प्रश्न का जवाब इस प्रकार दिया है–

**'कार्पाससंभवं सूत्रं धर्मकामार्थमोक्षदम्। तच्च विप्रेन्द्रकन्याभिर्निर्मितं च सुशोभनम्।।**
**शुक्लं रक्तं तथा कृष्णं पट्टसूत्रमथापि वा। शान्तिवश्याभिचारेषु मोक्षैश्वर्यजपेषु च।।**
**शुक्लं रक्तं तथा पीतं कृष्णं वर्णेषु च क्रमात्। सर्वेषामेव वर्णानां रक्तं सर्वेप्सितप्रदम्।।**

**त्रिगुणं त्रिगुणीकृत्य ग्रंथयेच्छिल्पशास्त्रतः। एकैकं मातृकावर्णं सतारं प्रजपेन्सुधीः।।**
**मणिमादाय सूत्रेण ग्रन्थयेन्मध्यमध्यतः। ब्रह्मग्रन्थिं विधायेत्थं मेरुं च ग्रन्थिसंयुतम्।।**
**ग्रन्थयित्वा पुरो मालां ततः संस्कारमाचरेत्।।'**

अर्थात् रूई से बनाया हुआ धागा अथवा पट्टसूत्र यानि सन का धागा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (चतुर्विध पुरुषार्थ) प्रदायक है। वह धागा श्रेष्ठ ब्राह्मण की कन्या (अथवा विप्र-ब्राह्मण और इन्द्र-क्षत्रिय की कन्या) द्वारा निर्मित हो तो बहुत अच्छा। वह सफेद, लाल या काले रंग का हो तो श्रेष्ठ होता है। विशेषतः सफेद रंग शान्ति कर्म केलिये, लाल रंग वश्य, अभिचार आदि केलिये, पीला रंग मोक्ष केलिये और काला रंग ऐश्वर्य प्राप्ति केलिये श्रेष्ठ है। सामान्यतः सभी प्रकार की कामनाओं केलिये लाल रंग ही ठीक है। शिल्प शास्त्र में वर्णित प्रक्रिया से त्रिगुणित त्रिगुणित करके गूंथना चाहिये। प्रत्येक मणिका को गूंथते वक्त प्रणव युक्त अकार आदि वर्णों का जप करना चाहिये। धागे से मणि को बीचोबीच ग्रहण कर ब्रह्मगांठ लगाकर गांठ युक्त मेरु को बनायें, तत्पश्चात् माला को संस्कारित करें।

**2.7-3 माला में मणिकाओं की संख्या कितनी होनी चाहिये?**

गौतमीय संहिता में कामना भेद से जपमालामणिसंख्या के बारे में इस प्रकार कहा है-

**'पंचविंशतिभिर्मोक्षं त्रिंशद्भिर्धनसिद्धये। सर्वार्थाः सप्तविंशत्या पंचदश्यभिचारिके।।**
**पंचाशद्भिः काम्यसिद्धिः स्यात्तथा चतुरुत्तरैः। अष्टोत्तरशतैः सर्वा सिद्धिरुक्ता मनीषिभिः।।'**

अर्थात् विद्वानों ने बताया है कि 25 मणिकी मोक्ष केलिये, 30 मणिकी धन प्राप्ति केलिये, 27 मणिकी सकल फल प्राप्ति केलिये, 15 मणिकी अभिचार कर्म केलिये, 54 मणिकी काम्य सिद्धि के लिये और 108 मणिकी सर्व सिद्धि केलिये उचित है।

**2.7-4 माला फेरने में अंगुली का महत्त्व क्या है?**

पुरश्चरणदीपिका में अंगुलियों का प्रयोग करने के बारे में कहा है कि-

**'अंगुष्ठं मोक्षदं विद्यात्तर्जनी शत्रुनाशिनी। मध्यमा धनदा शान्तिकरी ह्येषा ह्यनामिका।।**
**कनिष्ठाऽऽकर्षणेशस्ता जपकर्मणि शोभने। अंगुष्ठेन जपं जप्यमन्यैरंगुलिभिः सह।।'**

अर्थात् अंगूठे से फेरने का फल मोक्ष है, तर्जनी से फेरने का फल शत्रुनाश, मध्यमा से फेरने का फल धन प्राप्ति, अनामिका से फेरने का फल सर्व शान्ति और कनिष्ठिका से फेरने का फल आकर्षण सिद्धि है।

वैशम्पायन संहिता में माला फेरने का विधान इस प्रकार बताया है-

**'अंगुष्ठमध्यमाभ्यां च चालयेन्मध्यमध्यतः। तर्जन्या न स्पृशेदेनां मुक्तिदो गणनाक्रमः।।'**

अर्थात् अंगूठा और मध्यमा अंगुलि से ही बीचोंबीच मणिकाओं को चलाना चाहिये, यही माला की मणिकाओं की गणना का मुक्ति प्रदायक क्रम है। तर्जनी अंगुलि से माला का स्पर्श भी नहीं करना चाहिये।

**2.7-5 कर माला का विचार:-**

यदि माला किसी कारणवश उपलब्ध न हो तो हाथ की अंगुलियों पर ही माला की भावना करके जप कर सकते हैं। इस विषय में पुरश्चरणदीपिका में कहा है कि-

**'अलाभे जपमालायाः करशाखासु पर्वभिः। अनामिकाया यो मध्यस्तस्मादधः क्रमेण तु।।**
**मध्यांगुल्यग्रपर्वादिप्रादक्षिण्यक्रमेण तु। तर्जन्यादौ जपान्तश्च साक्षमाला करे स्थिता।।'**

अर्थात् जपमाला उपलब्ध न होने पर करशाखा में विद्यमान पर्वो से जप करना चाहिये। कैसे? अनामिका अंगुलि के मध्य पर्व से शुरु

कर नीचे की ओर से प्रदक्षिणा करने के क्रम से कनिष्ठिका के नीचे के पर्व से ऊपर की ओर गिनते हुये मध्यमा के ऊपर के पर्व पर जपते हुये तर्जनी अंगुलि के निचले पर्व तक जपें, फिर विपरीत क्रम से जपें अथवा सनत्कुमारसंहिता में कहे गये सरल तरीके से भी करमाला कर सकते हैं। जो इस प्रकार है–

**'हृदये हस्तमारोप्य तिर्यक्कृत्वा करांगुलीः। आच्छाद्य वाससा हस्तौ दक्षिणेन सदा जपेत्।।**
**तर्जनी मध्यमाऽनामा कनिष्ठा चेति ताः क्रमात्। तिस्रोऽंगुल्यस्त्रिपर्वाणो मध्यमा चैकपर्विका।।'**

अर्थात् अपने हृदय के पास दाहिने हाथ को स्थापित कर अंगुलियों को थोड़ा अन्दर की ओर मोड़के कपड़े से ढक कर तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा के क्रम से प्रत्येक अंगुलि के तीनों पर्वों पर जप करें, किन्तु मध्यमा अंगुलि के ऊपर के दो पर्वों को मेरु समझकर उस पर न जपें व न लांघें। दोनों पक्षों को चित्र संख्या–1 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

चित्र संख्या 1

| पुरश्चरण दीपिका मत | | | | सनत्कुपार मत | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **कनिष्ठा** | **अनामिका** | **मध्यमा** | **तर्जनी** | **कनिष्ठा** | **अनामिका** | **मध्यमा** | **तर्जनी** |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 8 | 9 | x | 1 |
| 4 | 1 | x | 9 | 7 | 10 | x | 2 |
| 3 | 2 | x | 10 | 6 | 5 | 4 | 3 |

**2.8 कर्तव्याकर्तव्यविषयकविचार :** जप कैसे करना चाहिये और कैसे नहीं ? इस विषय पर अनेकों ग्रन्थों में विस्तृत विचार है। संक्षेप में कह सकते हैं कि जप तीन प्रकार से किया जाता है– वैखरी जप (निकटवर्ती व्यक्ति को सुनाई दे ऐसे उच्चारण करते हुये जपना),

उपांशु जप (निकटवर्ती व्यक्ति को भी सुनाई न दे ऐसे उच्चारण करते हुये जपना - होंठ हिलते दिखाई देते हैं किन्तु कुछ भी सुनाई नहीं देता) और मानस जप, जिसका लक्षण योगीयाज्ञवल्क्यसंहिता (2.11) में इस प्रकार किया है-

**'जपस्याहं विधिं वक्ष्ये यथाकार्यं विधानतः। न चंक्रमन्न प्रहसन्न पार्श्वमवलोकयन्।।**
**नापाश्रिता न जल्पंश्च न प्रावृत्तशिरस्तथा। न पदा पादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ।।**
**नैवंविधं जपं कुर्यान्न च संश्रावयञ्जपेत्। तिष्ठंश्चेद्वीक्षमाणोऽर्कमासीनः प्राङ्मुखो जपेत्।।**
**प्रागग्रेषु कुशेष्वेवमासीनश्चासने जपेत्। जपस्त्वेवं हि कर्तव्य एकाग्रमनसापि च।।**
**धारयेन्मनसा मन्त्रान्न जिह्वोष्ठौ विचालयेत्। न कम्पयेच्छिरो ग्रीवां दन्तान्नैव प्रकाशयेत्।।'**

अर्थात् मैं जप करने की विधि बताता हूं, यथाशक्ति विधि का पालन करें । घूमते हुये, हँसते हुये, इधर-उधर या अगल-बगल देखते हुये, गलत सहारा लेते हुये, बात करते हुये, सिर को ढके हुये, (पैरों को सामने फैलाके) पैर पर पैर लगाकर और हाथ पर हाथ धरकर जप न करें। दूसरों को सुनाते हुये, सिर व गर्दन आदि को हिलाते हुये और दान्तों को दिखाते हुये भी जप नहीं करना चाहिये। बैठकर जपना है तो पूर्वाभिमुख होकर सूर्य को देखते हुये (यानि सूर्य के सम्मुख आंख बन्द करके) पूर्व की ओर अग्रभाग हो ऐसे कुशा के आसन पर सुखासन, पद्मासन, आदि कोई भी अनायास जपकाल पर्यन्त बैठने स्वयोग्य आसन में बैठकर मन से मन्त्र को धारण कर जिह्वा या होंठ को हिलाये बिना जप करना चाहिये। किसी भी कर्म या उपासना में वाणी का संयम और ब्रह्मचर्य का पालन अत्यन्त आवश्यक है। जैसे कि पुरश्चरणदीपिका में कहा है-

**'स्त्रीशूद्रपतितव्रात्यनास्तिकोच्छिष्टभाषणम्। असत्यभाषणं चैव कौटिल्यं च परित्यजेत्।।**
**सद्भिरपि न भाषेत जपहोमार्चनादिषु। वाग्यतः कर्म निर्वर्त्य निःस्पृहो वर्त्तितादिषु।।**
**परस्त्रीं परनिन्दां च मनसापि विवर्जयेत्। मैथुनं तत्कथालापं तद्गोष्ठीः परिवर्जयेत्।।'**

अर्थात् स्त्री, शूद्र, पतित, व्रात्य, नास्तिक और समाज से बहिष्कृत के साथ ही नहीं बल्कि सत्पुरुषों के साथ भी जप, होम और अर्चना आदि काल में बातचीत नहीं करनी चाहिये तथा असत्य (झूठ), कुटिलता, परस्त्री चिन्तन और परनिन्दा को त्यागना चाहिये। इस प्रकार साधक वाणी के संयम आदि से कृत कर्म के इष्ट फल को निःस्पृह होकर अवश्य प्राप्त करेगा। उक्त के अलावा मैथुन, तत्सम्बन्धी वार्तालाप और तद्व्यसनियों का संग भी त्यागना होगा। अतः ब्रह्मचर्य के लक्षण और उसके अंगों को जानना जरूरी है, जिसके विषय में कहा गया है–

**'कायेन मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा। सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते।।**
**स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणं। संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च।।**
**एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदन्ति मनीषिणः। एतेषां विपरीतन्तु ब्रह्मचर्यं निगद्यते।।'**

अर्थात् सदा और सर्वत्र किसी भी अवस्था में शरीर, वाणी और मन से मैथुन के त्याग को ब्रह्मचर्य कहते हैं। मैथुन के आठ अंग हैं– स्मरण करना, वर्णन करना, हंसी–मजाक करना, बारम्बार देखते रहना, एकान्त में बैठकर बातचीत करना, कसमें खाना, निश्चय करना और संभोग करना। इनके विपरीत आचरण को ब्रह्मचर्य कहते हैं।

### 2.9–1 भक्ष्याभक्ष्य विषयक विचार :

किसी भी कर्म या उपासना के अनुष्ठान काल पर्यन्त सात्त्विक व सुपाच्य आहार ग्रहण करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि दूषित राजस या तामस भोजन से फल की हानि ही होगी। जैसे कि तन्त्रसार एवं गौतमीयसंहिता में कहा है–

**'उपासकश्च मन्त्री च भक्ष्याभक्ष्यं विचारयेत्। अन्यथा भोजनाद्दोषात्सिद्धिहानिः प्रजायते।।**
**शतान्नं च समश्नीयान्मन्त्रसिद्धिसमीहया। तस्मान्नित्यं प्रयत्नेन शतान्नाशी भवेन्नरः।।'**

अर्थात् उपासक और मन्त्र जापक को भक्ष्याभक्ष्य का विचार अवश्य करना चाहिये क्योंकि दोष युक्त भोजन से फल की हानि ही होगी। इसलिये मन्त्र की सफलता का संकल्प करते हुये साधक नित्य ही शतान्न (यानि स्यांवां चावल का भात) को ही ग्रहण करें। शारदातिलक (2.140) में इस विषय पर कहते हैं-

**'भैक्ष्यं हविष्यं शाकानि विहितानि फलं पयः। मूलं सक्तुर्यवोत्पन्नो भक्ष्याण्येतानि मन्त्रिणाम्।।'**

अर्थात् भिक्षा से प्राप्त, स्यांवां चावल का भात, व्रत में विहित सब्जियां, फल, दूध, कन्द-मूल, जौ के सत्तू को ही साधक ग्रहण करें।

**2.9-2 भोजनग्रहणविधिः**

हाथ-पैर धोकर उत्तर अथवा पूर्व की ओर मुख करके आसन के ऊपर भोजन के लिये बैठें और अपने सामने की जमीन, पाटा, चौकी अथवा मेज पर थोड़ा जल हाथ में लेकर निम्न मन्त्र बोलते हुये छिड़कें-

**'अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।'**

1. **ॐ भूर्भुवःस्वः** - इस मंत्र से तीन बार आचमन करें।
2. **ॐ श्रीशिवार्पणमस्तु** - भोजन को नमस्कार करते हुये दोनों हाथ जोड़कर इस मंत्र को बोलें।
3. **ॐ अस्माकं सर्वेषां च नित्यमस्त्वेतत्** - दोनों हाथ जोड़कर भगवान् से प्रार्थना करें।
4. **ॐ सत्येन त्वर्तेन त्वा परिषिंचामि** - दिन में इस मन्त्र को बोलते हुये दाहिने हाथ में जल लेकर भोजन पर छिड़कें।
   रात में इस मंत्र से करें - **ॐ ऋतं त्वा सत्येन त्वा परिषिंचामि।**
5. **ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।**(गी. 4.24)
   दाहिने हाथ में जल लेकर इस मंत्र को बोलते हुए थाली के चारों ओर गोलाकार में बायें से दाहिने तरफ जल छोड़ें।

6. **ॐ भूपतये स्वाहा। ॐ भुवनपतये स्वाहा। ॐ भूतानां पतये स्वाहा। ॐ धर्माय स्वाहा। ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा। ॐ यत्र क्वचन संस्थानां क्षुत्तृषोपहतात्मनाम्। भूतानां तृप्तयेऽक्ष्य्यमिदमस्तु यथासुखं स्वाहा।।**

इन छः मंत्रों से छः ग्रास रोटी/भात थाली के बाहर दाहिने तरफ ऊपर से नीचे की ओर एक सीध में थोड़ी-थोड़ी दूर रखें।

7. **ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा** - जल से आचमन करें।

8. **ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ परमात्मने स्वाहा** - इन छः मंत्रों से छः बार रोटी/भात का ग्रास मुख में डालकर निगलें, दांतों से न चबायें। यह छान्दोग्योपनिषद् 5.19-23 में उक्त श्रौत क्रम है, किन्तु लोकप्रसिद्ध स्मार्तक्रम (ब्रह्म संहिता आदि के अनुसार) ऐसा है- **ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा** और **ॐ समानाय स्वाहा**।

9. अब भोजन करना है, लेकिन ध्यान दें-पेट में परमात्मा ही वैश्वानर अग्नि के रूप में रहकर भोजन को पचाता है इसलिये भोजन को यज्ञ रूप देना है, जिसे **प्राणाग्निहोत्र** कहते हैं। कैसे ? आप मुख में जब भोजन डालोगे तब अपने इष्ट देवता के नाम का चतुर्थ्यन्त के साथ स्वाहा जोड़कर मन ही मन उच्चारण करते हुये भोजन करें। जैसे- शैव हो तो '**ॐ नमः शिवाय स्वाहा**', वैष्णव हो तो '**ॐ विष्णवे नमः स्वाहा**', शाक्त हो तो '**ॐ श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः स्वाहा**', पढ़ाई में सफलता केलिये '**ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः स्वाहा**', धन प्राप्ति केलिये '**ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा**' इत्यादि। बातचीत न करें, मौन रहें।

10. **ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा**-आचमन करें।

11. भोजन समाप्ति के बाद - '**ॐ श्रीरुद्रार्पणमस्तु**' तथा

'**ॐ रौरवे पुण्यनिलये पद्मार्बुदनिवासिनाम्। आर्तीनामुदकं दत्तमक्ष्य्यमुपतिष्ठतु ।।**'

इन दो मंत्रों को बोलकर थाली में जल छोड़ें।

12. **हरिः ॐ तत्सत्** – कहें। तत्पश्चात् उठकर हाथ-पैर धोवें और गीले हाथों से आँखें पोछें और पेट पर दाहिने हाथ को घड़िनुमा फेरते हुए अथवा दाहिने हाथ से स्पर्श करके इस मंत्र को बोलें –

**'अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च वडवानलं। आहारपरिपाकार्थं स्मरेद् भीमं च पंचमं।।**

**आतापी मारितो येन वातापी च निपातितः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।'**

तत्पश्चात् शवासन में लेटकर स्वाभाविक 8 श्वास गिनें फिर दाहिने करवट में 16 और बायें करवट में 32 श्वास गिनें। उसके बाद उठकर अपने काम में लगें। सायं/रात्रि भोजन के बाद 100 कदम घूमकर अपने काम में लगें।

**2.9-3 भोजन में ग्रास का परिमाण** – विश्वामित्रकल्प के अनुसार –

**'कुक्कुटाण्डप्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते।'**

अर्थात् मुर्गी के अण्डे के नाप के बराबर ग्रास का परिमाण विधान किया गया है।

**2.9-4 भोजन में दिशा का विधान** – मनुस्मृति में भोजन ग्रहण करने (पाने/खाने)की **दिशा** के बारे में कहा है –

**'आयुष्यं प्राङ्मुखो भुङ्क्ते यशस्वी दक्षिणाभिमुखः।।**

**श्रियं प्रत्यङ्मुखो भुङ्क्ते ऋणं भुङ्क्ते उदङ्मुखः। पुत्रवांस्तु गृहे नित्यं नाश्नीयादुत्तरामुखः।।'**

अर्थात् पूर्वाभिमुख होकर भोजन करने से आयु की वृद्धि होगी, दक्षिणाभिमुख हो तो यशस्वी होगा, पश्चिमाभिमुख हो तो ऐश्वर्य प्राप्ति होगी किन्तु उत्तराभिमुख हो तो वह ऋणी रहेगा। पुत्रवान् व्यक्ति को अपने घर में कभी भी उत्तराभिमुख होकर भोजन नहीं करना चाहिये। प्रयोगपारिजात में भी कहा है –

**'पितरौ जीवमानौ चेन्नाश्नीयाद्दक्षिणामुखः। तयोस्तु जीवतोरेकस्तथैव नियमः स्मृतः।।**
**अनिशं मातृहीनानां यशस्यं दक्षिणामुखम्।।'**

अर्थात् माता पिता दोनों जीवित हों अथवा दोनों में से एक भी जीवित हों तो दक्षिणाभिमुख होकर भोजन न करें। किन्तु माता से हीन यानि जिसकी माता स्वर्गवासी हो गई हो तो वह दक्षिणाभिमुख हो कर भोजन करें तो वह यशस्वी होगा।

## 2.10 शयन कैसे करें?

रात्रि सुयोग्य बिस्तर पर सोने के भी कुछ नियम है, पशु जैसे दिशा आदि का विचार किये विना सोना नहीं चाहिये। किन्तु निम्न बातों पर ध्यान दें–

**'स्वगृहे प्राक्शिराः शेते श्वाशुरे दक्षिणाशिरः। प्रवासे पश्चिमाशिरः न कदाचिदुदकशिराः।।'**

अर्थात् अपने घर या कुटिया में सो रहे हों तो पूर्व दिशा में सिर रखके सोवें, ससुराल में हो तो दक्षिण दिशा में सिर रखके सोवें और यात्रा में जब धर्मशाला आदि में सो रहे हों तो पश्चिम दिशा में सिर रखके सोवें। लेकिन कभी भी किसी भी दशा में उत्तर दिशा में सिर रखके न सोवें। सोने से पूर्व बिस्तर पर बैठे अथवा लेटे हुये निम्न चिन्तन करें–

**'रात्रिसूक्तं जपेत्स्मृत्वा देवांश्च सुखशायिनः। नमस्कृत्वाऽव्ययं विष्णुं समाधिस्थं स्वपेन्निशि।।'**

अर्थात् रात्रिसूक्त का मानस पाठ कर सुखशायी देव आदि पांच को नमस्कार करके समाधि में स्थित अव्यय भगवान् विष्णु को स्मरण कर सोवें। वे देव आदि पांच सुखशायी ये हैं–

**'अगस्त्यो माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः। कपिलो मुनिरास्तीकः पंचैते सुखशायिनः।।'**

अर्थात् महामुनि अगस्त्य, वासुदेव श्रीकृष्ण, महाबली श्रीमुचुकुन्द, कपिल मुनि और महर्षि आस्तीक – ये पांच सुखशायी हैं। जिन लोगों

को अशुभ स्वप्न आते हों अथवा भूत प्रेत आदि का भय हो वे निम्न विधि का पालन करें-

**'मांगल्यं पूर्णकुम्भं च शिरः स्थाने निधाय च। वैदिकैर्गारुडैर्मन्त्रै रक्षां कृत्वा स्वपेत्ततः।।'**

अर्थात् सकल मंगल चिह्नों से युक्त जल अथवा अनाज से भरा हुआ घड़ा अथवा गरुड़ शिला सिर के पास रखके वेद में बताये गये गरुड़ देवता के मन्त्र अथवा अपने इष्ट देवता का कवच पाठ करने के पश्चात् सोवें।

## 2.11 जप के बाद कर्तव्य विषयक विचारः

उपासना एवं कर्म के अंग भूत मन्त्र के जप की पूर्ण संख्या में से एक निश्चित संख्या का नित्य जप करना होता है। नित्य ही निश्चित संख्या का जप करने के बाद क्या करना चाहिये, इस पर तन्त्रसार में कहा है कि-

**'जपान्ते प्रत्यहं मन्त्री होमयेत्तद्दशांशतः। तर्पणं चाभिषेकं च तत्तद्दशांशतो मुने।।**
**प्रत्यहं भोजयेद्विप्रान्न्यूनाधिकप्रशान्तये। अथवा सर्वपूर्तौ च होमादिकमथाचरेत्।।'**

अर्थात् जप के अन्त में प्रति दिन जप संख्या का दशांश होम, उसका दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश अभिषेक यानि मार्जन करना चाहिये। तत्पश्चात् न्यूनाधिक दोष प्रशान्ति केलिये मार्जन के दशांश संख्या ब्राह्मणों को भोजन खिलायें। अथवा संपूर्ण जप संख्या को जपने के बाद अन्त में होम आदि कर सकते हैं। लेकिन जो साधक प्रतिदिन एवं अन्त में भी हवन आदि कार्य नहीं कर सकता हो तो वह जप संख्या को बढ़ाकर भी उनकी आपूर्ति कर सकता है, जैसे कि सनत्कुमारसंहिता में कहा है-

**'यद्यदंगं भवेद्भग्नं तत्संख्या द्विगुणो जपः। होमाभावे जपः कार्यो होमसंख्याचतुर्गुणः।।**
**विप्राणां क्षत्रियाणां च रससंख्यागुणः स्मृतः। वैश्यानां वसुसंख्याकमेषां स्त्रीणामयं विधिः।।'**

अर्थात् किसी भी कारणवश जो-जो अंग भंग यानि नष्ट हो जाते हैं उनका दो गुणा जप करें और होम न कर सके तो उनकी होम संख्या

का चार गुणा ब्राह्मण को, क्षत्रिय को छः गुणा, वैश्य को आठ गुणा जप करना चाहिये। ब्राह्मण आदि की स्त्रियां जप कर रही हों तो उन्हें भी उक्त नियम का ही पालन करना होगा।

## उपक्रमप्रकरणम् भाग 3

### 3. कर्म/उपासना में प्रयुक्त देवता आदि विषयक विचार:-

### 3.1 देवताविषयक विचार:

प्रत्येक युग में जन्म लेनेवाले जीवों के कर्म और संस्कार भिन्न-भिन्न होते हैं, इसलिये प्रत्येक युग में जीवों के आराध्य प्रमुख देवता अलग-अलग होते हैं। अत: **युगभेद** से देवता भेद के बारे में मत्स्य पुराण में कहा है-

**'ब्रह्मा कृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान् रविः। द्वापरे भगवान् विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः।।'**

अर्थात् सत्ययुग में ब्रह्माजी, त्रेतायुग में सूर्यभगवान्, द्वापरयुग में भगवान् विष्णु और कलियुग में शंकर भगवान् ही प्रमुख आराध्य देवता हैं। **कामनाभेद** के अनुसार देवभेद के बारे में स्कन्दपुराण (5.3.153.23) में कहा है-

**'आरोग्यं भास्करादिच्छेद्धनमिच्छेद्धुताशनात्। ज्ञानं च शंकरादिच्छेन्मुक्तिमिच्छेज्जनार्दनात्।।'**

अर्थात् आरोग्यकी कामना भगवान् सूर्य से, धन की कामना अग्नि भगवान् से (महाभारत के अनुसार धन की कामना कुबेर से), ज्ञान की कामना शंकर भगवान् से और मुक्ति की कामना भगवान् विष्णु से करनी चाहिये।

**3.2** देवताओं के **पूजा अर्चना काल** के बारे में स्कन्दपुराण (1.2.41.81) में कहा है-

**'प्रातर्मध्यन्दिने सायं देवपूजां समाचरेत्। अशक्तौ विस्तरेणैव प्रातः संपूज्य दैवतम्।।**
**मध्याह्ने चैव सायं च पुष्पांजलिमपि क्षिपेत्।।'**

अर्थात् नित्य ही तीनों काल–प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल में विस्तृत देवपूजा करनी चाहिये। लेकिन यदि असमर्थ हैं तो प्रातःकाल में विस्तृत पूजा करके मध्याह्न और सायंकाल में केवल पुष्पांजलि अर्पित कर सकते हैं।

**3.3–1** देवता की **मूर्ति/प्रतिमा** के विषय में मत्स्यपुराण (2.58.20) में कहा गया है–

**'सौवर्णी राजता वापि ताम्री रत्नमयी तथा। शैली दारुमयी वापि लोहसंघमयी तथा।।**

**अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिं यावदेव तु। गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः।।'**

अर्थात् सोना, चांदी, तांबा, माणिक्य आदि रत्न, स्फटिक आदि पत्थर, लकड़ी अथवा पंचलौह से निर्मित यजमान के अपने अंगूठे के बराबर (लगभग 1 इन्च) से लेकर एक वितस्ति (लगभग 9 इन्च) परिमाण वाली प्रतिमा/मूर्ति ही घर में होनी चाहिये, इससे अधिक बड़ी मूर्ति रखने का उपदेश विद्वान् लोग नहीं देते हैं।

**3.3–2 मूर्ति/प्रतिमा के मुख विषयक विचारः –**

**'याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जयवर्धिनी। पश्चिमाभिमुखी नित्या न स्थाप्या सौम्यदिङ्मूखी।।'**

अर्थात् दक्षिण दिशा की ओर दुर्गा का मुख कर स्थापित करने से वह शुभ देनेवाली है, पूर्व की ओर हो तो विजय देनेवाली है और पश्चिम की ओर हो तो सभी कार्य को सिद्ध करनेवाली है किन्तु उत्तर की ओर मुख कर कभी भी स्थापना नहीं करनी चाहिये।

**3.4 देवतापूजोपचार** के विषय में परम्परा के अनुसार 64 उपचार होते हैं जिनके मन्त्र सहित प्रयोग को श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाश के पूजापद्धति प्रकरण में पृष्ठ संख्या 204 पर दर्शाया गया है। लेकिन अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार साधक को 5 अथवा 10 अथवा 16 अथवा 64 उपचारों से पूजा अवश्य करनी चाहिये। वे कौन कौन हैं?

**3.4-1 पंचोपचार (5):-** जाबालि के अनुसार –

**'ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम्। नीराजनं प्रणामश्च पंच पूजोपचारकाः।।'**

अर्थात् ध्यान, आवाहन, प्रार्थना, आरती और नमस्कार। अथवा ज्ञानमाला एवं प्रपंचसार के अनुसार –

**'गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात्।।'**

**'गन्धादयो नैवेद्यान्ताः पूजाः पंचोपचारिकाः। उपचारैर्यथाशक्ति देवतामन्वहं यजेत्।।'**

अर्थात् गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य। अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपचारों से नित्य ही देवता पूजन करें।

**3.4-2 दशोपचारा (10):-** ज्ञानमाला के अनुसार –

**'अर्घ्यं पाद्यं चाचमनं स्नानं वस्त्रनिवेदनम्। गन्धादया नैवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात्।।'**

अर्थात् अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य ये दस हैं अथवा दस उपचार इस प्रकार भी हैं–

**'अर्घ्यपाद्याचमनमधुपर्काचमनान्यपि। गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात्।।'**

पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, पुनराचमन, सुगन्धीद्रव्य, सुमनः (पुष्प), धूप, दीप और नैवेद्य।

**3.4-3 षोडशोपचारा (16):-** प्रपंचसार में इनकी गणना इस प्रकार की है –

**'आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च।।**
**सुगन्धिसुमनोधूप-दीप-नैवेद्यवन्दनम् । प्रयोजयेदर्चनायामुपचारांश्च षोडश।।'**

अर्थात् 16 उपचार क्रम से इस प्रकार हैं– 1. स्वागत (आवाहन), 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. आचमन, 6. मधुपर्क, 7. पुनराचमन, 8. स्नान, 9. वस्त्र, 10. यज्ञोपवीत सहित आभरण, 11. सुगन्धीद्रव्य, 12. सुमनः (पुष्प), 13. धूप, 14. दीप, 15. नैवेद्य और 16.

वन्दना (नमस्कार)। कुछ अन्य ग्रन्थों में मधुपर्क और पुनराचमन को ग्रहण न करके अन्त में (यानि नमस्कार के बाद) प्रदक्षिणा और उद्वासन को ग्रहण किया है। इन उपचारों के अन्त में कर्म गत अंग च्युति रूपी दोष निवृत्ति पूर्वक कर्म की साफल्यता केलिये फल सहित दक्षिणा को अवश्य अर्पण करे। किन्तु वैदिक परम्परा के अनुसार कर्मप्रदीप नामक ग्रन्थ में षोडशोपचार में थोड़ा फर्क करके कहा है-

**'आवाहनमासनं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्। स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धमाल्यान्यनुक्रमात्।।**
**धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा। पुष्पांजलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश।।'**

अर्थात् आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि - ये 16 उपचार कहे गये हैं। प्रत्येक देवता के 16 उपचारों के वैदिक/ पौराणिक /आगमिक मन्त्र अलग-अलग होते हैं (जैसे कि हमारे प्रकाशन **शिवपूजापद्धतिप्रकाश** में शिवजी के वैदिक/पौराणिक/आगमिक मन्त्रों को दर्शाया है) किन्तु सबको अलग-अलग याद करना सर्व सामान्य केलिये कठिन है, इसलिये शास्त्रकारों ने विकल्प दिया है कि पुरुषसूक्त (देव हो तो)अथवा श्रीसूक्त (देवी हो तो) से भी षोडश उपचार पूजन कर सकते हैं।

**3.4-4 चतुष्षष्ट्युपचारा (64):-** श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाश के पृष्ठ संख्या 204 में देखें।

**3.4-5** इनके अलावा **राजोपचार** होते हैं जिनके बारे में कर्मप्रदीप में कहा गया है कि-

**'ततः पंचामृताभ्यंगमंगस्योद्वर्त्तनं तथा। मधुपर्कं परिमलद्रव्याणि विविधानि च।।**
**पादुकान्दोलनादर्शं व्यजनं छत्रचामरे। वाद्यार्तिक्यं नृत्यगीतशय्या राजोपचारकाः।।'**

अर्थात् उक्त 5/10/16 अथवा 64 उपचारों से पूजा करने के साथ इन राजोपचारों से भी पूजा करनी चाहिये- पंचामृत, अभ्यंग, उद्वर्त्तन, मधुपर्क, नाना प्रकार के सुगन्धिद्रव्य, पादुका, दोलन (झुलाना), दर्पण दिखाना, पंखा, चंवर, चामर, वाद्य, नृत्य, संगीत, आरती और शय्या अर्पण (सुलाना)।

**3.5 सामग्री आदि साधन विषयक विचार:**

स्वस्नान, पंचगव्य, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, पंचामृत, देवतास्नान, उद्वर्तन, सौभाग्यद्रव्य, कौतुकद्रव्य, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल में डालने की सामग्री/पदार्थ के विषय में साधक को जानना जरूरी है। अतः अब सामग्री विषयक विचार को विभिन्न शास्त्रों के आधार पर वर्णन किया जा रहा है।

**3.5-1 स्वस्नानपात्रसामग्री**- मन्त्रतन्त्रप्रकाश के अनुसार साधक द्वारा अपने स्नान केलिये स्नानपात्र में डालने की सामग्री निम्न प्रकार से है -

**'अक्षता गन्धपुष्पाणि स्नानपात्रे तथा त्रयम्। द्रव्याभावे प्रदातव्याः क्षालितास्तण्डुलाः शुभाः।।'**

अर्थात् अक्षत, सुगन्धद्रव्य और फूल - इन तीन पदार्थों को साधक अपने स्नान पात्र में डाले। यदि सामग्री न हो तो धोये हुये अच्छे चावल (थोड़ा) डालकर नदी आदि का आवाहन आदि करके इष्ट देवता के नाम व लीला आदि को स्मरण करते हुये स्नान करना चाहिये।

**3.5-2 पंचगव्यसामग्री**- विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार-

**'गोमूत्रं भागतश्चार्धं शकृत्क्षीरस्य च त्रयम्। द्वयं दध्नो घृतस्यैकमेकश्च कुशवारि च।।'**

अर्थात् जितनी मात्रा कुशा से पवित्र किया गया जल लेंगे उतना ही घी, उसका दो गुना दही, उसका तीन गुना दूध, उसकी आधी मात्रा गोबर और आधी मात्रा ही गोमूत्र को अलग-अलग ग्रहण करके आगे बताये गये मन्त्रों का उच्चारण करते हुये मिलायें।

भविष्यपुराण (135.31) के अनुसार -

**'पंचगव्यं पवित्रन्तु आहरेत्ताम्रभाजने। गायत्र्या चैव गोमूत्रं गन्धद्वारेण गोमयं।।**
**आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णोति वै दधि। तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम्।।'**

अर्थात् तांबे के बर्तन में ही पंचगव्य का मिश्रण करना चाहिये। गायत्री मन्त्र से गोमूत्र को, गन्धद्वारा इत्यादि मन्त्र से गोबर को, आप्यायस्व इत्यादि मन्त्र से दूध को, दधिक्राव्णा इत्यादि मन्त्र से दही को, तेजोऽसि शुक्रं इत्यादि मन्त्र से घी को और देवस्य त्वा इत्यादि मन्त्र से कुशाओं के जल को पात्र में डालकर मिलावें (श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाश के पृष्ठ संख्या 75 को देखें)।

**3.5-3 पाद्यपात्रसामग्री**- शारदातिलक (17.73) के अनुसार -

**'दूर्वां च विष्णुक्रान्तां च श्यामाकं पद्ममेव च। पाद्यांगानि च चत्वारि कथितानि समासतः।।'**

अर्थात् संक्षेप से कहा गया है कि दूर्वा, विष्णुक्रान्ता, स्यांवा चावल और कमल (की पंखुड़ि अथवा गुलाब की पंखुड़ि )- इन चार पदार्थों को पाद्य पात्र में डालना चाहिये।

**3.5-4 अर्घ्यपात्रसामग्री**- शारदातिलक (14.141) के अनुसार -

**'गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपैः। सदूर्वैः सर्वदेवानामेतदर्घ्यमुदीरितम्।।'**

अर्थात् सुगन्धीद्रव्य, पुष्प, अक्षत, जौ, कुशा का अग्रभाग, तिल, सरसों और दूर्वा - इन आठ पदार्थों को सभी देवताओं के अर्घ्य की सामग्री कहा गया है। मतान्तर में 8 पदार्थ ही माने गये हैं, लेकिन कुछ भेद है। जैसे कि भविष्य पुराण (163.37) में कहा गया है-

**'आपः क्षीरं कुशाग्राणि दध्यक्षततिलास्तथा। यवाः सर्षपाश्चैव अर्घ्योऽष्टांग प्रकीर्तितः।।'**

अर्थात् जल, दूध, कुशा का अग्रभाग, दही, अक्षत, तिल, जौ और सरसों - इन आठ पदार्थों को अर्घ्य की सामग्री कहा गया है।

**3.5-5 आचमनीयपात्रसामग्री**- भविष्यपुराण (17.35) के अनुसार -

**'कर्पूरमगरुं पुष्पं दद्याज्जातीफलं मुने। लवंगमपि कंकोलं शस्तमाचमनीयके।।'**

अर्थात् कपूर (खाने योग्य भीमसैनी कपूर), अगरु, पुष्प, जातीफल, लवंग और कंकोल वृक्ष के फलों से निर्मित गन्धद्रव्य ही आचमनीय जल में संमिश्रण करने केलिये विहित है।

**3.5-6/1 मधुपर्कसामग्री**- विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार -

**'सुधाणुना ततः कुर्यान्मधुपर्कं मुखाम्बुजे। आज्यं दधिमधून्मिश्रमेतदुक्तं मनीषिभिः।।'**

अर्थात् कपूर (खाने योग्य भीमसैनी कपूर) के साथ घी, दही और शहद को मिश्रित कर मुख कमल में अर्पण करने योग्य मधुपर्क को तैयार करने का विधान विद्वानों द्वारा कहा गया है।

**3.5-6/2 मधुपर्क प्रमाणम्** -

**'सर्पिरेकगुणम्प्रोक्तं शोधितं द्विगुणम्मधु। मधुपर्कविधौ प्रोक्तं सर्पिषा च समं दधि।।'**

अर्थात् एक मात्रा घी, शोधित शहद उसका दो गुणा और घी के समान मात्रा दही मधुपर्क विधि में कहा गया है।

**3.5-7 पंचामृतसामग्री**- भविष्यपुराण (154.2) के अनुसार -

**'गव्यमाज्यं दधि क्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम्। एकत्र मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पंचामृतं परं।।'**

अर्थात् गौ का ही घी, दही, दूध, शहद और गुड़ (चीनी)- इन पांच पदार्थों को एक पात्र में मिश्रित करने पर उसे श्रेष्ठ व दिव्य पंचामृत जानना चाहिये।

**3.5-8 देवतास्नानसामग्री**- विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार -

**'शुद्धोदकैः स्नायादतः गन्धाद्भिः कारयेत्स्नानम्।'**

*अर्थात्* पहले शुद्ध जल से स्नान कराके फिर सुगन्धिद्रव्यों से युक्त जल से स्नान करायें।

**3.5-9 उद्वर्तनसामग्री**- विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार -

**'रजनी सहदेवी च शिरीषं लक्ष्मणापि च। सहभद्रा कुशाग्राणी उद्वर्तनमिहोच्यते।।'**

अर्थात् हल्दी, कुंकुम, शीशम का फूल, लक्ष्मणा का फूल, चन्दन और कुशा के अग्रभाग से निर्मित द्रव्य को उद्वर्तन कहते हैं।

**3.5-10 सौभाग्यद्रव्य की सामग्री**- विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार -

**'हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम्। कज्जलं कण्ठसूत्रादि सौभाग्यद्रव्यमुच्यते।।'**

अर्थात् हल्दी, कुंकुम, सिन्दूर आदि सहित काजल, यज्ञोपवीत/मंगलसूत्र आदि को सौभाग्यद्रव्य कहते हैं।

**3.5-11 कौतुकद्रव्य की सामग्री**- भविष्यपुराण के अनुसार -

**'दूर्वा यवांकुराश्चैव ह्रीवेरं चूतपल्लवाः, हरिद्राद्वयसिद्धार्थशिखपत्रोरगत्वचः।**
**कंकणौषधयश्चैव कौतुकाख्या दश स्मृताः।।'**

अर्थात् दूर्वा, जौ के अंकुर, ह्रीवेर नामक पेड़ के फूलों से निर्मित सुगन्धि द्रव्य, आम के पत्ते, दोनों प्रकार की हल्दी, मोर पंख, सांप की केचुली, सरसों और कलगी- इन दस पदार्थों को कौतुक नामक द्रव्य कहते हैं।

**3.5-12 गन्धानुलेपनविचार व सामग्री**- कालिकापुराण के अनुसार -

**'चूर्णीकृतो वा घृष्टो वा दाहकर्षित एव वा। रसः संमर्दजो वापि प्राण्यंगोद्भव एव वा।।**
**गन्धः पंचविधः प्रोक्तो देवानां प्रीतिदायकः।।'**

अर्थात् चूर्ण किया गया, घर्षण से निर्मित, दाहकर्षित, संमर्दन से जन्य रस और प्राणी के अंग से उत्पन्न (जैसे कस्तूरी आदि) - देवताओं को प्रसन्न करने वाले ये पांच प्रकार के गन्ध होते हैं। प्रत्येक प्रकार के गन्ध का विवरण कालिकापुराण के अनुसार इस प्रकार है-

**'गन्धचूर्णं गन्धपत्रचूर्णं सुमनसां तथा। प्रशस्तगन्ध उक्तानि पत्रचूर्णानि यानि च।।**
**तानि गन्धाह्वयानि स्युः सो गन्धः प्रथमः स्मृतः। घृष्टो मलयजो गन्धः सरलश्च नमेरुणा।।**
**अगरुप्रभृतिश्चापि यस्य पंकः प्रदीयते। घृष्ट्वा स घृष्टो गन्धोऽयं द्वितीयः प्रकीर्तितः।।**
**देवदार्वगरु ब्रह्मसारसालान्तचन्दनाः। प्रियादीनां च यो दग्ध्वा गृह्यते दाहजो रसः।।**
**स दाहकर्षितो गन्धस्तृतीयः प्रकीर्तितः। स गन्धः कारवी बिल्वं गन्धिनी तिलकं तथा।।**
**प्रभृतीनां रसो योऽसौ निष्पीड्य परिगृह्यते। स संमर्दोद्भवा गन्धः संमर्दज इतीर्यते।।**
**मृगनाभिसमुद्भूतस्तत्कोशोद्भव एव च। गन्धः प्राण्यंगजः प्रोक्तो मोददः स्वर्गवासिनाम्।।**
**सर्वेषु गन्धजातेषु प्रशस्तो मलयोद्भवः। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दद्यान्मलयजं सदा।।'**

अर्थात् काली अगरु की लकड़ी का चूर्ण, काली अगरु के पत्तों का चूर्ण, सुगन्धित पुष्पों का चूर्ण तथा अन्य जो जो प्रशस्त गन्धवाले पत्तों के चूर्ण हैं वे प्रथम **चूर्णीकृत** गन्ध नाम से स्मृत हैं। चन्दन अथवा देवपुन्नाग के साथ चीड़ वृक्ष अथवा अगरु आदि की लकड़ी से जो पानी के साथ घिस-घिस कर तैयार किया गया लेप है, जिसे दूसरों को अपने शरीर में लगाने केलिये भी दिया जाता है उसे **घृष्ट** नामक दूसरा गन्ध कहा गया है। देवदारु, अगरु, पारस, पीपल, चन्दन के धड़ आदि प्रमुख अंगों को जलाकर जो रस (यानि तेल) ग्रहण किया जाता है उसे तीसरा **दाहकर्षित** गन्ध नाम से कहा जाता है। वह गन्ध जो सोंफ, बेल, तालीसपत्र, कचूरा, तिलक नाम के वृक्ष, इत्यादि सुगन्धि पेड़-पौधों के अंगों को कूटकर निचोड़ के रस निकाला जावे उस निचोड़ने पर उत्पन्न रस को चौथा **संमर्दज** नामक गन्ध

कहा जाता है। स्वर्गवासियों को भी आनन्दित करनेवाला मृग की नाभि से उत्पन्न या उसके कोश से उत्पन्न कस्तूरी आदि गन्ध पांचवां **प्राण्यंगज** गन्ध नाम से कहा गया है। इनमें से चन्दन का चूर्ण अथवा लेप ही सर्व श्रेष्ठ है इसलिये पूरा प्रयास कर के सदा पूजा/अर्चना/उपासना में चन्दन का ही प्रयोग करें। लेकिन शारदातिलक (4.79-82) में पंचगन्ध की अपेक्षा अष्टगन्ध का विधान करते हुये कहा है कि - **'गन्धाष्टकं तत्त्रिविधं शक्तिविष्णुशिवात्मकम्। चन्दनागरुकर्पूरचौरकुंकुमरोचनाः।।**

**जटामांसीकपियुताः शक्तेर्गन्धाष्टकं विदुः। चन्दनागरुह्रीवेरकुष्ठकुंकुमसंव्यकाः।।**

**जटामांसी मुरमिति विष्णोर्गन्धाष्टकं विदुः। चन्दनागरुकर्पूरतमालजलकुंकुमम्।।**

**कुशीतं कुष्ठसंयुक्तं शैवं गन्धाष्टकं विदुः।।'**

अर्थात् शक्ति, विष्णु और शिव नाम से अष्टगन्ध तीन प्रकार के होते हैं, जिनकी सामग्री इस प्रकार है-

1. **शक्ति नामक अष्टगन्ध** :- चन्दन, अगरु, कपूर, कचूर, कुंकुम, गोरोचन, जटामांसी और रक्तचन्दन।
2. **विष्णु नामक अष्टगन्ध** :- चन्दन, अगरु, ह्रीवेर, गन्धक, कुंकुम, उशीर, जटामांसी और कटहल का बीज।
3. **शिव नामक अष्टगन्ध** :- चन्दन, अगरु, कपूर, तमाल, खस, कुंकुम, कुशीत और गन्धक।

**गन्ध के अर्पण में अंगुली विचार:**

भविष्यपुराण में दूसरे को गन्ध अर्पण करने व स्वयं पर गन्ध लगाने केलिये अलग-अलग अंगुलियों का विधान इस प्रकार किया है-

**'अनामिक्या च देवस्य ऋषीणां च तथैव च। गन्धानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः।।**

**पितृणामर्पयेद्गन्धं तर्जन्या च सदैव हि। तथैव मध्यमांगुल्या धार्यो गन्धो स्वयं बुधैः।।'**

अर्थात् समस्त देवी-देवताओं को और ऋषियों (सन्त- महात्माओं) को बिना गलती किये अनामिका अंगुलि से ही गन्धानुलेपन करना चाहिये, पितरों को सदा तर्जनी अंगुलि से अर्पण करें और स्वयं पर मध्यमा अंगुलि से धारण करें।

**3.5-13 पुष्पभेद पर विचार** :- शारदातिलक (4.100-105) के अनुसार -

> **'कमले करवीरे द्वे कुमुदे तुलसीद्वयं। जातीद्वयं केतकी द्वे कह्लारं चम्पकोत्पले।।**
> **कुन्दमन्दारपुन्नागपाटलानागचम्पकम्। आरग्वधं कर्णिकारं पारन्ती नवमालिका।।**
> **सौगन्धिकं सकोरण्टं पलाशाशोकमल्लिकाः। धत्तूरं सर्जकं बिल्वमर्जुनं मुनिपत्रकम्।।**
> **अन्यानपि सुगन्धीनि पत्रपुष्पाणि देशिकैः। उपदिष्टानि पूजायामाददीत विचक्षणः।।**
> **मलिनं भूमिसंस्पृष्टं कृमिकेशादिदूषितम्। अंगस्पृष्टं समाघ्रातं त्यजेत्पर्युषितं गुरुः।।'**

अर्थात् आचार्यों के द्वारा किये गये विधान के अनुसार दो कमल, दो कनेर, दो सफेद कमल (जो रात में चन्द्रमा की किरण से खिलते हैं), दो तुलसी की मंजीर, जायफल के पेड़ के दो फूल, दो केतकी, कह्लार, चम्पा/चमेली, नीलकमल/ब्रह्मकमल, मोतिया पुष्प (कुन्द), मदार, शिवलिंगी, लाल लोध्रा/पादर का फूल, नागकेसर, आरग्वध, कनियार/अमलतास, पारन्ती, नौ परतोंवाला मोगरा, कोरण्ट, ढाक, अशोक, साधारण मोगरा, धतूर, साल, बेल के पत्ते, अर्जुन, मुनिपत्रक नाम के फूल और अन्य सब प्रकार के सुगन्धी पुष्पों और श्रेष्ठ पत्तों को पूजा में प्रयोग करना चाहिये। लेकिन मलिन, जमीन पर पड़ा हुआ, कीड़े से युक्त या छिद्र युक्त, केश आदि अपवित्र वस्तु से युक्त पत्र व पुष्प का त्याग करना चाहिये।

देवता विशेष केलिये वर्जित पुष्प आदि के विषय में मन्त्रमहोदधि (32.86-89) में इस प्रकार विधान किया है-

> **'अक्षतानर्कधत्तूरौ विष्णौ नैवार्पयेत्सुधीः। बन्धूकं केतकीं कुन्दं केशरं कुटजं जपां।।**
> **शंकरे नार्पयेविद्वान्मालतीं यूथिकामपि। शक्तौ दूर्वार्कमन्दारान्मालूरं तगरं रवौ।।**
> **विनायके तु तुलसीं नार्पयेज्जातुचिद्बुधः। पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्।।**
> **यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधोमुखम्।।'**

अर्थात् अक्षत और आक व धतूरे के फूल व पत्ते विष्णु भगवान को अर्पण न करें। बन्धूक, केतकी, कुन्द (मोतिया), बकुल के पेड़ का फूल, अगस्त्य पेड़ का फूल, जपा कुसुम, सफेद चमेली और जूही/बेला/लाल चमेली के फूल - इन्हें शंकर भगवान को अर्पण न करें। दूर्वा और आक व मदार के फूल या पत्ते देवी को अर्पण न करें। कैथ का फल/बेल का फल या पत्ते सूर्य भगवान को अर्पण न करें। भगवान गणेश को तुलसी का अर्पण कभी नहीं करना चाहिये। फूल या पत्ते सदा सीधा चढायें यानि जैसा पैदा होते हैं वैसे ही, किन्तु बेल के पत्तों को तो उल्टा रख कर ही चढ़ाना चाहिये।

**3.5-14 धूप की सामग्री** :- तन्त्रसार में कहा है कि-

**'गुग्गुलुः सरलं दारु पत्रं मलयसंभवम्। ह्रीवेरमगरुं कुष्ठगुडं सर्जरसं घनम्।।**
**हरीतकीं नखीं लाक्षां जटामांसीं च शैलजम्। षोडशांगं विदुर्धूपं दैवे पित्र्ये च कर्मणि।।'**

अर्थात् कर्मकाण्डी जानते हैं कि- गुग्गल, देवदारु, हल्दी, तेजपत्ता, चन्दन, ह्रीवेर, अगरु, गन्धक, गुड़, साल, अभ्रक, हरड़, बबूल, लाक्षा, जटामांसी और शिलाजित - इन सोलह पदार्थों से बनायी गयी धूप को देव व पितृ कर्म में प्रयोग करना चाहिये।

**3.5-15 सर्वौषधी** -

**'कुष्ठमांसी हरिद्रे द्वे मुराशैलेयचन्दनम्। वचा चम्पकमुस्ते च सर्वौषध्यो दश स्मृताः।।'**

अर्थात् कुष्ठा, जटामांसी, दो प्रकार के हरिद्रा (सामान्य हल्दी और दारुहल्दी), मुरा, शिलाजित्, चन्दन, बच, चम्पक और मुस्त - इन दस ओषधियों को सर्वौषधी कहा गया है।

**3.5-16 सप्तमृत्तिका** -

**'गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद् ह्रदगोकुलात्। मृदमानीय कुम्भेशु प्रक्षिपेच्चवत्त्वरात्तथा।।'**

अर्थात् हाथी, घोड़ा, रथ, बाम्बी, नदियों के संगम अथवा तालाब, गौशाला और चौराहा अथवा राजद्वार के मृत्तिका को कलश में डालने योग्य सप्तमञ्त्तिका कहा गया है।

**3.5-17 पंचरत्नानि -**

**'कनकं कुलिशं नीलम्पद्मरागं च मौक्तिकम्। एतानि पंचरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः।।'**

अर्थात् कनक, कुलिश, नीलम, पुखराज और मोती - इन्हें रत्नशास्त्र के वेत्ता कलश में डालने योग्य पंचरत्न कहते हैं।

**3.5-18 पंचपल्लवानि -**

**'अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पंचपत्रा इति ख्याता सर्वकर्मसु शोभनाः।।'**

अर्थात् पीपल, गूलर, पलाश, आम और वट वृक्ष के पत्तों को समस्त कर्मो में प्रयुक्त पंचपल्लव नाम से प्रसिद्ध है।

**3.5-19 रत्नमालालक्षणम् -**

**'पुष्परागम्मरकतं गरुडोद्गारमेव च। एभिस्तु ग्रथिता स्वर्णे रत्नमालेति कथ्यते।।'**

गरुडोद्गार = नीलम्। अर्थात् सोने के तार से पुखराज, पन्ना और नीलम के मणियों को ग्रथित माला को रत्नमाला कहते हैं।

**3.5-20 वस्त्रविषयकविचारः -**

**'पीतं विश्णौ सितं शम्भौ रक्तं विघ्नार्कशक्तिषु। सछिद्रं मलिनं जीर्णं त्यजेत्तैलादिदूषितम्।।**

**तैलादिदूषिताद्रोगः सछिद्राद्वाक्स्कलनं स्यात्। जीर्णाद्दरिद्रता कर्तुः मलिनात्कान्तिहीनता।।'**

अर्थात् विश्णु केलिये पीले रंग के वस्त्र को अर्पण करना चाहिये, शिव केलिये सफेद तथा गणेश, सूर्य और देवी केलिये लाल रंग के वस्त्र को ही अर्पण करना चाहिये। छिद्र युक्त, मलीन, जीण–शीर्ण व तेलादि युक्त को त्यागना चाहिये। क्योंकि तेल आदि से दूशित वस्त्र को अर्पण करने से रोग, छिद्र युक्त से वाक्स्कलन, जर्णि–शीर्ण से दरिद्रता और मलीन से कान्तिहीनता प्राप्त होगी।

**3.5–21 आवाहन पर्यन्त सर्वसामग्री आच्छादन –**

**'स्वस्य शक्त्यनुसारेण सर्वं सम्पाद्य यत्नतः। पूजाद्रव्याणि सम्प्रोक्ष्य मूलमन्त्रेण साधकः।।**
**दर्शयेद्धेनुमुद्रां च द्रव्यशुद्धिरितीरिता। नैवेद्यादिकं च यत्तु पुण्यगन्धादिकं च यत्।।**
**सर्वमाच्छादितं कार्यम्यावदावाहयेत्पराम्। राक्षसाः प्रतिगृह्णन्ति निराच्छादनकम्यतः।।'**

अर्थात् प्रयत्नपूर्वक अपने सामर्थ्य के अनुसार समस्त सामग्रियों को संग्रह कर साधक उन पूजा द्रव्यों की शुद्धि को चाहते हुये उन सब पर प्रोक्षण कर धेनु मुद्रा दर्शायें। नैवेद्य आदि सहित सुगन्धिद्रव्य आदि समस्त सामग्रियों को देवी का आवाहन काल तक ढ़क कर रखें। क्योंकि नहीं ढ़के सामग्रियों को राक्षस ग्रहण कर उन्हें उच्छिष्ट कर देते हैं।

**3.6–1 दीप विषयक विचार** :–शारदातिलक (4·107–108) में कहा है कि–

**'वर्त्या कर्पूरगर्भिण्या सर्पिषा तिलजेन वा। आरोप्य दर्शयेद्दीपानुच्चैः सौरभशालिनः।।'**

अर्थात् रुई से बनी व कपूर से युक्त बत्ती को मिट्टी से बने दीपक में सरसों अथवा तिल के तेल में रखकर चारों तरफ प्रकाश फैल सके ऐसे उच्च स्थान पर स्थापित कर देवता आदि को दर्शायें। तथा कालिकापुराण में कहा है कि–

**'न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम्। घृतेन दीपकं नित्यं तिलतैलेन वा पुनः।।**
**ज्वालयेन्मुनिशार्दूल सन्निधौ जगदीशितुः। कार्पासवर्तिका ग्राह्या न दीर्घा न च सूक्ष्मिका।।'**

अर्थात् हे मुनिश्रेष्ठ! कभी भी घी व तेल को मिलाकर दीपक न जलायें। केवल घी अथवा केवल तिल के तेल से ही दीपक को प्रज्ज्वलित कर भगवान के सामने नित्य कर्म में प्रयोग करना चाहिये। बाती रुई की ही होनी चाहिये और वह बहुत छोटी या बहुत लम्बी नहीं होनी चाहिये।

**3.6-2 दीपदिशा विचारः** - मरीचिकल्प में कहा है कि -

**'आयुर्दः प्राङ्मुखो दीपो धनदः स्यादुदङ्मुखः। प्रत्यङ्मुखो दुःखदोऽसौ हानिदो दक्षिणामुखः।।'**

अर्थात् पूर्वाभिमुख दीप आयु प्रदायक और उत्तराभिमुख धन दायक होता है। किन्तु पश्चिमाभिमुख दीप दुःखदायक और दक्षिणाभिमुख दीप हानि कारक होता है। यह विधि नित्यदीप के विषय में है, अतः कार्तवीर्यादि केलिये प्रयुक्त विशेष दीप को पश्चिमभिमुख रखा जाता है और शनि, यमराज आदि केलिये दक्षिणभिमुख रखा जाता है।

**3.7-1 नैवेद्य विषयक विचारः**- शारदातिलक (4-108-110) में नैवेद्य का लक्षण इस प्रकार है-

**'निवेदनीयं यद् द्रव्यं प्रशस्तं प्रयतं तथा। तद्भक्ष्यार्हं पंचविधं नैवेद्यमिति कथ्यते।।**

**भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं चोष्यं च पंचमम्। सर्वत्र चैतन्नैवेद्यमाराध्यास्यै निवेदयेत्।।**

**स्वादूपदंशं विमलं पायसं सह शर्करम्। कदलीफलसंयुक्तं साज्यं मन्त्री निवेदयेत्।।'**

अर्थात् अर्पण करने योग्य द्रव्य जो आराध्य देवता द्वारा ग्राह्य, श्रेष्ठ और प्रशस्त हो वह पांच प्रकार का कहा गया है- भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय और चोष्य। सब प्रकार की पूजा में देवता के समक्ष नैवेद्य को अर्पण अवश्य करना चाहिये। समस्त प्रकार के नैवेद्यों में से चीनी, घी और केले युक्त अत्यन्त स्वादिष्ट शुद्ध खीर अर्पण करना श्रेष्ठ है।

**3.7-2 नैवेद्यपात्र** के विषय में इस प्रकार विधान किया गया है-

**'तैजसेषु च पात्रेषु सौवर्णे राजते तथा। ताम्रे वा प्रस्तरे वापि पद्मपत्रेऽथवा पुनः।।**
**यज्ञदारुमये वापि नैवेद्यं स्थापयेद्बुधः। सर्वाभावे च माहेये स्वहस्तघटिते यदि।।'**

अर्थात् तैजस द्रव्य से बना हुआ जैसे कि सोना, चांदी, तांबा आदि अथवा पत्थर के बने हुये अथवा कमल के पत्तों से निर्मित पत्तल अथवा यज्ञ में प्रयुक्त पवित्र लकड़ियों से बनाये हुये पात्र में नैवेद्य को अर्पण करना चाहिये। लेकिन उक्त प्रकार के कोई भी पात्र न हो तो मिट्टी के बर्तन में भी नैवेद्य अर्पण कर सकते हैं यदि स्वयं के द्वारा निर्मित हो तो।

**3.8-1 गन्ध आदि अर्पण में मुद्रा आदि पर विचार :-**

रुद्रयामल में गन्ध आदि को अर्पण करने में प्रयुक्त मुद्रा का विधान इस प्रकार किया है-

**'मध्यमानामिकागुंष्ठैरंगुल्यग्रेण पार्वति। दद्याच्च विमलं गन्धं मूलमन्त्रेण साधकः।।**
**अंगुष्ठतर्जनीभ्यां च पुष्पं देवे निवेदयेत्। मध्यमानामिकांगुल्योर्मध्यपर्वणि देशिकः।।**
**अंगुष्ठाग्रेण देवेशि धृत्वा धूपं निवेदयेत्। उत्तोलनं द्विधा कृत्वा गायत्र्या मूलयोगतः।।**
**ततः समर्पयेद्धूपं घण्टावाद्यजयस्वनैः। न भूमौ वितरेद्धूपं नासने न घटे तथा।।**
**यथातथाधारगतं कृत्वा तं विनिवेदयेत्। तत्त्वाख्यमुद्रया देवि नैवेद्यं विनिवेदयेत्।।**
**मूलेनाचमनं दद्यात्तांबूलं तत्त्वमुद्रया। अंगुष्ठतर्जनीभ्यां तु निर्माल्यमपनोदयेत्।।'**

अर्थात् हे पार्वती ! साधक अपने सीधे हाथ के अंगूठे, मध्यमा और अनामिका अंगुलि के अग्र भाग से तत्तद्देवता के मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुये पूर्वोक्त सामग्रियों से निर्मित विशुद्ध गन्ध का अर्पण करें। उपदेश प्राप्त बुद्धिमान् साधक अंगूठे और तर्जनी के अग्र पर्व से

देवताओं को तत्तद्देवता की नामावलि के चतुर्थ्यन्त मन्त्रों से पुष्प अर्पण करें। हे देवेशी! मध्यमा और अनामिका के मध्य पर्व व अंगूठे के अग्रभाग में धूप को धारण कर तत्तद्देवता के मूलमन्त्र सहित गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जय-जय कार करते हुये घण्टा नाद के साथ अर्धचन्द्राकार में देवता के दोनों तरफ घुमाकर धूप को समर्पित करें। धूप को जमीन, आसन और घड़े पर स्थापित न करें किन्तु उस केलिये अलग से जिस किसी प्रकार का एक आधार (धूप स्टैण्ड) बनाकर उस पर स्थापित करें। तत्त्व मुद्रा (पृष्ठ संख्या 48) से (अन्यत्र धेनु मुद्रा का विधान भी है) नैवेद्य को अर्पण करें। तत्तद्देवता के मूल मन्त्र से आचमन को दें। ताम्बूल को तत्त्व मुद्रा (पृष्ठ 48) से अर्पण करना चाहिये। अंगूठे और तर्जनी से ही निर्माल्य को हटाना चाहिये।

**3.8-2** रुद्रयामल में ही गन्ध, पुष्प, आभूषण, धूप, दीप और नैवेद्य के **स्थान व दिशा** आदि के बारे में इस प्रकार विधान किया है -

**'निवेदयेत्पुरोभागे गन्धं पुष्पं च भूषणम्। दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वामतः।।**
**वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे। नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः।।**
**धूपदीपौ सुभोज्यं च देवाताग्रे निवेदयेत्। दक्षिणे च सितावर्तिं वामतो रक्तवर्तिकाम्।।'**

अर्थात् गन्ध, पुष्प और आभूषण सदा देवता के सामने से अर्पण करें। दीपक को सामने अथवा दाहिने भाग में स्थापित कर दर्शायें लेकिन भूल से भी बायें भाग में नहीं। धूप को सामने अथवा बायें भाग में स्थापित कर दर्शायें लेकिन भूल से भी दाहिने भाग में नहीं। नैवेद्य को सामने अथवा दाहिने भाग में स्थापित कर दर्शायें लेकिन भूल से भी पीछे या अन्य भाग में नहीं। भ्रमित होकर कोई गलती न हो, इसलिये सुगम यही है कि सदा धूप, दीप और नैवेद्य को सामने से ही अर्पित करें। दीपक में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि सफेद बाती हो तो उसे दाहिनी ओर रखें और लाल रंग की बाती हो तो बायीं ओर रखें।

**3.9 नीराजन** (आरती) **विषयक विचार** :- कालोत्तरतन्त्र में आरती का विधान इस प्रकार किया है-

**'पंचनीराजनं कुर्यात्प्रथमं दीपमालया। द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा।।**
**चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्। पंचमं प्रणिपातेन साष्टांगेन यथाविधिः।।'**

अर्थात् पांच प्रकार से आरती करनी चाहिये। 1. एक/तीन/पांच/यथाशक्ति बत्ती प्रज्वलित आरती,
2. जल व पुष्प युक्त आरती, 3. शुद्ध वस्त्र से आरती,
4. आम पीपल आदि पवित्र पत्तों से आरती और 5. साष्टांग दण्डवत् प्रणाम के द्वारा आरती।

**3.10 साष्टांग नमस्कार** करने की विधि निम्न प्रकार है-

**'उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टांग उच्यते।।'**

अर्थात् मन, वाणी और आंखों के द्वारा भगवान का चिन्तन, कथन और दर्शन करते हुये सिर, छाती, दोनों हाथ, दोनों घुटने और दोनों पैरों से जमीन को स्पर्श करते हुये लेटकर प्रणाम करना अष्टांग नमस्कार है।

## पूर्वकृत्यादिप्रकरणम्

**4.1 कर्माधिकारी विषयक विचार** :- वराह पुराण में सर्वकर्मोपयोगी विषयों पर विचार करते हुये कर्माधिकारी (कर्म का तात्पर्य केवल वैदिक कर्म नहीं अपितु स्मार्त कर्म, देव पूजा अर्पण, भक्ति, उपासना और स्वाध्याय भी है) का लक्षण इस प्रकार किया है -

**'सुस्नातः सम्यगाचान्तः कृतसन्ध्यादिकक्रियः। जितेन्द्रियः सत्यवादी सर्वकर्मसु शस्यते।।'**

अर्थात् शास्त्र विहित तरीके से स्नान कर स्नानांगभूत आचमनादि करके सन्ध्यावन्दन आदि नित्य कर्म से निवृत्त हुआ सत्यवादी व जितेन्द्रिय व्यक्ति ही सकल कर्म करने का अधिकारी होता है। अतः जगने से लेकर किस कम से क्या-क्या करना है सो जानें -

**4.2 कर्माधिकारित्व प्राप्ति केलिये दैनिक पूर्वकृत्य** - दक्षस्मृति में कर्म आरम्भ करने से पहले स्वयं को कर्म या उपासना का अधिकारी बनाने केलिये आवश्यक कुछ नित्य कर्तव्य के बारे में इस प्रकार कहा है -

**'प्रातरुत्थाय कर्तव्यं यद् द्विजेन दिने दिने। तत्सर्वं प्रवक्ष्यामि द्विजानामुपकारकम्।।'**

अर्थात् प्रतिदिन प्रातः उठकर द्विजों के द्वारा करने योग्य उन सकल कर्मो का कथन करूंगा जो द्विजों के उपकारक हैं। कितने बजे उठना और क्या क्या करना चाहिये इत्यादि प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार दिये हैं- ब्रह्म मुहूर्त में उठकर बिस्तर पर बैठे हुये ही अपने कर कमलों को देखते हुये निम्न मन्त्र का पाठ करें-

**'कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्द प्रभाते करदर्शनम्।।'**

अर्थात् भावना करें कि हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी विराजमान है, मध्य भाग में सरस्वती और मूलभाग में गोविन्द भगवान हैं - यह प्रातःकालीन करदर्शन है। तत्पश्चात् बिस्तर पर बैठे हुये ही जमीन को स्पर्श कर निम्न मन्त्र का पाठ करें-

**'समुद्रवसने देवी पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।'**

अर्थात् हे माते! पर्वत हैं स्तन मण्डल जिनका, समुद्र में वास कर रही हैं जो और विष्णु की पत्नी हैं जो ऐसे आपको मैं नमस्कार करता हूं। आप मेरे पैरों के स्पर्श (चलने-फिरने से जो आघात होता है उस केलिये) क्षमा करें।

**'ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय परं ब्रह्म विचिन्तयेत्। ततो व्रजेन्नैर्ऋताशां बृहत्सोदकभाजनः।।**
**दिवासंध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः। अन्तर्धाय तृणं भूमिं शिरः प्रावृत्य वाससा।।**
**वक्त्रान्नियम्य यत्नेन नोष्ठीवेन्नोच्छ्वसेदपि। कुर्यान्मूत्रं पुरीषं च रात्रौ चेद्दक्षिणामुखः।।**
**छायायामन्धकारे वा रात्रावहनि वा द्विजः। यथासुखं प्रकुर्वीत प्राणबाधाभयेषु च।।**
**गृहीतशिश्नश्चोत्थाय गृहीतशुचिमृत्तिकः। गन्धलेपक्षयकरं शौचं कुर्यादतन्द्रितः।।'**

अर्थात् ब्रह्ममुहूर्त (यानि सूर्योदय से पूर्व 4.30 बजे से 5.15 बजे) में उठकर परब्रह्म परमात्मा का चिन्तन करें। तत्पश्चात् एक बड़े लोटे में जल लेकर कान पर यज्ञोपवीत (जनेउ) को लपेटकर सिर को कपड़े से ढ़क के नैऋत्यदिशा (दक्षिण पश्चिम के बीच की दिशा) की ओर जा कर दिन के संन्ध्या काल में हो तो उत्तर दिशा की ओर मुख कर घास अथवा अन्य पेड़-पौधे की आड़ में उकड़ू बैठकर मल मूत्र को त्यागना चाहिये। मल मूत्र त्यागते वक्त वाणी आदि इन्द्रियों को संयमित रखते हुये न थूकें और न ही श्वसन क्रिया करें। रात्री में यदि मल मूत्र त्यागना पड़े तो दक्षिण की ओर मुख कर उकड़ू बैठके त्यागें। प्राण बाधा (आपात समय), भय, छाया और घोर अन्ध कार में, चाहे दिन हो या रात, अपनी सुविधा के अनुसार मल मूत्र त्याग कर सकते हैं (अर्थात् कोई नियम नही और कोई दोष नही)। मल मूत्र त्यागने के बाद गुप्तेन्द्रिय को पकड़े हुये उठे तत्पश्चात् शुद्ध मिट्टी (मुल्तानी मिट्टी) को हाथ में लेकर विना आलस्य के विधि के अनुसार हाथ आदि को शुद्ध कर लें। हाथ आदि को शुद्ध करने की विधि मनु स्मृति आदि ग्रन्थों में इस प्रकार बतायी गयी है-

**'एका लिंगे गुदे पंच त्रिर्वामे दश चोभयोः। द्विसप्त पादयोश्चैव गार्हस्थ्यं शौचमुच्यते।।**
**ततः षोडश गण्डूषान्प्रकुर्याद्द्वादशैव वा। मूत्रोत्सर्गे तु गण्डूषानष्टौ वा चतुरो गृही।।'**

अर्थात् गुप्तेन्द्रिय पर एक बार, गुदा पर पांच बार, बायें हाथ पर तीन बार, दोनों हाथ पर दस बार और चौदह बार दोनों पैर पर मिट्टी लगाकर धोवें, उसके बाद बारह अथवा सोलह बार कुल्ला करें और केवल मूत्र मात्र का त्याग किया है तो चार या आठ बार कुल्ला करें- यह गृहस्थों केलिये नियम है। इसका दो गुणा ब्रह्मचारी, तीन गुणा वानप्रस्थी और चार गुणा हंस पर्यन्त संन्यासी को करना चाहिये। परमहंस आदि को कोई नियम नहीं है। उसके बाद नित्य स्नान करना है जिसका विधान इस प्रकार है-

**'आचम्य प्रयतः सम्यक् प्रातः स्नानं समाचरेत्। स्नानादनन्तरं तावत्तर्पयेत्तीर्थदेवताः।।**
**समुद्रगनदीस्नानमुत्तमं परिकीर्तितम्। वापीकूपतडागेषु मध्यमं कथितं बुधैः।।**
**गृहे स्नानं तु सामान्यं गृहस्थस्य प्रकीर्तितम्।।'**

अर्थात् आचमन करके प्रयत्नपूर्वक बहुत अच्छी तरह स्नान करना चाहिये (जल्दबाजी में नहीं)। विद्वानों ने गृहस्थों केलिये समुद्र में विलीन होनेवाली नदी (गंगा, नर्मदा, कृष्णा, कावेरी आदि) में स्नान करना श्रेष्ठ; यमुना, गोदावरी, सरस्वती, गण्डकी आदि नदियां जो गंगा आदि में विलीन होती हैं उनमें स्नान करना मध्यम है तथा बड़ा कुआं, छोटा कुआं और तालाब में स्नान करना मध्यम; घर में निर्मित स्नानघर में स्नान करना सामान्य कहा है। यह नियम अन्य सभी केलिये भी समान ही है। घर में स्नान करने केलिये यह विशेष विधि है- सर्वप्रथम बाल्टी अथवा किसी बर्तन में पानी ग्रहण कर उसमें निम्न मन्त्र बोलते हुये आवाहनी मुद्रा से श्रेष्ठ व पवित्र नदियों का आवाहन करें-

**'गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।'**

तत्पश्चात् थोड़ा जल लोटे में लेकर जिस पाटे पर बैठके स्नान करना है उसपर और स्वयं पर छिड़कते हुये निम्न मन्त्र को बोलें-

**'अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपि वा। यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।**
**पुंडरीकाक्षः पुनातु, पुंडरीकाक्षः पुनातु, पुंडरीकाक्षः पुनातु।।'**

पाटे पर बैठके भगवन्नाम स्मरण करते हुये स्नान करें। स्नान करने के बाद स्नानांग तर्पण नदी/तालाब/कुआं/स्नानघर में ही करें। तत्पश्चात् अपने वर्ण व आश्रम के अनुसार वस्त्र पहनें। जैसे कि मार्कण्डेय पुराण में कहा है-

**'ततश्च वाससी शुद्धे शुक्ले च परिधाय च। उत्तरीयं सदा धार्यं द्विजन्मना विजानता।।**
**उपविश्य शुचौ देशे प्राङ्मुखो वा उदङ्मुखः। भूत्वा बद्धशिखः कुर्यादन्तर्जानुभुजद्वयम्।।**
**सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रन्तु भुक्त्वोच्छिष्टं तु वर्जयेत्।।**
**कुशपाणिः सदा तिष्ठेद् ब्राह्मणो दम्भवर्जितः। स नित्यं हन्ति पापानि तूलराशिरिवानलः।।'**

अर्थात् स्नान क्रिया के पश्चात् शुद्ध व शुक्ल यानि पवित्र कपड़े पहनें, ब्राह्मण आदि सभी वैदिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुये उत्तरीय वस्त्र अवश्य धारण करें (छाती व कन्धा खुला न रहे, ढकें)। उसके बाद शिखा को बांधकर शुद्ध स्थान में पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर सुखासन, सिद्धासन आदि किसी भी आसन में बैठें। कुशापाणि होकर(कुशा से बनी हुई पवित्री को धारण कर) आचमन करें। एक ही पवित्री को बार बार प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि वह कभी अपवित्र (उच्छिष्ट) नहीं होती किन्तु पवित्री पहने हुये यदि भोजन किया है तो उस पवित्री का पुनः प्रयोग नही किया जा सकता। विना कुशा से निर्मित पवित्री पहने कर्म नहीं करना चाहिये। ढोंग को त्यागकर ब्राह्मण आदि को सदा कुशा निर्मित पवित्री पहने रहना चाहिये क्योंकि आग जैसे अनायास ही रूई को जलाती है वैसे वह (पवित्री) नित्य ही समस्त पापों को नष्ट कर देती है। तत्पश्चात् संन्ध्या करके पूजा करें।

**4.3 कूर्मचक्र विधान :-**

मन्दिर, घर, आदि किसी भी स्थान में कर्म या उपासना करने केलिये कूर्म चक्र पर दीप को स्थापित करने का विधान है। अतः कूर्मचक्र /कूर्मयन्त्र को जानना जरूरी है। शारदातिलक में कहा है-

**'दीपस्थानं समाश्रित्य कृतं कर्म फलप्रदं। चतुरस्रां भुवं भित्त्वा कोष्ठानां नवके लिखेत्।।**
**पूर्वकोष्ठादि विलिखेत्सप्त वर्गाननुक्रमात्। लक्षावीशे मध्यकोष्ठे स्वरान्युग्मक्रमाल्लिखेत्।।**
**दिक्षु पूर्वादितो यत्र ग्रामस्याद्यक्षरं भवेत्। मुखं तत्तस्य जानीयाद्धस्तावुभयतः स्थितौ।।**
**कोष्ठे कुक्षी उभे पादौ द्वि शिष्टं पुच्छमीरितम्। क्रमेणानेन विभजेन्मध्यस्थमपि भागतः।।'**

अर्थात् दीप को विशेष स्थान में स्थापित कर किया गया कर्म ही फल देता है। इसलिये कूर्मचक्र/कूर्मयन्त्र का निर्माण कर उस पर दीपक को स्थापित करना श्रेष्ठ कहा गया है।

चित्र संख्या 2

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 8. ईशान **ल क्ष** | 1. पूर्व **क ख ग घ ङ** | | | 2. आग्नेय **च छ ज झ ञ** |
| 7. उत्तर **श ष स ह** | 16. **अं अः** | 9. **अ आ** | 10. **इ ई** | 3. दक्षिणा **ट ठ ड ढ ण** |
| | 15. **ओ औ** | | 11. **उ ऊ** | |
| | 14. **ए ऐ** | 13. **लृ लॄ** | 14. **ऋ ॠ** | |
| 6. वायव्य **य व र** | 5. पश्चिम **प फ ब भ म** | | | 4. नैऋत्य **त थ द ध न** |

कूर्मचक्र को निम्न प्रकार से बनाना है– जिस गांव/शहर में आप रहकर अनुष्ठान करना चाहते हैं उसके नाम का पहला अक्षर जिस कोष्ठक में है उस कोष्ठक में कूर्म के मुख की भावना करें, जैसे कोई दिल्ली में अनुष्ठान करता है तो 4 संख्या कोष्ठक में मुख की भावना करें। उस 4 संख्या कोष्ठक के दाहिने बाये कोष्ठकों में यानि 3 व 5 में कूर्म के दोनों हाथों की यानि क्रमशः दाहिने व बायें हाथ की भावना करें। 6 व 2 में दोनों बगल की भावना करें। 7 व 1 में दोनों पैर की भावना करें। 8 में पूँछ की भावना करें और मध्य भाग में पेट की भावना करें। इसी प्रकार मध्य भाग (10 से 16) में स्थित अक्षरों से आरभ कर गांव के नाम के बारे में भी समझ लेना चाहिये। इस प्रकार की भावना से निर्मित कूर्म की पीठ पर दीपक को स्थापित करना चाहिये। अथवा अनुष्ठान कर्ता या जापक के नाम के पहले अक्षर से भी कूर्म को देख सकते हैं, जैसे कि तन्त्रराज में कहा है–

**'क्षेत्राधिपस्य नाम्ना हि दीपस्थानं विचारयेत्। दीपस्थाने जपं कुर्याद्धोमादस्य फलं लभेत्।।**
**कूर्मस्थितिं विज्ञाय यो वै जपेदवधिस्थितः। स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति वै।।'**

क्षेत्राधिप यानि यजमान जो अनुष्ठान करना चाहता है अथवा जो जप करता है, उसके नाम के पहले अक्षर से भी कूर्म का विचार करें। उक्त प्रकार से निश्चित दीपस्थान यानि कूर्म चिन्तन कर स्थापित दीप के समक्ष बैठकर जप करके हवन करने से ही फल प्राप्त होता है। अन्यथा कर्म का नाश हो जायेगा।

**4.4 गौरीतिलकमण्डल का निर्माण** :- व्रतराज में कहा है कि -

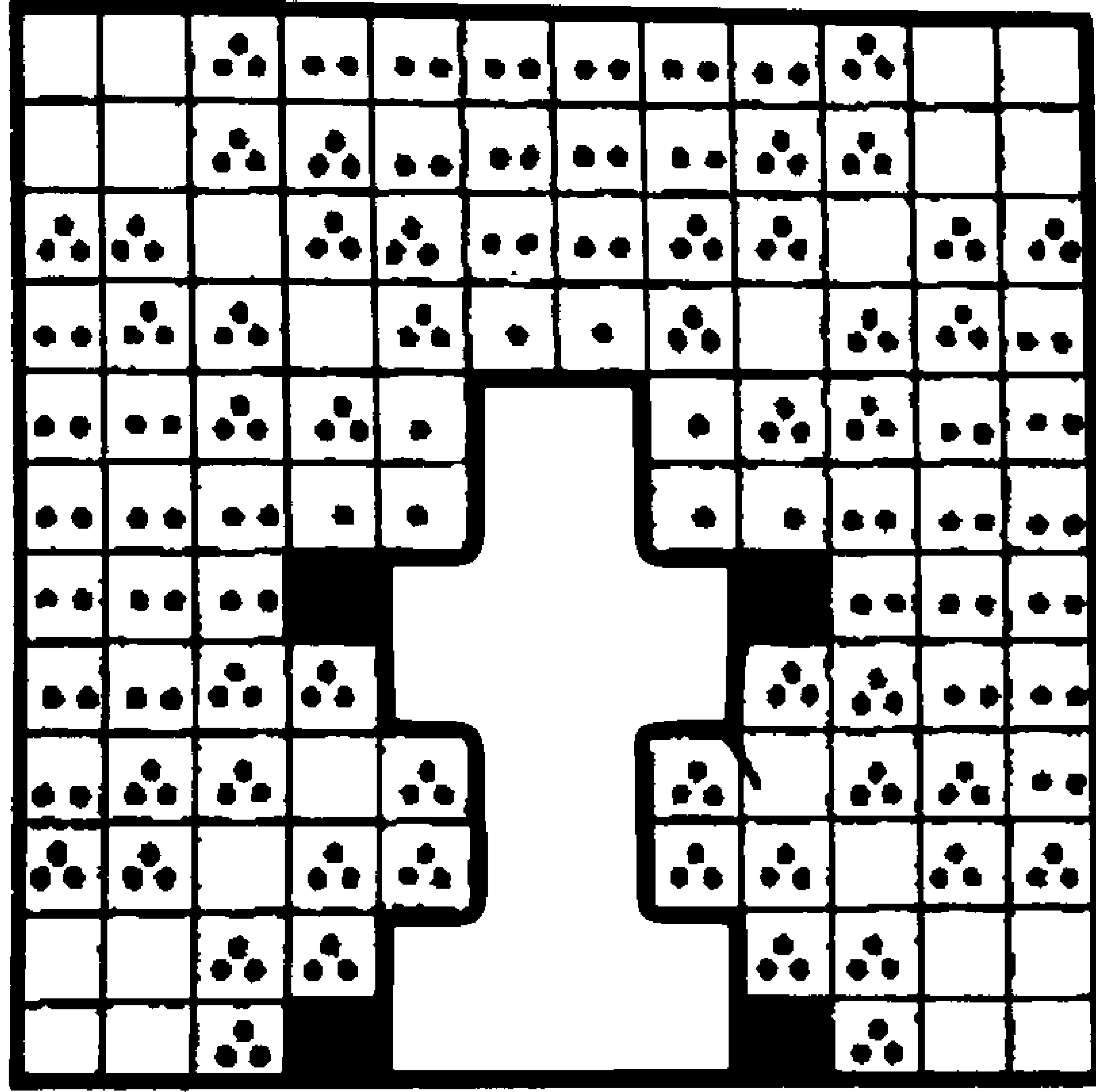
**'गणपतिव्रते प्रोक्तं भद्रं वैनायकाभिधं। देव्या व्रते गौरीभद्रं सूर्ये सूर्यस्य मण्डलम्।।**
**शैवे च लिंगतोभद्रं सर्वतोभद्रकं हरेः। स्वस्वभद्रालाभके तु कार्यं वै हरिमण्डलम्।।'**

अर्थात् गणेशजी के व्रत आदि अनुष्ठान में विनायकभद्रमण्डल का निर्माण कर पूजा करनी चाहिये। देवी के व्रत आदि में गौरीभद्रमण्डल, सूर्य के व्रत आदि में सूर्यभद्रमण्डल, शिवजी के व्रत आदि में चार/आठ/बारह लिंगतोभद्रमण्डल और विष्णु के व्रत आदि में सर्वतोभद्र मण्डल के निर्माण का विधान है। तत्तद्देवता के भद्रमण्डल प्राप्त न हो (बना न सके) तब सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण करना चाहिये। प्रस्तुत ग्रन्थ देवी से संबंधित होने से यहां हम रुद्रयामल में वर्णित गौरीभद्रमण्डल जिसे गौरीतिलकमण्डल और एकलिंगतोभद्रमण्डल नाम से भी जाना जाता है को दर्शा रहे हैं (रुद्रयामल 132-135) -

**'तिर्यगूर्ध्वगता रेखाः कार्यास्स्निग्धास्त्रयोदश। कोणेन्दुस्त्रिपदः कार्यश्शृंखलास्त्रिपदास्स्मृताः।।**
**वल्ली तु त्रिपदा नीला भद्रं रक्तं प्रकल्पयेत्। पदैर्द्वादशभिः स्पष्टमुत्तरे पूर्वदक्षिणे।।**
**पश्चिमायां महारुद्रमष्टाविंशतिकोष्ठकैः। लिंगपार्श्वे तथा मूर्ध्नि अष्टौ कोष्ठाः सुपीतकाः।।**
**लिंगमेकं तथा गौर्यास्तिस्रः स्युरत्र मण्डले। पूजयेन्मण्डलं चैतत्तस्य गौरी प्रसीदति।।'**

इस मण्डल को चित्र से स्पष्ट कर दिया गया है, कृपया चित्र संख्या 3 क व चित्र संख्या 3 ख को देखें।

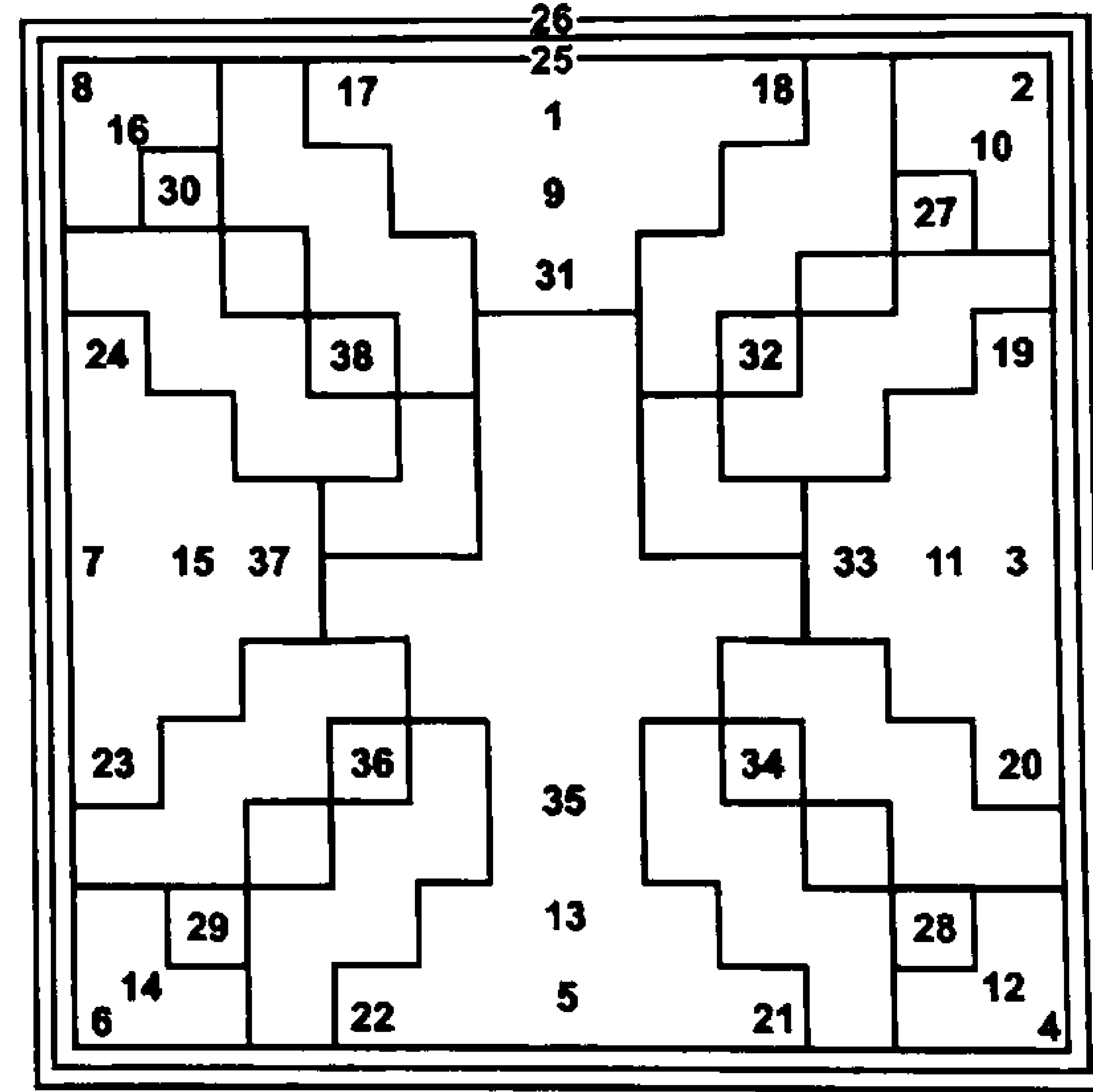
**गौरीतिलकमण्डलम् = एकलिंगतोभद्रम्**



• - 8 पीला, •• - 36 लाल, ∴ - 48 नीला।

चित्र संख्या 3 क

**गौरीतिलकमण्डलम् = एकलिंगतोभद्रम्**




चित्र संख्या 3 ख

4.5 <u>**विशेष ज्ञातव्य**</u> – वैदिक पद्धति के अनुसार किसी भी कर्म को आरम्भ करने का क्रम यह है:–

1. सर्वप्रथम कर्मस्थान की **दिशा** व कर्मानुसार किस **दिशा** की ओर मुख करके बैठना है यह तय कर लें।
2. कर्म के अनुसार कौन सा **आसन** प्रयोग करना है व किस **आसन** में बैठना है यह तय कर लें।
3. कर्म के अनुसार **पत्नी को दाहिने या बायें** में बैठाना है यह तय करें। 4. तत्पश्चात् **आचमन** करना है।

5. तदनन्तर **प्राणायाम** करें। 6. पुनः पूर्ववत् **आचमन** करें। 7. **पवित्र धारण** करें। 8. **शरीर शुद्धि** करें। 9. **दिग्रक्षण**। 10. **पृथ्वी (भूमि) पूजन**। 11. **दीपकपूजन**। 12. **शंखपूजन**। 13. **घण्टीपूजन**। 14. **यजमान तिलक**। 15. **शान्तिपाठ**। 16. **कर्मपात्र पूजन**। 17. **सूर्यार्घ्यः**। 18. **सूर्यनमस्कारः**। 19. **प्रधान संकल्पः**। इन्हें कर्म का पूर्वांग कहा जाता है। इनको करने के बाद ही मुख्य कर्म (यानि जिस विशेष कर्म को करना चाहते हैं उस कर्म) को शुरु किया जाता है।

**4.6 पत्नी दाहिनी/बायीं ओर बिठाने पर विचार** – धर्मप्रवृत्ति नामक ग्रन्थ में कहा है –

**'व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थीसहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।।**
**सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः।।'**

अर्थात् व्रतबन्ध, विवाह, चतुर्थी संस्कार, सह भोजन, ब्रत, दान, याग व हवन और श्राद्ध – इन कर्मो में पत्नी दाहिनी तरफ बैठेगी। सामान्यतः सभी धर्म कार्यो में पत्नी का दाहिने बैठना ही शुभ है किन्तु अभिषेक कर्म और ब्राह्मण आदि श्रेष्ठ व ज्येष्ठ के पाद प्रक्षालन कर्म में बायीं ओर बैठना चाहिये। कात्यायन 4.7.19 में कहते हैं –

**'जातके नामके चैव ह्यन्नप्राशनकर्मणि। तथा निष्क्रमणे चैव पत्नी पुत्रश्च दक्षिणे।।**
**गर्भाधाने पुंसवने सीमन्तोन्नयने तथा। वधूप्रवेशने चैव पुनः सन्धान एव च।।**
**प्रदाने मधुपर्कस्य कन्यादाने तथैव च। कर्मस्वेतेषु भार्या वै दक्षिणे तूपवेशयेत्।।'**

अर्थात् जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, और निष्क्रमण कर्म में पत्नी एवं पुत्र दाहिनी तरफ बैठें। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, वधूप्रवेश, द्विरागमन, मधुपर्क दान और कन्या दान इन कर्मो में पत्नी दाहिनी तरफ बैठें। किन्तु संस्कारगणपति में कहा गया है –

**'वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।।**
**वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितृणां पादशौचने। रथारोहणकाले च ऋतुकाले सदा भवेत्।।**
**विप्रक्षत्रियविट्शूद्रैः स्त्रीरहितैश्च स्यात्क्रमात्। कुशहेमरौप्यसृष्टा ताम्रा च धर्माय भार्या।।'**

अर्थात् सिन्दूर दान, द्विरागमन, भोजन, एक शय्या पर शयन, पितरों के पाद प्रक्षालन, रथारोहण और ऋतुकाल में प्रियार्थी पत्नी पति के बाये भाग में होनी चाहिये। जिसके पत्नी नहीं है (अर्थात् मृत, त्यक्त, रजस्वला, रुग्ण और अन्य किसी कारण से कर्म करने में असमर्थ हो तो) ब्राह्मण हो तो कुश की, क्षत्रिय हो तो सोने की, वैश्य हो तो चांदी की और शूद्र हो तो तांबे की अपनी पत्नी के सदृश मूर्ति बनवाकर धार्मिक कर्म केलिये प्रयोग कर सकते हैं।

**4.7 ॐ के उच्चारण पर विचार** छन्दोगपरिशिष्ट में इस प्रकार व्यक्त किया गया है –

**'ॐकारपूर्वं हि योगोपासनं यानि नित्यानि पुण्यतमानि कर्माणि दानयज्ञतपःस्वाध्यायजपध्यानसन्ध्योपासनप्राणायामहोमदैवपैत्र्य मन्त्रोच्चारब्रह्मारम्भादीनि यच्चान्यत्किंचिच्छ्रेयस्तत्सर्वं प्रणवमुच्चार्य प्रवर्तयेत्समापयेच्च। स्वरितोदात्त एकाक्षर ॐकारो ऋग्वेदे। सर्वोदात्त एकाक्षर ॐकारो यजुर्वेदे। दीर्घोदात्त एकाक्षर ॐकारः साम्नि। संक्षिप्तोदात्त एकाक्षर ॐकारोऽथर्वणवेदे।।'**

अर्थात् जिसलिये ॐकार पूर्वक योगसाधना, समस्त नित्य पुण्यकर्म, दान, यज्ञ, जप, तप, स्वाध्याय, ध्यान, सन्ध्योपासना, प्राणायाम, होम, देवता पूजन, पितृकर्म, किसी भी मन्त्र का उच्चारण, वेदपाठ का आरम्भ आदि शुभ कर्मो को तथा अन्य जो कुछ भी कल्याणकारी कर्म किये जाने पर शुभ होते हैं इसलिये उन सब को ॐ के उच्चारण से आरम्भ कर ॐ के उच्चारण से ही समाप्त करें। किन्तु स्वर का ध्यान रखना है क्योंकि ऋग्वेदीय ॐ स्वरितोदात्त है, यजुर्वेदीय ॐ सर्वोदात्त है, सामवेदीय ॐ दीर्घोदात्त और अथर्ववेदीय ॐ ह्रस्वोदात्त है। बौधायन ने कहा है –

**'अपि वा प्रणवमेव त्रिरन्तर्जले पठन्सर्वपापात्प्रमुच्यते सर्वपापात्पूतो भवति।'**

अर्थात् स्नानार्थ जल में डूबे हुये तीन बार ॐ का उच्चारण करे तो वह सब पापों से मुक्त होकर अत्यन्त पवित्र हो जाता है।

**तथा योगीयाज्ञवल्क्य ने कहा है –**

**'माङ्गल्यं पावनं धर्म्यं सर्वकामप्रसाधनम्। ॐकारं परमं ब्रह्म सर्वमन्त्रेषु नायकम्।।**
**आद्यं मन्त्राक्षरं ब्रह्म त्रयी यस्मिन् प्रतिष्ठिता। सर्वमन्त्रप्रयोगेषु ओमित्यादौ प्रयुज्यते।।**
**तेन संपरिपूर्णानि यथोक्तानि भवन्ति हि। सर्वमन्त्राधियज्ञेन ॐकारेण न संशयः।।'**

अर्थात् ॐकार मंगलमय, पावन, धर्मस्वरूप, सर्वकाम प्रदायक, परम ब्रह्म, सभी मन्त्रों का नायक और आद्य मन्त्राक्षर है जिसमें तीनों वेद प्रतिष्ठित हैं , इसलिये सभी मन्त्रों के प्रयोग के शुरु में ॐ का प्रयोग होता है। उन सभी मन्त्रों के अधियज्ञरूप ॐकार से ही यथोक्त सभी मन्त्र पूर्णता को प्राप्त होते हैं।

**4.8-1 आचमन पर विचार** – विश्वामित्रकल्प में कहा गया है –

**'शुद्धं स्मार्तं तथा चैव पौराणं वैदिकं तथा। तान्त्रिकं श्रौतस्मार्तं च षड्विधं श्रुतिनोदितम्।।'**

अर्थात् श्रुति यानि वेदों में कहे गये आचमन छः प्रकार के हैं – शुद्ध, स्मार्त, पौराणिक, वैदिक, तान्त्रिक और श्रौतस्मार्त।

**'विण्मूत्रादिकशौचेषु शुद्धं च परिकीर्तितम्। स्मार्तं पौराणिकं कर्मण्याचमेद्विधिपूर्वकम्।।**
**वैदिकं श्रौतस्मार्तं च ब्रह्मयज्ञादिपूर्वकम्। अस्त्रविद्यादिकार्याणां तान्त्रिको विधिरुच्यते।।'**

अर्थात् मल-मूत्र त्याग आदि कर्म केलिये शुद्ध आचमन, सामान्य पुण्य कर्म में स्मार्त व पौराणिक आचमन, स्वाध्याय आदि वैदिक कर्म में वैदिक व श्रौतस्मार्त आचमन और अस्त्रविद्या आदि कर्म में तान्त्रिक आचमन का प्रयोग करें।

1. श्रौत (वैदिक) आचमन क्या है, आह्निककारिका में कहा है -

**'प्रणवं पूर्वमुच्चार्य सावित्रीं तदनन्तरम्। तथैव व्याहृतीस्तिस्रः श्रौताचमनमुच्यते।।'**

अर्थात् पहले ॐ का उच्चारण करके व्याहृतियों को व्यस्त व समस्त रूप से क्रमशः उच्चारण कर गायत्री मन्त्र का उच्चारण करना श्रौत आचमन है। **'ॐ भूः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा, ॐ भुवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा, ॐ स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा** - तीन बार पीयें, **ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा** - हस्तप्रक्षालन करें।

2. स्मार्त आचमन क्या है, भरद्वाजस्मृति में कहा है -

**'केशवाद्यैस्त्रिभिः पीत्वा द्वाभ्यां प्रक्षालयेत्करौ। द्वाभ्यामोष्ठौ तु संमृज्य द्वाभ्यामुन्मार्जनं तथा।।**
**एकेन हस्तौ प्रक्षाल्य पादावपि तथैव च। सम्प्रोक्ष्यैकेन मूर्धानं ततः संकर्षणादिभिः।।**
**आस्यनासाक्षिकर्णौ च नाभ्युरस्कं भुजौ क्रमात्। एवमाचमनं कृत्वा साक्षान्नारायणो भवेत्।।'**

अर्थात् **ॐ केशवाय नमः स्वाहा, ॐ नारायणाय नमः स्वाहा, ॐ माधवाय नमः स्वाहा** - तीन बार पीयें, **ॐ गोविन्दाय नमः** - दाहिना हाथ धोवें, **ॐ विष्णवे नमः** - बायां हाथ धोवें, **ॐ मधुसूदनाय नमः** - ऊपर के ओंठ पर प्रोक्षण करें, **ॐ त्रिविक्रमाय नमः** - निचले ओंठ पर प्रोक्षण करें, **ॐ वामनाय नमः** और **ॐ श्रीधराय नमः** - उन्मार्जन करें, **ॐ हृषीकेशाय नमः** - दोनों हाथ धोवें, **ॐ पद्मनाभाय नमः** - दोनों पैर धोवें, **ॐ दामोदराय नमः** - सिर पर प्रोक्षण करें, **ॐ संकर्षणाय नमः** - मुख प्रक्षालन करें, **ॐ वासुदेवाय नमः** - दक्षिण नासा पुट का स्पर्श करें, **ॐ प्रद्युम्नाय नमः** - बायें नासापुट का स्पर्श करें, **ॐ अनिरुद्धाय नमः** - दाहिनी आंख का स्पर्श करें, **ॐ पुरुषोत्तमाय नमः** - बायीं आंख का स्पर्श करें, **ॐ अधोक्षजाय नमः** - दाहिने कान का स्पर्श करें, **ॐ नारसिंहाय नमः** - बायें कान का स्पर्श करें, **ॐ अच्युताय नमः** - नाभि का स्पर्श करें, **ॐ जनार्दनाय नमः** - हृदय का स्पर्श

करें, **ॐ उपेन्द्राय नमः** – मस्तक का स्पर्श करें, **ॐ हरये नमः** – दाहिनी बाहु का स्पर्श करें, **ॐ श्री कृष्णाय नमः** – बायी बाहु का स्पर्श करें, **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** – शरीर के चारों तरफ प्रदक्षिणा के क्रम से जल छिड़कें।

3. तान्त्रिक (आगमिक) आचमन क्या है, देवीरहस्य के अनुसार – '**ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा** – तीन बार पीये। हस्तप्रक्षालन करें – **ॐ सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।**'

4. पौराणिक आचमन – '**केशवादिभिः नामभिः कुर्यादाचमनं चैव। तच्च पौराणिकं स्मृतं।**'

अर्थात् **ॐ केशवाय नमः स्वाहा, ॐ नारायणाय नमः स्वाहा, ॐ माधवाय नमः स्वाहा** – तीन बार पीयें, **ॐ ऋषीकेशाय नमः** – हस्तप्रक्षालन करें।

5. शुद्ध आचमन – लोक प्रसिद्धि के अनुसार इस प्रकार है – '**ॐ ऋग्वेदाय नमः, ॐ यजुर्वेदाय नमः, ॐ सामवेदाय नमः** – तीन बार जल पीयें, **ॐ अथर्ववेदाय नमः** – हस्तप्रक्षालन करें।

किन्तु वृद्धपाराशर में 3 प्रकार का ही आचमन कहा गया है – '**त्रिधा आचमनं प्रोक्तं श्रौतस्मार्तपुराणतः।**'

अर्थात् तीन प्रकार का आचमन कहा गया है – श्रौत, स्मार्त और पौराणिक।

**4.8-2 आचमन कब - कब करें** :- वृद्धपाराशर में कहा है –

'**ब्रह्मयज्ञादिक कुर्याच्छ्रुतेराचमनं।।**

**सन्ध्यायां कर्मकाले च स्मृतेराचमनं स्मृतम्। शौचाचारे चान्यं याने स्पृष्टास्पृष्टे च चर्वणे।।**'

अर्थात् वेदों का अध्ययन आदि श्रौत शुभकर्म में श्रौत आचमन, सन्ध्यावन्दन आदि स्मार्त शुभकर्म में स्मार्त आचमन और शौच आचरण आदि व्यावहारिक कर्म में पौराणिक आचमन करना चाहिये। देवलस्मृति में कहा है –

**'रेतोमूत्रशकृन्मोक्षे भोजने च परिक्षये। उच्छिष्टं मानवं स्पृष्ट्वा भोज्यं चापि तथाविधम्।।'**

अर्थात् स्वप्नदोष होने पर तथा मल व मूत्र त्याग करने पर, भोजनकी समाप्ति होने पर, अछूत मनुष्य व झूठे अन्नादि का स्पर्श करने पर आचमन करना चाहिये। बार्हस्पतस्मृति में कहा है –

**'अधोवायुसमुत्सर्गे आक्रन्दे क्रोधसम्भवे। मार्जारमूषकस्पर्शे प्रहासेऽनृतभाषणे।।**
**निमित्तेष्वेषु धर्मार्थं कर्मकुर्वन्नुपस्पृशेत्।'**

अर्थात् धार्मिक कर्म करते वक्त इन निमित्तों की उपस्थिति में यानि अपान वायु का त्याग करने पर, रोने पर, क्रोध करने पर, बिल्ली व चूहे को स्पर्श करने पर, फालतु हँसने और झूठ बोलने पर आचमन अवश्य करना चाहिये अपनी शुद्धि केलिये।

आपस्तम्ब ने कहा है –

**'मूत्रपुरीषान्नलेपान्नशेषलेपा रेतसश्च यो लेपस्तान्प्रक्षाल्य पादौ चाचम्य प्रयतो भवेत्।।'**

अर्थात् मूत्र, मल, अन्न, अन्नशेष, वीर्यादि के शरीर पर लगने से उन्हें ओर पैर को धोकर आचमन करने से ही व्यक्ति शुद्ध होता है।

**4.8–3 आचमन कैसे करें** – आचमन दो प्रकार से करने की प्रामाणिक परम्परा है।

1. **'दक्षिणेनोदकं पेयं दक्षं वामेन संस्पृशेत्। तावन्न शुद्ध्यते वारि यावद्वामो न युज्यते।।**
**गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत्। आचमनं च तत्प्रोक्तं सर्वकर्मसु पावनम्।।'**

अर्थात् बाये हाथ से दाहिने हाथ (हाथ के कुहनी, करपृष्ठ, आदि किसी भी शुद्ध भाग) का स्पर्श किये हुये ही जल ग्रहण करें, क्योंकि तब तक जल शुद्ध नहीं होता जब तक बायें हाथ से दाहिने हाथ का स्पर्श नहीं होता। एक माष (उड़द के एक दाने) के वजन बराबर वजन जल को गौ के कान के आकार में धारित अंजलि में डालकर कायतीर्थ से मन्त्र पूर्वक ही आचमन करना चाहिये। अथवा

2. **'संहतांगुलिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः। मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन शेषेणाचमने चरेत्।।'**

अर्थात् अंगूठा और कनिष्ठिका को सीधे रखते हुये शेष अंगुलियों को थोड़ा अन्दर की ओर मोड़ कर उसमें जल को ग्रहण कर आचमन करें। स्त्रियां आचमन कैसे करें - **'आचमनस्थाने उदकेन नेत्रस्पर्शमाचरेत्।'** अर्थात् स्त्रियों को यदि आचमन करने का प्रसंग आये तो वे जल न पियें किन्तु जल से नेत्रों का स्पर्श मात्र करें।

**4.9 ऋषिछन्दादि पर विचार :-** व्यासस्मृति में कहा है -

**'अविदित्वा ऋषिं छन्दो दैवतं योगमेव च। योऽध्यापयेद्याजयेद्वा पापीयान् जायते तु सः।।'**

अर्थात् ऋषि, छन्द, देवता और विनियोग न जानते हुये जो पढ़ता व पढ़ाता है और याग करता व कराता है वह अत्यन्त पापी अवश्य हो जायेगा। योगीयाज्ञवल्क्य ने मन्त्र के **ऋषि** के निर्णय के बारे में कहा है -

**'येन यो ऋषिणा दृष्टो मन्त्रः सिद्धिश्च तेन वै। मन्त्रेण तस्य स प्रोक्त ऋषिभावस्तदात्मकः।।'**

अर्थात् जो मन्त्र जिस ऋषि के द्वारा देखा गया यानि ध्यान काल में भगवत्कृपा से हृदय में अनुभव किया गया व उस मन्त्र का प्रयोग कर सिद्ध कर लिया गया उस ऋषि की उस मन्त्र के ऋषि के रूप में भावना करनी चाहिये। तथा अन्य ग्रन्थ में मन्त्र के **छन्द** के बारे में कहा है -

**'छादनाच्छन्द उद्दिष्टं वाससी वाऽथवा कृते। आत्मा तु छादितो देवि मृत्योर्भीतैस्तु वै पुरा।।**
**आदित्यैर्वसुभी रुद्रैस्तेन छन्द इति स्मृतम्।।'**

अर्थात् कपड़े से ढकने पर अथवा आच्छादन करने से छन्द कहा गया है। अथवा मृत्यु के भय से आदित्य, वसु और रुद्र आदि देवताओं के द्वारा जिसके शरण होने पर आत्मा ढ़का गया यानि उस मन्त्र के स्वरूप की रक्षा हुयी उसे छन्द कहते हैं। तथा मन्त्र के **देवता** के बारे में कहा गया है -

**'यस्य यस्य च मन्त्रस्य प्रोद्दिष्टा या च देवता। तदाकारं भवेत्तस्य दैवतं देवतोच्यते।।'**

अर्थात् जिस जिस मन्त्र का उद्देश्य यानि लक्ष्य जो देवता है उस देवता को उस मन्त्र के देवता के रूप से भावना करना ही उस मन्त्र का देवता कहा गया है। तथा मन्त्र के **विनियोग** के बारे में कहा गया है -

**'पुराकल्पे समुत्पन्ना मन्त्राः कर्मार्थमेव च। अनेनेदं तु कर्तव्यं विनियोगः स उच्यते।।**
**निरुक्तं तु यस्य मन्त्रस्य समुत्पत्तिः प्रयोजनम्। प्रतिष्ठानं स्तुतिश्चैव ब्राह्मणं चाभिधीयते।।**
**एवं पंचविधं योगं जपकाले त्वनुस्मरेत्। होमे वान्तर्जले योगे स्वाध्याये याजने तथा।।'**

अर्थात् **'इस मन्त्र से यह कर्म करें'** - इस प्रकार प्राचीन काल में कल्प सूत्रकारों ने अध्ययन द्वारा प्राप्त मन्त्रों का जिस कर्म में प्रयोग करना निश्चय किया है उसे विनियोग कहते हैं। वह पांच प्रकार का है - समुत्पत्ति, प्रयोजन, प्रतिष्ठान, स्तुति और ब्राह्मण यानि व्याख्यान। इनको जानकर जप, होम, यजन-याजन, स्वाध्याय, योगसाधना और स्नानार्थ जल में डुबकी लगाते वक्त स्मरण करना चाहिये।

**4.10 प्राणायाम पर विचार** - देवीभागवत में कहा है -

**'इडयाकर्षयेद्वायुं बाह्यं षोडशमात्रया। धारयेत्पूरितं योगी चतुःषष्ट्या तु मात्रया।।**
**सुषुम्नामध्यगं सम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रया शनैः। नाड्या पिंगलया चैव रेचयेद्योगवित्तमः।।'**

अर्थात् दाहिनी नासिका बन्द कर बार्यी नासिका से पूरक (1=16 मात्रा) - **'ॐ भूः ॐ भुवः** (इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री) **ॐ विष्णवे नमः'**,
दोनों नासिका बन्द कर कुम्भक (4=64 मात्रा) - **'ॐ भूः ॐ भुवः** (इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री) **ॐ ब्रह्मणे नमः'**,
बार्यी नासिका बन्दकर दाहिनी नासिका से रेचक (2=32 मात्रा) -**ॐ भूः ॐ भुवः** (इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री) **ॐ महेश्वराय नमः'**,

'पुनः दोनों नासिका बन्दकर कुम्भक (1=16 मात्रा) – '**ॐ भूः ॐ भुवः** (इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री) **ॐ** हिरण्यगर्भाय नमः'।
अन्यत्र भी कहा है –

**'दक्षेन रेचयेद्वायुं वामेनापूरितोदरम्। कुम्भकेन जपं कुर्यात्प्राणयामो भवेदिति।।'**

अर्थात् दाहिनी नासिका से श्वास छोड़कर (रेचक) बायीं नासिका से श्वास लें (पूरक – पेट भरना) और श्वास को अन्दर रोके (कुम्भक) हुये जप करें यही प्राणायाम है।

### 4.11 गायत्रीमन्त्र के वर्णों के देवता -

योगीयाज्ञवल्क्य ने बताया है कि –

**'अक्षराणां तु दैवत्यं सम्प्रवक्ष्याम्यतः परम्। आग्नेयं** (तत्) **प्रथमं ज्ञेयं वायव्यं च** (स) **द्वितीयकम्।।**
**तृतीयं** (वि) **सूर्यदैवत्यं चतुर्थं** (तुर्) **वैद्युतं तथा। पंचमं** (व) **यमदैवत्यं वारुणं** (रे) **षष्ठमुच्यते।।**
**बार्हस्पत्यं सप्तमं तु** (णि) **पार्जन्यमष्टमं** (यम्) **विदुः। ऐन्द्रं तु नवमं** (भर्) **ज्ञेयं गान्धर्वं दशमं** (गो) **तथा।।**
**पौष्णमेकादशं** (दे) **प्रोक्तं मैत्रावरुणं द्वादशम्** (व)। **त्वाष्ट्रं त्रयोदशं** (स्य) **ज्ञेयं वासवं तु चतुर्दशम्** (धी)।।
**मारुतं पंचदशकं** (म) **सौम्यं षोडशकं** (हि) **स्मृतम्। सप्तदशं** (धि) **त्वांगिरसं वैश्वदेवमतः परम्** (यो)।।
**आश्विनं चैकोनविंशं** (यो) **प्राजापत्यं तु विंशकम्** (नः)। **सर्वदेवमयं प्रोक्तमेकविंशमतः परम्** (प्र)।।
**रौद्रं द्वाविंशकं** (चो) **प्रोक्तं त्रयोविंशं** (द) **तु ब्राह्मकम्। वैष्णवं तु चतुर्विंश** (यात्) **मेता ह्यक्षरदेवताः।।**

अर्थात् गायत्री मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के देवता बताऊँगा – 1. तत् – अग्नि, 2. स – वायु, 3. वि – सूर्य, 4. तुर् – विद्युत्, 5. व – यम,

6. र – वरुण, 7. णि – बृहस्पति 8. यम् – पर्जन्य, 9. भर् – इन्द्र, 10. गो – गन्धर्व, 11. दे – पूषा, 12. व– मैत्रावरुण, 13. स्य – त्वष्टा, 14. धी – वसु, 15. म – मरुत 16. हि – सोम, 17, धि – आंगिरस, 18. यो – विश्वदेव, 19 यो – अश्विन, 20. नः – प्रजापति, 21. प्र – सर्वदेवमय, 22. चो – रुद्र, 23. द – ब्रह्मा, 24. यात् – विष्णु। इसी प्रकार अन्य गायत्रियों के बारे में भी ग्रहण करें।

**'जपकाले तु संस्मृत्य तासां सायुज्यतां व्रजेत्। गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।।**

**गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्। हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे।।**

**तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यं ब्राह्मणोऽनुदये शुचिः। तस्मिन्न लिप्यते पापमब्बिन्दुरिव पुष्करे।।'**

अर्थात् जप काल में इन देवताओं का स्मरण करें तो जापक इन देवताओं का साथी हो जायेगा। क्योंकि गायत्री वेदजननी है और पापनाशिनी है। इस लोक और पर लोक में गायत्री से बढ़कर कोई पवित्रकारक मन्त्र नहीं है। नरक में गिरते हुये की अपने हाथ से रक्षा करनेवाली देवी है गायत्री। इसलिये नित्य ही सूर्योदय से पूर्व शुद्ध होकर सभी को (विशेषतः ब्राह्मण को) गायत्री मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिये। उससे दिनभर जाने–अनजाने में होने वाले पापों का स्पर्श भी नहीं होता उसी प्रकार जिस प्रकार तालाब में कमल से जल की बूंद का स्पर्श नहीं होता। अन्यत्र भी वर्णन किया है कि –

**'सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः । आदिदेवीमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम् ।।'**

अर्थात् जिसलिये सभी आदिदेवी वेदमाता गायत्री की उपासना करते हैं इसलिये सभी द्विज (उपनयन संस्कार युक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) शाक्त ही हैं, न कोई शैव है और न कोई वैष्णव है।

**4.12 गणपत्यादि पंच देव तर्पण के मन्त्र निम्न प्रकार हैं।**

1. गणपति तर्पण मन्त्र :–

'ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।
श्रीमहागणपतिं तर्पयामि नमस्करोमि।।'

2. सूर्य तर्पण मन्त्र -

'ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। श्रीसूर्यं तर्पयामि नमस्करोमि।।'

3. विष्णु तर्पण मन्त्र -

'ॐ अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः।।1।।
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पांसुरे स्वाहा।।2।।
श्रीविष्णुं तर्पयामि नमस्करोमि।।'

4. शिव तर्पण मन्त्र -

'ॐ कद् रुद्राय प्रचेतसे मीह्लुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे।।1।।
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।2।।
श्रीशिवं तर्पयामि नमस्करोमि।।'

5. देवी (शक्ति) तर्पण मन्त्र -

'ॐ गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषि सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।।
श्रीशक्तिं तर्पयामि नमस्करोमि।।'

**4.13 श्रीमद्भागवत के अनुसार उपासना का क्रम।।**

**'य आशु हृदयग्रन्थिं निजिहीर्षुः परात्मनः । विधिनोपचरेद् देवं तन्त्रोक्तेन च केशवम् ।।'**

अर्थात् राजन्! जो पुरुष चाहता है कि शीघ्र से शीघ्र मेरे ब्रह्मस्वरुप आत्मा की हृदयग्रन्थि - मैं और मेरे की कल्पित गाँठ खुल जाय, उसे चाहिये कि वह वैदिक और तान्त्रिक दोनों ही पद्धतियों से भगवान् की आराधना करे।

**'न ह्यन्तोऽनन्तपारस्य कर्मकाण्डस्य चोद्धव । संक्षिप्तं वर्णयिष्यामि यथावदनुपूर्वशः ।।'**

अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा हे उद्धव! कर्मकाण्ड का इतना विस्तार है कि उसकी कोई सीमा नहीं है; इसलिये मैं उसे थोड़े में ही पूर्वापरक्रम से विधिपूर्वक वर्णन करता हूँ ।

**'वैदिकतान्त्रिको मिश्र इति मे त्रिविधो मखः । त्रयाणामीप्सितेनैव विधिना मां समर्चयेत् ।।'**

अर्थात् मेरी पूजा की तीन विधियाँ हैं - वैदिक, तान्त्रिक और मिश्रित । इन तीनों में से मेरे भक्त को जो भी अपने अनुकूल जान पड़े उसी विधि से मेरी आराधना करनी चाहिये ।

**'पूर्वं स्नानं प्रकुर्वीत धौतदन्तोऽङ्गशुद्धये । उभयैरपि च स्नानं मन्त्रैर्मृद्ग्रहणादिना ।।'**

अर्थात् उपासक को चाहिये कि प्रातःकाल दातुन करके पहले शरीर शुद्धि के लिये स्नान करे और फिर वैदिक और तान्त्रिक दोनों प्रकार के मन्त्रों से मिट्टी और भस्म आदि का लेप करके पुनः स्नान करे ।

**'संध्योपास्त्यादिकर्माणि वेदेनाचोदितानि मे। पूजां तैः कल्पयेत् सम्यक् संकल्पः कर्मपावनीम् ।।'**

अर्थात् इसके पश्चात् वेदोक्त सन्ध्या-वन्दनादि नित्यकर्म करने चाहिये। उसके बाद मेरी आराधना का ही सुदृढ़ सङ्कल्प करके वैदिक और तान्त्रिक विधियों से कर्मबन्धनों से छुड़ाने वाली मेरी पूजा करे ।

**'शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती । मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता ।।'**

अर्थात् मेरी मूर्ति आठ प्रकार की होती है-पत्थर की, लड़की की, धातु की, मिट्टी और चन्दन आदि की चित्रमयी, वालुकामयी, मनोमयी और मणिमयी ।

**'ते नाधीतश्रुतिगणा नोपासितमहत्तमाः । आव्रतातप्ततपसः सत्सङ्गान्मामुपागताः ।।'**

अर्थात् उन लोगों ने (गोपियों) न तो वेदों का स्वाध्याय किया था और न विधिपूर्वक महापुरुषों की उपासना की थी । इसी प्रकार उन्होंने कृच्छ्चान्द्रायण आदि व्रत और कोई तपस्या भी नहीं की थी। बस केवल सत्सङ्ग के प्रभावसे ही वे मुझे प्राप्त हो गये ।

**'केवलेन हि भावेन गोप्यो गावो नगा मृगाः । येऽन्ये मूढधियो नागाः सिद्धा मामीयुरञ्जसा ।।'**

अर्थात् गोपियाँ, गायें, यमलार्जुन आदि वृक्ष, व्रज के हरिण आादि पशु, कालिय आदि नाग-ये तो साधन-साध्य के सम्बन्ध में सर्वथा ही मूढबुद्धि थे। इतने ही नहीं, ऐसे-ऐसे और भी बहुत हो गये हैं, जिन्होंने केवल प्रेमपूर्ण भाव के द्वारा ही अनायास मेरी प्राप्ति कर ली और कृतकृत्य हो गये ।

**'यं न योगेन सांख्येन दानव्रततपोऽध्वरैः । व्याख्यास्वाध्यायसंन्यासैः प्राप्नुयाद् यत्नवानपि ।।'**

अर्थात् हे उद्धव! बड़े बड़े प्रयत्नशील साधक योग, सांख्य, दान, व्रत, तपस्या, यज्ञ, श्रुतियों की व्याख्या, स्वाध्याय और संन्यास आदि साधनों के द्वारा मुझे नहीं प्राप्त कर सकते, परन्तु सत्सङ्गके द्वारा तो मैं अत्यन्त सुलभ हो जाता हूँ ।

### 4.14 वेदी क्रमः कुण्डरत्नावली के अनुसार -

**'आग्नेय्यां मातृकावेदी वास्तुवेदी च नैर्ऋते । वायव्यां क्षेत्रपालस्य ईशान्यां तु नवग्रहाः ।।'**

अर्थात् आग्नेय दिशा में मातृकावेदी, नैर्ऋत में वास्तु वेदी, वायव्य में क्षेत्रपाल वेदी और ईशान्य में नवग्रहवेदी।

4.15 कुछ स्तोत्र पाठ - ।। अथ सप्तश्लोकी दुर्गा ।।

शिव उवाच- देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनि, कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ।

देव्युवाच- शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् , मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ।।

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा । बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।। 1 ।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।। 2 ।।

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणी नमोऽस्तु ते ।। 3 ।।

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे, सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोऽस्तु ते ।। 4 ।।

सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते, भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।। 5 ।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।6।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।। 7 ।।

।। इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ।।

**4.16 पंचपात्रस्थापनक्रमः** – (मन्त्रमहोदधौ गन्धर्वतन्त्रे च)

**'अर्घ्यपाद्याचमनीयमधुपर्काचमस्य च। पंचपात्रणि पुष्पादीन्स्थापयेत्स्वीयदक्षिणे।।**
**वामेऽम्बुपात्रं छत्रमादर्शचामरे। करयोः क्षालनार्थाय पृष्ठे पात्रम्विनिर्दिशेत्।।'**

अर्थात् पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क और मार्जन – इन पांच पात्रों में से प्रथम चार पात्रों (यानि मार्जन पात्र को छोड़कर) और पुष्पादियों को अपने दाहिने भाग में स्थापित करें। बायें भाग में जल से भरा एक घड़ा, छत्र, दर्पण, चामर आदि को रखें। मार्जन पात्र को हस्त प्रक्षालन केलिये अपने पीछे रखें।

## अथ पूजापद्धति आरम्भः

### 5. अथ पूर्वांगकर्म

**5.1 दिशानिर्णयः** – इसी ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 10 देखें।

**5.2 आसननिर्णयः** – इसी ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 11 देखें।

**5.3 पत्नी वामदक्षिणनिर्णयः**–इसी ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 49 देखें।

**5.4 आचमन** – इसी ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 51 देखें।

**5.4–1 कुल्लुकामन्त्र** – (विशुद्धेश्वरतन्त्रे)

**'कालीकूर्चम्वधूर्मायाफडन्ता परमेश्वरि। पंचाक्षरी चण्डिकाया कुल्लुका परिकीर्तिता।।'**

अर्थात् **'क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं फट्'** – यह चण्डिका यानि देवी का पंचाक्षरी कुल्लुका मन्त्र है।

**'अज्ञात्वा कुल्लुकां देवि महामन्त्रं जपेत्तु यः। तस्य नश्यन्ति चत्वारि आयुर्विद्यायशोबलम्।।'** (– कुलार्णवतन्त्रे)

अर्थात् हे देवी! कुल्लुका मन्त्र को जाने विना नवार्णव रूपी महामन्त्र जप व सप्तशती का पाठ करने से यजमान के आयु, विद्या, यश और बल नष्ट होता है। अतः कुल्लुका मन्त्र को कम से कम 11 बार जप कर ही आचमन आदि कर्म आरम्भ करें।

**5.5 शरीर शुद्धिः** - अपने ऊपर प्रोक्षण करें।

**'ॐ अपवित्रःपवित्रो वेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिर्गायत्रीछन्दो विश्णुर्देवता शरीरादिपवित्रकरणे विनियोगः।**
**ॐ अपवित्रःपवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।**
**ॐ पुण्डरीकाक्षःपुनातु । ॐ पुण्डरीकाक्षःपुनातु । ॐ पुण्डरीकाक्षःपुनातु ।'**

**5.6 पवित्र धारण करें** -

**'यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा । त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा विप्र पवित्रकम् ।।**
**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः ।**
**तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।'** तत्पश्चात् तीन बार प्राणायाम करें।

**5.7 शिखाबन्धनम्** -

**'ऊर्ध्वकेशि विरुपाक्षि मांसशोणितभोजने। तिष्ठ देवि शिखबन्धे चामुण्डे चापराजिते।।**
**विष्णो नाम सहस्त्रैस्तु शिखाबन्धं करोम्यहम् '**

**5.8 प्राणायामः** -

दाहिने हाथ में गन्धाक्षतपुष्प ग्रहण कर- **'ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, परमात्मा देवता, दैवीगायत्री छन्दः, प्राणायामे विनियोगः।'** जल छोड़े और समनु (यानि मानस मन्त्रोच्चारणपूर्वक) नाडी - शोधन प्राणायाम करे - **'ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म**

भूर्भुवःस्वरोम्'। अधिक जानकारी केलिये इसी ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 56 देखें।

**5.9 पुनराचमनम्** - इसी ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 51 देखें।

**5.10 दिग्रक्षणम् -**

**'अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारः ते नशयन्तु शिवाज्ञया ।।**
**अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।**
**यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।**
**वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः । अपसर्पंतु ते सर्वे यावत्पूजां करोम्यहम् ।।**
**विशन्तु भूतले नागाः लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मद् गृहेऽवतिष्टन्ताम् आयुर्बलकरासदा ।।**
**पाखण्डकारिणो भूताः भूमौ ये चान्तरिक्षगाः। दिवि लोके स्थिताः ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।**
**निर्गच्छतां च भूतानां वर्त्म दद्यात् स्ववामतः । भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसः ।**
**स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवंत्विमाम्, भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।**
**ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म समारभे ।।'** एतैर्मन्त्रैः सर्वदिक्षु पीत सर्षपान् विकिरेत् ।

**'ॐ प्राच्यै नमः, ॐ अवाच्यै नमः, ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ उदीच्यै नमः, ॐ अन्तरिक्षायनमः,**
**ॐ देवभूम्यै नमो नमः।'** वामपादेन भूमि त्रिवारं ताडयेत् ।।

**5.11 पृथ्वी पूजन करें -**

**ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः ।**

**ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोकाः देवि त्वं च विष्णुनाधृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।**

**ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ कूर्मासनायै नमः। ॐ कमलासनायै नमः। ॐ विमलासनायै नमः। ॐ महाशक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः। ॐ योगासनायै नमः। ॐ अनन्तासनायै नमः।** मध्ये-**ॐ परमसुखासनायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मासनायै नमः।** पृथ्वी का गन्धाक्षत आदि से पंचोपचार पूजन करें ।

**5.12 दीपार्चनम् - (अखण्डदीपस्थापने च)**

गन्धपुष्पाक्षत आदि से दीपक केलिये आसन तैयार कर उस पर दीपक को स्थापित कर दीपक को प्रज्वलित करे -

**'ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवी सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् स्वाहा।'**

गन्धपुष्पाक्षत आदि से पूजा करे- **'ॐ श्रीज्वालामालिनी कर्मसाक्षिणी प्रत्यक्षदीपराजाय नमः।।'** प्रार्थना पूर्वक पुष्पार्पण करे - **'भो दीपदेवि रूपस्त्वं कर्मसाक्षिण्यविघ्नकृत्। यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।**
**दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा। यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिरा।।'**

**5.13 शंखपूजनम् -**

गन्धपुष्पाक्षतादि से शंखगायत्री मन्त्र से शंख का पूजन करे-

**'पांचजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि। तन्नः शंखः प्रचोदयात् '**

तीनबार शंख को बजावे और धोकर शंख में दो दर्भ/दूर्वा, तुलसी और फूल ड़ालकर **'ॐ'** उच्चारण करते हुये सुवासित जल से भरके

**गायत्री** मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। उसके पीठ पर उसे रखे। निम्न मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे -

**'पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च। तानि तीर्थानि शंखेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्।।'**

निम्न मन्त्र से पंचोपचार पूजन करे -

**'ॐ भूर्भुवःस्वः शंखस्थदेवताभ्यो शंखाभिमानिदेवताभ्यश्च नमः सर्वोपचारार्थे गन्धादीन्समर्पयामि।'**

**5.14 घण्टार्चनम्** -

गन्धपुष्पाक्षतधूपादि से घण्टा की पूजा करे -

**'ॐ हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टाध्वनिविभूषिते। वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत्।।'**

निम्न मन्त्र से पंचोपचार पूजन करे -

**'ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टस्थदेवताभ्यो घंटाभिमानिदेवताभ्यश्च नमः सर्वोपचारार्थे गन्धादीन्समर्पयामि।'**

और निम्न मन्त्रोच्चारण पूर्वक घण्टा बजाये-

**'आगमार्थं च देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्। कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताऽऽह्वानलांछनम्।।'**

**5.15 यजमानतिलकम्** -

यजमानहस्ते आचार्यो रक्षाबन्धनं तथा शिरसि कुंकुमेन तिलकं कुर्यात् ।

**'ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्यमानाः ।**

**तन्मे आबध्नामि शतशारदायाऽऽयुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ।'** इति रक्षाबन्धनम् ।।

'ॐ स्वस्तिनः  इन्द्रो  वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।' ।। इति तिलकम् ।।

## 5.16 शान्ति पाठः -

'ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽपरीता सऽउद्भिदः। देवानो यथासदमिद्वृधेऽसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।1।।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳ रातिरभिनो निवर्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।2।।
तान्पूर्वयानिविदाहूमहे वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणम्वरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।3।।
तन्नो वातोमयोभुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम् ।।4।।
तमीशानञ्जगतस्तस्तुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।5।।
स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।6।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽवसागमन्निह।।7।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभि र्व्यशेम देवहितं यदायुः।।8।।
शतमिन्नुशरदोऽन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिशतायुर्गन्तोः।।9।
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽदितिः पंचजनाऽदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।10।।
तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः  पुत्रैर्भ्रातृभिरुत  वा  हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽधिरोचने दिवः।।11।।
आयुष्यं वर्चस्यꣳराय स्पोषमौद्भिदम्। इदꣳहिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम्।।12।।
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोशधयः शान्तिः। वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।13।।
यतो यतः समीहसे ततो नोऽभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।14।। सुशान्तिर्भवतु।।

ॐ श्रीमहागणाधिपतये नमः।। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।। ॐ शचीपुरन्धराभ्यां नमः।। ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।। ॐ सर्वोभ्यो देवताभ्यो नमः।। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।। ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणयादपि।।2।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।3।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजं । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।4।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।5।।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते।।6।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलं। येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः।।7।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।8।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।।9।।

**सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।10।।**
**वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।11।।**
**तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।12।।'**
पुष्पाक्षत को गणेशजी के चरणों में अर्पण करें।

## 5.17 कर्मपात्रपूजनं -

कर्मपात्र की आधारभूत भूमि को '**हुं**' मन्त्र से प्रक्षालित कर भूमि पर बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्र यन्त्र बनाकर गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे - '**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं**' - मध्ये; '**ॐ ऐं, ॐ ह्रीं, ॐ क्लीं**' - त्रिकोणस्य त्रिभुजेषु; '**ॐ ऐं ह्रीं क्ली, चामुण्डायै, विच्चै, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं, चामुण्डायै, विच्चै**' - षट्कोणस्य षट्भुजेषु; '**ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं**' - वृत्ते, अब चतुरस्र में - '**ॐ ऐं हृदयाय नमः** - आग्नेये, **ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा** - ऐशान्ये, **ॐ क्लीं शिखयै वषट्** - नैर्ऋत्ये, **ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्** - वायव्ये, **ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्** - मध्ये, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं** - चतुर्दिक्षु। इस प्रकार यन्त्र की पूजा कर उसे स्पर्श किये हुये इस मन्त्र का पाठ करें- '**ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधा या विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिंᳪसीः।।**

**ॐ रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता कर्मपात्राधाराय नमः।'**

वहीं पर दस कलाओं का पूजन करें -

**'ॐ यं धूमार्चिषे नमः, ॐ रं ऊष्मायै नमः, ॐ लं ज्वलिन्यै नमः, ॐ वं ज्वालिन्यै नमः, ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः, ॐ षं सुश्रियै नमः, ॐ सं सुरूपायै नमः, ॐ हं कपिलायै नमः, ॐ ळं हव्यवाहायै नमः, ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः।'**

अगले मन्त्र का पाठ करते हुये थोड़े धान्य को उस पर ड़ालें-
**'ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान् देवो वः सविता हिरण्यपाणिः। प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोसि।।'** अब **'हुं'** इस मन्त्र से कर्मपात्र का प्रक्षालन कर उस पर स्थापित करें-
**'ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विद वः पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानः। सहस्रं धुक्ष्वोरु धारापयस्वतीः पुनर्मा विशताद्रयिः।।'**
उस पात्र की पूजा करें - **'ॐ सं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता कर्मपात्राय नमः।'**
उस पात्र पर ही द्वादश कलाओं का पूजन करे - **'ॐ कं भं तपिन्यै नमः, ॐ खं बं तापिन्यै नमः, ॐ गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरिच्यै नमः, ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः, ॐ चं धं रुच्यै नमः, ॐ छं दं सुषुम्नायै नमः, ॐ जं थं भोगदायै नमः, ॐ झं तं विश्वायै नमः, ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः, ॐ टं ढं धारिण्यै नमः, ॐ ठं डं क्षमायै नमः।'** अब कर्मपात्र को जल से भरें-
**'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत सदनमासीद।। ॐ ळं क्षं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं औं आं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं नमः।।'** गालिनी मुद्रा से निरीक्षण कर जल की पूजा करें -

**'मं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता कर्मपात्रस्थजलाय नमः।'**

उसी में सोलह कलाओं का पूजन करें - **'ॐ अं अमृतायै नमः, ॐ आं मानदायै नमः, ॐ इं पूषायै नमः, ॐ ईं पुष्ट्यै नमः, ॐ उं तुष्ट्यै नमः, ॐ ऊं रत्यै नमः, ॐ ऋं धृत्यै नमः, ॐ ॠं शशिन्यै नमः, ॐ लृं चन्द्रिकायै नमः, ॐ लॄं कान्त्यै नमः, ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः, ॐ ऐं श्रियै नमः, ॐ ओं प्रीत्यै नमः, ॐ औं अंगदायै नमः, ॐ अं पूर्णायै नमः, ॐ अः पूर्णामृतायै नमः।'**
**'फड्'** मन्त्र से रक्षित कर **'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं'** मन्त्र से देवी का आवाहन कर आवाहनादि मुद्रा दर्शाते हुये बोले - **'आवाहिता भव,**

**स्थापिता भव, सन्निहिता भव, सन्निरुद्धा भव, सम्मुखीकृता भव, षडंगेन सकलीकृता भव, अवगुण्ठिता भव, अमृतीकृता भव, परमीकृता भव,** मत्स्यमुद्रा से आच्छादन करे, '**ॐऐं ह्रीं क्लीं**' मन्त्र का आठ बार जप कर धेनुमुद्रा व योनिमुद्रा दर्शाये। तत्पश्चात् उसमें गन्ध को समर्पित करें– '**ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।**' उसमें अक्षत ड़ालें – '**अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्व भानवो विप्रानविष्ठयामती यो जान्विन्द्र ते हरी।।**'

उसमें पुष्प को ड़ालें– '**ॐ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनुवभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।**'

तदनन्तर दूर्वा ड़ालें– '**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुशस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।**'

कर्मपात्र के अन्दर डाली गयी सामग्री को पुष्प से अच्छी तरह से घुमायें और कर्मपात्र के गले में मौली को बांधें –

'**ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासोऽअग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो।।**'

पुष्पाक्षतों से तीर्थो का आवाहन करें –

'**काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोपुरी। शालिग्राम सगोकर्ण नर्मदा च सरस्वती।।**
**गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।**
**ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करे स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन देवेश तीर्थं देहि दिवाकर।।**
**पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।**
**नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा। विष्णुपादाब्जसम्भूता गंगा त्रिपथगामिनी।।**
**ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवज्सरित्।।**'

इस प्रकार तीर्थो का आवाहन करके पवित्र से जल का आलोडन करें -

**'ॐ यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमावयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।**

**ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि च कृमावयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।**

**ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि च कृमावयम्। सूर्योमा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।'**

हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

**'नमामि गंगे तव पादपंकजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्। भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्।।**

**अहिरिपुपतिकान्ता तातसंबद्धकान्ता, हरतनयनिहन्ता प्राणदाता ध्वजस्य।**

**सखिसुतसुतकान्ता तातसंपूज्यकान्ता, पितुः शिरसि वहन्ती जाह्नवी नः पुनातु।।'**

तत्पश्चात् कर्मपात्रस्थ पुष्प से सभी पर और समस्त सामग्री पर प्रोक्षण करें -

**'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।'**

**पुण्डरिकाक्षः पुनातु। पुण्डरिकाक्षः पुनातु। पुण्डरिकाक्षः पुनातु।।**

## 5.18 सूर्यार्घ्यः -

चन्दन से भूमि पर त्रिकोण वृत्त, चतुरस्त्र मण्डल लिख कर गन्धाक्षत-पुष्पादि से मण्डल का पूजन करके अर्घ्य स्थापित करें । अर्घ्यपात्र में अधोलिखित मंत्र से जल भरें -

**ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्रवन्तु नः ।**

**ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।**

अंकुश मुद्रा से तीर्थों का आवाहन कर गन्धाक्षतरक्तचन्दनरक्तपुष्पादि को अर्घ्यपात्र में डालकर ध्यान करे ।

**'अरुणोऽरुण पंकजे निषण्णः कमलेऽभीतिवरौ करैर्दधानः।**

**स्वरुचार्हित मण्डलस्त्रिनेत्रो रबिराकल्प शताकुलोऽवतान्नः।।'**

सूर्य को अर्घ्य दें – **'एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशेः जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।'**

## 5.19 सूर्यनमस्कारः –

**'ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ति, नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।**

**केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी, हारी हिरण्मयवपुः धृतशंखचक्रः।।**

**नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने।।**

**आदित्याय नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने। जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते।।'**

## 5.20 प्रधानसंकल्पः–

दाहिने हाथ में पुष्पाक्षतद्रव्यसहित जल को धारण कर देवी का ध्यान पूर्वक संकल्प करे –

**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे .......खण्डे....क्षेत्रे ......मण्डले.......तटे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपति वीरविक्रमादित्यात्प्रवर्तमाने ........संवत्सरे ....अयने महामांगल्यप्रदे मासानामुत्तमे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे .....नक्षत्रे....राशिस्थिते सूर्ये यथास्थितेषु चन्द्रभौमबुध**

ागुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभयोगे शुभकरणे एवं ग्रहगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ श्रीमहादुर्गाया अनुग्रहतो ग्रहकृतराजकृत सर्वबाधानिवृत्तिपूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशादुत्पन्नदोषेण व्यवहारे चोत्पन्नानामुत्पद्यमानानां च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं, भौम्यान्तरिक्ष दिव्यमहोत्पातागामीसंचितसूचितदुष्टानिष्टदोष परिहारपूर्वकं विशेषेण स्वकीयैः परकीयैः स्वग्रामस्थैरन्यैर्वा कृतक्रियमाण कारयिष्यमाणदुष्टयंत्रमंत्रतंत्रविषशल्यौशधप्रतिमास्थापनादि सर्वाभिचारकर्मघातकर्मफणिहवनश्येनयजनदुर्निरीक्षण दुर्दैवतोपासनादिक्षुद्रकर्मजन्यदोषपरिहारपूर्वकं विशेषतो न्यायालये राजसभायां तद्‌द्वारे वा सर्वत्र ममाध्यात्मिकाधिभौतिकाधि ा दैविकस्वरूपरक्षणार्थमलक्ष्मीपरिहारार्थं महालक्ष्मीकृपाकटाक्ष प्राप्त्यर्थं भो मात ह्रीं दुं दुर्गे किं स्वपिषी उत्तिष्ठ पुरुषी सर्वतः समुपस्थितानर्थनिवृत्तये स्वयं कुरु वा मां निमित्तीकृत्य वा यत्कर्तव्यं तत्कारय तदर्थं न्यासविधिसहितध्यानपूर्वकं सग्रहमखां स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नवग्रहपूजनं नान्दीश्राद्धादिकार्ये श्रीदुर्गादेवताप्रीत्यर्थं यथासंभवद्रव्यैः यथाशक्तिसपर्याक्रमं यन्त्र/मूर्तिस्थापनादिपूर्वकं श्रीदुर्गापूजनं श्री.....अहं (यजमानस्य गोत्रादिकथनपूर्वकं प्रथमान्तेन नाम उक्त्वा) श्री........नामकार्चकेन (अर्चकस्य च गोत्रादिकथनपूर्वकं) कारयिष्ये (अथवा स्वयं करिष्ये) तेन परमेश्वरपरमेश्वरीं च प्रीणयामि।

**5.21-1 कुलवृक्षाः -**

**'अशोकः केशरो बिल्वः कर्णिकाच्युतस्तथा। नमेरुश्च प्रियालश्च सिन्दुवारकदम्बकौ।।**
**मरुवकश्चम्पकश्चैव विल्वश्च द्वादशस्मृतः। एतान्वृक्षान्तु स्मृत्वैव कुर्याद् गुर्वादि पूजनं।।'**

नमेरु = रुद्राक्ष। अर्थात् अशोक, केशर, बिल्व, कर्णिका, आम, रुद्राक्ष, प्रियाल, सिन्दुवार, कदम्ब, मरुवक, चम्पक और विल्व - इन बारह वृक्षों को स्मरण करके ही गुरुगणेशादि के पूजन पूर्वक कलशस्थापना करें।

**5.21-2 श्रीगणेशाम्बिकयोः पूजनम् -**

हाथ में पुष्पाक्षत लेकर आवाहन करे - **'ॐ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् । ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरुपेभ्यश्च वो नमो नमः।'**

**हे हेरम्ब त्वमेह्येहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज। सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः।।1।।**

**नागास्यं नागहारं त्वं गणराजं चतुर्भुजं। भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः।।2।।**

**आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।3।।**

**गजाननं भूतगणाधिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाशकारकं,**

**नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।**

**आगच्छ भगवान्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव।।5।।**

**लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। विर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।6।।**

**विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।**

**नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।7।।'**

निम्न मन्त्र से पंचोपचार पूजन करे -

**'ॐ भूर्भुवःस्वःगं गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, भो गणपते इह आगच्छ।'**

ध्यान करें - **खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं, प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।**

**दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं, वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।**

**अथ अम्बिका पूजनम् -**

हाथ में पुष्पाक्षत लेकर आवाहन पूर्वक प्रणाम करें -

**'ॐ अम्बे अम्बिकेऽअम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।'**

इति प्रणम्य पुष्पासनं दत्त्वा निम्न मन्त्र से पंचोपचार पूजन करे -

**'ॐ भूर्भुवःस्वः अम्बिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धादीन्समर्पयामि।'**

प्रार्थना करें -

**'नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।**

**हेमाद्रितनयांदेविं वरदां शंकरप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।**

**त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।**

**सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।'**

**ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ ।।**
**ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।**

**गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित।।'**
पुष्पासनं दत्त्वा निम्न मन्त्र से पंचोपचार/दशोपचार/षोडशोपचार पूजन करे - **'ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणेशाम्बिकायै नमः'** तद्यथा -

पादयोः पाद्यं समर्पयामि, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि, मुखे आचमनीयं समर्पयामि, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, वस्त्रोपवस्त्रार्थे अलंकरणार्थे च साक्षतं कौसुम्बसूत्रं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गन्धम्विलेपयामि, अक्षतान्समर्पयामि, पुष्पाणि समर्पयामि, दूर्वांकुराणि समर्पयामि, धूपमाघ्रापयामि, प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि, (हस्तौ प्रक्षाल्य) नैवेद्यं निवेदयामि, (जलेनाभ्युक्षणं) सत्यन्त्वर्तेन परिषिंचामि –प्रातः/ ऋतं त्वा सत्येन परिषिंचामि – सायं (गन्धपुष्पाभ्यामाच्छाद्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य) ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा। मध्ये-मध्ये आचमनीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोषणार्थे किंचिन्नैवेद्यं निवेदयामि, पुनराचमनीयं समर्पयामि, करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि, मुखशुद्ध्यर्थे एलालवंगकर्पूरयुतं ताम्बूलपूगीफलं समर्पयामि, यथाशक्ति दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।।

महागणपत्यम्बिकयोः प्रार्थना ।।

'ॐ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः । नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।।1 ।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायकः ।।2 ।।
ॐ त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ।।3 ।।
भक्तार्तिनाशनापराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।4।।
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।1।।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।2।।

।। विशेषार्घ्यम् ।।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष स्त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात्।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम। रक्ष त्वं मुण्डधारी च पर्वते निर्झरेऽपि वा।
संग्रामे शत्रुमध्ये विश विश भविशे संकटे कुत्सिते वा ।।
व्याघ्रे चौरे च सर्पे वाप्युदधि भुवितले वह्निमध्ये च दुर्गे।
रक्षेत्सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।
ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय महागौरीसहितमहागणपतिदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्तां न मम।

।। गणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमवशिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव

दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्।त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिद्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥ गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरुपम्। गकारः पूर्वरुपम्। अकारो मध्यमरुपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरुपम्। बिन्दुरुत्तररुपम्। नादः सन्धानम्। संश्हिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुश धारिणम्। वरदं च हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्॥ रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥ एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायम्प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति॥ इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति। स पापीयान्भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं

काममधीत। तं तमनेन साधयेत् ।। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति । स वाग्मी भवति ।। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति। स विद्यावान्भवति ।। इत्यथर्वणवाक्यम् ।। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न बिभेति कदाचनेति ।। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति। स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति । स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति।। यो मोदकसहस्त्रेण यजति। स वाञ्छितफलमवाप्नोति ।। यः साज्यसमिद्भिर्यजति । स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति ।। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्यते । महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद इत्युपनिषत् ।।'

## ।। अथ श्रीसूक्तम् ।।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।1।।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।2।।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।3।।

ॐ कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।4।।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मिनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।।5।।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मा यान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मी ।।6।।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतो राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।7।।

**ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।8।।**
**ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।9।।**
**ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रुपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।10।।**
**ॐ कर्दमेन प्रजाः भूताः मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।11।।**
**ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।12।।**
**ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।13।।**
**ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।14।।**
**ॐ तामावहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।15।।**
**ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।।16।।'**

## 5.22 अथ कलश पूजनम् -

कलश स्थापना पूर्वक वरुणादिदेवता का पूजन करें। कलश के आधाराभूत अष्टदल कमल को स्पर्श कर इस मन्त्र का पाठ करें -

**'ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधा या विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिꣳसीः।।'**

अगले मन्त्र का पाठ करते हुये थोड़े धान्य को कमल पर डालें-

**'ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान् देवो वः सविता हिरण्यपाणिः। प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोसि।।'** उस पर तांबे के कलश को स्थापित करें -

‘**ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विदं वः पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानः। सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्मा विशताद्रयिः।।**’

अब कलश को जल से भरें –

‘**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत सदनमासीद।।1।।**

**ॐ इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमे स च तापरुष्ण्याष्मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये श्रृणुह्यासुषोमया।।2।।**

’ तत्पश्चात् उसमें गन्ध को समर्पित करें –

‘**ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।**’

उसमें सर्वौषधी को डालें –

‘**ॐ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनुवभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।**’

तदनन्तर दूर्वा डालें –

‘**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वेप्रतनु सहस्रेण शतेन च।।**’

अब कुशा/दूर्वा को उसमें रखें –

‘**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यै सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।**’

इसके बाद सप्त मृत्तिका को उसमें डालें –

‘**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छानः शर्म स प्रथा।।**’

तत्पश्चात् पूगीफल (सुपारी) को डालें -

**'याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः।।'**

उसके बाद पंच रत्नों को डालें -

**'ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।'**

तदनन्तर कलश में दक्षिणा डालें -

**'ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।'**

अब आम के पांच पत्तों को डालें -

**'ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।**

पंच पल्लवों से कलश के अन्दर डाली गयी सामग्री को अच्छी तरह से घुमायें और कलश के गले में मौली को बांधें अथवा लाल वस्त्र से कलश को लपेटें -

**'ॐ सुजातो ज्येतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासोऽअग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो।।'**

और अब पत्तों को चारों दिशाओं में फैलाकर उस पर पूर्णपात्र को रखें -

**'ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज शतक्रतो।।'**

इस प्रकार स्थापित कलश में प्राण को प्रतिष्ठित करें -

**'मनो जूतिर्जुषतामज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वेदेवास इहमादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।'**

यदि पूर्णपात्र पर मूर्ति/यन्त्र को स्थापित नहीं करना है तो एक नारियल (श्रीफल) पर स्वस्तिक लिखकर मौली से बांधकर उस पर रखें -

**'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यत्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।**

तत्पश्चात् वरुणदेवता का आवाहन करें -

**'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध[]रुशं समानऽआयुः प्रमोषीः।।**
**ॐ भूः वरुणमावाहयामि, ॐ भुवः वरुणमावाहयामि, ॐ स्वः वरुणमावाहयामि, ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणमावाहयामि।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ। ॐ वरुणाय नमः।'**

अब निम्न मन्त्र से षोडशोपचार पूजन करें- **'ॐ अपांपतिवरुणाय नमः।'**

उसके बाद कलश को हाथ से ढ़ककर निम्न मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें -

**'कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः।।**
**कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपवसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद सामवेदो ह्यथर्वणः।।**
**अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।**
**सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदानदाः। सर्वेऽत्र प्रतितिष्ठन्तु मम कल्याणकारकाः।।'**

इस प्रकार कलशस्थ जल को अभिमन्त्रित कर प्रार्थना करे -

**'देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि सदा कुम्भः विधृता विष्णुना स्वयम्।।1।।**
**आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।।2।।**
**त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।।3।।**

**आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।4।।**
**त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः। सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।5।।**
**पाशपाणेः नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक। प्रधानपूजनं यावत्तावत्त्वं सन्निधौ भव।।6।।**
**नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।7।। '**

**5.23 पुण्याहवाचनम् -**

हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

**'ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।**
**पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक। पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं संन्निधौ भव।।'**

जमीन पर घुटने टेक कर अपनी अंजलि को खिले हुये कमलाकार में सिर पर धारण कर बैठें और उस कमलाकार में पुटित अंजलि में ब्राह्मण कलश रखें। तब यजमान प्रार्थना करें -

**'त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।।**
**तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घायुरस्त्विति ब्रुवन्तु।'** द्विज जवाब दें- **'पुण्यं पुण्याहं दीर्घायुरस्तु'**।

ब्राह्मण के हाथ में कलश देकर यजमान कहे - **'सुप्रोक्षितमस्तु, ॐ शिवा आपः सन्तु'**, द्विज जवाब दें - **'सन्तु शिवा आपः'**।

द्विज के हाथ में पुष्प देकर पुनः यजमान कहे - **'सौमनस्यमस्तु'**, द्विज जवाब दें - **'अस्तु सौमनस्यम्'**।

द्विज के हाथ में अक्षत देकर पुनः यजमान कहे - **'ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु'**, द्विज जवाब दें -**'अस्त्वक्षतमरिष्टं चास्तु'**।

द्विज के हाथ में गन्ध देकर पुनः यजमान कहे – **'ॐ गन्धाः पान्तु',** द्विज जवाब दें – **'अस्तु गन्धं सौमंगल्यं चास्तु'।**
द्विज के हाथ में पुनः अक्षत देकर यजमान कहे – **'ॐ अक्षताः पान्तु'** द्विज जवाब दें – **'ॐ आयुष्यमस्तु'।**
द्विज के हाथ में पुनः पुष्प देकर यजमान कहे – **'ॐ पुष्पाणि पान्तु',** द्विज जवाब दें – **'ॐ सौश्रियमस्तु'।**
द्विज के हाथ में ताम्बूल देकर पुनः यजमान कहे – **'ॐ ताम्बूलानि पान्तु',** द्विज जवाब दें – **'ॐ ऐश्वर्यमस्तु'।**
द्विज के हाथ में दक्षिणा देकर पुनः यजमान कहे – **'दक्षिणाः पान्तु',** द्विज जवाब दें – **'ॐ बहुधनमस्तु'।**
द्विज के हाथ में जल देकर पुनः यजमान कहे – **'ॐ पुनरत्रापः पान्तु',** द्विज जवाब दें – **'ॐ स्वर्चितमस्तु'।**
अब यजमान ब्राह्मणों के सामने हाथ जोड़कर कहे – **'ॐ श्रीर्यशोविद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्त्विति ब्रुवन्तु',**

अब द्विज जवाब में यजमान पर जल छिड़ककर अभिषेक करें –

**'ॐ श्रीर्यशोविद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु दीर्घमायुः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु'।**

पुनः यजमान द्विजों के हाथ में अक्षत देकर कहे –

**'यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुःसामाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। ॐ वाच्यतांऽ',**

यजमान प्रार्थना करे (यजमान पर अक्षत छिड़कते हुये द्विज आशीर्वचन दें) –

**'करोतु स्वास्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चापि द्विजातयः। सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा।।1।।**
**ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः। तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः।।2।।**

स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यस्चतुष्पादेभ्य एव च। स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्चसर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा।।3।।
स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा। करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे।।4।।
लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ। असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाऽगिराः।।5।।
वशिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा। धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः।।6।।
स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्च षणमुखः विवस्वान् भगवान्स्वस्ति करोतु तव सर्वदा।।7।।
दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः। अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि सः।।8।।
शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु। स्वस्तिरेव स्वस्तिरस्तु तुभ्यं सदा स्वस्तिरेव।।9।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुश्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।1। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳरातिरभिनो निवर्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।2। न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणꣳहिरण्यꣳस देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।3। दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वन्दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्।4। द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनस्य प्रियं सत्। द्रविणोदा वीरवतीमिशन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः।5। द्रविणोदाः पिपीषति जुहोति प्र च तिष्ठत। नेष्टादृतुभिरिष्यत।।6।। सविता त्त्वा सवानाꣳसुवितामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्येष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्।।7।। सविता पश्चात्तत्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्सविताधरातात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतान्दीर्घमायुः।8। नवो नवो भवति जायमानोऽह्नान्केतुरुषसामेत्यग्रम्। भागन्देवेभ्यो विदधात्ययं प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः।9। उच्चा ते जातमन्धसो दिविसद्भूम्याददे।

उग्रश्शर्म महिश्रवः।।10।। उच्चा दिवि दक्षिणावन्तोऽअस्थुर्येऽअश्वदाः सह ते सूर्येण। हिरण्यदाऽअमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्रतिरन्त आयुः।11। उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ2ऽइयक्षते।।12।।'

अब यजमान कहे – '**व्रतजपनियमतपःस्वाध्यायक्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्**', द्विज बोलें – '**समाहितमनसः स्मः**'। पुनः यजमान कहे – '**प्रसीदन्तु भवन्तः**', द्विज बोलें – '**प्रसन्नाः स्मः**'।

अब से आगे यजमान के प्रत्येक वचन के बाद द्विज केवल '**अस्तु**' बोलें और यजमान कलश पर चावल डालता जाय – '**ॐ शान्तिरस्तु, ॐ पुष्टिरस्तु, ॐ तुष्टिरस्तु, ॐ वृद्धिरस्तु, ॐ अविघ्नमस्तु, ॐ आयुष्यमस्तु, ॐ आरोग्यमष्तु, ॐ शिवं कर्मास्तु, ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु, ॐ वेदसमृद्धिरस्तु, ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु, ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु, ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु, ॐ इष्टसंपदस्तु।**'

अब चावल को एक पृथक्पात्र में डालें – **ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु।**
अब चावल बाहर डालें – **ॐ यत्पापं यद्रोगं नः अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।**
पुनः चावल कलश पर डालें – **ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु, ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु, ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु, ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्ताम्, ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु।**'

अब उदकसेक कर्म करें –
'**ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्, ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे साधिदेवते प्रीयेताम्, ॐ दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम्, ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्, ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्, ॐ माहेश्वरीपुरोगा**

उमामातरः प्रीयन्ताम्, ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्, ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्, ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्, ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्, ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्, ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्, ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्, ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्, ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयन्ताम्, ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् ।

अब चावल बाहर डालें- **ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः, ॐ हताश्च परिपन्थिनः, ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः, ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु, ॐ शाम्यन्तु घोराणि, ॐ शाम्यन्तु पापानि, ॐ शाम्यन्त्वीतयः।**

पुनः चावल कलश पर डालें - **ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्, ॐ शिवा आपः सन्तु, ॐ शिवा ऋतवः सन्तु, ॐ शिवा ओषधयः सन्तु, ॐ शिवा नद्यः सन्तु, ॐ शिवा गिरयः सन्तु, ॐ शिवा अतिथयः सन्तु, ॐ शिवा अग्नयः सन्तु, ॐ शिवा आहुतयः सन्तु, ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्, ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्, ॐ शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्, ॐ भगवन्नारायणः प्रीयताम्, ॐ भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम्, ॐ भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम्।'**

अब यजमान कहे - **'ॐ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये',** द्विज कहें - **'ॐ वाच्यताम्'।**

यजमान कहे - **'ब्राह्मयं पुण्यं महर्यच्च (महद्यच्च) सुष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ।1।**
**'भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।'**

द्विज तीन बार कहे - **'ॐ पुण्याहम्'।**

यजमान कहे - 'ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।1।
पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।2।
भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्यस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु',

द्विज तीन बार कहे - 'ॐ कल्याणमस्तु'।

यजमान कहे - 'ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्रायाचार्याय च स्वाय चारणाय च।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमतु।1।
सागरस्य यथा वृद्धिर्महालक्ष्यादिभिः कृता। संपूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः।2।
भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्यस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु'।

द्विज तीन बार कहे - 'ॐ ऋद्ध्यताम्'।

यजमान कहे - 'ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम। दिवम्पृथिव्याऽअध्यारूहामाविदामदेवान्स्व-ज्योतिः।1।
स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः।2।
भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्यस्य कर्मणः आयुष्मते स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु',

द्विज तीन बार कहे - 'ॐ आयुष्मते स्वस्ति'।

यजमान कहे - 'ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।1। समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु

न:।2। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्यस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु',

द्विज तीन बार कहे - 'अस्तु श्रीः'।

यजमान कहे - 'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।1।
मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा। आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।1।।

द्विज कहे - 'ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः'।

यजमान कहे - 'ॐ शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा यरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।।1।। शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे। धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।1।।'

द्विज कहे - 'ॐ अस्तु श्रीः'।

यजमान कहे - 'ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनाꣳरूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।1।।
प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्। भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः।।1।।
ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। ॐ प्रजापते न त्वदे तान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयꣳस्याम पतयो रयीणाꣳस्वाहा।।2।।
आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे। श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः'।।1।।

द्विज कहे - 'ॐ आयुष्मते स्वस्ति'।

यजमान कहे - 'ॐ प्रतिपन्थामपद्महि स्वस्ति गामनेहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।1।।'

द्विज कहे - 'ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु'।

यजमान कहे - अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीमहागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु',

द्विज तीन बार कहे - 'ॐ अस्तु परिपूर्णः'।

यजमान कहे - 'ॐ कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृजे'।

अब अविधुर चार द्विज दूर्वा और आम के पत्तों से अभिषेक कर्म करें - (अभिषेक काल में पत्नी यजमान के बार्यी ओर बैठे)

'ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।1।

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधासो देशेऽअभवत्सरित्।2।

ॐ वरुणस्योत्तभनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि
वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत सदनमासीद ।3।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।4।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिशिंचाम्यसौ। 5।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि।6।
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसयाभिषिंचामि।।
सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि।7।
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।8।
ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञम्प्रावन्तु नः शुभे।9।
ॐ त्वं यविष्टदाशुषो नॄःपाहि श्रृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत्मना।10।
ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्यशुष्मिणः प्रप्रदातारन्तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे शं चतुष्पदे।11।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।12।
ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।13।
अमृताभिषेकोऽअस्तु। शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु।14।'

इसके बाद तीन अथवा पांच पुत्रवती वृद्ध सुवासिनियों से आरती कराना है -

**'ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत इन्दस्याधिपत्ये प्रजामेदाः विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्येऽ ओजोमेदा विश्वाभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्पाहि मनारश्वोसि।। अनेन पुण्याहवाचनेन भगवती दुर्गा प्रीयताम्'।।**

अब गौर्यादिषोडशमातृकाओं, षड्विनायकमातृकाओं, श्री आदि सप्तघृतमातृकाओं, सप्तस्थलमातृकाओं, आदि का पूजन करें।

**5.24 षोडशमातृका स्थापनं पूजनं :-**

**आग्नेय्यां प्रतिमासु अक्षत पुञ्जेषु प्राक्संस्थं उदक्संस्थं वा मातृस्थापनम् ।।**

सर्वप्रथम गौर्यादि षोडश मातृका के समक्ष गणपति की स्थापना करें

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ.कु.देवता 16 | लोकमाता 12 | देवसेना 08 | मेधा 04 |
| तुष्टि 15 | माता 11 | जया 07 | शची 03 |
| पुष्टि 14 | स्वाहा 10 | विजया 06 | पद्मा 02 |
| धृति 13 | स्वधा 09 | सावित्री 05 | गणेश गौरी 01 |

**1. ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामह वसो मम । आहमजानि गर्भध मा त्वमजासि गर्भधम् । ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेभ्योगृत्स पतिभ्यश्चवो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरुपेभ्यश्चवो नमो नमः । हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज। सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः। ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः भो गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ।** तथा **ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।1। ॐ हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः गौर्य्यैनमः । ॐ भूर्भुवःस्वः गौरीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः भो गौरि इहागच्छ इह तिष्ठ ।** – नैर्ॠत्ये।

**2. ॐ हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च । आरोहतं वरुण मित्र गर्त ततश्च क्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरणोऽसि ।1। पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसं स्थिताम् । जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः पद्मायैनमः । ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः भो पद्मा इहागच्छ इह तिष्ठ ।**– तदुपरि दक्षिणे।

**3. ॐ निवेशनः सङ्गमनोवसूनां विश्वा रुपाऽभिचष्टे शचीभिः । देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ।1। दिव्यरुपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम् । रक्तमुक्ताद्यलंकारां शचीमावाहयाम्यहम् ।1। ॐभूर्भुवःस्वः शच्यैनमः । ॐ भूर्भुवःस्वः शचीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो शची इहागच्छ इह तिष्ठ।**– तदुपरि दक्षिणे।

**4. ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।1। विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।। बुद्धिप्रवोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायैनमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मेधामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो मेधा इहागच्छ इह तिष्ठ ।**– तदुपरि आग्नेये।

**5. ॐ सविता त्त्वा सवानाꣳसुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमो वनस्पतीनाम् । वृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ।1। जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम् । वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीमावाहयाम्यहम् ।। ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्र्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो सावित्री इहागच्छ इह तिष्ठ।** – पुनरधः गणेशस्य वामे।

**6. ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ 2ऽउत । अनेशन्नस्य या इषवः आभुरस्य निषङ्गधिः।1। सर्वास्त्रधारिणीं**

देवीं देवानामभयप्रदाम् । सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयामावाहयाम्यहम्।1 । ॐभूर्भुवःस्वः विजयायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः विजयामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो विजया इहागच्छ इह तिष्ठ ।- तदुपरि।

7. ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्राश्चिाकृणोति समनावगत्य । इषुधिः सङ्का पृतनाश्च सर्वा पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ।1। सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम् । त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम् ।।1 ॐ भूर्भुवःस्वः जयायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः जयामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो जया इहागच्छ इह तिष्ठ ।- तदुपरि।

8. ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः । देवसेना नामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ।1। मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम् । आवाहयामि देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः देवसेनायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो देवसेना इहागच्छ इह तिष्ठ । – तदुपरि।

9. ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरो तीतृपन्त पितरो पितरः शुन्धद्ध्वम्।1। अग्रजः सर्वदेवानां कव्यार्थ या प्रतिष्ठिता । पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो स्वधा इहागच्छ इह तिष्ठ । – पुनरधः सावित्र्याः वामे।

10. ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा, वायवे स्वाहा, दिवे स्वाहा, सूर्याय स्वाहा ।1। हविर्गृहित्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति । तां दिव्यरुपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्वाहा इहागच्छ इह तिष्ठ ।- तदुपरि।

11. ॐ आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु । विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि । दीक्षा तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳसग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ।1। आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोकपूजिताः। सर्व कल्याणरुपिण्यो वरदा दिव्यभूषणा ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः मातृभ्यो नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मातृरावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो मातर इहागच्छ इह तिष्ठ ।। - तदुपरि।

12. ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मेऽक्षितञ्च मेऽन्नञ्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।1। आवहयामि लोकमातृः जयन्ती प्रमुखाः शुभाः। नानाऽभीष्ट प्रदाःशान्ताः सर्वलोक हितावहाः।1। ॐ भूर्भुवःस्वः लोकमातृभ्यो नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः लोकमातृरावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो लोकमातरः इहागच्छ इह तिष्ठ ।- तदुपरि।

13. ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।1। सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम् । हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः धृतीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो धृती इहागच्छ इह तिष्ठ । - पुनरधः स्वधया वामे।

14. ॐ अंगान्यात्मन् भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती । इन्द्रस्य रुपं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः ।1। पोषयन्ती जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः । शाकैः फलैः जलैः रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्ट्यै नम । ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो पुष्टि इहागच्छ इह तिष्ठ।- तदुपरि।

15. ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेद । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।1।

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम् । प्रसाद सुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः तुष्ट्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो तुष्टि इहागच्छ इह तिष्ठ। – तदुपरि।

16. ॐ प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा । चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ।1। पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे । नाना जाति कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ।1। ॐ भूर्भुवःस्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो आत्मनः कुलदेवता इहागच्छ इह तिष्ठ ।– तदुपरि। अथवा नाममन्त्रों से आवाहन करें –

1. ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।
   ॐ भूर्भुवः स्वः भो गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ । और ॐ भूर्भुवःस्वः गौर्य्यै नमः ।
   ॐ भूर्भुवःस्वः गौरीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः भो गौरि इहागच्छ इह तिष्ठ । – नैर्ऋत्ये।
2. ॐ भूर्भुवःस्वः पद्मायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मामावाहयामि स्थापयामि ।
   ॐ भूर्भुवः स्वः भो पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ । – तदुपरि दक्षिणे।
3. ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यैनमः । ॐ भूर्भुवःस्वः शचींमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।
   ॐ भूर्भुवःस्वः भो शचि इहागच्छ इह तिष्ठ। – तदुपरि दक्षिणे।
4. ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायैनमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मेधामावाहयामि स्थापयामि ।
   ॐ भूर्भुवःस्वः भो मेधा इहागच्छ इह तिष्ठ । –तदुपरि आग्नेये।

5. ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्र्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्रींमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सावित्री इहागच्छ इह तिष्ठ। - पुनरधः गणेशस्य वामे।

6. ॐ भूर्भुवःस्वः विजयायै नमः ।ॐ भूर्भुवःस्वः विजयामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो विजया इहागच्छ इह तिष्ठ । - तदुपरि।

7. ॐ भूर्भुवःस्वः जयायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः जयांमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो जया इहागच्छ इह तिष्ठ । - तदुपरि।

8. ॐ भूर्भुवःस्वः देवसेनायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो देवसेना इहागच्छ इह तिष्ठ । - तदुपरि।

9. ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्वधा इहागच्छ इह तिष्ठ । - पुनरधः सावित्र्याः वामे।

10. ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्वाहा इहागच्छ इह तिष्ठ । - तदुपरि।

11. ॐ भूर्भुवःस्वः मातृभ्यो नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मातरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो मातर इहागच्छ इह तिष्ठ ।। - तदुपरि।

12. **ॐ भूर्भुवःस्वः लोकमातृभ्यो नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः लोकमातरमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो लोकमातरः इहागच्छ इह तिष्ठ ।** – तदुपरि।

13. **ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः धृतींमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो धृती इहागच्छ इह तिष्ठ ।** पुनरधः स्वधया वामे।

14. **ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्ट्यै नम । ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्टींमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो पुष्टी इहागच्छ इह तिष्ठ।**– तदुपरि।

15. **ॐ भूर्भुवःस्वः तुष्ट्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः तुष्टींमावाहयामि स्थापयामि।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो तुष्टी इहागच्छ इह तिष्ठ।** – तदुपरि।

16. **ॐ भूर्भुवःस्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो आत्मनः कुलदेवता इहागच्छ इह तिष्ठ ।** – तदुपरि।
**ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ९समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ ।1।**
**ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।1।**
**श्री गणेशपूर्वकगौर्यादिषोडशमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ।।**

पंचोपचार अथवा दशोपचार अथवा षोडशोपचारों से पूजन करें–

'**ॐ भूर्भुवःस्वः षोडशमातृकादेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धादीन्समर्पयामि।**' इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् -
'**ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्य वदना माहेश्वरी लीलया। कौमारी रिपुदर्पनाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी।**

वाराही घनघोर घुर्घुरमुरवी चैंद्री च वज्रायुधा। चामुण्डा गणनाथ रुद्र सहिताःरक्षन्तु भोः मातरः।1।
ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
हृष्टि पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता । गणेशेनाधिका ह्यैता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडशः।2।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम । निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ।3।
अनया पूजया षोडशमातृकादेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्ताम् न मम ।।'

**5.25 सप्तघृतमातृकापूजनम् -** तत्र प्रमाणं -

'तत्पुरः सन्निधाने वा कुड्ये रेखा घृतेन च । धारालिंगेन मन्त्रेण पञ्च वा सप्त वा लिखेत् ।1।
गृहनिर्गमवामे च वसोर्द्धारा वितर्दिका । कार्या विवाहे विद्वद्भिः गृहे व पूर्व-दक्षिणे ।2।'

स्थलप्रमाणम् - **गृहे वै पश्चिमद्वारे तथा उत्तर एव च । सप्तघृतमातृवेदि गृहनिर्गमदक्षिणे ।।'**

विधिः - **'कुड्ये आवाहित मातृणामुपरि सिन्दूराक्तेन घृतेन भित्तौ धारां दद्यात् ।
नागवल्लीदले सकुंकुमं ससिन्दूरं वा तप्तं घृतं गृहीत्वा तेन प्राक्संस्था उदक्संस्था वा प्रदेशमात्रीः धाराः कुर्यात् । तासां शिरांसि च मिथो मेलनीयानि । एकीकृत्योद्ध्र्वभागे तु कुंकुमेन गुडादिना इति ।।** अर्थात् अग्निकोण में दीवाल या पट्टे पर कुंकुम (रोली) से क्रमशः ऊपर से नीचे तक एक, दो, तीन, चार, पांच, छः एवं सात बिंदुओं को लिखकर उन पर पूजा करे।

**ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।।**

इस मन्त्र के सुप्वा तक का पाठ पढ़कर घृतधारा करके कामधुक्ष: ऐसा पढ़कर गुड़ से उनको मिला देवे । वहां देवताओं का आवाहन करे

**1. ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशूनां रुपमन्नस्य रसो यशः श्री श्रयतां मयि स्वाहा ।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वःभो श्री इहागच्छ इह तिष्ठ ।**

**2. ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः लक्ष्म्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वःभो लक्ष्मी इहागच्छ इह तिष्ठ ।**

**3. ॐ भद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः धृतिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो धृति इहागच्छ इह तिष्ठ ।**

**4. ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मेधामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो मेधा इहागच्छ इह तिष्ठ।**

**5. ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा । श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो स्वाहा इहागच्छ इह तिष्ठ ।**

**6. ॐ आयङ्गौः पृश्निरवक्रमीदसन्मातरं पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।। ॐ भूर्भुवःस्वः प्रज्ञायै नमः।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो प्रज्ञा इहागच्छ इह तिष्ठ।**

**7. ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धिया वसुः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सरस्वत्यै नमः।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वःभो सरस्वती इहागच्छ इह तिष्ठ।**

अथवा नाममन्त्रों से आवाहनादि करें –

1. ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वःभो श्री इहागच्छ इह तिष्ठ।

2. ॐ भूर्भुवःस्वः लक्ष्म्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वःभो लक्ष्मी इहागच्छ इह तिष्ठ।

3. ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वःभो धृती इहागच्छ इह तिष्ठ।

4. ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वःभो मेधा इहागच्छ इह तिष्ठ।

5. ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वःभो स्वाहा इहागच्छ इह तिष्ठ।

6. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रज्ञायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो प्रज्ञा इहागच्छ इह तिष्ठ।

7. ॐ भूर्भुवःस्वः सरस्वत्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वःसरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वःभो सरस्वती इहागच्छ इह तिष्ठ॥

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताः घृतमातरः॥

सप्तघृतमातृकादेवताभ्यो नमः। इत्यावाह्य प्रतिष्ठापयेत्।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मो 3 प्रतिष्ठ।
सप्तघृतमातृकादेवता सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु । पंचोपचार अथवा दशोपचार अथवा षोडशोपचारों से पूजन करें -
'ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तघृतमातृकादेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धादीन्समर्पयामि।' सम्पूज्य प्रार्थयेत् -
यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ।।
अनया पूजया सप्तघृतमातृकादेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्ताम् न मम ।।

## 5.26 सप्तस्थलमातृका पूजनम्

तण्डुलपुञ्जेषु पूगीफलेषु वा ब्राह्मी आदि सप्तस्थलमातृका -

1. 'ॐ साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मक जगच्छून्यं चाशून्यं च।। ॐ भूर्भुवस्वः ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि। भो ब्राह्मि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'
2. 'ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ।। ॐ भूर्भुवस्वः माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि। भो माहेश्वरि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'
3. 'ॐ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्। पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्। त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।। ॐ भूर्भुवस्वः कौमार्यै नमः। कौमारीमावाहयामि स्थापयामि। भो कौमारि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'
4. 'ॐ कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्। सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।। ॐ भूर्भुवस्वः वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि। भो वैष्णवि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

5. ‘ॐ सत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे विश्वञ्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृत ञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवस्वः वाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि स्थापयामि। भो वाराहि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।’

6. ‘ॐ सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि कालकाष्ठाऽऽदिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।। ॐ भूर्भुवस्वः इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि। भो इन्द्राणि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।’

7. ‘ॐ योऽहमस्मीति वा सोऽहमस्मीति वा योऽसौ सोऽहमस्मीति वा या भाव्यते सैषा षोडशी श्रीविद्या पंचदशाक्षरी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी बालाऽम्बिकेति बगलेति वा मातंगीति स्वयंवरकल्याणीति भुवनेश्वरीति चामुण्डेति चण्डेति वाराहीति तिरस्करिणीति राजमातंगीति वा शुकश्यामलेति वा लघुश्यामलेति वा अश्वारूढेति वा प्रत्यंगिरा धूमावती सावित्री सरस्वती गायत्री ब्रह्मानन्दकलेति।। ॐ भूर्भुवस्वः चामुण्डायै नमः। चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि। भो चामुण्डे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।’

अथवा नाममन्त्रों से भी आवाहनादि कर सकते हैं –

1. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राह्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्राह्मी इहागच्छ इहा तिष्ठ।
2. ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वर्य्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।
   ॐ भूर्भुवःस्वः भो माहेश्वरी इहागच्छ इहा तिष्ठ ।
3. ॐ भूर्भुवःस्वः कौमार्य्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि ।
   ॐ भूर्भुवःस्वः भो कौमारी इहागच्छ इहा तिष्ठ ।

4. ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णव्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वैष्णवी इहागच्छ इह तिष्ठ ।

5. ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वाराही इहागच्छ इहा तिष्ठ । ॐ

6. ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राण्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्राणी इहागच्छ इह तिष्ठ ।

7. ॐ भूर्भुवःस्वः चामुण्डायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो चामुण्डा इहागच्छ इहा तिष्ठ । इत्यावाह्य

ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञᳫसमिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मो 3 प्रतिष्ठ ।। ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। ब्राह्‌यादि सप्तमातृकाभ्यो नमः। पंचोपचार अथवा दशोपचार अथवा षोडशोपचारों से पूजन करें -

'ॐ भूर्भुवःस्वः स्थलमातृकादेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धादीन्समर्पयामि।'

अनया पूजया स्थलमातृकादेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्ताम् न मम ।।

## 5.27 ॐकारपूजनं श्रीपूजनं च -

'ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।'

निम्न मन्त्र से पंचोपचार अथवा दशोपचार अथवा षोडशोपचारों से पूजन करें – **'ॐ भूर्भुवःस्वः ॐकारय नमः।'**

**'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्म ऽइषाण।।'** निम्न मन्त्र से पंचोपचार अथवा दशोपचार अथवा षोडशोपचारों से पूजन करें – **'ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियै नमः।'**

**5.28 त्रिदेवपूजनं।**

परमपितामह ब्रह्माजी का ध्यान करे –

**'ॐ सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।**
**सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपद्ये।।**

**ॐ भूर्भुवस्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो ब्रह्म इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

भगवान् विष्णु का ध्यान करे –

**'शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।**
**लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो विष्णु इहागच्छेह तिष्ठ।'**

भगवान् शंकर का ध्यान करे –

'वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं। वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिं।।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं। वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः शिवाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः शिवमावाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो शिव इहागच्छेह तिष्ठ।'

**5.29 अथ सांकल्पिकनान्दीमुखश्राद्धम्** (आभ्युदयिक श्राद्धम्) – **तत्र प्रमाणम्** –

**कन्यापुत्रविवाहेषु प्रवेशे नववेश्मनः। शुभकर्मणि बालानां चूडाकर्मादिके तथा ।।**
**सीमन्तोन्नयने चैव पुत्रादिमुखदर्शने । नान्दीमुखान् पितृनादौ तर्पयेत्प्रयतो गृही ।।**

विधिः – **'आभ्युदयिके प्रदक्षिणमुपचारः पूर्वाह्णे, पित्र्यमन्त्रवर्जं जपः, ऋजवो दर्भाः, यवैस्तिलार्थाः, संपन्नमिति इतरे ब्रूयुः । नान्दीमुखान् पितृन् आवाहयिष्ये इति पृच्छति आवाहयेत्यनुज्ञातो नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्तामिति, अक्षय्यस्थाने नान्दी मुखान् पितृन् वाचयिष्ये इति पृच्छति वाच्यतामित्यनुज्ञातो नान्दीमुखाः पितरः पितामहाः प्रपितामहाः, मातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाश्च प्रीयन्ताम् इति, न स्वधां प्रयुञ्जीत् । कर्तव्यं चाभ्युदयिकं श्राद्धमभ्युदयार्थिना । सव्येन चोपवीतेन ऋजु दर्भैश्च धीमता । (हेमाद्रौ) अत्र सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः । षड्दैवतं श्राद्धम् । पूर्वाह्ने इत्यनेन अपराह्नकालस्य निषेधः । उदीरितामवर इत्यादि पितृमन्त्राणां जपस्य निषेधः । तिलोऽसीति पदस्थाने यवोऽसि इत्यूहः कार्यः। स्वधया इति पद स्थाने पुष्टि शब्दं वदेत् ।'**

अर्थात् उत्सव, आनन्द, यज्ञ, पुत्र/पुत्री विवाह, गृह प्रवेश, शुभ कर्म, सीमन्तोन्नयन, चूडादि कर्म, मूर्ति प्रतिष्ठा आदि कार्यों में शास्त्रोक्त विधान से नान्दीमुख श्राद्ध करना चाहिए । प्रातः काल प्रातः कृत्य, स्नानादि से निवृत्त होकर विशुद्ध भूमि में आकर शुद्ध आसन पर बैठकर

स्वस्तिवाचन एवं गणपति पूजन करने के पश्चात् पुण्याहवाचन से पूर्व देवविधि के अनुसार आभ्युदयिक श्राद्ध को करे । अभ्युदय (वृद्धि) प्राप्ति के लिए जो कार्य किया जाता है उसे आभ्युदयिक श्राद्ध कहते हैं, इसे ही नान्दीमुख श्राद्ध कहा जाता है। इसमें नामभेद की बात नहीं है । यह श्राद्ध प्रातः काल में ही करना चाहिए । अपराह्नकाल का निषेध है । इस श्राद्ध में तिलों के स्थान पर यव का प्रयोग होता है । मन्त्रों के अतिरिक्त स्वाहा या स्वधा शब्द का प्रयोग नहीं होता है । इसमें यजमान पूर्वाभिमुख बैठकर ही समस्त कार्य करता है। इसमें कुशा भी सीधे ढंग से प्रयोग में लाई जाती है । इत्यादि.... । आसन पर बैठकर

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।**

**पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।**

जल से प्रोक्षण कर आचमन करके स्वस्ति वाचन करे ।

**ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।**

**ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे । पयोधाः पयःस्वती प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।**

**ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि । विष्णोः ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।**

**ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यदेवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवता देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ।**

**ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ঌ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति र्ब्रह्म शान्तिः सर्व ঌशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि सुशान्तिर्भवति ।**

**ॐ विश्वेदेवा सः इह मादयन्ता मो प्रतिष्ठ एष वै प्रतिष्ठ नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ।**

ॐ विश्वानि देव सवित दुर्रितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ।
ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ।

।।अथायुष्य मन्त्रः।।

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु। ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्।।
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः। अनन्तेनायुशा तेन जीवेम शरदः शतम्।।
सत्यानि पंचभूतानि विनाशरहितानि च। अविनाश्यायुशा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्।।

ॐ आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदम् । इदꣳहिरण्यं वर्चस्वज्जैत्राया विशतादुमाम् ।। 1
ॐ न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत् । यो विभर्ति दाक्षायणꣳहिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः। स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।2।।
ॐ यदावध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।। 3 ।।
ॐ यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये । विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ।। 4 ।।

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि । सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।। इति गणेशं नमस्कृत्य,
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।। इति विष्णुं च प्रणम्य,
सत्यानुष्ठानसम्पन्नाः सर्वदा यज्ञबुद्धयः । पितृमातृपराश्चैव सन्त्वस्मत् कुलजाः नराः ।। इति कुलपुरुषान्प्रणम्य,

विशेषपूजनम् -

**आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च । प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणाम्प्रीताः पितामहाः ।।**

**आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्त्तिं पुष्टिं बलं श्रियम् । पशून् सुखं धनं धान्यं प्राप्नुया पितृपूजनात् ।।**

**देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।**

वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पूगीफल, ताम्बूल और दक्षिणा रखकर आचमन और प्राणायाम करके संकल्प करें - **'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः पूर्वोक्त एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ देवब्राह्मणानां च सन्निधौ अद्य दुर्गापूजनांगत्वेन सांकल्पिकविधिना ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्ननिष्क्रयीभूतं यथाशक्तिहिरण्येन नान्दीश्राद्धं करिष्ये'।**

**पाद्यादि** दान करे -

**'सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।1।**
**अमुकगोत्रा मातृपितामहीप्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।2।**
**अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखा ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।3।**
(द्वितीयगोत्राः -) **मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः'।4।**

**आसन** दान करें -

**'सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।1।**

अमुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।2।

अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।3।

(द्वितीयगोत्राणां –)

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहनां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः'।4।

गन्धादि दान करें –

'सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।1।
अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।2।
अमुकगोत्रेभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।3।
(द्वितीयगोत्रेभ्यो –)
मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यो सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः'।4।

भोजननिष्क्रयद्रव्य दान करें –

'सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं

दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।1।

अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।2।

अमुकगोत्रेभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।3।

(द्वितीयगोत्रेभ्यो –)

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यो सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः'।4।

सक्षीर जल दान करें –

'सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्।1।
अमुकगोत्रा मातृपितामहीप्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्।2।
अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखा ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्।3।

(द्वितीयगोत्राः –)

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्'।4।

<u>जलाक्षतपुष्प</u> दान करें – '**चतुर्थस्थानेषु शिवा आपः सन्तु** – इति जलम्। **अक्षतं चारिष्टमस्तु** – इत्यक्षतान्।
**सौमनस्यमस्तु** – इति पुष्पम्। '**ॐ अघोराः पितरः सन्तु** – इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।

<u>आशीर्वाद</u> ग्रहण करें –

यजमान कहे – '**गोत्रं नो वर्धताम्**', द्विज कहे – '**वर्धताम् वो गोत्रम्**'।
यजमान कहे (सिर ढ़ककर) – '**दातारो नोऽअभिवर्धताम्**', द्विज कहे – '**अभिवर्धताम् वो दातारः**'।
यजमान कहे – '**वेदाश्च नोऽअभिवर्धन्ताम्**', द्विज कहे – '**अभिवर्धन्ताम् वो वेदाः**'।
यजमान कहे – '**संततिर्नो वर्धताम्**', द्विज कहे – '**वर्धताम् वः सन्ततिः**'।
यजमान कहे – '**श्रद्धा च नो मा व्यगमत्**', द्विज कहे – '**मा व्यगमत् वः श्रद्धा**'।
यजमान कहे – '**बहु देयं च नोऽअस्तु**', द्विज कहे – '**अस्तु वो देयम्**'।
यजमान कहे – '**अन्नं च नो बहु भवेत्**', द्विज कहे – '**भवतु वो बह्वन्नम्**'।
यजमान कहे – '**अतिथींश्च लभामहे**', द्विज कहे – '**लभन्ताम् वोऽअतिथयः**'।
यजमान कहे – '**याचितारश्च नः सन्तु**', द्विज कहे – '**सन्तु वो याचितारः**'।
यजमान कहे – '**एषा आशिषः सत्याः सन्तु**', द्विज कहे – '**सन्त्वेताः सत्याशिषः**'।

<u>दक्षिणा</u> दान दें –

'**सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।1।**

**अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।2।**

**अमुकगोत्रेभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।3।** (द्वितीयगोत्रेभ्यो -)

**मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यो सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः'।4।**

**'नान्दीश्राद्धं संपन्नं सुसंपन्नमस्तु'** - यह कह कर अगले मन्त्र से विसर्जन करें -

**'ॐ वाजे वाजेवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबतमादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः'।1।**

इस मन्त्र से अनुव्रजन करें -

**'आमा वाजस्य प्रसवोजगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात्'।2।**

यजमान कहे - **'अस्मिन्नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् नान्दीमुखप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽअस्तु'**, द्विज तीन बार कहे - **'अस्तु परिपूर्णः, अस्तु परिपूर्णः, अस्तु परिपूर्णः'।**

**5.30-1 अथ आचार्यवरणं :-** (यह केवल यज्ञ के दिन करें)

हाथ में गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रा और वस्त्र लिये हुये सर्व प्रथम आचार्यत्व हेतु एक ब्राह्मण से निवेदन करें -

**'अस्मिन्दुर्गापूजनादिहोमपर्यन्तकर्मकर्तुं......गोत्रवन्तं.....शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रावासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।'** आचार्य कहें -

**'ॐ वृतोऽस्मि। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते'।**

उनके हाथों में गन्धादि देकर पुनः प्रार्थना करें -

**'ॐ बृहस्पते इत्यस्य मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता आचार्यवरणे विनियोगः।**

**ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं देहि चित्रम्।।**

**आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽअस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत।।'**

चन्दनाक्षतपुष्पादि से आचार्यजी की पूजा करें। अब यज्ञ केलिये ब्रह्मा का वरण करें।

**5.30-2 अथ ब्रह्मा वरणं :-**

हाथ में पुनः गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रा और वस्त्र लिये हुये ब्रह्मा पद केलिये एक ब्राह्मण से निवेदन करें -

**'अस्मिन्दुर्गानूजनादिहोमपर्यन्तकर्मकर्तुं....गोत्रवन्तं....शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रावासोभिः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।'** ब्रह्मा कहें -

**'ॐ वृतोऽस्मि। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते'।**

उनके हाथों में गन्धादि देकर पुनः प्रार्थना करें -

**'ॐ ब्रह्मणा ते इत्यस्य मन्त्रस्य विश्वामित्रो ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, ब्रह्मा देवता, ब्रह्मवरणे विनियोगः।**

**ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखिया सधमाद आशु। स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वानुपयाहि - सोमम्।। यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्ब्रह्मा द्विजपते भव।।'**

चन्दनाक्षतपुष्पादि से ब्रह्माजी की पूजा करें। अब यज्ञ केलिये अन्य आवश्यक ऋत्विजों का वरण करें।

**5.30-3 अथ ऋत्विग्वरणं :-**

एकाग्नि विधि से केवल आचार्य व ब्रह्मा के वरण से कर्म को कर सकते हैं। यदि सामर्थ्य है और आवश्यकता भी हो तो सामर्थ्य व आवश्यकता के अनुसार (23,15 अथवा 11) जितने ब्राह्मणों को वरण करना है उन्हें उत्तराभिमुख बिठाकर उनके समक्ष हाथ में गन्ध ाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रा और वस्त्र लिये हुये उनसे निवेदन करें -

**'अस्मिन्दुर्गापूजनादिहोमपर्यन्तकर्मकर्तु.....गोत्रवन्तं.....शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रावासोभिः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।'** वे सब कहें -

**'ॐ वृताः स्म। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते'।**

अब सबके हाथों में दक्षिणा देकर प्रार्थना करें -

**'भगवन् सर्वधर्मा सर्वधर्मपरायण। वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वं मखे भव।।'**

चन्दनाक्षतपुष्पादि से ऋत्विजों की पूजा कर पुनः प्रार्थना करे -

**'अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः। ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसःसदा।।**
**अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः। ममाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।।**

**ऋत्विज्यथापूर्वं शक्रादीनां मखे भवेत्। यूयं तथा मे भवत ऋत्विजोऽर्हथ सत्तमाः।।**
**अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः। सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्।।**
**अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया। सुप्रसन्नैश्च कर्तव्यं कर्म मे विधिपूर्वकम्।।**
**यथाविहितं कर्म कुरु** (बहवश्चेत् - कुरुत)। विप्रः - **यथाज्ञानं करवाणि** (करवाम)।।'

## 5.31 अथ मधुपर्कपूजाप्रयोगः-

यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र के अनुसार मधुपर्क से वरण किये गये समस्त ऋत्विजों की पूजा करने का क्रम बताया जा रहा है। (यदि वरण किये गये ब्राह्मण अलग-अलग वेदी हो तो उनकी मधुपर्क पूजा उस-उस वेद के गृह्यसूत्र के अनुसार ही करें)। समस्त ब्राह्मणों को एक पंक्ति में पूर्वाभिमुख बिठायें और स्वयं यजमान उत्तराभिमुख बैठें। यजमान आचमन कर हाथ जोड़कर प्रत्येक ब्राह्मण से प्रार्थना करें -

1. **'ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्'**, द्विज कहे - **'ॐ अर्चय'**।

2. आचार्य जितने ब्राह्मण वरण किये गये हैं उतने विष्टर ग्रहण कर कहे - **'ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः'** और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे - **'ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्'** और उन्हें दे, द्विज यजमान से ग्रहण कर कहे - **'ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि'**। सभी के द्वारा ग्रहण किये जाने पर सभी द्विज मिलकर कहें और अपने-अपने आसन के नीचे विष्टर को उत्तराग्र रखे - **'ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।'**

3. आचार्य पाद्यपात्र ग्रहण कर कहे - **'ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं'** और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे - **'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्'**, द्विज कहे - **'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि'**। अब यजमान प्रत्येक द्विज के पहले दाहिने पैर को फिर बायें पैर को क्रमशः इस मन्त्र से धोवे -

'**ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।**' पुनः आचार्य पूर्ववत् विष्टर ग्रहण कर कहे – '**ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः**' और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे – '**ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्**' और उन्हें दे, द्विज यजमान से ग्रहण कर कहे – '**ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि**'। सभी के द्वारा ग्रहण किये जाने पर सभी द्विज मिलकर कहें और अपने-अपने पैर के नीचे विष्टर को उत्तराग्र रखे – '**ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।**'

4. आचार्य अर्घ्यपात्र ग्रहण कर कहे – '**ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः**', और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे – '**ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम्**', द्विज कहे – '**ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि**'। यजमान के हाथ से प्रत्येक द्विज अर्घ्यपात्र को इस मंत्र से ग्रहण करें – '**ॐ आपस्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नुवानि।**' सभी के द्वारा ग्रहण किये जाने पर सभी द्विज मिलकर कहें और जल को भूमि पर गिरायें – '**ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरामापरासेचिमत्पयः।**'

5. आचार्य आचमनीयपात्र ग्रहण कर कहे – '**ॐ अचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्**', और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे – '**ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्**', द्विज कहे – '**ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामि**'। यजमान के हाथ से प्रत्येक द्विज आचमनीयपात्र को ग्रहण कर इस मंत्र से एक बार आचमन करे – '**ॐ आमागन्यशसा सꣳसृज वर्चसा तम्मा कुरु प्रियम्प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्।**' फिर स्मार्त आचमन करें।

6. आचार्य ढके हुये मधुपर्कपात्र को ग्रहण कर कहे – '**ॐ मधुपर्क मधुपर्क मधुपर्कम्**', और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे – '**ॐ मधुपर्क प्रतिगृह्यताम्**', द्विज कहे – '**ॐ मधुपर्क प्रतिगृह्णामि**'। यजमान के हाथ में स्थित मधुपर्कपात्र को खोलकर इस मंत्र से देखें – '**ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे।**' और इस मंत्र से यजमान के हाथ से ले – '**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो**

**बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।'** अपने बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगुष्ठ से प्रदक्षिणा के क्रम से एक बार आलोडन कर थोड़ा जमीन पर गिरायें फिर दोबारा मन्त्र का पाठकर पुनः थोड़ा जमीन पर गिराये – **'ॐ नमः स्यावास्यायान्यशनेयत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि।'** तत्पश्चात् इस मंत्र से तीन बार अनामिका और अंगुष्ठ से प्राशन करके शेष को बांटें – **'ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳरूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि।'** तदनन्तर स्मार्तविधि से आचमन कर निम्न विधि से अपने अंगों को कराग्र से स्पर्श करें –

**'ॐ वाङ्मे आस्येऽअस्तु** (मुख)', **'ॐ नसो मे प्राणोऽअस्तु** (दोनों नासिका छिद्र)', **'ॐ अक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तु** (दोनों आंख)', **'ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु** (दोनों कान)', **'ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु** (दोनो बाहु)', **'ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽअस्तु** (दोनों जांघ)', **'ॐ अरिष्टानि मेऽअंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु** (पूरे शरीर को दोनों हाथों से स्पर्श करे)। हस्तप्रक्षालन कर आचमन करे।

7. आचार्य कहे – **'ॐ गौर्गौर्गौः'**, यजमान कहे – **'ॐ गौः प्रतिगृह्यताम्'**, द्विज कहे – **'ॐ गौः प्रतिगृह्णामि,**
**ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनांꣳस्वसाऽआदित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रणुवोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ठ।। मम अमुष्य यजमानस्य चोभयोः पाप्मा हतः ॐ'**। पुनः जोर से कहे – **'ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु।'**

**अथ प्रार्थना** :-

अब यजमान सभी ब्राह्मणों के समक्ष हाथ जोड़कर प्रार्थना करे –

**'ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः। वेदानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम्।1।**
**जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः। देवानां च पितॄणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः।2।**

येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्। रक्षन्तु सततं तेषां जपयज्ञं व्यवस्थिताः।3।
ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। येषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः।4।
पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः। सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः।5।
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा। यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः।6।
अंगीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः। यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः।7।
यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः। अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।8।
देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा। अदुष्टभाषणा नित्यं मा सन्तु परनिन्दकाः।9।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।10।'

(आचार्यजी से विशेष प्रार्थना –)

'संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः। प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं मे भवत्विति।11।
मन्त्रमूर्तिर्भवान्नाथ संसारोच्छेदकारक। सांगं कर्म यथा मे स्यात्तथा कुरु हि भूसुर।12।
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया। सुप्रसादेन कर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम्।13।

।। अथ मधुपर्कांग गोदानम्।।

ॐ कृतस्य मधुपर्कादिपूजनकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं, रजतं चन्द्रदैवतं .....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

*आचार्यं पृथक्प्रार्थयेत् -*

**मन्त्रमूर्तिभवान्नाथ संसारोच्छेदकारक। सांगं कर्म यथा में स्यात्तथा कुरु हि भूसुर ।। 11 ।।**
**संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः। प्रारब्धः त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं कुरु सुव्रत ।। 12 ।।**

## 6. अथ मण्डपान्तर्वर्तिकर्म

### 6.1 अथ मण्डप प्रवेशः ।।

पूजास्थानस्य चतुर्दिक्षु अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाणामन्यतमस्य वितस्तिमात्रान्दशकीलान् " **ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्** " इति मंत्रेणाष्टोत्तरशताभिमन्त्रितान्

**'ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।।1।।**
**मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।।2।।'**

इति मन्त्रद्वयेन निखनेत्। "**ॐ भूर्भुवःस्वः सुदर्शनायास्त्राय फट्**" इति मन्त्रेण प्रत्येकमस्त्रं संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण पंचोपचारैः संपूजयेत्। इतना कार्य करने के पश्चात् यजमान मण्डप में प्रवेश करे । ततः सम्भारान् गृहीत्वा सुवासिनी ब्राह्मणान् अग्रतः कृत्वा सतूर्यघोषः सपरिकरः पञ्चपूर्णकुम्भो गणपति वरुण मातृकापीठं वसोर्द्धारापीठं च ब्राह्मणानां हस्ते, यजमानः स्वहस्ते गणपतिं गृहीत्वा

**'ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।'**

इति मन्त्रेण महामण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य मण्डपस्य पश्चिमद्वारमागत्य पाणिभ्यां चार्घपात्रमादाय शान्ति अध्यायं पठेत् ।

**'ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये सामप्राणम्प्रपद्ये चक्षुःश्रोत्रम्प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।।1।।**

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वाति तृणम्बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।2।।

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।3।।

कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता।।4।।

कस्त्वा सत्यो मदानाम्मꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजेवसु।।5।।

अभीषुणः सखीनामविता जरितृणाम्। शतम्भवास्यूतिभिः।।6।।

कया त्वन्नऽऊत्याभिप्रमन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्यऽआभर।।7।।

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।8।।

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा। शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।।९।।

शन्नो वातः पवताꣳशन्नस्तपतु सूर्यः। शन्नः कनिक्रन्दद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु।।10।।

अहानि शम्भवन्तु नः शꣳरात्रीः प्रतिधीयताम्। शन्नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रा –
वरुणारातहव्या। शन्नऽइन्द्रापूषणावाजसा तौ शमिन्द्रासोमासुविताय शंयोः।।11।।

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।।12।।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।।13।।

आपो हिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।।14।।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।15।।

तस्माऽअरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।16।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।17।।
दृतेदृꣳहमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।18।।
दृतेदृꣳहमा। ज्योक्तेसन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्।।19।।
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे। अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।।20।।
नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे।।21।।
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।22।।
सुमित्रियानऽआपऽओशधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽअस्मान्द्वेष्टि यंच वयं द्विष्मः।।23।।
तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम
शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्।।24।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।'

ततः पृथिवीं ध्यात्वा-

'चतुर्भुजां पृथ्वीं शुक्लां कूर्मपृष्ठोपरि स्थिताम्। शंखचक्रशूलकरां सुप्रसन्नां विहसिताम्।।
सवत्सां गोरूपधरां पद्मकरां वसुन्धराम्।।' अथ आवाहनम् -
आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि। पृथ्वी त्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाऽभिवन्दिता।।'

अथ पुष्पादिना पूजयेत् -

**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः ।**

इति मन्त्रेण पुष्पादिना संपूज्य अष्टार्घ्यं दद्यात् ।

**ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः ।**

इति मन्त्रेण अर्घ्यं दत्वा प्रार्थयेत् -

**'उधृतासि वराहेण विष्णुना शतबाहुना । दंष्ट्राग्रे लीलया देवी यज्ञार्थे त्वां वृणोम्यहम् ।।**
**ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च । पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्देन श्रवणेन च ।।**
**यमेन पूजिता देवि धर्मवृद्धिजिगीषया । सौभाग्यं पुत्रांश्च दत्ते धनं रूपं च पूजिता ।।'** इति प्रार्थना ।।

ततो मण्डप पश्चिमद्वारेण प्रथमं दक्षिणपादं दत्त्वा प्रविशेत ।।

## 6.2 भूतोत्सादनम्

**करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलो व्याल यज्ञोपवीती ।**
**क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ।।**

अब रक्षोघ्न सूक्त से भूतोत्सादन करें - (ततः आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपांल्लाजामिश्रितान् गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् तत्र मन्त्राः )

**ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षञ्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदः।**

सप्तसथ्ठसदोऽअष्टमीभूतसाधनी। सकामाँ2ऽअद्वनस्वकुरुसंज्ञानमस्तुमेमुना ।।
ॐ यथेमां वाचङ्कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याथ्ठशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानान्दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृद्धयतामुपमादो नमतु ।।
ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यदियच्छवसऽऋत प्रजात तदस्म्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् । उपयाम गृहीतोसि बृहस्पतये त्वैषते योनिर्बृहस्पतये त्वा ।।
ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे निष्टयो यममात्त्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्त्याङ्किरोमि ।।
ॐ रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्त्रक्षोहणो वो वलगहनो वनयामि वैष्णवान्त्रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान्रक्षोहणो वां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ ।।
ॐ रक्षसाम्भागोसि निरस्तथ्ठरक्षऽइदमहथ्ठरक्षोभि तिष्ठामीदमहकारक्षोवबाधऽ इदमहथ्ठरक्षोधमन्तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वेस्तोकानामग्नि राज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृतेऽऊद्र्द्धनभसमारुतङ्गच्छतम् ।।
ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान्विश्श्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्ति विधेम ।।
ॐ रक्षोहा विश्श्वचर्षणिरभियोनिमयोहते । द्रोणेसधस्थमासदत् ।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः । ये भूताः विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

**अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ।।**
**यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।**
**भूतप्रेतपिशाचाद्याः अपक्रामन्तु राक्षसाः । स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवं त्विमाम् ।।**
**भूतानि राक्षसा वापि अत्र तिष्ठन्ति केचन । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम् ।।**

एतैः मन्त्रैः ईशानादि सर्वदिक्षु विदिक्षु ऊर्ध्वाधः सर्षपान् विकीर्य
'**देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु, देवीयाग देवयजनं रक्षस्व ।।**' इति रक्षां कृत्वा

### 6.3 अथ पंचगव्यकरणम् प्रोक्षणं च

1. गोमूत्रम् - **ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।**
2. गोमयम् - **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।**
3. क्षीरम् - **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ।।**
4. दधि - **ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूꣳषि तारिषत् ।।**
5. आज्यम् - **ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामसि प्रियन्देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।।**
6. कुशोदकम् - **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।।**

इति प्रणवेनालोड्य वारुणैः मन्त्रैः कर्मभूमिं प्रोक्षयेत् ।।

**ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन । महरेणाय चक्षसे । यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः।**

**उशतीरिव मातरः । तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ।**

ततः चतुर्भिः मन्त्रैः कर्मभूमिं प्रोक्षेत् ।।

**अग्निं या गर्भं दधिरे विरुपास्तान आपः शं स्योना भवन्तु ।। 1 ।।**
**ॐ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृत अवपश्यं जनानाम् ।**

**मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्तान आपः शꣳस्योना भवन्तु ।। 2 ।।**
**ॐ यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।**

**याः पृथिवीं पयसोदंति शुक्रास्तान आपः शꣳस्योना भवन्तु ।। 3 ।।**
**ॐ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तनु वोपस्पृशत त्त्वचं मे ।**
**सर्वा ꣳअग्नी ꣳरप्सुषदो हुवे वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त ।। 4 ।।**

## 6.4 वास्तुकीलनम्

चारों दिशाओं में पीपल/गूलर/पलाश के एक बित्ता (12 अंगुल) लम्बे 10 कीलों को '**ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्**' इस मन्त्र के 108 बार जपके द्वारा अभिमन्त्रित कर निम्न मन्त्रों का आवृत्ति पूर्वक पाठ करते हुये बांध दें।

**'ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।1।**
**मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।2।**

पुनः '**ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्**' मन्त्र से प्रत्येक कील का पंचोपचार पूजन करके उनमें इन्द्र आदि लोकपालों का आवाहन कर पंचोपचार पूजन करें। गृह रक्षार्थ मौलीसूत्र अथवा मूंज आदि से निर्मित रस्सी से पूरे भवन को प्रदक्षिणा के क्रम से बांधें।

## 6.5 वास्तुपूजनम्

**ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नौ जुषस्व शन्नौ भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।। ॐ भूर्भुवःस्वः गृहवास्तुपुरुषाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

**ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय महाबल पराक्रमाय सर्वाधिवासाश्रितशरीराय ब्रह्मपुत्राय सकलब्रह्माण्डधारिणे भूभारार्पित मस्तकाय पुरपत्तनप्रासादगृहवापिसरकूपादेः सन्निवेशसान्निध्यकराय सर्वसिद्धिप्रदाय प्रसन्नवदनाय विश्वम्भराय परमपुरुषाय शक्रवरदाय वास्तोष्पते नमस्ते । ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि ।। भो वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

अब यजुर्वेदीय पद्धति से चित्र संख्या 15 क पृष्ठ संख्या 350 में दर्शाये गये मण्डल को पीठ पर निर्माण करके रंग भरकर चित्र संख्या 15 ख पृष्ठ संख्या 350 में दर्शाये गये क्रम से आवाहनादि करें। इस 64 पद वास्तुमण्डल में वास्तुपुरुष की कल्पना करते हुये ईशानकोणस्थ पद के दक्षिणार्ध आदि में प्रदक्षिणा के क्रम से सिर आदि अंगों की कल्पना कर तत्तदंगों में स्थित तत्तद् कोष्टों में शिखी आदि देवताओं का आवाहन करें, क्योंकि कहा है कारिका में – 'ब्रह्माणमादितः कृत्वा शिखिनं वा क्रमेण तु।' अर्थात् ब्रह्मा से अथवा शिखी से आरम्भ कर वास्तुदेवताओं की स्थापना करनी चाहिये। यहाँ हम शिखी से आरम्भ कर स्थापना क्रम को दर्शा रहे हैं।

1. ईशानकोणस्थ पद के दक्षिणार्ध में वास्तुपुरुष के सिर की भावना कर उसमें शिखी देवता का आवाहन करें

**'ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।1।**

**तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।2।**

**शिखी कर्पूरधवलस्त्रिनेत्रो वृषवाहनः। वरत्रिशूलहस्तश्च वास्तोः शिरसि संस्थितः।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः शिखिने नमः। शिखिनमावाहयामि स्थापयामि। भो शिखिन् इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

2. उसके दक्षिण में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के दाहिने आंख की भावना कर उसमें पर्जन्य देवता का आवाहन करें –

**'ॐ शन्नो वातः पवताꣳशन्नस्तपतु सूर्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु।1।**

**महाँ2ऽइन्द्रो यऽ ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ2इव। स्तोमैर्वावृधे। उपयाम गृहीतोऽअसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्महेन्द्राय त्वा।2।**

**घनस्तडित्वान्पर्जन्यो नानावर्णपरिप्लुतः। ज्योतिर्धूमश्च वातात्मा वास्तोर्दक्ष दिशि स्थितः।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः पर्जन्याय नमः। पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि। भो पर्जन्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।**

3. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने कान की भावना कर उसमें जयन्त देवता का आवाहन करें –

**'ॐ मर्माणि ते वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वाराजा मृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु।1।**

**उद्युत्यशतवेदसन्देवं वहन्तिकेतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।2।**

**जटिलः श्मश्रुलः शीतः कमण्डल्वक्षसूत्रधृक्। जयन्तोऽब्जासनो गौरो वास्तोर्दक्षे ह्यवस्थितः ।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः जयन्ताय नमः। जयन्तमावाहयामि स्थापयामि। भो जयन्त इह आगच्छ इह तिष्ठ। '**

4. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने अंस (दाहिनी गर्दन) की भावना कर उसमें कुलिशायुध देवता का आवाहन करें –

**'ॐ आयान्त्विन्द्रो वसऽ उपनऽइह स्तुतः सधमादस्तु शूरः। वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वी द्यौर्नक्षत्रिमभिभूति पुष्यात्।1।**

**इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभि भञ्जतीनाम्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम्।2।**

**इन्द्र ऐरावता रूढः पीतो दैत्यविमर्दनः। कुलिशाख्यकरो वास्तोर्दक्षिणांसे समाश्रितः।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि। भो इन्द्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

5. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने बाहु (कन्धा) की भावना कर उसमें सूर्य देवता का आवाहन करें –

**'ॐ बणमहाँ2ऽअसि सूर्य बडादित्यमहाँ2ऽअसि। महस्ते सतो महिमापनस्यतेद्धा देवमहाँ2ऽअसि।1।**

**सूर्य रश्मिर्हरिकेशः पुरस्ताज्ज्योतिरुदयाँ2ऽअजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।2।**

**सूर्यो रक्तो ग्रहाध्यक्षो घृताङ्गो द्विभुजः प्रभुः। सप्ताश्वरथगो वास्तोर्दक्षबाहुसमाश्रितः।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि। भो सूर्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

6. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के पुनः दाहिने बाहु की भावना कर उसमें सत्य देवता का आवाहन करें –

**'ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।1।**

**सत्यो भूतहितो धर्मो वरदोऽभयपाणिकः। प्रसन्नाब्जासनो ऽब्जाभो दक्षदोरूपमूलगः।2।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः सत्याय नमः। सत्यमावाहयामि स्थापयामि। भो सत्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

7. उसके दक्षिण में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के दाहिने कूर्पर (ऊपरी कुहनी) की भावना कर उसमें भृश देवता का आवाहन करें – **'ॐ**

**आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रु वस्तिष्ठा विचाचलिः। विशस्त्वा सर्वावाञ्छन्तु मात्वद्राष्ट्रमधि भृशत्।1। भायै दार्वाहारम्प्रभायाऽ अग्न्येधम्ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देव लोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्रकरितारꣳसर्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यै वधायोपमन्थितारमेधाय वासः पल्पूलिम्प्रकामाय रजयित्रीम्।2।**

**भृशः पुष्पमानस्थः पुष्पेज्येक्षुधनुःकरः। गौरो नादरतः कामी दक्षकूर्पर संस्थितः।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः भृशाय नमः। भृशमावाहयामि स्थापयामि। भो भृश इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

8. उसके दक्षिणाग्नेय में स्थित पद के आधे भाग में वास्तुपुरुष के दाहिने प्रबाहु (कुहनी के जोड़)की भावना कर उसमें आकाश देवता का आवाहन करें –

**'ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञम्मिमिक्षितम्। उपयाम गृहीतोस्यश्विभ्यां त्वैषतेयाकनिर्माध्वीभ्यान्त्वा।1। हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽ ऋतम्बृहत्।2।**

**शंखचक्रधरो नित्यमसितः स्वस्तिकासनः। सशब्दः सर्वगन्तव्यो कूर्पराधः समाश्रितः।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशय नमः। आकाशमावाहयामि स्थापयामि। भो आकाश इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

9. उसके पश्चिम में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के पुनः दाहिने प्रबाहु (निचली कुहनी) की भावना कर उसमें वायु देवता का आवाहन करें –

**'ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये।1। अप्स्वग्ने सधिष्टवसौषधीरनुरुद्ध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः।2। वायुधूम्रो मृगारूढो जगत्प्राणश्चलो युवा। ध्वजांकुशे च बिभ्राणो दक्षबाहुसमाश्रितः।3।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि स्थापयामि। भो वायो इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**10.** उसके पश्चिम में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के दाहिने मणिबन्ध की भावना कर उसमें पूषा देवता का आवाहन करें – **'ॐ पूषन्तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तऽइहस्मसि।1। पूषा पंचाक्षरेण पंचदिशऽउदजयत्ताऽ उज्जेषᳯसविता षडक्षरेण षड्तूनुदजयत्तानुज्जेषम्बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रामुदजयत्तामुज्जेषम्।2। महास्वनः शोणवर्णो द्विभुजोऽब्जकमण्डलुः। पूषा गजासनो दक्षमणिबन्धसमाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पूष्णे नमः। पूषणमावाहयामि स्थापयामि। भो पूषन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**11.** उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने पार्श्व (ऊपरी बगल) की भावना कर उसमें वितथ देवता का आवाहन करें – **'ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्विततᳯसंजभार। यदेदयुक्तहरितः सधस्थाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।1। सविता प्रथमेऽअहन्नग्निर्द्वितीये वासुस्तृतीयऽआदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पंचमऽऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे मित्रो नवमे वरुणो दशमऽ इन्द्रऽएकादशे विश्वेदेवा द्वादशे।2। वितथश्चेन्द्रचापाभो कुबेरप्रतिमासमः। मलवासाऽलसो रिक्तकरो दक्षिण पार्श्वगः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः वितथाय नमः। वितथमावाहयामि स्थापयामि। भो (** निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि। भो निर्ऋते) **वितथ इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**12.** उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने पार्श्व (निचली बगल) की भावना कर उसमें गृहक्षत देवता का आवाहन करें – **'ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्व भानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्दते हरी ।1। गृहा मा बिभीत मावेपद्ध्वमूर्जम्बिभ्रतऽएमसि। ऊर्जम्बिभ्रद्ध्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः ।2। गृहरक्षकरक्तांगो गदासिवरचर्मभृत्। पंचास्यवाहनः क्रूरो वास्तोर्दक्षकटिस्थितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः गृहक्षताय नमः। गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि। भो गृहक्षत इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

13. उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने ऊरु की भावना कर उसमें यम देवता का आवाहन करें – '**ॐ यमाय त्वां गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।1। असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।2। रक्ताक्षो महिषारूढो दण्डपाशधरो यमः। धर्मज्ञो जनसंकाशो वास्तोर्दक्षोरुसंश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः। यममावाहयामि स्थापयामि। भो यम इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

14. उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की दाहिनी जानु की भावना कर उसमें गन्धर्व देवता का आवाहन करें – '**ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यैर्यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः।1। मुनिवेशधरो गौरो गन्धर्वो ध्यानवान्छुचिः। वीणाकमण्डलुधरो वास्तोर्वै दक्षजानुगः।2। ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि।भो गन्धर्व इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

15. उसके पश्चिम में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष की दाहिनी जंघा की भावना कर उसमें भृंगराज देवता का आवाहन करें – '**ॐ सौरीवलाकाशाङ्र्गः सृञ्जयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शौरिः पुरुष वाक्छ्वाविद्धौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक्।1। कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति। कर्मणे वां देवानाम्।2। सुनीलांशुर्महाकायः कुंकुमारुणविग्रहः। खट्वाखेटधरो वास्तोर्दक्षजंघा समाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगराजाय नमः। भृंगराजमावाहयामि स्थापयामि। भो भृंगराज इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

16. उसके पश्चिम–नैर्ऋत्य में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के दाहिने स्फिच (नितम्ब) की भावना कर उसमें मृग देवता का आवाहन करें – '**ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽआजगंथा परस्याः। सृकꣳसꣳशायपविभिंद्रतिग्मं विशत्रूताद्विविमृधोनुदस्व।1।**

**चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।2। मृगो गौरो भूषितांगो वरदाभय पाणिकः। वरासनश्चारुनेत्रो वास्तोर्दक्षस्फिचि स्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः मृगाय नमः। मृगमावाहयामि स्थापयामि। भो मृग इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

17. उसके उत्तर में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के दोनों पैरों की भावना कर उसमें पितृ देवता का आवाहन करें –

**'ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशंतः समिधीमहि। उशन्नुशतऽआवह पितृन्हविषेऽअत्तवे।1। पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपिता महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरो तीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।2। कुशपिण्डधराः स्वच्छाः पितरः श्यामलाः कृशाः। महोदराः सोम लोकवासिनो वास्तुपादगाः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पितृभ्यो नमः। पितरमावाहयामि स्थापयामि। भो पितर इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

18. उसके उत्तर में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के बायें स्फिच (नितम्ब) की भावना कर उसमें दौवारिक देवता का आवाहन करें –

**'ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वर्थेऽअन्यान्यावत्समुपधापयेते। हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रोऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः।1। आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योग क्षेमौ नः कल्पताम्।2। दौवारिको वेत्रमुद्राधरो भूतिवि भूशितः। मुक्ताभः पादुकारूढो वास्तोर्वाम स्फिचि स्थितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः दौवारिकाय नमः। दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि। भो दौवारिक इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

19. उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी जंघा की भावना कर उसमें सुग्रीव देवता का आवाहन करें –

**'ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः। तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।1। सुसमिद्धाय शोचिषा घृतन्तीव्रञ्जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।2। पद्मासनो हेमवर्णः सुग्रीवोऽलंकृतः शुभः। द्विभुजः कामदो वास्तोर्वामजंघासमाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सुग्रीवाय नमः। सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि। भो सुग्रीव इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**20.** उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी जानु की भावना कर उसमें पुष्पदन्त देवता का आवाहन करें -

**'ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।1। नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाऽअहोरात्रेभ्यः स्वाहार्द्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहाऽऋतुभ्यः स्वाहार्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳस्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा।2। पुष्पदन्तोऽभ्रसंकाशः खगः पक्षविराजितः । महाबलो व्यालहस्तो वास्तोर्वै सव्यजानुगः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्पदन्ताय नमः। पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि। भो पुष्पदन्त इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**21.** उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी ऊरु की भावना कर उसमें वरुण देवता का आवाहन करें -

**'ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके।1। वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।2। वरुणः पाथसीनाथो नक्रस्थः पाटलांशुकः। शंखपाशधरः शुभ्रो वास्तोर्वामोरुसंस्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि। भो वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

22. उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी पार्श्व (निचली बगल) की भावना कर उसमें असुर नामक देवता का आवाहन करें –
**'ॐ यमश्विना नमुचेरासुरा दधि रसरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय। इमन्तᳬशुक्रं मधुमन्तमिदᳬसोमᳬराजानमिह भक्षयामि।1। ये रूपाणि प्रतिमुच्यमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भवन्त्यग्निष्ठाल्ँलोकात्प्रणुदात्यस्मात्।2। असुरो मेचकाभासः करालास्योऽंगवर्जितः। सिंहारूढश्चारुणाक्षोर्वास्तोर्वामकटिस्थितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः असुराय नमः। असुरमावाहयामि स्थापयामि। भो असुर इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

23. उसके उत्तर में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष की बायी पार्श्व (ऊपरी बगल) की भावना कर उसमें शेष देवता का आवाहन करें –
**'ॐ याऽइषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीᳬरनु। ये वावटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।1। असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शेषाय स्वाहा सᳬसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतयते स्वाहा।2। शेषः कृष्णतनुः शूरो वरशूलेषुचापभृत्। गृध्रपक्षः कृशो दीर्घो वास्तोर्वामपर्श्वगः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः शेषाय नमः। शेषमावाहयामि स्थापयामि। भो शेष इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

24. उसके उत्तर–वायव्य में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के बायी मणिबन्ध की भावना कर उसमें पाप देवता का आवाहन करें –
**'ॐ एतत्ते रुद्रावसंतेन परो मूजवतोतीहि अवतत धन्वा पिनाका वसः कृत्तिवासाऽहिᳬसन्नः शिवोतीहि।1। अग्ने युक्ष्वाहि ये तवाश्चासो देवसाधवः। अरं वहन्ति मन्यवे।2। पापयक्ष्मा धूम्रवर्णो गदावरदमुद्रितः । कपोतवाहनो वाममणिबन्धसमाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवः स्वः पापाय नमः। पापमावाहयामि स्थापयामि। भो पाप इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

25. उसके पूर्व में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष की बायी निचली कुहनी की भावना कर उसमें रोग देवता का आवाहन करें – '

ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रन्नीललोहित। आसाम्प्र जानामेषां पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचनः किंचनाममत्।1। शिरो मे श्रीर्यशो मुखन्त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृतꣳसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।2। रोगः पाशकरो व्यक्तः क्षयात्मा व्याधि संग्रहः। दुष्कर्ममर्दनो वास्तोवामोपबाहुसंश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः रोगाय नमः। रोगमावाहयामि स्थापयामि। भो रोग इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

26. उसके पूर्व में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष की बायी कुहनी के जोड़ की भावना कर उसमें अहिर्बुध्न्य देवता का आवाहन करें -

**'ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्सु माꣳसं परिपातु विश्वतः।1। नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।2। अहिराजोऽब्जगः शुभ्रः फणामणिविराजितः। अक्षकुण्डीधरो वास्तोर्वामबाहुसंश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः अहिर्बुध्न्याय नमः। अहिर्बुध्यमावाहयामि स्थापयामि। भो अहिर्बुध्न्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

27. उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायीं ऊपरी कुहनी की भावना कर उसमें मुख्य देवता का आवाहन करें -

**'ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिरो नः सुमना भव।।1। इषे त्वोर्जे त्वा वायवत्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमग्घ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामावस्तेनऽर्शत माघशꣳसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यातबह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।2। मुख्यो गौरो विश्व कर्मा कुम्भाक्षः पुष्पसूत्रभृत्। निपुणस्तु लुलायस्थो वामकूर्परसंश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः मुख्याय नमः। मुख्यमावाहयामि स्थापयामि। भो मुख्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

28. उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायीं बाहु की भावना कर उसमें भल्लाट देवता का आवाहन करें -

**'ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमती:। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्न नातुरम्।1। घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यसि ध्रुवानाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद। ध्रुवाऽसदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्पाहि मां यज्ञन्यम्।2। भल्लाटश्चन्द्रसंकाशो वरमुद्रागदाधरः। हयपुत्रो वास्तु पुंसोर्वामबाहु समाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः भल्लाटाय नमः। भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि। भो भल्लाट इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

**29.** उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के बायें बाहु (कन्धा) की भावना कर उसमें सोम देवता का आवाहन करें -

**'ॐ सोमꣳराजानमवसेऽअग्निमन्वारभामहे। आदित्यान्विष्णुꣳसूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।1। वयꣳसोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।2। सोमो नरविमानस्थो वरहस्तो गदाधरः। गौरो महोदरः श्रीमान् वास्तोः सव्यभुजाश्रयः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि। भो सोम इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**30.** उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायीं अंश (गर्दन) की भावना कर उसमें सर्प देवता का आवाहन करें -

**'ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि। योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा।1। कुम्भमालाधरां द्वाभ्यां चतुर्बाहुः फणामणिः। सर्पो रक्तभ्रमो वास्तोर्वामांसदेश संश्रितः।2। ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पाय नमः। सर्पमावाहयामि स्थापयामि। भो सर्प इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**31.** उसके पूर्व में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के बायें कान की भावना कर उसमें अदिति देवता का आवाहन करें -

**'ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः कामधारणं भूयात्।1। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमादितिर्माता स पिता स पुत्रः।**

विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ।2। सूत्रवज्रांकुशाभीतिर्बिभ्राणा रत्नभूषिता। अदितिश्चारुगौरांगी वास्तोर्वामश्रुतिस्थिता ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः अदितये नमः। अदितिमावाहयामि स्थापयामि। भो अदिते इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

**32.** उसके पूर्व में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष की बायीं आंख की भावना कर उसमें दिति देवता का आवाहन करें -

**'ॐ ये देवा देवे वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअस्य। येभ्यो नऽऋते पवते धाम किंचन न ते दिवो न पृथिव्याऽअधिस्नुषु ।1। दितिस्तु श्यामवर्णांगी माला त्रिशूलधारिणी। वृषपत्रा वास्तुपुंसोर्वामलोचन संस्थिता ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः दितये नमः। दितिमावाहयामि स्थापयामि। भो दिते इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**33.** मध्य में स्थित पदों में से ईशान पद के उत्तरार्ध पद में अपः देवता का आवाहन करें -

**'ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे ।1। आपो नीला : पीतवस्त्रा धनगाः पद्मभू णाः। अब्जाक्षपाक्तपत्राणि बिभ्रन्त्यो वास्तुवक्त्रगाः ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि स्थापयामि। भो आप इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**34.** मध्य में स्थित पदों में से ईशान पद के दक्षिणार्ध पद में आपवत्स देवता का आवाहन करें -

**'ॐ आतेवत्सो मनोजमत्परमाचित्सधस्थात्। अग्ने त्वं कामया गिरा ।1। इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्याच मञ्जडय। त्वामवस्युराचके ।2। आपवत्सो महातेजा द्विभुजो सिंहवाहनः। घटपाशधरो गौरो वास्तोर्वक्षसि संस्थिताः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः आप वत्साय नमः। आपवत्समावाहयामि स्थापयामि। भो आपवत्स इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**35.** उसके दक्षिण में स्थित दो पद में अर्यमा देवता का आवाहन करें -

**'ॐ यदद्य सूरऽउदितेनागा मित्रोऽर्यमा। सुवति सविता भगः।1। ॐ अर्यमणम्बृहस्पतिमिन्द्रन्दानाय चोदय। वाचं विष्णुꣳ सरस्वतीꣳसवितारं च वाजिनꣳस्वाहा।2। अर्यमा रक्तवर्णस्तु दीप्तिमथ वाहनः। द्विपद्मसूत्रखट्वांगपाणिर्दक्षस्तनश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे नमः। अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि। भो अर्यमन् इह तिष्ठ।'**

**36.** उसके दक्षिण में स्थित आग्नेय पद के आधे पद में सावित्र देवता का आवाहन करें –

**'ॐ हस्तऽआधाय सविता विभ्रदभिꣳहिरण्मयीम्। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअद्ध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसांगिरस्वत्।1। वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामदुधक्षः।2। सावित्रो द्विभुजः पद्मगौरः पद्मासन स्थितः। वेदपाठरतो वास्तोर्दक्षहस्ततलाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्राय नमः। सावित्रमावाहयामि स्थापयामि। भो सावित्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**37.** आग्नेय पद के पश्चिम में स्थित आधे पद में सविता देवता का आवाहन करें –

**'ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।1। उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।2। सविता जनिता विश्वं द्विबाहुररुणच्छविः। रथगामी पद्मपाणि र्वास्तोर्क्रोडन्तर स्थितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सवित्रे नमः। सवितारमावाहयामि स्थापयामि। भो सवितरिह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**38.** उसके पश्चिम में स्थित दो पद में विवस्वान् देवता का आवाहन करें –

**'ॐ विवस्वन्नादित्यैषते सोमपीथ स्तस्मिन्मत्स्व। श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दतेव स्वधा विश्वाहारप एधते गृहे।1। ॐ असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽ**

आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ।2। विवस्वान्द्विभुजः शोणद्युतिर्दण्डी च पंकजी। कर्म साक्षी रथी वास्तोः क्रोड दक्षिणभागतः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः विवस्वते नमः। विवस्वन्तमावाहयामि स्थापयामि। भो विवस्वन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'

**39.** उसके पश्चिम में स्थित नैर्ऋत्य पद के आधे पद में विबुधाधिप देवता का आवाहन करें -

**'ॐ सबोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्। युयोद्ध्यस्मद् द्वेषांसि विश्व कर्मणे स्वाहा ।1। सहस्राक्षो गजारूढः पीतांगो विबुधाधिपः। वज्रोत्पलकरः श्रीमान्वास्तोजठरवामगः ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः विबुधाधिपाय नमः। विबुधाधिपमावाहयामि स्थापयामि। भो विबुधाधिप इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**40.** उसके उत्तर में स्थित आधे पद में जयन्त देवता का आवाहन करें -

**'ॐ अषाढंय्युत्सु पृतनासु पप्रिꣳस्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्। भरेशुजाꣳमुक्षितिꣳसुश्रवसं जयन्तं त्वामनुमदेमसोम ।1। यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यम्महीजातन्तेऽअर्वन् ।2। जयो वज्रधरो देवो महोग्रोऽतुलविक्रमः। पीतवर्णो गजारूढो वास्तुदेहसमाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः जयाय नमः। जयमावाहयामि स्थापयामि। भो जय इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**41.** उसके उत्तर में स्थित दो पद में (जठर के वामभाग में)मित्र देवता का आवाहन करें - **'ॐ मित्रो नऽएहि सुमित्रधऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्तꣳस्योनः स्योनम्। स्वानभ्राजांघारे बंभारे हस्तसुहस्तकृशानवे ते वः सोम क्रयणास्तान्रक्षद्ध्वम्मावोदभन् ।1। मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नञ्चित्रश्रवस्तमम् ।2। हलाब्जध्वज वज्राख्यहस्तो मित्रो हरिप्रियः। ऊर्ध्वाधः श्यामलो गौरो वास्तोर्जठरसंस्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः मित्राय नमः। मित्रमावाहयामि स्थापयामि। भो मित्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**42.** उसके उत्तर में स्थित वायव्य पद के आधे पद में (वाम हस्त) राजयक्ष्मा देवता का आवाहन करें -

**'ॐ नाशयित्री बलासस्याशसऽउपचितामसि। अथो शतस्य यक्ष्माणाम्पाकारोरसिनाशनी।1। वरशक्तिधरो ब्रह्मन्वीर्यवान्बर्हिवाहनः। घण्टाकुक्कुटवान्वास्तोवृषणांशे समाश्रितः।2। ॐ भूर्भुवःस्वः राजयक्ष्मणे नमः। राजयक्ष्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो राजयक्ष्मन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**43.** उसके पूर्व में स्थित आधे पद में (वाम हस्त) रुद्र देवता का आवाहन करें -

**'ॐ अवरुद्रमदीमह्यवदेवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः। श्रेयसस्कारद्यथा नो व्यवसाययात्।1। या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वाशन्तमया गिरीशन्ताभिचाकशीहि।2। रुद्रो गोस्थो जटी त्र्यक्षो मृगाभयहस्तधृक्। शुभकृदम्बरा वासो वास्तु देहसमाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। भो रुद्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**44.** उसके पूर्व में स्थित दो पद में (वाम हस्त तल) पञ्चथ्वीधर देवता का आवाहन करें -

**'ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथा।1। यद्ग्रामे यदरण्ये यम्सभायां यदिन्द्रिये। यदेनश्चकृमा वयमिदन्तदवयजामहे स्वाहा।2। सहस्रवदनः श्रीमान् शंखचक्राख्यकुम्भकृत्। नीलः पृथ्वीधरो वास्तोजठरांशे समाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पृथ्वीधराय नमः। पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि। भो पृथ्वीधर इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**45.** मध्य में स्थित चार पद में (हृदय) ब्रह्मा देवता का आवाहन करें -

**'ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।1।**

अक्षमालां स्रुवं दक्षे वामे दण्ड कमण्डलू। दधानमष्टनयनं यजेन्मध्येऽम्बुजासनम्।2। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो ब्रह्मन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'

**46.** मण्डल के बाहर प्रथम श्वेत/सत्त्व परिधि में ईशानादिक्रम से चरक्यादिदेवताओं का आवाहन करें। ईशान में चरकी का आवाहन करें - '**ॐ यन्ते देवी निर्ऋतिराबबंध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्। तन्ते विष्याम्यायुषा नेमध्यादथैतम्पितुमद्धि प्रसूतः। नमो भूत्यै येदं चकार।1। इन्धनास्त्वा शतꣳहिमा द्युमन्तꣳसमिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृतꣳसहस्वन्तः सहस्रकृतम्।2। कामरूपा विरूपाक्षी कराला चान्त्रभूषणा। कृपाणपात्रं बिभ्राणा मांसरक्त रवप्रिया।3। ॐ भूर्भुवःस्वः चरक्यै नमः। चरकीमावाहयामि स्थापयामि। भो चरकि इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**47.** आग्नेय में विदारी का आवाहन करें - '**ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधि कल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे योगां विकृतं तं भिक्षमाणऽउपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम्।1। असुन्वतमयजमानमिच्छस्तेन स्यात्त्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्त्या नमो देवि निर्ऋते तुभमस्तु।2। ॐ भूर्भुवःस्वः विदार्यै नमः। विदारीमावाहयामि स्थापयामि। भो विदारि इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**48.** नैर्ऋत्य में पूतना का आवाहन करें -

'**ॐ इन्द्रस्य क्रोडो दित्यै पाजस्यन्दिशां जत्रवो दित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशोनान्तरिक्षम्पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृकाभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्ना वल्मीकान्क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तौ हृदान्कुक्षिभ्याꣳ**

**समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना।1। कया नश्चित्रऽआभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।2। ॐ भूर्भुवःस्वः पूतनायै नमः। पूतनामावाहयामि स्थापयामि। भो पूतने इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**49.** वायव्य में पापराक्षसी का आवाहन करें -

**'ॐ यस्यास्ते घोरऽआसंजुहोम्येषाम्बन्धानामवसर्जनाय। यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वां ह परिवेद विश्वतः।1। इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाम्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम्।2। ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः। पापराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि। भो पापराक्षसि इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**50.** दूसरी लाल/रजः परिधि में पूर्वादि क्रम से स्कन्दादि देवता का आवाहन करें। पूर्व में स्कन्द का आवाहन करें -

**'ॐ यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखाऽइव। तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।1। त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशचानो विश्वा द्वेशाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।2। ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि। भो स्कन्द इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**51.** दक्षिण में अर्यमा का आवाहन करें -

**'ॐ यदद्य सूरऽउदितेनागामित्रोऽर्यमा। सुवाति सविता भगः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे नमः। अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि। भो अर्यमन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**52.** पश्चिम में जृम्भक का आवाहन करें -

**'ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा**

घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविश्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयनाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्राणाय स्वाहा।1। सरोभ्यो धैवरमुपस्त्थवराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलम्पाराय मार्गारमवाराय कैवर्तन्तीर्थेभ्यऽआन्दं विशमेभ्यो मैनालꣳस्वनभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरातꣳसानुभ्यो जृम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्।2। ॐ भूर्भुवःस्वः जृम्भकाय नमः। जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि। भो जृम्भक इह आगच्छ इह तिष्ठ।

**53.** उत्तर में पिलिपिच्छ का आवाहन करें –

'ॐ कास्विदा सीत्पूर्वचितिः किꣳस्विदासीद् बृहद्वयः। कास्विदासीत्पिलिपिला कास्विदासीत्पिशंगिला।1। रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तंवलगमुत्किरामि यम्मे निष्ठ्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि।2। ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय नमः। पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि। भो पिलिपिच्छ इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

**54.** तीसरी काली/तमः परिधि में पुनः पूर्वादि क्रम से दशदिग्पालों का आवाहन करें। पूर्व में –

'ॐ त्रातारमिन्द्रम वितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि। भो इन्द्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

**55.** आग्नेय में – 'ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।1। त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳरक्षमाणस्तव व्रते।2। ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि स्थापयामि। भो अग्न इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

56. दक्षिण में – '**ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृश स्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।1। यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।2। ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः। यममावाहयामि स्थापयामि। भो यम इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

57. नैर्ऋत्य में – '**ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते नस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि। भो निर्ऋते इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

58. पश्चिम में – '**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।1। तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्धयुरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः।2। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि। भो वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

59. वायव्य में – '**ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि स्थापयामि। भो वायो इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

60. उत्तर में – '**ॐ वयꣳसोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः। सोममवाहयामि स्थापयामि। भो सोम** (/ कुबेराय नमः। कुबेरमावाहयामि। भो कुबेर) **इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

61. ईशान्य में – '**ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेद सामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि। भो ईशान इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

**62.** ईशान और पूर्व के बीच में – **'ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्येभरहूतौ सजोषाः। यः शꣳसते स्तुवते धायिपज्रऽ इन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँ2ऽअवन्तु देवाः।1। ॐ भूर्भवःस्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमवाहयामि स्थापयामि। भो ब्रह्मन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**63.** निर्ऋति और पश्चिम के बीच में – **'ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छनः शर्म सप्रथाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय नमः। अनन्तमावाहयामि स्थापयामि। भो अनन्त इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

**ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ ।। ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। अनेन पूजनेन शिखिन्यादि त्रिषष्ठिवास्तुमण्डलदेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्ताम् न मम ।**

अथवा 81 कोष्ठकवाले वास्तुमण्डल में नाममन्त्रों से 77 देवताओं का आवाहनादि से पूजन करें –

**क्षेत्राधिपोत्तरे -**

**1. ॐ भूर्भुवःस्वः शिखिने नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो शिखिन इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

**2. ॐ भूर्भुवःस्वः पर्जन्याय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो पर्जन्य इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

**3. ॐ भूर्भुवःस्वः जयन्ताय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः जयन्तमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो जयन्त इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

4. ॐ भूर्भुवःस्वः कुलिशायुधाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कुलिशायुधमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कुलिशायुध इहागच्छ इह तिष्ठ।

5. ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

6. ॐ भूर्भुवःस्वः सत्याय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सत्यमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सत्य इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

7. ॐ भूर्भुवःस्वः भृशाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भृशमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भृश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

8. ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो आकाश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

9. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वायु इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

10. ॐ भूर्भुवःस्वः पूष्णे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पूष्णमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पूषन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

11. ॐ भूर्भुवःस्वः वितथाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः वितथमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः भो वितथ इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

12. ॐ भूर्भुवःस्वः गृहक्षताय । ॐ भूर्भुवःस्वः गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गृहक्षत इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः यममावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गन्धर्व इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगराजाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगराजमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भृंगराज इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः मृगाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मृगमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो मृग इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः पितृभ्यो नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पितृनावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो पितः इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः दौवारिकाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो दौवारिक इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः सुग्रीवाय नम ः। ॐ भूर्भुवःस्वः सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सुग्रीव इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्पदन्ताय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पुष्पदन्त इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

21. ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
22. ॐ भूर्भुवःस्वः असुराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः असुरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो असुर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
23. ॐ भूर्भुवःस्वः शेषाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः शेषमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो शेष इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
24. ॐ भूर्भुवःस्वः पापाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पापमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो पाप इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
25. ॐ भूर्भुवःस्वः रोगाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः रोगमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो रोग इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
26. ॐ भूर्भुवःस्वः अहिर्बुध्न्याय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अहिर्बुध्न्यमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अहिर्बुध्न्य इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
27. ॐ भूर्भुवःस्वः मुख्याय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मुख्यमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो मुख्य इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
28. ॐ भूर्भुवःस्वः भल्लाटाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भल्लाट इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
29. ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सोममावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
30. ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो सर्प इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

31. ॐ भूर्भुवःस्वः अदितये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अदित्तिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अदित्ते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

32. ॐ भूर्भुवःस्वः दितये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः दित्तिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो दित्ते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

33. ॐ भूर्भुवःस्वः अद्भ्यो नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अप आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो आप इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

34. ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्राय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सवित्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सवित्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

35. ॐ भूर्भुवःस्वः जयाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः जयमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो जय इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

36. ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

37. ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अर्यमण् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

38. ॐ भूर्भुवःस्वः सवित्रे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सवित्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सवित्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

39. ॐ भूर्भुवःस्वः विवस्वते नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विवस्वतमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो विवस्वत इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

40. ॐ भूर्भुवःस्वः विवुधाधिपाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विवुधाधिपमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो विवुधाधिप इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

41. ॐ भूर्भुवःस्वः मित्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मित्रमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो मित्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

42. ॐ भूर्भुवःस्वः राजयक्ष्मणे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः राजयक्ष्मणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो राजयक्ष्मण् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

43. ॐ भूर्भुवःस्वः पृथ्वीधराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पृथ्वीधर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

44. ॐ भूर्भुवःस्वः आपवत्साय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः आपवत्समावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो आपवत्स इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

45. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मण् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

46. ॐ भूर्भुवःस्वः चरक्यैनमः। ॐ भूर्भुवःस्वः चरकींमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो चरकी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

47. ॐ भूर्भुवःस्वः विदार्य्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः विदारींमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो विदारी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

48. ॐ भूर्भुवःस्वः पूतनायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः पूतनामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पूतना इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

49. ॐ भूर्भुवःस्वः पापराक्षस्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वःपापराक्षसींमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पापराक्षस्यै इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

50. ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

51. ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अर्यमण् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

52. ॐ भूर्भुवःस्वः जृम्भकाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो जृम्भक इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

53. ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पिलिपिच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

54. ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः । ॐभूर्भुवःस्वः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

55. ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

56. ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः यममावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

57. ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो निर्ऋति इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

58. ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

59. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वायु इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

60. ॐ भूर्भुवःस्वः कुबेराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कुबेरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

61. ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

62. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
(पूर्वेशानयोर्मध्य ऊर्ध्वायां ब्रह्माणम्)

63. ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अनन्त इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
(निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये अधःस्थायाम् दिशि अनन्तम् )

64. ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसेनाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसेनमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो उग्रसेन इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

65. ॐ भूर्भुवःस्वः डामराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः डामरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो डामर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

66. ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो महाकाल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

67. ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पिलिपिच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

68. ॐ भूर्भुवःस्वः हेतुकाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः हेतुकमाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो हेतुक इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

69. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो त्रिपुरान्तक इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

70. ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निवैतालाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निवैतालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अग्निवैताल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

71. ॐ भूर्भुवःस्वः असिवैतालाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः असिवैतालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो असिवैताल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

72. ॐ भूर्भुवःस्वः कालाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो काल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

73. ॐ भूर्भुवःस्वः करालाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः करालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कराल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

74. ॐ भूर्भुवःस्वः एकपादाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः एकपादमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो एकपाद इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

75. ॐ भूर्भुवःस्वः भीमरुपाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भीमरुपमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भीमरुप इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

76. ॐ भूर्भुवःस्वः खेचराय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः खेचरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो खेचर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

77. ॐ भूर्भुवःस्वः तलवासिने नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः तलवासिनमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो तलवासिन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मो 3 प्रतिष्ठ।
ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।
अनेन पूजनेन वास्तुमण्डलदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

## 6.6 चतुःषष्टियोगिनी पूजनम्

अपने बायीं ओर से प्रथमकलश के पूर्णपात्र पर – '**ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके नमानयति कश्चन। सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ भूर्भुवस्वः महाकाल्यै नमः। महाकालीमावाहयामि स्थापयामि। भो महाकालि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**' प्रथम कलश के दाहिने भाग में दूसरे कलश के पूर्णपात्र पर – '**ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुमऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।ॐ भूर्भुवस्वः महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि। भो महालक्ष्मी इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**

द्वितीयकलश के दाहिने भाग में तीसरे कलश के पूर्णपात्र पर – '**ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः।। ॐ भूर्भुवस्वः महासरस्वत्यै नमः। महासरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि। भो महासरस्वति इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**

चित्र संख्या...दर्शित क्रम से आवाहनादि करे –

1. प्रथमपंक्तौ पश्चिमतः पूर्वे– '**ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वरूतये।। ॐ भूर्भुवःस्वः गजाननायै नमः। गजाननामावाहयामि स्थापयामि। भो गजानने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

2. तत्पूर्वे – '**ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रेराजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधीमहारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभे यो युवास्य यजमानसय वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमौ नः कल्पताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सिंहमुख्यै नमः। सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि। भो सिंहमुखि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

3. तत्पूर्वे – 'ॐ महाँ2ऽइन्द्रो यऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ2ऽइव। स्तोमैवत्सस्य वावृधे।। ॐ भूर्भुवःस्वः गृध्रास्यायै नमः। गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि। भो गृध्रास्ये इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

4 तत्पूर्वे – 'ॐ सद्यो जातो व्यमीमत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यज्ञातस्य वाचि स्वाहा कृतॐहविरदन्तु देवाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः काकतुण्डिकायै नमः। काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि। भो काकतुण्डिके इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

5. तत्पूर्वे – 'ॐ आदित्यं गर्भम्पयसा समङ्ग्धिसहस्रस्यप्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हर सामाभि मॐस्थाः शतायुषङ्कृणुहि चीयमानः।।ॐ भूर्भुवःस्वः उष्ट्रग्रीवायै नमः। उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि। भो उष्ट्रग्रीवे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

6. तत्पूर्वे – 'ॐ स्वर्णघर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्णज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्यः स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः हयग्रीवायै नमः। हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि। भो हयग्रीवे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

7. तत्पूर्वे – 'ॐ सत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि स्थापयामि। भो वाराहि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

8. तत्पूर्वे – 'भायै दार्वाहारम्प्रभायाऽअग्नयेधम्ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्रकरितारॐसर्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यै वधायोपमन्थितारम्मेधाय वासः पल्पूलीम्प्रक्रामाय रजयित्रीम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः शरभाननायै नमः। शरभाननामावाहयामि स्थापयामि। भो शरभानने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

9. द्वितीयपंक्तौ पूर्ववत् – '**ॐ जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः सवराड् भामः। मोदाः प्रमोदाऽअंगुलीरंगानि मित्रम्मे सहः।। ॐ भूर्भुवःस्वः उलूकिकायै नमः। उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि। भो उलूकिके इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

10. तत्पूर्वे – '**ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टायस्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः शिवारावायै नमः। शिवारावामावाहयामि स्थापयामि। भो शिवारावे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

11. तत्पूर्वे – '**ॐ अग्निश्च मऽआपश्च मे वीरुधश्च मऽओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशवऽआरण्याश्च मे वित्तञ्च मे वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः मयूर्यै नमः। मयूरीमावाहयामि स्थापयामि। भो मयूरि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

12. तत्पूर्वे – '**ॐ पूषन्तव व्रते वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तऽइहस्मसि।। ॐ भूर्भुवःस्वः विकटाननायै नमः। विकटाननामावाहयामि स्थापयामि। भो विकटानने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

13. तत्पूर्वे – '**ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूपऽआप्यते प्रणीतोऽअग्निरग्निना।। ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टवक्रायै नमः। अष्टवक्रामावाहयामि स्थापयामि। भो अष्टवक्रे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

14. तत्पूर्वे – '**ॐ अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्द्धा कवी रयीणाम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः कोटराक्ष्यै नमः। कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि। भो कोटराक्षि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।**'

15. तत्पूर्वे – 'ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। ॐ भूर्भुवःस्वः कुब्जायै नमः। कुब्जामावाहयामि स्थापयामि। भो कुब्जे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

16. तत्पूर्वे – 'ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ भूर्भुवःस्वः विकटलोचनायै नमः। विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि। भो विकटलोचने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

17. तृतीयपंक्तौ पूर्ववत् – 'ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिश्टयै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।। ॐ भूर्भुवःस्वः शुष्कोदर्यै नमः। शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि। भो शुष्कोदरि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

18. तत्पूर्वे – 'ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नश्चित्रश्रवस्तमम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः ललज्जिह्वायै नमः। ललज्जिह्वामावाहयामि स्थापयामि। भो ललज्जिह्वे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

19. तत्पूर्वे – 'ॐ अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षन्दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवन्दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्यऽउपदधामि चितस्थो-र्ध्वचितो भृगूणामंगिरसान्तपसा तप्यध्वम्।। ॐ भूर्भुवस्वः श्वदंष्ट्रायै नमः। श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि। भो श्वदंष्ट्रे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

20. तत्पूर्वे – 'ॐ भगम्प्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः। भगम्प्रनोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवनतः स्याम।। ॐ भूर्भुवःस्वः वानराननायै नमः। वानराननामावाहयामि स्थापयामि। भो वानरानने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

21. तत्पूर्वे – 'ॐ सुपर्णोसि गरुत्क्मान्पृष्ठे पृथिव्याः सीद। भासान्तरिक्षमापृणज्ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिश उद्दृꣳह।। ॐ भूर्भुवःस्वः रुक्षाक्ष्यै नमः। रुक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि। भो रुक्षाक्षि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

22. तत्पूर्वे – 'ॐ उदीरतामवरऽउत्परासऽ उन्मद्ध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुँयऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरो हवेषु।। ॐ भूर्भुवःस्वः केकराक्ष्यै नमः। केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि। भो केकराक्षि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

23. तत्पूर्वे – 'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनोस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद।। ॐ भूर्भुवःस्वः बृहत्तुण्डायै नमः। बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि। भो बृहत्तुण्डे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

24. तत्पूर्वे – 'ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतान्नः सुराधसः।। ॐ भूर्भुवस्वः सुराप्रियायै नमः। सुराप्रियामावाहयामि स्थापयामि। भो सुराप्रिये इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

25. चतुर्थपंक्तौ पूर्ववत् – 'ॐ हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽ ऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत्।। ॐ भूर्भुवःस्वः कपालहस्तायै नमः। कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि। भो कपालहस्ते इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

26. तत्पूर्वे – ' ॐ सुसन्दृशन्त्वा वयम्मघवन्वन्दिषीमहि। प्रनूनम्पूर्णवन्धुरस्तुतोयासि वशाँ2ऽअनुयोजान्विद्रते हरी।।

ॐ भूर्भुवःस्वः रक्ताक्ष्यै नमः। रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि। भो रक्ताक्षि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

27. तत्पूर्वे – 'ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा।। ॐ भूर्भुवःस्वः शुक्यै नमः। शुकीमावाहयामि स्थापयामि। भो शुकि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

28. तत्पूर्वे – 'ॐ देवीर्द्वारोऽअश्विनाभिषजेन्द्रसरस्वती। प्राणन्नवीर्यन्नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।। ॐ भूर्भुवःस्वः श्येन्यै नमः। श्येनीमावाहयामि स्थापयामि। भो श्येनि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

29. तत्पूर्वे – 'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।। ॐ भूर्भुवःस्वः कपोतिकायै नमः। कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि। भो कपोतिके इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

30. तत्पूर्वे – 'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः पाशहस्तायै नमः। पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि। भो पाशहस्ते इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

31. तत्पूर्वे – 'ॐ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रानियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानन्दधिषे सवपाञ्जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः दण्डहस्तायै नमः। दण्डहस्तामावाहयामि स्थापयामि। भो दण्डहस्ते इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

32. तत्पूर्वे – 'ॐ कदाचनस्तरीरसि नेन्द्रसश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूयऽइन्नु ते दानन्देवस्य पृच्यते।। ॐ भूर्भुवःस्वः प्रचण्डायै नमः। प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि। भो प्रचण्डे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

33. पंचमपंक्तौ पूर्ववत् – 'ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डविक्रमायै नमः। चण्डविक्रमामावाहयामि स्थापयामि। भो चण्डविक्रमे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

34. तत्पूर्वे – 'ॐ इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थदेवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायद्ध्वमग्न्याऽइन्द्रस्य भागम्प्रजावतीरमीवाऽ अयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशतमाघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।।ॐ भूर्भुवःस्वः शिशुघ्न्यै नमः। शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि। भो शिशुघ्नि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

35. तत्पूर्वे – 'ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राद्ध्यासन्देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे।। ॐ भूर्भुवःस्वः पापहन्त्र्यै नमः। पापहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि। भो पानहन्त्रि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

36. तत्पूर्वे – 'ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देविनिर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुवःस्वः काल्यै नमः। कालीमावाहयामि स्थापयामि। भो कालि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

37. तत्पूर्वे – 'ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्नऽआसुव।। ॐ भूर्भुवःस्वः रुधिरपायिन्यै नमः। रुधिर पायिनीमावाहयामि स्थापयामि। भो रुधिरपायिनि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

38. तत्पूर्वे – 'ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽअर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽअश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽअंगुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः वसाधयायै नमः। वसाधयामावाहयामि स्थापयामि। भो वासाधये इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

39. तत्पूर्वे – 'ॐ बह्वीनाम्पिता इषुरस्य पुत्रश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः सृकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः।। ॐ भूर्भुवःस्वः गर्भभक्षायै नमः। गर्भभक्षामावाहयामि स्थापयामि। भो गर्भभक्षे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

40. तत्पूर्वे – 'ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः शवहस्तायै नमः। शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि। भो शवहस्ते इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

41. षष्ठपंक्तौ पूर्ववत् – 'ॐ ऋतवस्ते यज्ञं वितन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः। संवत्सरस्ते यज्ञन्दधातु नः प्रजाञ्च परिपातु नः।। ॐ भूर्भुवःस्वः आन्त्रमालिन्यै नमः। आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि। भो आन्त्रमालिनि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

42. तत्पूर्वे – 'ॐ तेऽआचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रम्बिभृतामुपस्थे। अपशत्रून्विद्ध्यताꣳसंविदानेऽआर्त्नीऽइमे विस्फुरन्तीऽअमित्रान्।।ॐ भूर्भुवःस्वः स्थूलकेश्यै नमः। स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि। भो स्थूलकेशि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

43. तत्पूर्वे – 'ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूपऽआप्यते प्रणीतोऽअग्निरग्निना।। ॐ भूर्भुवःस्वः बृहत्कुक्ष्यै नमः। बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि। भो बृहत्कुक्षि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

44. तत्पूर्वे – 'ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पास्यायै नमः। सर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि। भो सर्पास्ये इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

45. तत्पूर्वे – 'ॐ अस्कन्नमद्य देवेभ्यऽआज्यꣳसम्भ्रियासमंघ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते छायामुपस्थेषं विष्णोस्स्थानमसीतऽइन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्द्ध्वोर्द्ध्वरऽआस्थात्।। ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेतवाहनायै नमः। प्रेतवाहनामावाहयामि स्थापयामि। भो प्रेतवाहने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

46. तत्पूर्वे - 'ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। ॐ भूर्भुवःस्वः दन्दशूककरायै नमः। दन्दशूककरामावाहयामि स्थापयामि। भो दन्दशूककरे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

47. तत्पूर्वे - 'ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।। ॐ भूर्भुवःस्वः क्रौञ्च्यै नमः। क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि। भो क्रौञ्चि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

48. तत्पूर्वे - ॐ उपयाम गृहीतोसि हरिरसि हारियोजनो हरिभ्यान्त्वा। हर्योर्द्धानास्स्थसहसोमाऽइन्द्राय।। ॐ भूर्भुवःस्वः मृगशीर्षायै नमः। मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि। भो मृगशीर्षे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।

49. सप्तमपंक्तौ पूर्ववत् - 'ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।। ॐ भूर्भुवःस्वः वृषाननायै नमः। वृषाननामावाहयामि स्थापयामि। भो वृषानने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

50. तत्पूर्वे-ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐ भूर्भुवःस्वः व्यात्तास्यै नमः। व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि। भो व्यात्तास्ये इह आगच्छ इह तिष्ठ।।

51. तत्पूर्वे - 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।ॐ भूर्भुवःस्वः धूम निःश्वासायै नमः। धूमनिःश्वासामावाहयामि स्थापयामि। भो धूमनिःश्वासे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

52. तत्पूर्वे - 'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।। ॐ भूर्भुवःस्वः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमावाहयामि स्थापयामि। भो व्योमैकचरणोर्ध्व दृक् इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

53. तत्पूर्वे – 'ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ॐ भूर्भुवःस्वः तापिन्यै नमः। तापिनीमावाहयामि स्थापयामि। भो तापिनि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

54. तत्पूर्वे – 'ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयम्पितृमन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳसुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत।। ॐ भूर्भुवःस्वः शोषणीदृष्ट्यै नमः। शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि। भो शोषणीदृष्टे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

55. तत्पूर्वे – 'ॐ या व्याघ्रं विषूचिकाभी वृकञ्च रक्षति। श्येनम्पतत्रिणꣳसिꣳहꣳसः।। ॐ भूर्भुवःस्वः कोटर्यै नमः। कोटरीमावाहयामि स्थापयामि। भो कोटरि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

56. तत्पूर्वे – 'ॐ एका चमे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पंच च मे पंच च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽएकादश च मऽएका दश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पंचदश च मे पंचदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश चमे नवदश च मे नवदश च मऽएक विꣳशतिश्च मऽएकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पंचविꣳशतिश्च मे पंचविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मऽएकत्रिꣳशच्च मऽएकत्रिꣳशच्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः स्थूलनासिकायै नमः। स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि। भो स्थूलनासिके इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

57. अष्टमपंक्तौ पूर्ववत् – 'ॐ ब्रह्माणि मे मतयः शꣳसुतासः शुष्मऽदयर्ति प्रभृतो मेऽअद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमाहरीव हतस्ता नोऽअच्छ।। ॐ भूर्भुवःस्वः विद्युत्प्रभायै नमः। विद्युत्प्रभामावाहयामि स्थापयामि। भो विद्युत्प्रभे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

58. तत्पूर्वे – 'ॐ अग्ने युक्ष्वाहि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्ति मन्यवे।। ॐ भूर्भुवःस्वः बलाकास्यै नमः। बलसकास्यामावाहयामि स्थापयामि। भो बलाकास्ये इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

59. तत्पूर्वे – 'ॐ सुपर्णोसि गरुत्मान्पृष्ठे पृथिव्याः सीद। भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिशऽउद्दृꣳह।। ॐ भूर्भुवःस्वः मार्जार्यै नमः। मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि। भो मार्जारि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

60. तत्पूर्वे – 'ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरपापकाशिनी। तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः कटपूतनायै नमः। कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि। भो कटपूतने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

61. तत्पूर्वे – 'ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरोराद्ध्यासन्देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे।। ॐ भूर्भुवःस्वः अट्टाट्टहासायै नमः। अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि। भो अट्टाट्टहासे इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

62. तत्पूर्वे – 'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः कामाक्ष्यै नमः। कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि। भो कामाक्षि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

63. तत्पूर्वे – 'ॐ वृष्णऽऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृष्णऽऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृष्णसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः मृगाक्ष्यै नमः। मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि। भो मृगाक्षि इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

64. तत्पूर्वे – 'ॐ भायैदार्वाहारम्प्रभायाऽअग्न्येधम्ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्शिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय

पेशितारम्मनुश्यलोकाय प्रकरितारꣳसर्वोभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यैवधायोपमन्थितारम्मेधायवासः पल्पूलीम्प्रकामाय रजयित्रीम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः मृगलोचनायै नमः। मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि। भो मृगलोचने इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

अथवा इन नाममन्त्रों से भी आवाहनादि कर्म कर सकते है –

1. ॐ भूर्भुवःस्वः दिव्ययोगिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दिव्ययोगिनीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो दिव्ययोगिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
2. ॐ भूर्भुवःस्वः महायोगिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः महायोगिनीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो महायोगिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
3. ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धयोगिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धयोगिनीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो सिद्धयोगिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
4. ॐ भूर्भुवःस्वः गणेश्वर्य्यै नमः। ॐभूर्भुवःस्वः गणेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो गणेश्वरी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
5. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेताक्ष्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेताक्षीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो प्रेताक्षी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
6. ॐ भूर्भुवःस्वः डाकिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः डाकिनीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो डाकिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
7. ॐ भूर्भुवःस्वः काल्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कालीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो काली इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
8. ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कालरात्री इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
9. ॐ भूर्भुवःस्वः निशाचर्य्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः निशाचरीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो निशाचरी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
10. ॐ भूर्भुवःस्वः कंकार्य्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कंकार्यीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कंकार्यी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
11. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रवैताल्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रवैतालीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो रौद्रवैताली इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
12. ॐ भूर्भुवःस्वः भूतल्यै नमः। ॐभूर्भुवःस्वः भूतलीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भूतली इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
13. ॐ भूर्भुवःस्वः भूतडामर्य्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भूतडामरीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भूतडामरी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
14. ॐ भूर्भुवःस्वः ऊर्ध्वकेश्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ऊर्ध्वकेशीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ऊर्ध्वकेशी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
15. ॐ भूर्भुवःस्वः विरुपाक्ष्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विरुपाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो विरुपाक्षी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

16. ॐ भूर्भुवःस्वः शुष्काङ्ग्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः शुष्काङ्गीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो शुष्काङ्गी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

17. ॐ भूर्भुवःस्वः नरभोजिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः नरभोजिनीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो नरभोजिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

18. ॐ भूर्भुवःस्वः भट्टार्य्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भट्टार्यीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भट्टार्यी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

19. ॐ भूर्भुवःस्वः वीरभद्रायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वीरभद्रामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वीरभद्रा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

20. ॐ भूर्भुवःस्वः धूम्राक्ष्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः धूम्राक्षीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो धूम्राक्षी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

21. ॐ भूर्भुवःस्वः कलिप्रियायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कलिप्रियामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कलिप्रिया इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

22. ॐ भूर्भुवःस्वः राक्षस्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः राक्षसीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो राक्षसी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

23. ॐ भूर्भुवःस्वः घोर रक्ताक्ष्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः घोर रक्ताक्षीमाआवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो घोर रक्ताक्षी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः विरुपाक्ष्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विरुपाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो विरुपाक्षी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः भयङ्कर्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भयङ्करीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भयङ्करी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिकायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिकामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो चण्डिका इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः वीरकौमार्य्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वीरकौमारीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वीर कौमारी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वाराही इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
29. ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डधारिण्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डधारिणीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो मुण्डधारिणी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः सासुर्य्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सासुरीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सासुरी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रझंकारभाषिण्यैनमः। ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रझंकारभाषिणीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो रौद्रझंकारभाषिणी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकायीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो त्रिपुरान्तकायी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
33. ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवध्वंसिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवध्वंसिनीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भैरवध्वंसिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोधदुर्मुख्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोधदुर्मुखीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो क्रोधदुर्मुखी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेतवाहिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो प्रेतवाहिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः खट्वाङ्ग्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः खट्वाङ्गीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो खट्वाङ्गी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।।
37. ॐ भूर्भुवःस्वः दीर्घलम्बोष्ठ्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दीर्घलम्बोष्ठीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो दीर्घलम्बोष्ठी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
38. ॐ भूर्भुवःस्वः मालिन्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मालिनीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो मालिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।।
39. ॐ भूर्भुवःस्वः मन्त्रयोगिन्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मन्त्रयोगिनीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो मन्त्रयोगिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
40. ॐ भूर्भुवःस्वः कालाग्निग्रहण्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कालाग्निग्रहणीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कालाग्नि ग्रहणी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
41. ॐ भूर्भुवःस्वः चक्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः चक्रीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो चक्री इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
42. ॐ भूर्भुवःस्वः कंकाल्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कंकालीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कंकाली इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
43. ॐ भूर्भुवःस्वः भुवनेश्वर्य्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भुवनेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भुवनेश्वरी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
44. ॐ भूर्भुवःस्वः कटक्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कटकीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कटकी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
45. ॐ भूर्भुवःस्वः कटिन्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कटिनीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कटिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
46. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्र्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो रौद्री इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
47. ॐ भूर्भुवःस्वः यमदूत्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः यमदूतीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो यमदूती इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
48. ॐ भूर्भुवःस्वः करालिन्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः करालिनीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो करालिनी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

49. ॐ भूर्भुवःस्वः घोराक्ष्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः घोराक्षीं आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो घोराक्षी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

50. ॐ भूर्भुवःस्वः कार्मुक्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कार्मुकीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो कार्मुकी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

51. ॐ भूर्भुवःस्वः काकदृष्ट्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः काकदृष्टीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो काकदृष्टी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

52. ॐ भूर्भुवःस्वः अधोमुख्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अधोमुखीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो अधोमुखी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

53. ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डाग्रधारिण्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डाग्रधारिणीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो मुण्डाग्रधारिणी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

54. ॐ भूर्भुवःस्वः व्याघ्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः व्याघ्रीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो व्याघ्री इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

55. ॐ भूर्भुवःस्वः किंकिण्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः किंकिणीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो किंकिणी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

57. ॐ भूर्भुवःस्वः कालरुपायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कालरुपायीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो कालरुपायी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

58. ॐ भूर्भुवःस्वः कामाक्षायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कामाक्षी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

59. ॐ भूर्भुवःस्वः उष्ट्रिण्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः उष्ट्रीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो उष्ट्री इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

60. ॐ भूर्भुवःस्वः योगपीठायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः योगपीठामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो योगपीठायी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

61. ॐ भूर्भुवःस्वः महालक्ष्म्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो महालक्ष्मी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

62. ॐ भूर्भुवःस्वः एकवीरायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः एकवीरामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो एकवीरा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

63. ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्र्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कालरात्री इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

64. ॐ भूर्भुवःस्वः पीठकायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः पीठकायीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पीठकायी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मो 3 प्रतिष्ठ ।।

ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः चतुष्षष्टियोगिनीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धादीन्समर्पयामि।

अनेन पूजनेन चतुषष्ठियोगिन्याः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।'

## 6.7 क्षेत्रपालपूजनम्

पीठ के बीच में क्षेत्रपालदेवता की मूर्ति को अग्न्युत्तरणकर्म करके रखकर अथवा पूगीफल रखकर उसमें आवाहन करें -

**'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालाय नमः। क्षेत्रपालमावाहयामि। भो क्षेत्रपाल इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

1. पूर्वपत्रे प्रादक्षिण्येन - **'ॐ पावकाय यश्चितयन्त्या कृपाक्षामनुरुचऽउषसोन भानुना। तूर्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयो घृणेन ततृषाणोऽअजरः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अजगराय नमः। अजगरमावाहयामि। भो अजगर इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

2. **'ॐ प्रथमावाथ्ठसरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा। अपि प्रयञ्चोदननावाम्मिमाना होताराज्ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता।। ॐ भूर्भुवःस्वः व्यापकाय नमः। व्यापकमावाहयामि। भो व्यापक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

3. **'ॐ इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकम्मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः। सेमान्नो हव्यदातिञ्जुषाणो देवरथ प्रतिव्यागृभाय।। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रचौराय नमः। इन्द्रचौरमावाहयामि। भो इन्द्रचौर इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

4. **'ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासोऽअभ्यर्चन्त्यर्कैः। सनस्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयम्पातस्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रमूर्तये नमः। इन्द्रमूर्तिमावाहयामि। भो इन्द्रमूर्ते इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

5. 'ॐ उक्षा समुद्रोऽअरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिम्पितुराविवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ।।
ॐ भूर्भुवःस्वः उक्षाय नमः। उक्षमावाहयामि। भो उक्ष इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

6. 'ॐ यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमावयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः कूष्माण्डाय नमः। कूष्माण्डमावाहयामि। भो कूष्माण्ड इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

7. आग्नेयपत्रे प्रादक्षिण्येन – 'ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचक्रे।।
ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

8. 'ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः वटुकाय नमः। वटुकमावाहयामि। भो वटुक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

9. 'ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिशात्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः विमुक्ताय नमः। विमुक्तमावाहयामि। भो विमुक्त इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

10. 'ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः। एवन्त्वयि नान्यथोतोऽअस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।
ॐ भूर्भुवःस्वः लिप्तकाय नमः। लिप्तकमावाहयामि। भो लिप्तक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

11. 'ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपञ्जवायाश्वपम्पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालन्तेजसेजपालमिरायैकीनाशं कीलालाय सुराकाराम्भद्राय गृहपꣳश्रेयसे वित्तधमाद्ध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः लीलाकाय नमः। लीलाकमावाहयामि। भो लीलाक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

12. 'ॐ सुपर्णं वस्ते मृगोऽस्यादन्तो गोभिः सन्नद्धापतति प्रसूता। यत्रानरः सञ्चविद्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यꣳसन्।। ॐ भूर्भुवःस्वः एकदंष्ट्राय नमः। एकदंश्ट्रमावाहयामि। भो एकदंष्ट्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

13. दक्षिणपत्रे प्रादक्षिण्येन – 'ॐ प्रजापतये च वायवे च गोमृगाो वरुणायारण्यो मेषो यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गवयीक्षिप्र येनाय वर्तिका नीलंगोः क्रिमिः समुद्राय शिशुमारो हिमवते हती।। ॐ भूर्भुवःस्वः ऐरावताय नमः। ऐरावतमावाहयामि। भो ऐरावत इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

14. 'ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणसतꣳराजन्पारयामसि।। ॐ भूर्भुवःस्वः ओषधिघ्नाय नमः। ओषधिघ्नमावाहयामि। भो ओषधिघ्न इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

15. 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।ॐ भूर्भुवःस्वः बन्धनाय नमः। बन्धनमावाहयामि। भो बन्धन इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

16. 'ॐ देवसवितः प्रसुव यज्ञम्प्रसुव यज्ञपतिम्भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु।। ॐ भूर्भुवःस्वः दिव्यकाय नमः। दिव्यकमावाहयामि। भो दिव्यक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

17. 'ॐ सीसेन तन्त्रम्मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञꣳसविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्ज्यन्।। ॐ भूर्भुवःस्वः कम्बलाय नमः। कम्बलमावाहयामि। भो कम्बल इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

18. 'ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतꣳसेनाऽजयत्सा कमिन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः भीषणाय नमः। भीषणमावाहयामि। भो भीषण इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

19. नैर्ऋत्यपत्रे प्रादक्षिण्येन – 'ॐ इमꣳसाहस्रꣳशतधारमुत्संव्यच्यमानꣳसरिरस्य मध्ये। घृतन्दुहानामदितिञ्जनायाग्ने मा हिꣳसीः परमे व्योमन्।। गवयमारण्यम्मनुते दिशा मितेन चिन्वानस्तन्नवो निषीद। गवयन्ते शुगृच्छतु यन्द्विषामस्तन्ते शुगृच्छतु।। ॐ भूर्भुवःस्वः गवयाय नमः। गवयमावाहयामि। भो गवय इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

20. 'ॐ कुम्भो वनिष्टुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्ने योन्यां गर्भोऽअन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सो दुहेन कुम्भी स्वधाम्पितृभ्यः।। ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टाय नमः। घण्टमावाहयामि। भो घण्ट इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

21. 'ॐ आक्रन्दय बलमोजो नऽआधा निष्ठनिहि दुरिता बाधमानः। अपप्रोथ दुन्दुभेदुच्छुनाऽइतऽइन्द्रस्य मुष्टिरविसीडयस्व।। ॐ भूर्भुवःस्वः व्यालाय नमः। व्यालमावाहयामि। भो व्याल इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

22. 'ॐ इण्द्रायाहि चित्रभानो सुताऽइमे त्वा यवः। अण्वीभिस्तना पूतासः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अणवे नमः। अणुमावाहयामि। भो अणो इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

23. 'ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिम्पिशंगम्बहुलम्पुरुस्पृहꣳहरिरेति कनिक्रदत्।। ॐ भूर्भुवःस्वः चन्द्रवारुणाय नमः। चन्द्रवारुणमावाहयामि। भो चन्द्रवारुण इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

24. 'ॐ स्वाङ्कृतोसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा। त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवाꣳशो यस्मै त्वेडे तत्सत्यमुपरि त्नप्रुताभंगेन हतो सौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा।। ॐ भूर्भुवःस्वः पटाटोपाय नमः। पटाटोपमावाहयामि। भो पटाटोप इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

25. पश्चिमपत्रे प्रादक्षिण्येन – 'ॐ उग्रँ लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रन्दौर्व्रत्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तः पार्श्वम्महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्टुः पशुपतेः पुरीतत्।। ॐ भूर्भुवःस्वः जटालाय नमः। जटालमावाहयामि। भो जटाल इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

26. 'ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतू1ऽरनु।। ॐ भूर्भुवःस्वः क्रतवे नमः। क्रतुमावाहयामि। भो क्रतो इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

27. 'ॐ आजिघ्र कलशम्महय्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जानि वर्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।। ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टेश्वराय नमः। घण्टेश्वरमावाहयामि। भो घण्टेश्वर इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

28. 'ॐ वायो शुक्रोऽअयामि ते मध्वोऽअग्रन्दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्वाहा देव नियुत्वा।। ॐ भूर्भुवःस्वः विटंकाय नमः। विटंकमावाहयामि। भो विटंक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

29. 'ॐ दैव्या होतार भिषजेन्द्रेण सयुजायुजा। जगतीच्छन्दऽइन्द्रियमनड्वान्गौर्वयो दधुः।। ॐ भूर्भुवःस्वः मणिमानाय नमः। मणिमानमावाहयामि। भो मणिमान इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

30. 'ॐ त्रीणितऽआहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे। उतेव मे वरुणच्छन्त्स्यर्वन्यत्रातऽआहुः परमञ्जनित्रम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः गणबन्धवे नमः। गणबन्धुमावाहयामि। भो गणबन्धो इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

31. वायव्यपत्रे प्रादक्षिण्येन – 'ॐ प्रतिश्रुत्कायऽअर्तनंघोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳशब्दायाडम्बराघातम्महसे वीणावादं

क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शंखध्मं वनाय वनपन्यतोरण्यायदावपम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः डामराय नमः। डामरमावाहयामि। भो डामर इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

32. 'ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः। श्येताक्ष्योरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।। ॐ भूर्भुवःस्वः ढुण्ढिकर्णाय नमः। ढुण्ढिकर्णमावाहयामि। भो ढुण्ढिकर्ण इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

33. 'ॐ बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्रः। अभिवीरोऽअभिसत्त्वा सहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठ गोवित्।। ॐ भूर्भुवःस्वः स्थविराय नमः। स्थविरमावाहयामि। भो स्थविर इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

34. 'ॐ सुपर्णं वस्ते मृगोऽअस्यादन्तो गोभिः सन्नद्धापतति प्रसूता। यत्रानरः संचविचद्द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिशवः शर्म यꣳसन्।। ॐ भूर्भुवःस्वः दन्तुराय नमः। दन्तुरमावाहयामि। भो दन्तुर इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

35. 'ॐ अग्नेऽअच्छा वदेहना प्रतिनः सुमना भव। प्रनो यच्छ सहस्रजित्त्वꣳहि धनदाऽअसि स्वाहा।।ॐ भूर्भुवःस्वः धनदाय नमः। धनदमावाहयामि। भो धनद इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

36. 'ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेयेम हि देवहितं यदायुः।। ॐ भूर्भुवःस्वः नागकर्णाय नमः। नागकर्णमावाहयामि। भो नागकर्ण इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

37. उत्तरपत्रे प्रादक्षिण्येन सप्त – 'ॐ बाहू मे बलमिप्द्रियꣳहस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्माक्षत्रसुरो मम।। ॐ भूर्भुवःस्वः महाबलाय नमः। महाबलमावाहयामि। भो महाबल इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

38. 'ॐ अपाम्फेनेन नमुचेः शिरऽइन्द्रोद वर्तयः। विश्वा यदजस स्पृधः।।ॐ भूर्भुवःस्वः फेत्काराय नमः। फेत्कारमावाहयामि। भो फेत्कार इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

39. 'ॐ इदꣳहविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतोऽअस्मासु धत्त।। ॐ भूर्भुवःस्वः चीकराय नमः। चीकरमावाहयामि। भो चीकर इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

40. 'ॐ या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकञ्च रक्षति। श्येनम्पतत्रिणꣳसिꣳहꣳसेमम्पातवꣳहसः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सिंहाय नमः। सिंहमावाहयामि। भो सिंह इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

41. 'ॐ मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगन्थापरस्याः। सृकꣳसꣳशायपविमिन्द्र तिग्मं विशत्रून्ताढि विमृधो नुदस्व।। ॐ भूर्भुवःस्वः मृगाय नमः। मृगमावाहयामि। भो मृग इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

42. 'ॐ देवहूर्यज्ञऽआचवक्षत्सुम्नहूर्यज्ञऽआचवक्षत्। यक्षदग्निर्देवो देवाँ2ऽआचवक्षत्।। ॐ भूर्भुवःस्वः यक्षाय नमः। यक्षमावाहयामि। भो यक्ष इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

43. 'ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकँ यद्वर्मी याति समदामुपस्थे। अनाविद्धयातन्वा जयत्वꣳस तवा वर्मणो महिमा पिपर्तु।। ॐ भूर्भुवःस्वः मेघवाहनाय नमः। मेघवाहनमावाहयामि। भो मेघवाहन इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

44. ईशानपत्रे प्रादक्षिण्येन सप्त – 'ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वारथेभिः सह वाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूँ1ऽरनपव्ययन्तः।। ॐ भूर्भुवःस्वः तीक्ष्णोष्ठाय नमः। तीक्ष्णोष्ठमावाहयामि। भो तीक्ष्णोष्ठ इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

45. 'ॐ वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्ध्या। एषस्यराथ्यो वृषापड्भिश्चतुर्भिरेदगन्ब्रह्माकृष्णश्च नोवतु नमोऽअग्नये।। ॐ भूर्भुवःस्वः अनलाय नमः। अनलमावाहयामि। भो अनल इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

46. 'ॐ अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्री विष्टम्भनीन्दिशमीधपत्नीम्भुवनानाम्। ऊर्मिर्द्रप्सोऽअपामसि विश्वकर्मा तऽऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा।। ॐ भूर्भुवःस्वः शुक्लतुण्डाय नमः। शुक्लतुण्डमावाहयामि। भो शुक्लतुण्ड इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

47. 'ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रम्पृणातु ते। सूर्यस्तेन क्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधु या।। ॐ भूर्भुवःस्वः सुधालापाय नमः। सुधालापमावाहयामि। भो सुधालाप इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

48. 'ॐ सम्बर्हिरङ्क्ताᳬहविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तान्दिव्यन्नभो गच्छतु यत्स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः बर्बरकाय नमः। बर्बरकमावाहयामि। भो बर्बरक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

49. 'ॐ पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा।। ॐ भूर्भुवःस्वः पवनाय नमः। पवनमावाहयामि। भो पवन इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

50. 'ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिङ्गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञन्नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।। ॐ भूर्भुवःस्वः पावनाय नमः। पावनमावाहयामि। भो पावन इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

अथवा इन नामन्त्रों से भी आवाहन कर स्थापन कर सकते हैं –

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि। भो क्षेत्रपाल इहागच्छइह तिष्ठ ।।

1. ॐ भूर्भुवःस्वः अजराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अजरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अजर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

2. ॐ भूर्भुवःस्वः आपकुम्भाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः आपकुम्भमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो आपकुम्भ इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

3. ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रस्तुत्यै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रस्तुतीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्रस्तुती इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

4. ॐ भूर्भुवःस्वः इडाचाराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः इडाचारमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो इडाचार इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

5. ॐ भूर्भुवःस्वः उक्तसंज्ञाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः उक्तसंज्ञामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो उक्तसंज्ञा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

6. ॐ भूर्भुवःस्वः कूष्माण्डाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कूष्माण्ड इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

7. ॐ भूर्भुवःस्वः ऋषिसूदनाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ऋषिसूदनमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ऋषिसूदन इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

8. ॐ भूर्भुवःस्वः ऋमुक्ताय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ऋमुक्तमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ऋमुक्त इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

9. ॐ भूर्भुवःस्वः क्लृप्तकेशाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः क्लृप्तकेशमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो क्लृप्त केश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

10. ॐ भूर्भुवःस्वः लृपकाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः लृपकमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो लृपक इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

11. ॐ भूर्भुवःस्वः एकदंष्ट्राय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः एकदंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो एकदंष्ट्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

12. ॐ भूर्भुवःस्वः ऐरावताय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ऐरावत इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

13. ॐ भूर्भुवःस्वः ओघवन्धवे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ओघवन्धुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ओघवन्धो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

14. ॐ भूर्भुवःस्वः औषधीशाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः औषधीशमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो औषधीश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

15. ॐभूर्भुवःस्वः अंजनाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अंजनमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अंजन इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

16. ॐ भूर्भुवःस्वः अस्त्रवाराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अस्त्रवारमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अस्त्रवार इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

17. ॐ भूर्भुवःस्वः कवलाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कवलमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कवल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

18. ॐ भूर्भुवःस्वः खरुखानलाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः खरुखानलमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो खरुखानल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

19. ॐ भूर्भुवःस्वः गोमुख्याय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः गोमुख्यमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गोमुख्य इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

20. ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टादाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टादामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो घण्टादा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

21. ॐ भूर्भुवःस्वः ङ्मनसे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ङ्मनसमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ङ्मनस इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

22. ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिवारणाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिवारणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो चण्डिवारण इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

23. ॐ भूर्भुवःस्वः छटाटोपाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः छटाटोपमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो छटाटोप इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

24. ॐ भूर्भुवःस्वः जटालाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः जटालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो जटाल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

25. ॐ भूर्भुवःस्वः झंगीवाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः झंगीवामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो झंगीवा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः जडश्चराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः जडश्चरमावाहयामि स्थापयामि । ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो जडँश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः टंकपाणये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः टंकपाणिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो टंकपाणी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः ठानबन्धवे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ठानबन्धुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ठानबन्धो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
29. ॐ भूर्भुवःस्वः डामराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः डामरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो डामर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः ढक्कारवाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ढक्कारवमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ढक्कारवाय इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः णवार्णवाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः णवार्णवमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो णवार्णव इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः तडिद्देहाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः तडिद्देहमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो तडिद्देह इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

33. ॐ भूर्भुवःस्वः थिराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः थिरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो थिर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः दन्तुराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः दन्तुरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो दन्तुर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः धनदाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः धनदमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो धनदा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः नक्तिक्तांताय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः नक्तिक्तांतमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो नक्तिक्तांत इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
37. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रचण्डकाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः प्रचण्डमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो प्रचण्डक इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
38. ॐ भूर्भुवःस्वः फट्काराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः फट्कारमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो फट्कार इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
39. ॐ भूर्भुवःस्वः वीर संघाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः वीर संघमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वीर संघ इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
40. ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो भृंग इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
41. ॐ भूर्भुवःस्वः मेघभासुराय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः मेघभासुरमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो मेघभासुर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
42. ॐ भूर्भुवःस्वः युगान्ताय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः युगान्तमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो युगान्त इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
43. ॐ भूर्भुवःस्वः एह्यवाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः एह्यवमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो एह्यवाय इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
44. ॐ भूर्भुवःस्वः लम्बोष्ठाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः लम्बोष्ठमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो लम्बोष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
45. ॐ भूर्भुवःस्वः बासवाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः बासवमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो बासव इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
46. ॐ भूर्भुवःस्वः शूकनन्दाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः शूकनन्दं आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो शूकनन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
47. ॐ भूर्भुवःस्वः षडालाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः षडालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो षडाल इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
48. ॐ भूर्भुवःस्वः सुनाम्ने नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सुनाम्नमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सुनाम्न इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
49. ॐ भूर्भुवःस्वः हंब्रुकाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः हंब्रुकमावाहयामि स्थापयामि ।

**ॐ भूर्भुवःस्वः भो हंब्रुक इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

**ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञᳬसमिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ ।।**

**ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालसहिताः अजरादिक्षेत्रपालदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। 'ॐ क्षेत्रपालसहितेभ्य अजरादिक्षेत्रपालदेवेभ्यो नमः'** - इस मन्त्र से पंच/दश/षोडशोपचार पूजन करें। तदनन्तर स्तुति करें -

**यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं, सं सं संहारभूर्ति शिरमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।**
**दं दं दं दीप्तिकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं, पं पं पं पापनाशं प्रणतपशुपतिं क्षेत्रपालं नमामि।।**

ततः प्रार्थयेत् -

**'यदंगत्वेन भो देवाः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।**
**अनेन पूजनेन क्षेत्रपालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।'**

## 6.8 पीठपूजनम् -

हाथ में अक्षतों को लेकर पीठ की पूजा करें। पीठ के मध्य में - **'ॐ पं पूर्वपीठाय नमः, ॐ पं पूर्णपीठाय नमः, ॐ कं कमलपीठाय नमः'**, पीठ के पूर्व में - **'ॐ उं उड्यानपीठाय नमः'**, आग्नेय में - **'ॐ मां मातृपीठाय नमः'**, दक्षिण में - **'ॐ जं जालन्धरपीठाय नमः'**, नैर्ऋत्य में - **'ॐ कं कोल्हापुरपीठाय नमः'**, पश्चिम में - **'ॐ पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः'**, वायव्य में - **'ॐ सौं सौहारोपपीठाय नमः'**, उत्तर में - **'ॐ कं कोल्हागिरिपीठाय नमः'**, ईशान्य में - **'ॐ कं कामरूपपीठाय नमः'**। पीठ को नमस्कार करें, पीठ के दाहिने भाग -

**'ॐ गुं गुरुभ्यो नमः, ॐ पं परमगुरुभ्यो नमः, ॐ पं परात्परगुरुभ्यो नमः, ॐ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः, मातापितृभ्यां नमः, उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो नमः।'** पीठ के बाये भाग – **ॐ गं गणपतये नमः, ॐ दुं दुर्गायै नमः, ॐ सं सरस्वत्यै नमः, ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।'** अब पीठ देवताओं का आवाहन पूर्वक स्थापना करे,

पीठ के मध्य में – **'ॐ आं आधारशक्त्यै नमः, ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः, ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः, ॐ मं महामण्डूकाय नमः।**

उसके ऊपर – **ॐ आं आदिकूर्माय नमः, ॐ आं आदिवराहाय नमः, ॐ अं अनन्ताय नमः, ॐ पं पृथिव्यै नमः (ॐ भूं भूम्यै नमः)।**

उसके ऊपर – **ॐ अं अमृतार्णवाय नमः, ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः, ॐ हं हेमगिरये नमः, ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः, ॐ मं मणिभूम्यै नमः, ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः (ॐ दिं दिव्यमण्डपाय नमः), ॐ कं कल्पतरवे नमः** (ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः), **ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः, ॐ सं स्वर्णवेदिकायै नमः।**

आग्नेयादि कोणों में – **'ॐ धं धर्माय नमः, ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः, ॐ वैं वैराग्याय नमः, ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः।**

पूर्वादि में – **ॐ अं अधर्माय नमः, ॐ अं अज्ञानाय नमः, ॐ अं अवैराग्याय नमः, ॐ अं अनैश्वर्याय नमः।'**

ऊर्ध्व में – **'ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः'।** नीचे – **'ॐ अं अनन्ताय नमः'।**

मध्य में – **'ॐ वां वास्तुपुरुषाय नमः, ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ प्रं प्रबोधात्मने नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः, ॐ तं तमसे नमः, ॐ मं मोहात्मने नमः, ॐ मं मायातत्त्वाय नमः, ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः, ॐ शं शिवतत्त्वाय नमः, ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः, ॐ मं महेश्वराय नमः, ॐ नं नीलाय नमः, ॐ पं पद्माय नमः, ॐ मं महापद्माय नमः, ॐ रं रत्नेभ्यो नमः।'**

पूर्वादि आठदिशाओं में –

'ॐ उड्याणपीठेश्वरसहितामुड्याणपीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः,

ॐ मातृकापीठेश्वरसहिताम्मातृकापीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः,

ॐ जालन्धरपीठेश्वरसहितां जालन्धरपीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः,
ॐ कोल्हागिरिपीठेश्वरसहितां कोल्हागिरिपीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः,
ॐ पूर्णागिरिपीठेश्वरसहितां पूर्णागिरिपीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः,
ॐ संहारगिरिपीठेश्वरसहितां संहारगिरिपीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः,
ॐ कोल्हापुरपीठेश्वरसहितां कोल्हापुरपीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः,
ॐ कामरूपपीठेश्वरसहितां कामरूपपीठेश्वर्यम्बापादुकायै नमः।'

पुनः पूर्वादि चार दिशाओं में – **'ॐ गं गणेशाय नमः, ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः, ॐ पां पादुकाभ्यो नमः, ॐ वं वटुकेभ्यो नमः।'**

पुनः आग्नेयादि विदिशाओं में – **'ॐ जं जयायै नमः, ॐ विं विजयायै नमः, ॐ जं जयन्त्यै नमः, ॐ अं अपराजितायै नमः।'**

पीठ पर –

**'ॐ अग्निमुखवेतालाय नमः, ॐ प्रेतवाहनवेतालाय नमः, ॐ ज्वालामुखवेतालाय नमः, ॐ धूम्राक्षवेतालाय नमः,**
**ॐ आनन्दकन्दाय नमः, ॐ संविन्नालाय नमः, ॐ दलेभ्यो नमः, ॐ केसरेभ्यो नमः,**
**ॐ कर्णिकायै नमः, ॐ अं सूर्यमण्डलाय नमः, ॐ उं सोममण्डलाय नमः, ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः,**
**ॐ अं आत्मने नमः, ॐ उं अन्तरातमने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः,**
**ॐ विं विष्णुमायायै नमः, ॐ चें चेतनायै नमः, ॐ बुं बुद्ध्यै नमः, ॐ निं निद्रायै नमः,**
**ॐ क्षुं क्षुधायै नमः, ॐ छां छायायै नमः, ॐ शं शक्त्यै नमः, ॐ तृं तृष्णायै नमः,**
**ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः, ॐ जां जात्यै नमः, ॐ लं ललितायै नमः, ॐ शां शान्त्यै नमः,**

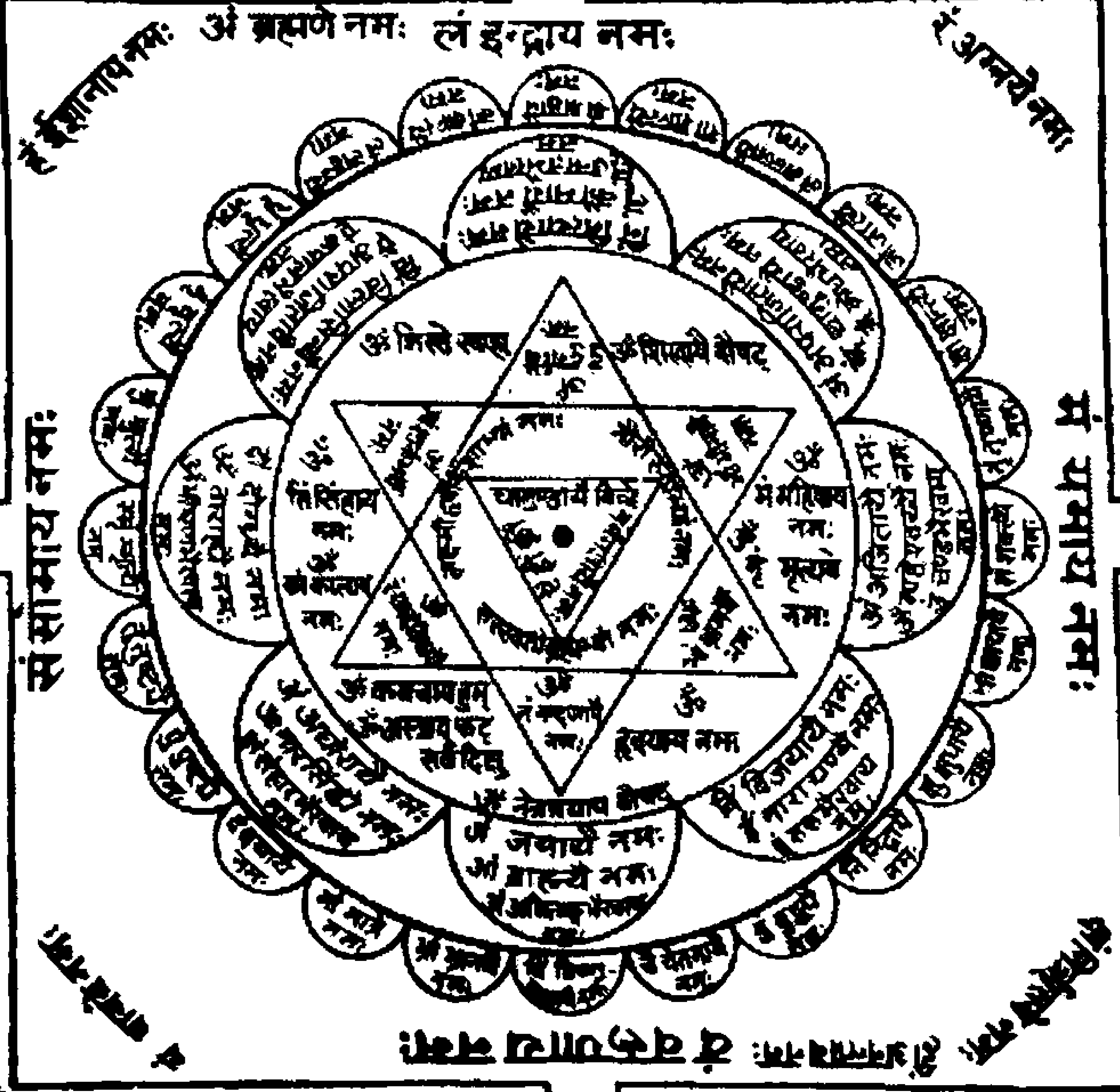
ॐ श्रं श्रद्धायै नमः, ॐ कां कान्त्यै नमः, ॐ लं लक्ष्म्यै नमः, ॐ धृं धृत्यै नमः,
ॐ वृं वृद्ध्यै नमः, ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः, ॐ दं दयायै नमः, ॐ तुं तुष्ट्यै नमः,
ॐ पुं पुष्ट्यै नमः, ॐ मां मातृकायै नमः, ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः,
ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः, ॐ सर्वात्मसंसर्गयोगपीठात्मने नमः।'

**ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ ॥ ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ अनेन पूजनेन यन्त्र/मूर्तिस्थावाहितदेवताः साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्ताम न मम। 'ॐ शक्तिसहितपीठस्थदेवताभ्यो नमः'** - मन्त्र से यथाशक्ति पंचोपचार/दशोपचार/षोडशोपचार पूजन करे। अब पीठ पर पूर्वोक्त विधि से कलशस्थापित कर उस पर पूर्णपात्र रखें और उस पर मूर्ति/यन्त्र को रखें।

### 6.9-1 दुर्गा यन्त्र लेखन प्रकारः -

यदि बनी-बनायी हुयी दुर्गाजी की मूर्ति अथवा यन्त्र न मिले अथवा सामर्थ्य न हो तो स्वयं भोजपत्र अथवा शुभ्रवस्त्र पर यन्त्र को लिखकर पूजा में प्रयोग कर सकते हैं। संक्षिप्त कारिका - '**तत्त्वपत्रावृत्तत्र्यस्रषट्कोणाष्टदलान्विते**।' लेखन प्रकारः - '**मध्ये बिन्दुं, ततः त्रिकोणं, ततः षट्कोणं, तदुपरि वृत्तमष्टौ दलानि च, तदुपरि वृत्तं चतुर्विंशतिदलानि च, तद्बाह्ये चतुर्द्वारयुक्तं चतुरस्रत्रयं च**' अर्थात् चित्र को देखते हुये निम्न प्रकार से बनायें। पहले एक बिन्दु बनायें। तत्पश्चात् उसके बाहर एक त्रिकोण बनायें। त्रिकोण के बाहर एक षट्कोण बनायें। उसके बाहर एक वृत्त बनाकर उस पर आठ कमल दल बनायें। पुनः उसके बाहर एक वृत्त बनाकर उस पर चौबीस कमल दल बनायें। उसके बाहर चार द्वार युक्त तीन मेखला बनायें।

# सप्तशती-पूजन-यन्त्रम्




चित्र संख्या 4

**6.9-2 दुर्गा एवं वास्तु मूर्ति/यन्त्र अग्न्युत्तारणम् -**

संकल्प करे -

**'अस्याः सुवर्णाद्यन्यतममयदुर्गाप्रतिमाया/दुर्गायन्त्रस्य वा अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यर्थं चाग्न्युत्तारणं करिष्ये।'**

देवी की मूर्ति (प्रतिमा)/ यन्त्र और वास्तु की प्रतिमा/यन्त्र को एक ताम्र पात्र में रखकर घी से अभ्यंजन करें -

**'ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम। अनुष्वधमा वहमादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।'**

उन पर दूध की धारा छोड़ें -

**'ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।'**

तदनन्तर शुद्ध जल से स्नान करायें -

**'ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः।**
**श्येताक्ष्योऽरुणेस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रान्नभोरूपाः पार्जन्याः।।'**

अब दो अग्निसूक्तों से अभिषेक करें -

**'ॐ अग्निसप्तिमिति अग्निसूक्तात्मकमन्त्रस्य सौचिकोऽग्नि ऋषयः, त्रिष्टुप्छन्दः, अग्निर्देवता, प्रतिमा/यन्त्र निर्माणकाले संजनित दोषपरिहारार्थमभिषेके विनियोगः।'**

(सर्वप्रथम बिना अग्नि पद के इस सूक्त का पाठ करना है तत्पश्चात् अग्नि पद सहित पाठ करना है। अथ अग्नि पद रहित सूक्त -)

**'ॐ सप्तिं वाजं भरं ददाति वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्। रोदसी विचरत्समंजन्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्।1।**
**अप्नसस्समिदस्तु भद्रा मही रोदसी आविवेश। एकं चोदयत्समत्सुव्रताणि दयते पुरूणि।2।**

**हत्यं जरतः कर्णमावाद्भ्यो निरदहज्जरूथम्। अत्रिं घर्म उरु यदन्तर्नृमेधं प्रजया सृजत्सम्।3।**
**दाद्रविणं वीरपेशा ऋषिं यस्सहस्रा सनोति। दिवि हव्यमाततान धामानि विभृता पुरुत्रा।4।**
**उक्थैर्ऋषयो विह्वयन्ते नरो यामनि बाधितासः। वयोऽन्तरिक्षे पतन्तस्सहस्रा परियाति गोनाम्।5।**
**विश ईळते मानुषीर्या मनुषो नहुषो विजाताः। गान्धर्वीं पथ्यामृतस्य गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता।6।**
**ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुर्महामवोचामासु वृक्तिम्। प्राव जरितारं यविष्ठ महिद्रविणमायजस्व।7।'**

(अग्नि पद सहित सूक्त –)

**'ॐ अग्निसप्तिं वाजं भरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्। अग्नी रोदसी विचरत्समंजन्नग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्।1।**
**अग्नरप्नसस्समिदस्तु भद्राऽअग्निर्मही रोदसी आविवेश। अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि।2।**
**अग्निर्हत्यं जरतः कर्णमावाग्निरद्भ्यो निरदहज्जरूथम्। अग्निरत्रिं घर्म उरु यदन्तरग्निर्नृमेधं प्रजया सृजत्सम्।3।**
**अग्निर्दाद्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं यस्सहस्रा सनोति। अग्निर्दिवि हव्यमाततानाग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा।4।**
**अग्निमुक्थैर्ऋषयो विह्वयन्तेऽअग्निं नरो यामनि बाधितासः। अग्निं वयोऽन्तरिक्षे पतन्तोऽग्निस्सहस्रा परियाति गोनाम्।5**
**अग्निं विश ईळते मानुषीर्याऽअग्निं मनुषो नहुषो विजाताः। अग्निर्गान्धर्वीं पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता।6।**
**अग्नये ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुरग्निं महामवोचामासु वृक्तिम्। अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठाग्ने महिद्रविणमायजस्व।7।'**

अथवा इन मन्त्रों से भी कर सकते हैं –

**'ॐ समुद्रस्य त्वा कयाग्ने परि व्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।।1।।**
**हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।।2।।**

उपज्मन्नुप वेतसेऽअवतर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो। यज्ञं पावकवर्णꣳशिवं कृधि।।3।।
अपामिदं न्ययनꣳसमुद्रस्य निवेशनम्। अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः। पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।।4।।
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च।।5।।
स नः पावक दीदिवोऽअग्ने देवाँ2 इहावह। उप यज्ञꣳहविश्च नः।।6।।
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्रुरुचऽउषसयो न भानुना।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नूरणऽआयो घृणे न ततृषाणोऽअजरः।।7।।
नमस्ते हरसे सोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे। अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः। पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।।8।।
नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट्।।9।।

ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानांꣳसंवत्सरीणामुपभागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य।।10।।
ये देवा देवेष्वधि देवत्त्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअस्य। येभ्यो नऽऋते पवते धाम किंचन न ते दिवो न पृथिव्याऽधि स्नुषु।।11।।
प्राणदाऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः। पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।।12।।'

पंचामृत से भी अभिषेक करके शुद्ध जल से धोकर शुद्ध वस्त्र से जलबिन्दुओं का शोषण करें। इस प्रकार संस्कारित प्रतिमा/यन्त्र को कलशों पर रखे गये चावल से भरे पात्र पर रखें –

'ॐ बृहस्पत इति मन्त्रस्य देवापी ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, आर्ष्टिषेणो देवताः, पुण्यजलस्मरणे विनियोगः।
ॐ बृहस्पते प्रतिमे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वाऽअसि पूषा। आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वांत्स पर्जन्यं शन्तनवे वृषाय।।'

कलश को स्पर्श करते हुये पुण्यनदी व समुद्र के जल का स्मरण करें -

**'सर्वे समुद्रास्सरितस्तीर्थानि जलदा सदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारिकाः।1।**
**गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽअस्मिन्सन्निधिं कुरु।2।**

**6.9-3 मूर्ति/यन्त्र प्राणपतिष्ठा -**

**'अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, श्रीदुर्गादेव्याः** (/वास्तुदेवताया) **प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।'**

अथ ऋष्यादि न्यासः :-

'**ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः** - शिरसि, **ॐ ऋग्यजुःसामात्मकछन्दोभ्यो नमः** - मुखे,
**ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः** - हृदये, **ॐ आं बीजाय नमः** - गुह्ये,
**ॐ ह्रीं शक्तये नमः** - पादयोः, **ॐ क्रौं कीलकाय नमः** - नाभौ,
**ॐ श्रीदुर्गादेव्याः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।'

अथ करन्यासः - **ॐ अं कं खं गं घं ङं आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अंगुष्ठाभ्यां नमः,**
**ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः,**
**ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं मध्यमाभ्यां नमः,**
**ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः,**

**ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः,**

**ॐ अँ यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

अथ हृदयादि न्यासः -

**ॐ अं कं खं गं घं ङं आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः,**

**ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा,**

**ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट्,**

**ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्ः,**

**ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्,**

**ॐ अँ यं रं लं वं षं शं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट्।**

अब अपने में और मूर्ति/यन्त्र में निम्न न्यासों को करें।

**'ॐ आं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहं अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः/यन्त्रस्य वा प्राणाः इह प्राणाः,**

**ॐ आं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहं अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः/यन्त्रस्य वा जीव इह स्थितः,**

**ॐ आं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहं अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः/यन्त्रस्य वा सर्वेन्द्रियाणि - वाङ्मनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य स्वस्तये सुखेन सुस्थिरं सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**

मूर्ति/यन्त्र को स्पर्श किये हुये इन मन्त्रों का पाठ करें-

‘ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्राद् पांशुरूपाथ्ऽशोस्त्रि
वृत्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठऽऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः।।1।।

ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृतथ्ऽसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।।2।।

ॐ पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन्पुनः प्राणः पुनरात्मा मऽआगन्पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रम्मऽआगन्।
वैश्वानरोऽअदब्धस्तनूपाऽअग्निर्नःपातु दुरितादवद्यात्।।3।।

ॐ अपां पेरुरस्यापो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद्देव हविः।
सन्ते प्राणो वातेन गच्छताथ्ऽसमंगाानि यजत्रैः स यज्ञपतिराशिषा।।4।।

ॐ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।।5।।

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।6।।

दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय। बलिपूजां गृहाण त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।7।।

कल्याणजननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्। अनन्तशक्तिसंपन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम्।।8।।

एह्येहि दुर्गे दुरितौघनाशिनि। प्रचण्डदैत्यौघविनाशकारिणि।।9।।

उमे महेशार्द्धशरीरधारिणि। स्थिरा भव त्वं मम यज्ञकर्मणि।।10।।

**ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ ।। ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। अनेन पूजनेन यन्त्र/मूर्तिस्थावाहितदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।'**

'**ॐ शक्तिसहित यन्त्र/मूर्तिस्थदेवताभ्यो नमः**' – मन्त्र से 'यथाशक्ति पंचोपचार/दशोपचार/षोडशोपचार पूजन करे। यदि मूर्ति है तो इन्हें करना है – **अथ नेत्रोन्मीलन आदि संस्कारः** – '**ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽसि चक्षुर्मे देहि।**' पंचोपचार पूजन करके 16 बार '**ॐ**' का उच्चारण करें। मूर्ति/यन्त्र के गर्भाधानादि विवाहपर्यन्त संस्कार पुष्प से करें – '**ॐ गर्भाधानं संपादयामि, ॐ पुंसवनं संपादयामि, ॐ सीमन्तोन्नयनं संपादयामि, ॐ जातकर्म संपादयामि, ॐ नामकरणं संपादयामि, ॐ निष्क्रमणं संपादयामि, ॐ अन्नप्राशनं संपादयामि, ॐ चूडाकरणं संपादयामि, ॐ उपनयनं संपादयामि, ॐ वेदव्रतचतुष्टयं संपादयामि, ॐ गोदानं संपादयामि, ॐ व्रतविसर्गं संपादयामि, ॐ विवाहं संपादयामि।**'

**6.10 यवांकुर विषयक विचारः** – (सिद्धान्तशेखरे)

1. वपनं (रोपणं) –

> **'प्रतिष्ठायां च दीक्षायां स्थापने चोत्सवे तथा। सम्प्रोक्षणे च शान्त्यर्थं विवाहे मौंजिबन्धने।।1।।**
> **सर्वमंगलकार्येषु कारयेदंकुरार्पणम्। प्रतिष्ठादिवसात्पूर्वं नवमे सप्तमे दिने।।2।।**
> **पंचमे वा तृतीये वा सद्यो वा चांकुरार्पणम्। मंगलांकुरस्य वपनं कुर्यात्तत्रैव चाहनि।।3।।'**

अर्थात् प्रतिष्ठा, दीक्षा, उत्सव निमित्तक स्थापना, उपनयन और विवाह संस्कार आदि समस्त मंगल कार्यों में शान्त्यर्थ प्रोक्षण यानि अभिषेक के दिन से तीसरे, पांचवें, सातवें, नवें दिन पूर्व अथवा सद्य ही मंगलांकुर हेतु जौ बोना चाहिये। अथवा

**'दीक्षादिनात्प्राक्सप्तभिर्दिनैश्च तथा कर्तव्यं। यथाष्टमं दिनम्भवत्यष्टमी शुभा सर्वदा।।1।।'**

अर्थात् दीक्षा दिन से सात दिन पूर्व इस प्रकार जौ बोना चाहिये कि आठवां दिन शुभ अष्टमी हो। अथवा

**'यवान्वै वापयेत्तत्र गोधूमैश्चापि संयुतान्। तत्र संस्थापयेत्कुम्भं विधिना मन्त्रपूर्वकम्।।1।।'**

अर्थात् गेहूं सहित जौ को बोवें ऐसे जगह पर ताकि उस पर आप मन्त्रपूर्वक विधिवत् घट स्थपपन कर सके।

2. परीक्षा –

**'यजमानाभिवृद्ध्यर्थमंकुराणि परीक्षयेत्। सम्यगूर्ध्वप्ररूढानि कोमलानि सितानि च।।1।।**
**धूम्रवर्णान्यपूर्णाणि तथा तिर्यग्गतानि च। श्यामलानि च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च।।2।।'**

अर्थात् यजमान की अभिवृद्धि केलिये यवांकुरों की परीक्षा करें, देखें की वे कैसे अंकुरित हो कर बड़ रहे हैं। वे तीन प्रकार के होंगे – सम्यगूर्ध्व कोमल व सफेद हैं अथवा धूम्र रंग, अपूर्ण व टेडे अथवा कुब्ज व श्यामल हैं। इन में से प्रथम शुभ है उसे ग्रहण करें, शेष अशुभ हैं अत: उन्हें त्याग दें।

3. फलज्ञानं –

**'अवृष्टिं कुरुते कृष्णं धूमाभ्रं कलहं तथा। अपूर्वं जननाशं च दुभिक्षं श्यामलांकुरम्।।1।।**
**तिर्यग्गते भवेद्व्याधिः कुब्जे शत्रुभयं तथा। अशुभे चांकुरे जाते शान्तिहोमं समाचरेत्।।2।।'**

अर्थात् काला हो तो वर्षा नहीं होगी, धूवें के रंग हो तो लड़ाई होगी, रंगबिरंग हो तो जननाश और सांवला हो तो अकाल पड़ेगा। टेड़े हो तो बीमार होगा, कुब्ज हो तो शत्रुभय होगा, वक्र आदि अशुभ रूप से अंकुर हो तो अवश्य ही शान्ति होम करें।

*कामनाभेद से कलश में वस्तुभेदः -*

**'धर्मकामः क्षिपेद्भस्म धनकामस्तु मौक्तिकम्। श्रीकामः कमलं दद्यात्कामार्थी रोचनं तथा।।1।।**
**मोक्षकामो न्यसेद्वस्त्रं जयकामोऽपराजिताम्। उच्चाटनाय व्याघ्रीं च वश्यार्थं शिखिमूलिकाम्।।2।।**
**मारणाय मरीचं च कैतवम्मोहनाय च। आकर्षणाय पारन्तीं प्रक्षिपेत्कलशोदरे।।3।।'**

(व्याघ्री = छोटी कटेरी, शिखीमूलिका = मोरपंखी, कैतव = धतूरा।) अर्थात् धर्म की कामना हो तो (गोबर का) भस्म, धन की कामाना हो तो मोती, सब प्राकर का ऐश्वर्य की कामना हो तो कमलफूल, स्त्री की कामना हो तो रोचन, मोक्ष की कामना हो तो वस्त्र, विजय की कामना हो तो अपराजिता, उच्चाटन करने केलिये छोटी कटेरी, वशीकरण केलिये मोरपंखी, मारण केलिये कालीमिर्च, सम्मोहन केलिये धतूरा और आकर्षण केलिये पारन्ती को कलश में डा़लें।

## 7 अथ न्यासप्रकरणम्

सामान्यतः तत्त्वमुद्रा अथवा मृगीमुद्रा से न्यास किया जाता है। कहीं कहीं अन्य मुद्रा अथवा अन्य प्रकार से भी किया जाता है जो कि परम्परा से ज्ञातव्य है।

**7.1/1 न्यास का महत्त्व** - (भविश्यपुराणे)

**'ना देवि कीर्त्तयेद्देवीं ना देवीं तां समर्चयेत्। न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवीभूत्वा तु तां जपेत्।।'**

अर्थात् हे देवी! कभी भी देवी की स्तुति अथवा पूजा आदि कर सकते हैं किन्तु न्यास द्वारा देवी के स्वरूप के साथ अपने को अभेद कर यानि देवी भावापन्न होकर ही देवी की पूजा, जप, स्तुति आदि करें।

*स्थित्यादिन्यासाधिकारी व तत्फलं च* – (मन्त्रतन्त्रप्रकाशे)

**'संहृते दोषसंहारः सृष्टेश्च सुतपुत्रदः। स्थितिस्तु शान्तिविन्यासस्तस्मात्कार्यस्त्रिधा च सः।।**
**स्थितिन्यासो गृहस्थानामुद्दिष्टः सर्वसिद्धिदः। प्रथमाश्रमिणां न्यासमुत्पत्तिः समुदाहृतः।।**
**यतीनां च वनस्थानां संहारः समुदाहृतः। विरक्तस्य गृहस्थस्य संहारोऽपि विधीयते।।**
**सपत्नीकवनस्थानां स्थितिन्यासो विधीयते। विद्यार्थीनामथैतेषां सृष्ट्यन्तोऽपि विशिष्यते।।'**

अर्थात् संहार न्यास दोषों को नष्ट करता है, सृष्टिन्यास पुत्र-पौत्रादि देता है और स्थिति न्यास शान्ति को बढाता है, अतः तीनों न्यासों को करना चाहिये। सृष्टिन्यास ब्रह्मचारियों केलिये कहा गया है, सर्वसिद्धिप्रद स्थितिन्यास गृहस्थों केलिये उपदिष्ट है और अपत्नीक वानप्रस्थ, संन्यासी एवं विरक्त गृहस्थों केलिये संहारन्यास का विधान किया गया है। सपत्नीक वानप्रस्थों केलिये स्थितिन्यास और विद्यार्थियों केलिये सृष्टि व संहार न्यास का विशेष तौर पर विधान किया गया है।

**7.1/2 मातृकान्यासः** –

**'प्रथमो मातृकान्यासो देवसारूप्यदः स्मृतः।'**

अर्थात् ऐसे कहा गया है कि मातृका न्यास पहला न्यास है जो देवता की सारूप्यता को देता है।

**ॐ अं नमः** – मूर्ध्नि, **ॐ आं नमः** – ललाटे, **ॐ इं नमः** – दक्षिणनेत्रे, **ॐ ईं नमः** – वामनेत्रे,
**ॐ उं नमः** – दक्षिणकपोले, **ॐ ऊं नमः** – वामकपोले, **ॐ ऋं नमः** – दक्षिणकर्णे, **ॐ ॠं नमः** – वामकर्णे,
**ॐ लृं नमः** – दक्षनासापुटे, **ॐ लॄं नमः** – वामनासापुटे, **ॐ एं नमः** – ऊर्ध्वोष्ठे, **ॐ ऐं नमः** – अधरोष्ठे,
**ॐ ओं नमः**–ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ, **ॐ औं नमः** अधोदन्तपंक्तौ, **ॐ अं नमः** – शिखायाम्, **ॐ अः नमः** – तालुनि,

**ॐ कं नमः** - दक्षिणबाहुमूले, **ॐ खं नमः** - दक्षिणकूर्परे, **ॐ गं नमः** - दक्षिणमणिबन्धे,
**ॐ घं नमः** - दक्षिणकरांगुलिमूले, **ॐ ङं नमः**-दक्षिणकरांगुल्यग्रे, **ॐ चं नमः** - वामबाहुमूले,
**ॐ छं नमः** - वामकूर्परे, **ॐ जं नमः** - वाममणिबन्धे, **ॐ झं नमः**-वामकरांगुलिमूले,
**ॐ ञं नमः** - वामकरांगुल्यग्रे, **ॐ टं नमः** - दक्षिणपादमूले, **ॐ ठं नमः** - दक्षिणजानुनि,
**ॐ डं नमः**-दक्षिणपादगुल्फे, **ॐ ढं नमः**-दक्षिणपादांगुलिमूले, **ॐ णं नमः**-दक्षिणपादांगुल्यग्रे,
**ॐ तं नमः**-वामपादमूले, **ॐ थं नमः** वामजानुनि, **ॐ दं नमः**-वामपादगुल्फे,
**ॐ धं नमः**-वामपादांगुलिमूले, **ॐ नं नमः**-वामपादांगुल्यग्रे, **ॐ पं नमः** - दक्षिणपार्श्वे,
**ॐ फं नमः** - वामपार्श्वे, **ॐ बं नमः** -पृष्ठे, **ॐ भं नमः** - नाभौ,
**ॐ मं नमः** - उदरे, **ॐ यं नमः** - त्वचि, **ॐ रं नमः** - असृजि,
**ॐ लं नमः** - मांसे, **ॐ वं नमः** - स्नायुषु, **ॐ शं नमः**-अस्थिनि,
**ॐ षं नमः**-मज्जायाम्, **ॐ सं नमः** - मेदसि, **ॐ हं नमः** - शुक्रे,
**ॐ क्षं नमः** - सर्वांगे।

**7.2 सारस्वतन्यासः** -

**'द्वितीयस्तु सारस्वतो येन दुरितं च जाड्यं।। वाक्पापसंचयं सदा विलयं भवति तथा।'**

अर्थात् सारस्वत न्यास दूसरा न्यास है जिससे कर्ता के दुरित, जड़ता और वाणी द्वारा कृत पापों का संचय सदा केलिये नष्ट होता है।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करतलाभ्यां नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करपृष्ठाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्फाराभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मणिबन्धाभ्यां नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै वषट् नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम् नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट् नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पूर्वायै नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अग्नये नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षिणायै नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निर्ऋतये नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पश्चिमायै नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वायव्यै नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उत्तरायै नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईशानायै नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊर्ध्वायै नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अधस्तान्नमः।

### 7.3 मातृगणन्यासः

'तृतीयस्तु मातृगणो भूत्वा सर्वलोकप्रियः।। येन लोकेषु निर्भयः.....'

अर्थात् मातृगण न्यास तीसरा न्यास है जिससे कर्ता सर्वदेवप्रिय होकर तीनों लोकों में निर्भय होता है।

ॐ ब्रह्माणी मां पूर्वतः पातु, ॐ माहेश्वरी मामाग्नेयां पातु, ॐ कौमारी मां दक्षिणे पातु, ॐ वैष्णवी मां नैर्ऋत्यां पातु, ॐ वाराही मां पश्चिमे पातु, ॐ नारसिंही मां वायव्यां पातु, ॐ इन्द्राणी मामुत्तरे पातु, ॐ चामुण्डा मामीशान्यां पातु, ॐ व्योमेश्वरी मामूर्ध्वं पातु, ॐ सप्तद्वीपेश्वरी मां भुवि पातु, ॐ नागेश्वरी मामधः पातु।

### 7.4 जरामृत्युनाशकन्यासः

'.....जरामृत्युनाशकश्च। तुरीयो न्यासो येनाग्निवारिभ्यां निर्भयो भवेत्।।'

अर्थात् जरामृत्युनाशक न्यास चौथा न्यास है जिससे कर्ता अग्नि और जल से निर्भय होकर उनसे संभावित मृत्यु को नष्ट कर लेता है।

**ॐ कमलांकुशमण्डिता नन्दजा पूर्वांगं मे पातु, ॐ खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणांगं मे पातु,**
**ॐ पुष्पपल्लवमूलादिहस्ता शाकम्भरी पश्चिमांगं मे पातु, ॐ धनुर्बाणधरा दुर्गार्तिहारिणी दुर्गा वामांगं मे पातु,**
**ॐ शिरःपात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि मे पातु, ॐ चित्रकान्तिभृद्भ्रामरी चरणान्मस्तकावधि मे पातु।**

**7.5 वशीकरणाभेद्यन्यासः**

**'पंचमो वशीकरणो न्यासोऽभेद्यो येन कर्ता। महापापातिपापाभ्यां मुक्तः स्यान्नात्र संशयः।।'**

अर्थात् वशीकरणाभेद्य न्यास पांचवां न्यास है जिससे कर्ता महापापों और अतिपापों से अवश्य मुक्त होता है।

**ॐ ऐं पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा मां पातु, ॐ श्रीं नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं जनार्दनो मां पातु,**
**ॐ हंसौं विशुद्धेः शिखापर्यन्तं त्रिलोचनो रुद्रो मां पातु, ॐ ऐं हंसौं मे करद्वन्द्वं पातु,**
**ॐ हंसौं वृषभः चक्षुषी मे पातु, ॐ ह्रीं गजाननः सर्वांगं मे पातु,**
**ॐ ह्रीं आनन्दमयो हरिः परापरौ देहभागौ मे पातु।**

**7.6 सद्गतिप्रापकन्यासः –**

**'सद्गतिप्रापको न्यासः सर्वकष्टोपशामकः। षष्ठः स्याद्येन च कृतो वैकुण्ठसुखप्रापकः।।'**

अर्थात् सद्गतिप्रापक न्यास छटा न्यास है जिससे कर्ता के समस्त कष्ट शान्त होकर वैकुण्ठ लोक के सुख के समान सुख प्राप्त करेगा।

**ॐ ह्रीं अष्टादशभुजा महालक्ष्मी मध्यमांगं मां पातु, ॐ ऐं अष्टभुजा सरस्वती ऊर्ध्वं मां पातु,**

**ॐ क्लीं त्रिंशल्लोचना महाकाली अधो मां पातु,** **ॐ क्षौं सिंहो हस्तद्वयं मां पातु,**
**ॐ ऐं परमहंसोऽक्षिमण्डलं मां पातु,** **ॐ ह्रीं महिषारूढः प्रेतः पदद्वयं मां पातु,**
**ॐ हंसौं महेशश्चण्डिकायुक्तः सर्वंगं मां पातु।**

## 7.7 रोगनाशन्यासः

**'रोगनाशकन्यासोऽयं सप्तमो येन भवति। सर्वरोगक्षयादायुः दीर्घश्च भवति नित्यं।।'**

अर्थात् रोगनाशक नामक यह न्यास सातवां है जिससे समस्त रोगों का क्षय होने से अवश्य ही दीर्घ आयु की प्राप्ति होगी।

**ॐ ऐं नमः** - ब्रह्मरन्ध्रे, **ॐ ह्रीं नमः** - दक्षिणनेत्रे, **ॐ क्लीं नमः** - वामनेत्रे,
**ॐ चां नमः** - दक्षिणकर्णे, **ॐ मुं नमः** - वामकर्णे, **ॐ डां नमः** - दक्षिणनासापुटे,
**ॐ यैं नमः** - वामनासापुटे, **ॐ विं नमः** - मुखे, **ॐ च्चें नमः** - गुदे।

## 7.8 सर्वदुःखहरन्यासः

**'सर्वदुःखहरो न्यासः विलोमाक्षरश्चाष्टमः। येन यथा नाम तथा फलं भवत्यसंशयः।।'**

अर्थात् सर्वदुःखहर न्यास आठवां है जो मन्त्र के विलोमाक्षरों से किया जाता है जिससे अपने नाम के अनुसार ही फल है यानि समस्त प्रकार के दुःख नष्ट हो जाते है, इसमें कोई संशय नहीं।

**ॐ च्चें नमः** - पायौ, **ॐ विं नमः** - मुखे, **ॐ यैं नमः** - वामनासापुटे, **ॐ डां नमः** - दक्षिणनासापुटे,
**ॐ मुं नमः** - वामकर्णे, **ॐ चां नमः** - दक्षिणकर्णे, **ॐ क्लीं नमः** - वामनेत्रे, **ॐ ह्रीं नमः** - दक्षिणनेत्रे, **ॐ ऐं नमः** - ब्रह्मरन्ध्रे।

7.9 देवताप्राप्तिकृन्न्यासः

**'देवताप्राप्तिकृन्न्यासो नवमो मूलव्यापकः। येन भवति साधको देववत्सदा निर्भयः।।'**

अर्थात् देवप्राप्तिकृत् नाम का यह न्यास नौवां है जो मूल मन्त्र से व्याप्त है जिससे साधक देवता के सामान होकर निर्भय हो जाता है।

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** –सामने मस्तक से चरण पर्यन्त, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**–सामने ही चरण से मस्तक पर्यन्त,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** –दाहिने मस्तक से चरण पर्यन्त, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**–दाहिने ही चरण से मस्तक पर्यन्त,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** –पीछे मस्तक से चरण पर्यन्त, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**–पीछे ही चरण से मस्तक पर्यन्त,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** –बायें मस्तक से चरण पर्यन्त, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**–बायें ही चरण से मस्तक पर्यन्त।

710 त्रैलोक्यवशकृन्न्यासः

**'त्रैलोक्यवशकृन्न्यासो दशमो येन साधकः। वाक्सिद्धो दृक्सिद्धिश्चैव भवेन्नान्यथा कदाचित्।।'**

अर्थात् यह त्रैलोक्यवशकृत् नाम का दसवें न्यास को जो साधक करता है वह वाक् सिद्धि और दृष्टि सिद्धि से युक्त होगा यानि वह जो कहेगा वही होगा और वह जिसे जैसे देखेगा वह वैसे ही हो जायेगा, कभी विपरीत नहीं।

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - हृदयाय नमः, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - शिरसे स्वाहा,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - शिखायै वषट्, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - कवचाय हुम्,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - नेत्रत्रयाय वौषट्, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - अस्त्राय फट्,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - अंगुष्ठाभ्यां नमः, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - तर्जनीभ्यां नमः,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - मध्यमाभ्यां नमः, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** - अनामिकाभ्यां नमः,

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** – कनिष्ठिकाभ्यां नमः, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

### 7.11 सर्वरक्षाकरन्यासः

**'एकादशः सर्वरक्षाकरो न्यासो दशमन्याससमफलदायकः।।'**

अर्थात् ग्यारहवां न्यास है सर्वरक्षाकर न्यास। इसका फल दसवें न्यास के फल के समान ही है।

(**'आद्यं वाग्बीजं ऐं श्यामवर्णं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसेत्।'** अर्थात् काले रंग युक्त वाग्बीज **ऐं** का ध्यान करते हुये निम्न श्लोकों का पाठ करते हुए अपने शरीर के अंगों की कल्पना करते हुये न्यास करें।)

**'ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा। शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डिपरिघायुधा।।1।।**
**सौम्या सौम्यतराशेषसौमेभ्यस्त्वतिसुन्दरी। परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।2।।**
**यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके। तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।3।।**
**यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्। सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।4।।**
**विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च। कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्।।5।।'**

(**'द्वितीयं मायाबीजं ह्रीं बालार्कवर्णं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसेत्।'** अर्थात् बालसूर्य के रंग से युक्त मायाबीज **ह्रीं** का ध्यान करते हुये निम्न श्लोकों का पाठ करते हुए अपने शरीर के अंगों की कल्पना करते हुये न्यास करें।)

**'शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।1।।**
**प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।2।।**

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षऽस्मांस्तथा भुवम्।3।।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।4।।'

(**'तृतीयं कामबीजं क्लीं स्फटिकाभासं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसेत्।'** अर्थात् स्फटिक के समान अतिशुभ्र सफेद रंग से युक्त काम बीज **क्लीं** का ध्यान करते हुये निम्न श्लोकों का पाठ करते हुए अपने शरीर के अंगों की कल्पना करते हुये न्यास करें।)

'सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।1।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।2।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्। त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।3।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।4।।
असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।5।।'

## 8 अथ उपचाराः -

### 8.1-1 अथ ध्यानम् -

'ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।1।।
खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः, शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां, यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।1।।
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पक्त्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण

सर्वलोकम्मऽड्षाण।।2।।

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां, सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।2।।
ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः।।3।।
घण्टाशूलहलानिशंखमुसले चक्रं धनुःसायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा, पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।3।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः श्रीदुर्गां ध्यायामि।'

8.1-2 आवाहनम् -

'ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।1।।
ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳसर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।2।।
ॐ महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंहवाहिनीम्। दानवांस्तर्जयन्तीं च सर्वकामदुघां शिवाम्।।1।।
शंखचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे शुभानने। आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये।।2।।
विश्वेश्वरि महादेवि सर्वसम्पत्प्रदायिनी। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।3।।
मम यज्ञे समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह। यावद्यज्ञः समाप्येत तावत्त्वं सुस्थिरा भव।।4।।'

अथवा

आगच्छेह महादेवि सर्वसम्पत्प्रदायिनि। यावद् व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव।।4।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः श्रीदुर्गामावाहयामि, आवाहनं समर्पयामि। आवाहनार्थे पुष्पाक्षतान् समर्पयामि।'

8.2 आसनम् -

'ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।1।।
ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, आसनं समर्पयामि। आसनार्थेअक्षतान् समर्पयामि।'

8.3 पाद्यम् -

'ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।1।।
ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्यविश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।2।।
गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्। पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरी।।1।।'

अथवा

'गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।'

8.4 अर्घ्यम् -

'ॐ कां सोऽस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।1।।

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वं व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।।2।।

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।।1।।

अथवा

निधीनां सर्वदेवानां (सर्वरत्नानां) त्वमनर्घ्यगुणा ह्यसि। सिंहोपरिस्थिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।'

8.5/1 आचमनम् -

'ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।

ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।2।।

कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं देवि त्वं (देवीदं) प्रतिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.5/2 मधुपर्कः -

'ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमश्छरूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि।1।

दधिमधुघृतसमायुक्तं(आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं) पात्रयुग्मसमन्वितम्। मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मुखे मधुपर्कं समर्पयामि।'

8.5/3 पुनराचमनम् -

'ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे

ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।2।।

कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं देवि त्वं प्रतिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मुखे पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/1 स्नानम् - (मूर्ति/यन्त्र को एक बड़े बर्तन/पारात पर रख कर सब प्रकार के स्नान करायें।)

'ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।1।।
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।2।।
मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः। स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/2 पुनराचमनीयम् -

'ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
मुखे पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/3 सुगन्धीद्रव्यस्नानम् -

'ॐ अꣳशुना तेऽअꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवत्तु मदाय रसोऽअच्युतः।।1।।
स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे। सर्वलोकेषु सर्वेशे ददामि स्नेहमुत्तमम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
सर्वांगे सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।'

8.6/4 दुग्धस्नानम् -

'ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।1।।
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पये।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दुग्धस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/5 दधिस्नानम् -

'ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखात्करत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्।।1।।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देवि स्नानर्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुर्वःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।'

8.6/6 घृतस्नानम् -

'ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।
दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।1।। अथवा
ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।1।।
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/7 मधुस्नानम् -

'ॐ मधुवाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वानस्पतिर्मधुमाँ३ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।1।।

दिव्यै पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम्। मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/8 शर्करास्नानम् -

'ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्ये सन्तꣳसमाहितम्। अपाꣳरसस्य यो रसन्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।1।।

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

अथवा पूर्वोक्त दूध, दही, घी, शहद और चीनी के संमिश्रित **पंचामृत** से स्नान करायें -

'ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधासो देशेऽभवत्सरित्।।1।।
पयो दधि घृतं चैव मधुञ्च शर्करान्वितम्। पंचामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
पंचामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/9 गन्धोदकस्नानम् -

'ॐ गन्धद्वारान्दुराधर्षांन्नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।1।।

अथवा

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।1।।
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्। चन्दनं देवि देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.6/10 उद्वर्तनस्नानम् -

'ॐ अꣳशुनातेऽअꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।1।।
नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्। उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,

उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

### 8.6/11 महाभिषेकस्नानम् -

श्रीसूक्त अथवा पुरुषसूक्त का पाठ करते हुये शंख से मूर्ति/यन्त्र पर जलधारा छोड़ें।

'ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, महाभिषेकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

### 8.6/12 शुद्धोदकस्नानं -

'ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः। श्येताक्ष्योऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।1।।

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं प्रभं समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, महाभिषेकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

(सूखे कपड़े से मूर्ति/यन्त्र को पोंछ कर सुखावे पुनः कलश पर स्थापित करें।)

### 8.6/13 पादुकार्पणम् -

'नवरत्नयुते मयाऽर्पिते कमनीये तपनीयपादुके। सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि तयोर्निधीयताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, चरणयोः पादुके समर्पयामि।'

8.7/1 वस्त्रोपवस्त्रम् -

'ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे।।1।।
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांऽसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।2।।
पट्टकूलयुगं देवि कंचुकेन समन्वितम्। परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे दुर्गतिनाशिनि।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।'

8.7/2 केशपाशसंस्कारः (कंघी) -

'बहुभिरगरुधूपैः सादरं धूपयित्वा भगवति तव केशान् कंकतैर्मार्जयित्वा ।
सुरभिभिररविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा झटिति कनकसूत्रैर्जूटयन्वेष्टयामि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, वेणीबन्धनार्थे केशपाशसंस्कारं समर्पयामि।

8.8/1 यज्ञोपवीतम् -

'ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।1।।

ॐ तस्मादश्वाऽजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः।।2।।

स्वर्णसूत्रं महद्दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।' अथवा

सौभाग्यसूत्रं (मंगलसूत्रम्) -

'सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुतम्। कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि।'

8.8/2 अक्षतान् -

'ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रानविष्ठया मती योजान्विन्दते हरि।।1।।

अक्षतान्निर्मलान्दिव्यान् कुंकुमाक्तान्सुशोभितान्। गृहाणेमान्महादेवि प्रसीद परमेश्वरि।।1।।

अथवा

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान्मुक्ताफलसमन्वितान्। गृहाणेमान्महादेवि देहि मे निर्मलो धियम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।'

8.9 गन्धादिद्रव्याणि - (तदन्तर्गतानि इमानि समर्पणियानि -)

8-9/1 चन्दनानुलेपनम् -

'ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।1।।

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवाऽअजायन्त साध्याऽऋषयश्च ये।।2।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं च देवेशि चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, चन्दनं समर्पयामि।'

8.9/2 दूर्वाकुरान् - (दुर्गा को सफेददूर्वा अर्पण करना निषिद्ध है।)

'ॐ आर्द्राम्पुष्करिणीम्पुष्टिम्पिंगलाम्पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जात वेदो मऽआवह।।1।।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।2।।

दूर्वादले श्यामले त्वं महीरूपे हरिप्रिये। दूर्वाभिराभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दूर्वाकुरान्समर्पयामि।'

89/3 बिल्वपत्राणि -

'ॐ आर्द्रा यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्या हिरणमयीं लक्ष्मीं जात वेदो मऽआवह।।1।।

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहननाय्य च। ।2।।

अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवप्रियः सदा। बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
बिल्वपत्रं समर्पयामि।'

8.9/4 पल्लवान् -

'ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यम्प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयम्पुरुषानहम्।।1।।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्ण्णे वो वसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यथशनवथ पूरुषम्।।1।।

गृहद्वारे चोग्रमपि दुष्टासुरनिगर्हिणि। पूजां करोमि चार्वंगि पल्लवैर्नन्दनोद्भवैः।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पल्लवान्समर्पयामि।'

8.9/5 फलमालाम् -

'ॐ याः फलिनीर्याऽअफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वꣳहसः।।1।।

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।2।।

शरत्काले समुद्भूतां निशुम्भासुरमर्दिनि। फलमालां वरां देवि गृहाण सुरपूजिते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।'

8.9/6 आभूषणम् (समस्त अलंकारों को एक साथ) -

'ॐ युवं तमिन्द्रापर्वतापुरोयुधा यो नः पृतन्यादपतन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धताम्। दूरे च ता यच्छन्तसद्गहनं यदनिक्षत्।1।

**अस्माकछ्छशत्रून् परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः। सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरा वीरैः सुपोषाः पोषैः।।2।।**

**हारकंकणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः। रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।1।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, आभूषणं समर्पयामि।**

अथवा प्रत्येक आभूषण को अलग-अलग निम्न मन्त्रों से समर्पण करें और अलंकार का अभाव हो तो अक्षत अर्पण करें।

8.9/6-1 सौवीरांजनम् (सुरमा) -

**'सौवीरांजनमिदमम्ब चक्षुषो विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत्। तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसंगाद् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषिणीयतामियाय।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, चक्षुषोः सौवीरांजनं समर्पयामि।'**

8.9/6-2 कंकणादि मणिबन्धभूषणानि -

**'माणिक्यमुक्तामणिखण्डयुक्ते सुवर्णकारेण संस्कृते ये ते।**
**किंकिणीभिः स्वरिते सुवर्णे मयाऽर्पिते देवि गृहाण कंकणे।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मणिबन्धयोः कंकणादिकं समर्पयामि।'**

8.9/6-3 कुण्डलादि कर्णभूषणानि -

**'ययोः शुभान्याखचितानि मातर्माणिक्यखण्डानि सुशोभनानि। ताटंकयुग्मे कनकस्य कृत्वा मयाऽर्पिते देवि गृहाण चैते।।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,**
**कर्णयोः कुण्डलादिकं समर्पयामि।'**

8.9/6-4 अंगदम् -

**'हेम्ना कृतं ह्यंगदयुग्मकं च मनोहरं सुन्दरचित्रयुक्तम्। बाह्वोर्गृहाणाऽऽशु मयाऽर्पितं ते मनोज्ञमाभूषणभूषणोत्तमम्।।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,**
**बाह्वोः अंगदे समर्पयामि।'**

8.9/6-5 अंगुलीयकम् (अंगूठी) -

**'बालगोमदमयैश्च रत्नैः कृतां तथा हेममयां मनोहराम्। तस्यां कुरु त्वं मुखवीक्षणं च गृहाण दिव्यांगुलिमुद्रिकां च।।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,**
**करांगुलीषु अंगुलीयकानि समर्पयामि।'**

8.9/6-6 कटिभूषणम् (मेखलां) -

**'कांचीं शुभां हाटकनिर्मितां मया त्रैलोक्यमातः कटिभूषणाय। दत्तां यथेमां त्वमजे च धत्से ह्युद्धर्तुमस्मान्वह मातृगर्भात्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
कटिदेशे कटिभूषणं (कांचीं) समर्पयामि।'

8.9/6-7 नूपुरम् (पायल) -

'सुसुन्दरे हारकनिर्मिते द्वे पादांगदे नूपुरनामधेये। गृहाण मातः पदयोः प्रदत्ते सुकिंकिणीभिच विराजिते ते।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
पादयोः नूपुरे समर्पयामि।'

8.9/6-8 मुकुटम् -

'मातस्तवेमं मुकुटं हरिनमणिप्रवालमुक्तामणिभिर्विराजितम्। गारुत्मतैश्चापि मनोहरं कृतं गृहाण मातः शिरसो विभूषणम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
शिरसि मुकुटं समर्पयामि।'

8.9/6-9 रत्नमालाम्/हार-

'ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियम्वासय मे कुले मातरम्पद्ममालिनीम्।।1।।
ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।1।।
मुक्ताफलयुतां मालां रत्नवैडूर्यसुप्रभाम्। माणिक्यस्वर्णग्रथितां गृह्यतां परमेश्वरि।।1।।
मातस्त्वदर्थञ्च मणिमौक्तिकाभिः कृतं मनोज्ञं कलकण्ठभूषणम्।

मयैव कण्ठे तव देवि चाऽर्पितं ग्रैवेयकं नाम गृहाण भूषणम्।।2।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
रत्नमालां/हारं समर्पयामि।'

8.9/6-10 नानापरिमलद्रव्याणि -

'ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान् पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः।
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।'

8.9/6-11 सौभाग्यद्रव्याणि -

'ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।1।।

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत।।2।।

हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम्। सौभाग्यद्रव्यमेतद्वै गृहाण परमेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
सौभाग्यद्रव्याणिं समर्पयामि।' (अथवा हरिद्रा आदि प्रत्येक को अलग-अलग निम्न विधि से समर्पित कर सकते हैं।)

8.9/6-12 हरिद्राचूर्णम् -

'ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततᳪसंजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।।1।।

हरिद्रारंजिते देवि सुखसौभाग्यदायिनि। तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छ मे।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
हरिद्राचूर्णं समर्पयामि।'

8.9/6-13 कुंकुमम् (गुलालं वा) -

'ॐ उस्रावेतं धूर्षाहौ युज्येथामनश्रूऽअवीरहणौ ब्रह्मचौदनौ। स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम्।।1।।

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम्। कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
कुंकुमं (गुलालं) समर्पयामि।'

8.9/6-14 सिन्दूरम् -

'ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतन्ति यह्वाः। घृतस्य धाराऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।1।

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्। अर्पितं ते मया भक्त्या प्रसीद परमेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।'

8.9/6-15 कज्जलम् -

'ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वारुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च।1।।'

अथवा 'ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽअसि चक्षुर्मे देहि।

चक्षुर्भ्याम् कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम्। कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
कज्जलं समर्पयामि।'

8.9/6-16 सुगन्धिद्रव्यं (इत्र) -

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽअमृतात्।।1।।

जननि चम्पकतैलमिदं पुरा मृगमदोऽयमयं पटवासकः। सुरभिगन्धमिदं च चतुस्समं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम्।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।'

8.10/1 पुष्पमालाम् -

'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पाल्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकं म इषाण1

पद्मशंखजपुष्पादिक्षतपत्रैर्विचित्रताम्। पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं परमेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
पुष्पमालां समर्पयामि।'

8.10/2 पुष्पाणि -

'ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।1।।
ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।।2।।
पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः। पूजां ते क्रियते देवि कुसुमैरनुगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।'

## 9.1 अथ दुर्गाया अंगानां पूजनम्

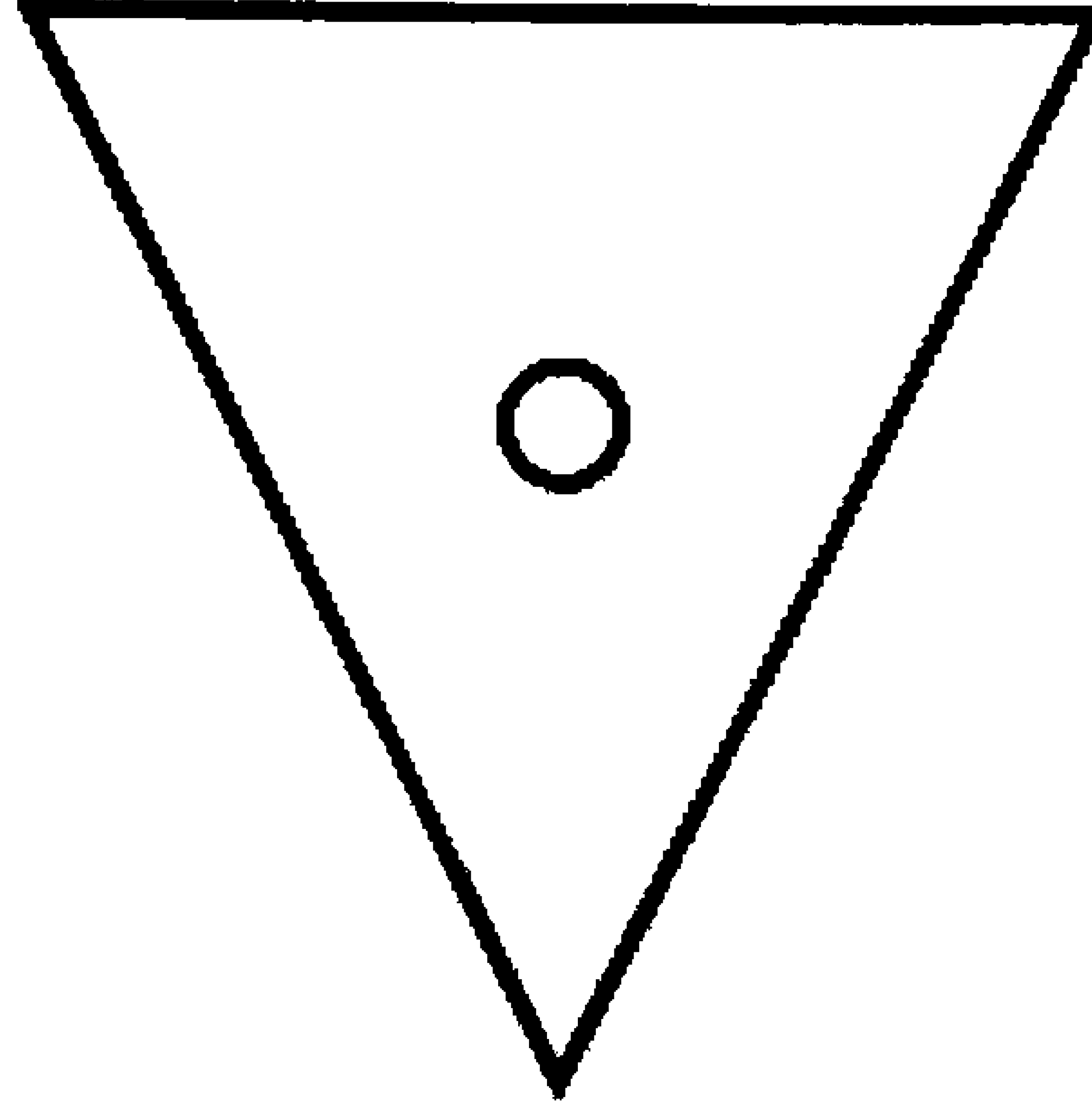
(मूर्ति के अंगों में अथवा यन्त्र में देवी के अंगों की कल्पना करके उनमें अंगपूजा करे।)

ॐ दुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि।
ॐ महाकाल्यै नमः, गुल्फौ पूजयामि।
ॐ मंगलायै नमः, जानुद्वयं पूजयामि।
ॐ कात्यायन्यै नमः, ऊरुद्वयं पूजयामि।
ॐ भद्रकाल्यै नमः, कटिं पूजयामि।
ॐ कमलवासिन्यै नमः, नाभिं पूजयामि।
ॐ शिवायै नमः, उदरं पूजयामि।
ॐ क्षमायै नमः, हृदयं पूजयामि।
ॐ कौमार्यै नमः, स्तनौ पूजयामि।
ॐ उमायै नमः, हस्तौ पूजयामि।
ॐ महागौर्यै नमः, दक्षबाहुं पूजयामि।
ॐ वैष्णव्यै नमः, वामबाहुं पूजयामि।
ॐ रमायै नमः, स्कन्धौ पूजयामि।
ॐ स्कन्दमात्रे नमः, कण्ठं पूजयामि।
ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः, नेत्रे पूजयामि।
ॐ सिंहवाहिन्यै नमः, मुखं पूजयामि।
ॐ माहेश्वर्यै नमः, शिरः पूजयामि।
ॐ कात्यायन्यै नमः, सर्वांगं पूजयामि।

## 9.2 अथ आवरण पूजनम्

9. दाहिने हाथ में पुष्पाक्षत लेकर – '**संविन्मयेपरे देवि परामृतरुचिप्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे।।**' यन्त्र पर छोड़ें।

चित्र संख्या 5



**यन्त्र मध्ये देवी स्थापनम्**

<u>बिन्दु</u> के पूर्वादि चार दिशा में – '**ॐ गुरवे नमः, ॐ परमगुरवे नमः, ॐ परात्परगुरवे नमः, ॐ परमेष्ठि गुरवे नमः।**'

षडंगन्यास करे :– पहले अपने शरीर में – '**ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्, ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।**

अब मूर्ति पर/यन्त्र में त्रिकोण के बाहर– '**ॐ ऐं हृदयाय नमः** – आग्नेये, **ॐ ह्रीं शिरसे नमः** – ईशान्ये, **ॐ क्लीं शिखायै नमः** – नैर्ऋत्याम्, **ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः** – वायव्याम्, **ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः** – पूर्वे,

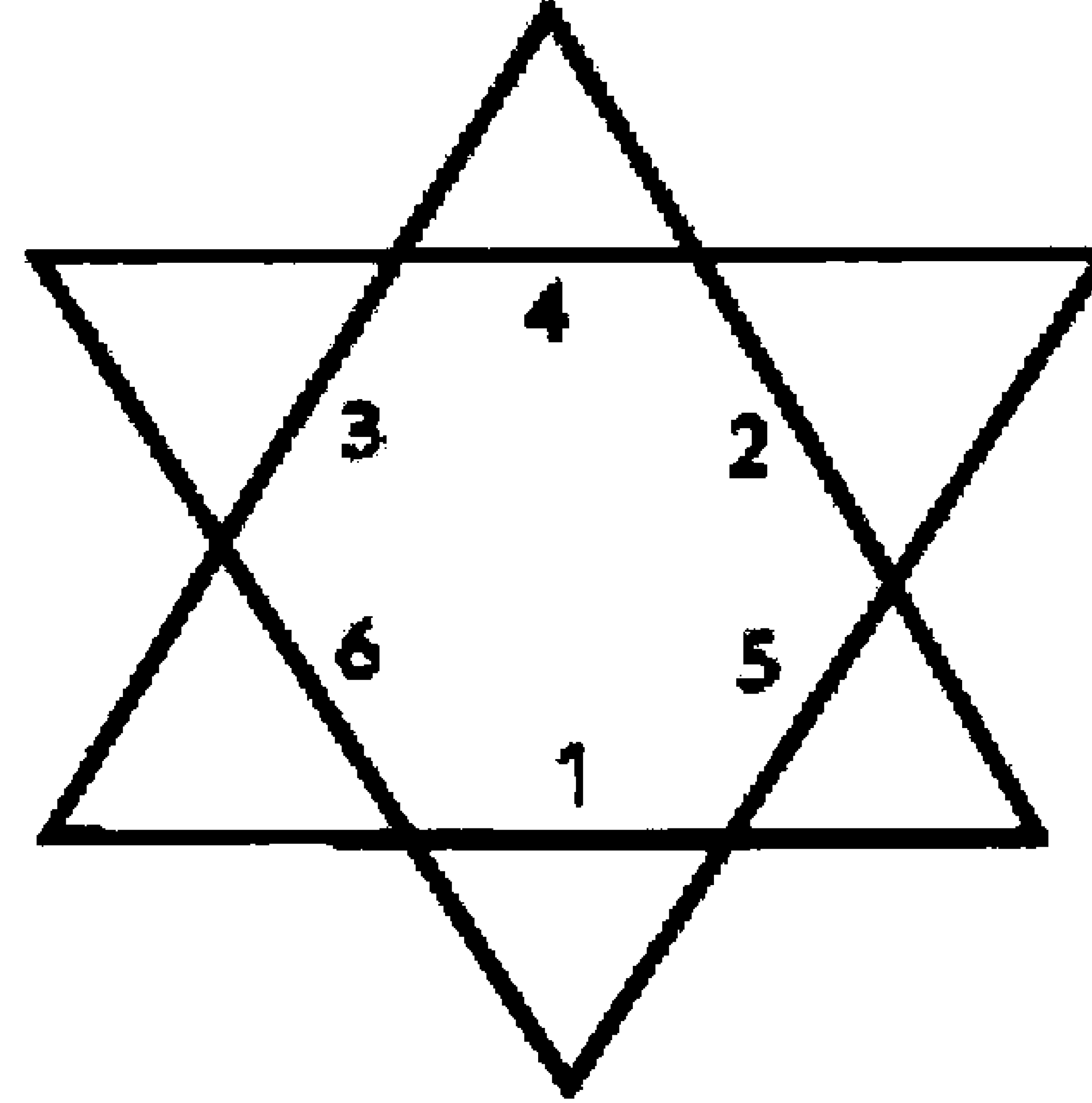
**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः** – सर्वदिक्षु।' (कुछ विद्वानों के मत में यह प्रथमावरण है)।

त्रिकोण में अपने सामने से शुरु कर प्रदक्षिणा के क्रम से पूजन करे, सर्वप्रथम यन्त्रस्थ त्रिकोण का ध्यान करें –

**'रहस्यम्परमाश्चर्यं त्रिकोणानां च संशृणु। वामरेखा भवेद् ब्रह्मा विष्णुर्दक्षिणरेखिका।।**
**अधोरेखा भवेद् रुद्रो मात्रा साक्षात्सरस्वती। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।'**

'**ॐ अं स्वरया सह विधात्रे नमः, ॐ इं श्रिया सह विष्णवे नमः, ॐ उं उमया सह शिवाय नमः।**' त्रिकोण के दाहिने भाग में – '**ॐ क्षुं/सिं सिंहाय नमः।** त्रिकोण के बाये भाग में – '**ॐ हुं/मं महिषाय नमः।** (कुछ विद्वानों के मत में यह द्वितीय आवरण है)।

**9.2-1 अथ प्रथमावरणपूजा षट्कोणे** – (षट्कोण में स्थित महालक्ष्मी के पृष्ठभाग से आरम्भ कर क्रमशः पूजन करे –)




चित्र संख्या 6

**प्रथमावरणं**

**ॐ सरस्वतीब्रह्मभ्यां नमः, सरस्वतीब्रह्माणावावाहयामि स्थापयामि** - **1** पश्चिमकोणे,

**ॐ गौरीरुद्राभ्यां नमः, गौरीरुद्रावावाहयामि स्थापयामि** - **2** नैर्ऋत्यकोणे,

**ॐ लक्ष्मीहृषीकेशाभ्यां नमः, लक्ष्मीहृषीकेशावावाहयामि स्थापयामि** - **3** वायुकोणे,

**ॐ अष्टादशभुजायै नमः, अष्टादशभुजामावाहयामि स्थापयामि** - **4** पूर्वकोणे,

**ॐ दशाननायै नमः, दशाननामावाहयामि स्थापयामि** - **5** अग्निकोणे,

**ॐ अष्टभुजायै नमः, अष्टभुजामावाहयामि स्थापयामि** - **6** ईशानकोणे।

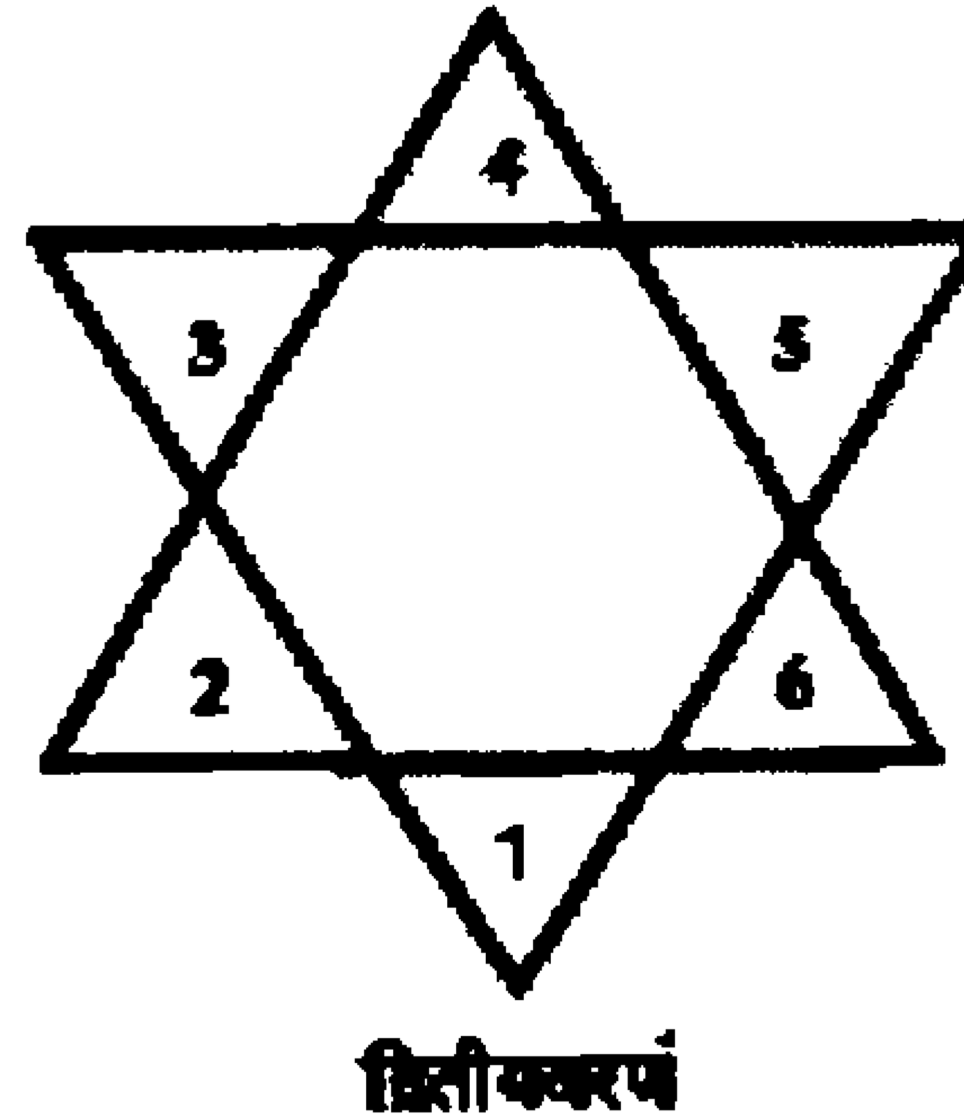
**ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावारणार्चनम्।।1।।**

**अनेन प्रथमावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीम्हासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।1**

(कुछ विद्वानों के मत में यह आवरण नहीं है)।

**9.2-2 अथ द्वितीयावरणपूजा** - (पुनः षट्कोण में पूर्वादि क्रम से पूजन करे-)

चित्र संख्या 7



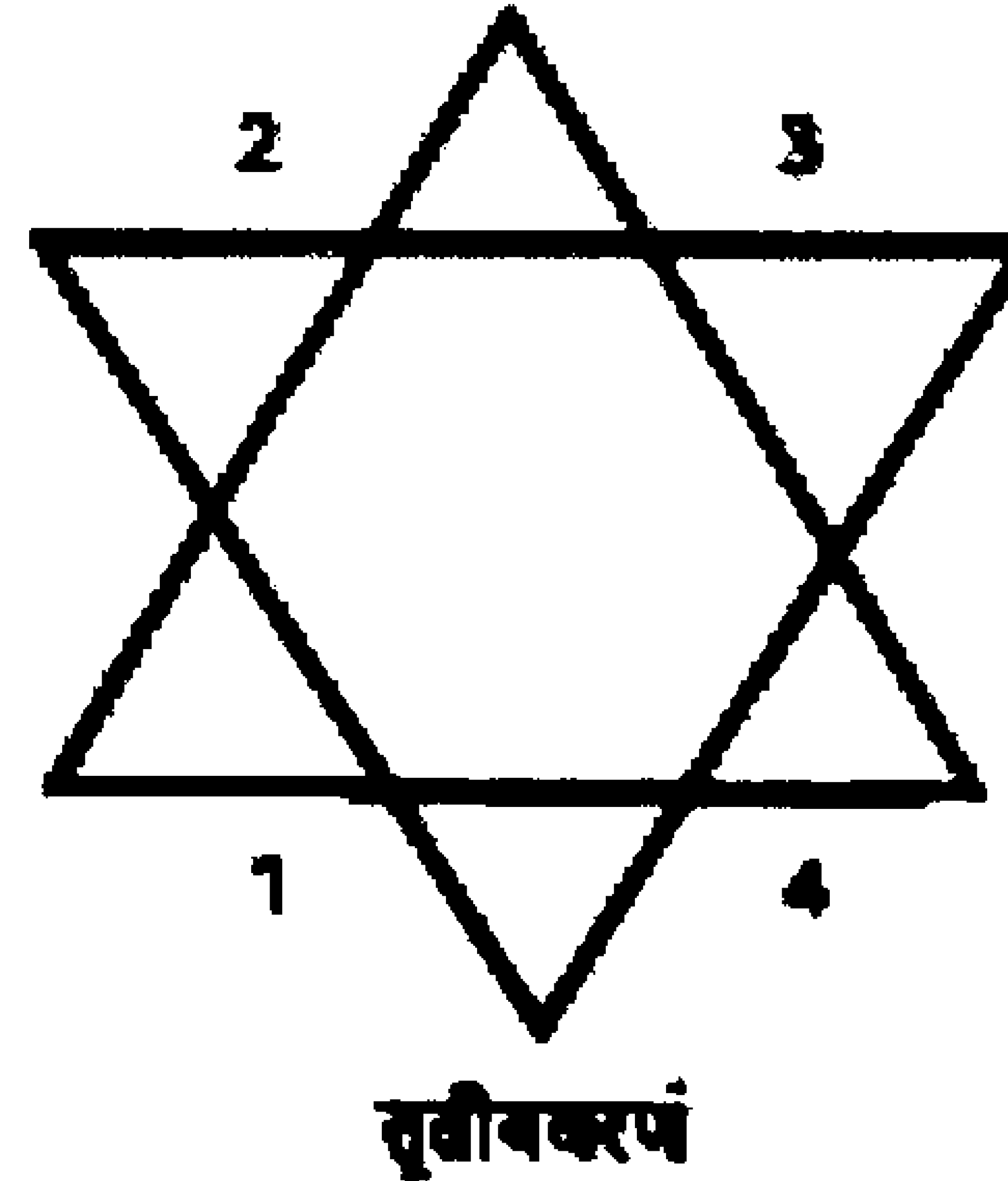
**ॐ नं नन्दजायै नमः, नन्दजामावाहयामि स्थापयामि** - 1 पूर्वकोणे,
**ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः, रक्तदन्तिकामावाहयामि स्थापयामि** - 2 अग्निकोणे,
**ॐ शां शाकम्भर्यै नमः, शाकम्भरीमावाहयामि स्थापयामि** - 3 नैर्ऋत्यकोणे,
**ॐ दुं दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि** - 4 पश्चिमकोणे,
**ॐ भीं भीमायै नमः, भीमामावाहयामि स्थापयामि** - 5 वायुकोणे,
**ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः, भ्रामरीमावाहयामि स्थापयामि** - 6 ईशानकोणे।

**ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।2।।**

**अनेन द्वितीयावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।2।** (कुछ विद्वानों के मत में यह तीसरा आवरण है)।

**9.2-3 अथ तृतीयावरण पूजा** - (अब षट्कोण के बाहर क्रमशः आग्नेयादि चार कोणों में -)

चित्र संख्या 8



तृतीयावरणं

**ॐ जं जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि** - 1 आग्नेयकोणे,
**ॐ विं विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि** - 2 नैर्ऋत्यकोणे,
**ॐ जं जयन्त्यै नमः, जयन्तीमावाहयामि स्थापयामि** - 3 वायुकोणे,
**ॐ अं अपराजितायै नमः, अपराजितामावाहयामि स्थापयामि** - 4 ईशानकोणे।

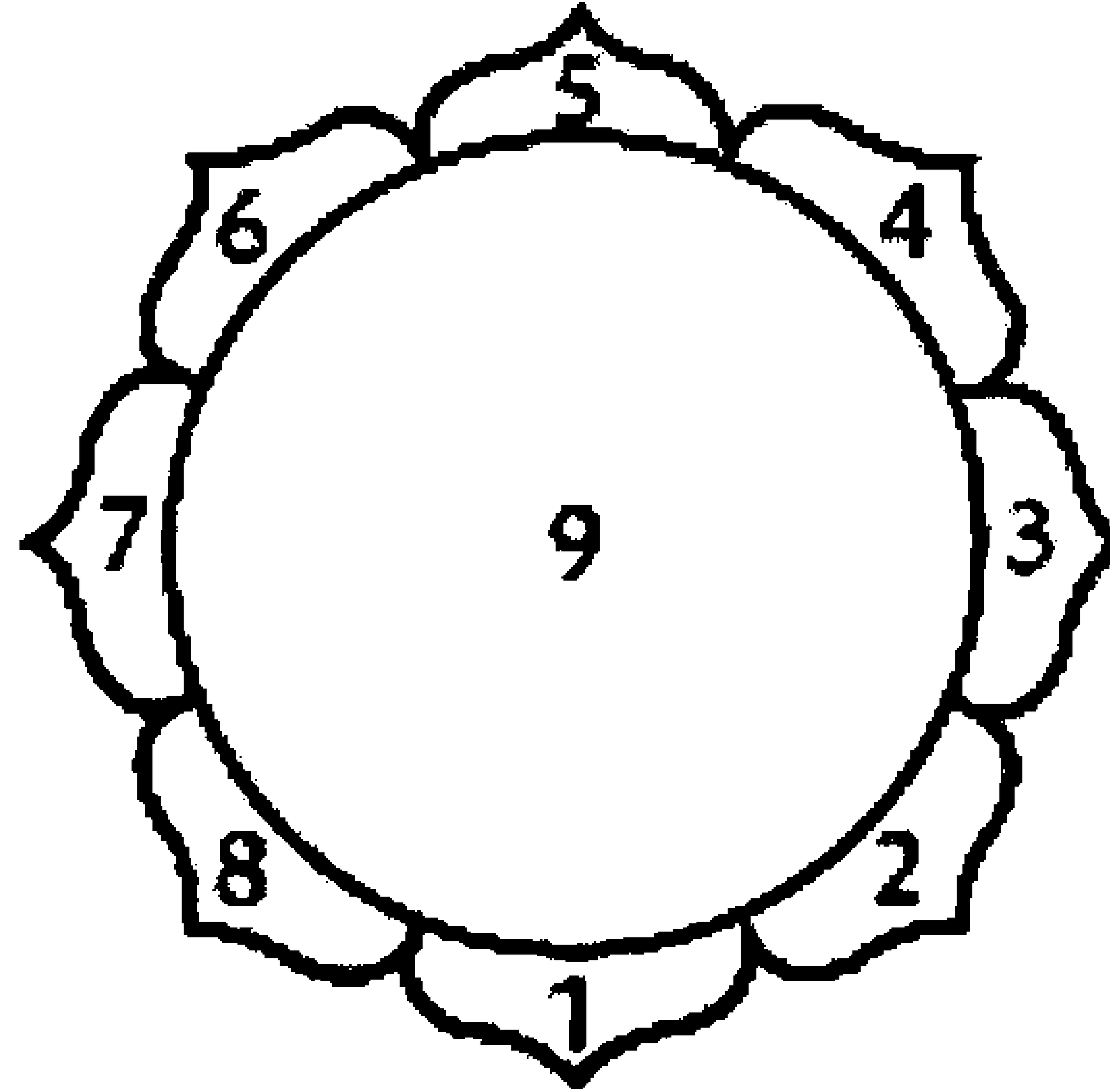
**ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावारणार्चनम्।।3।।**

**अनेन तृतीयावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।3।**

(कुछ विद्वानों के मत में यह आवरण नहीं है)।

**9.2-4 अथ चतुर्थावरण पूजा** - (अष्टदलकमल में पूर्वादि क्रम से -)

चित्र संख्या 9




**चतुर्थावरणम्**

**ॐ ब्रां (आं) ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि** – **1** पूर्वकोणे,
**ॐ मां (ईं) माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि** – **2** अग्निकोणे,
**ॐ कौं (ऊं) कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि** – **3** दक्षिणकोणे,
**ॐ वैं (ॠं) वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि** – **4** नैर्ऋत्यकोणे,
**ॐ वां (लृं) वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि** – **5** पश्चिमकोणे,
**ॐ नां (ऐं) नारसिंह्यै नमः, नारसिंहीमावाहयामि स्थापयामि** – **6** वायुकोणे,
**ॐ ऐं (औं) ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि** – **7** उत्तरकोणे,
**ॐ चां (अं) चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि** – **8** ईशानकोणे,
**ॐ शिं (अः) शिवदूत्यै नमः, शिवदूतीमावाहयामि स्थापयामि** – **9** मध्ये।

(अथवा – ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि – 9 मध्ये)

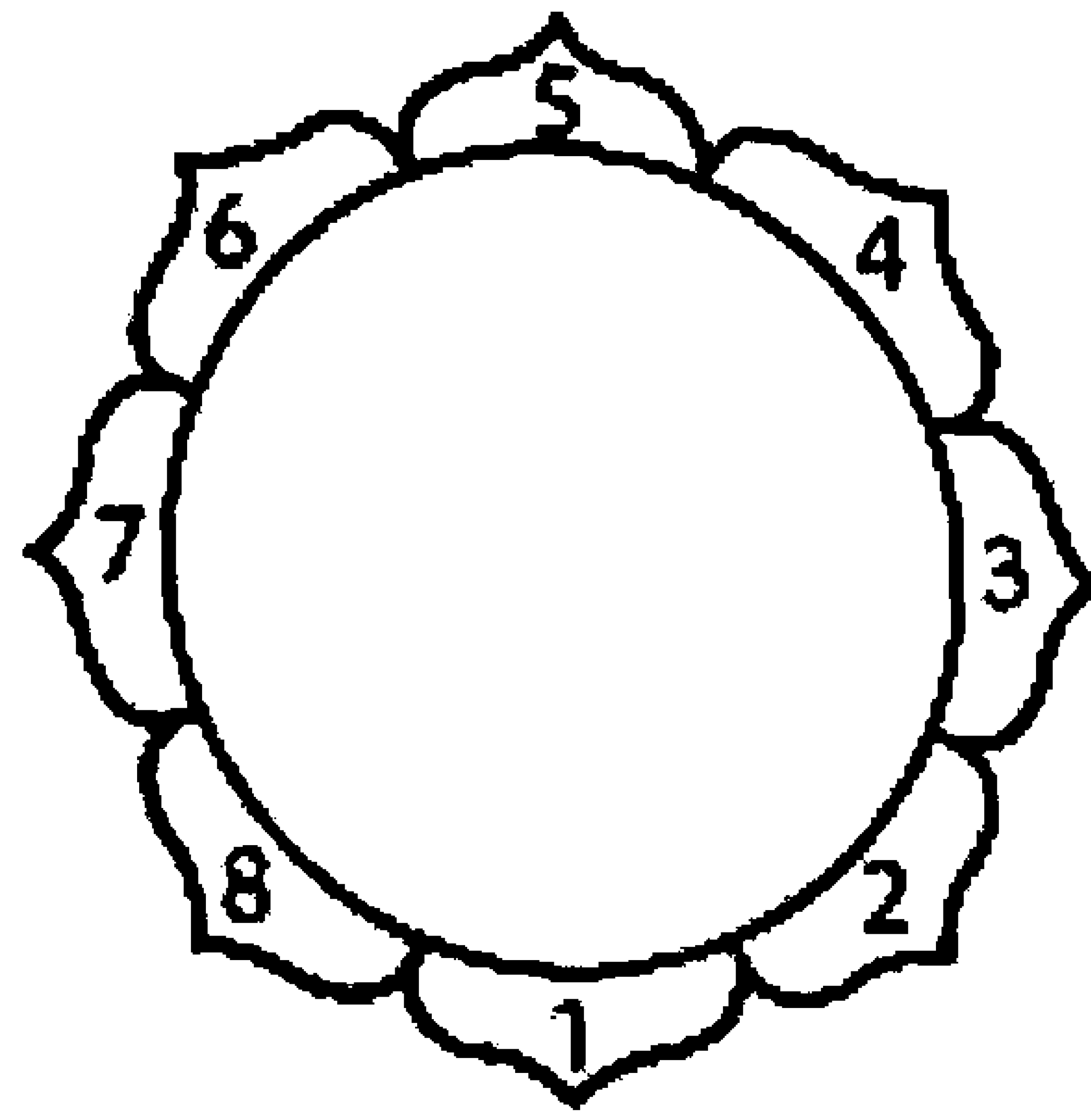
**ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।4।।**

**अनेन चतुर्थावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।4।**

(सभी विद्वानों के मत में यह चतुर्थ आवरण है)।

**9.2-5 अथ पंचमावरण पूजा** – (पुनः अष्टदलकमल में पूर्वादि क्रम से –)

चित्र संख्या 10



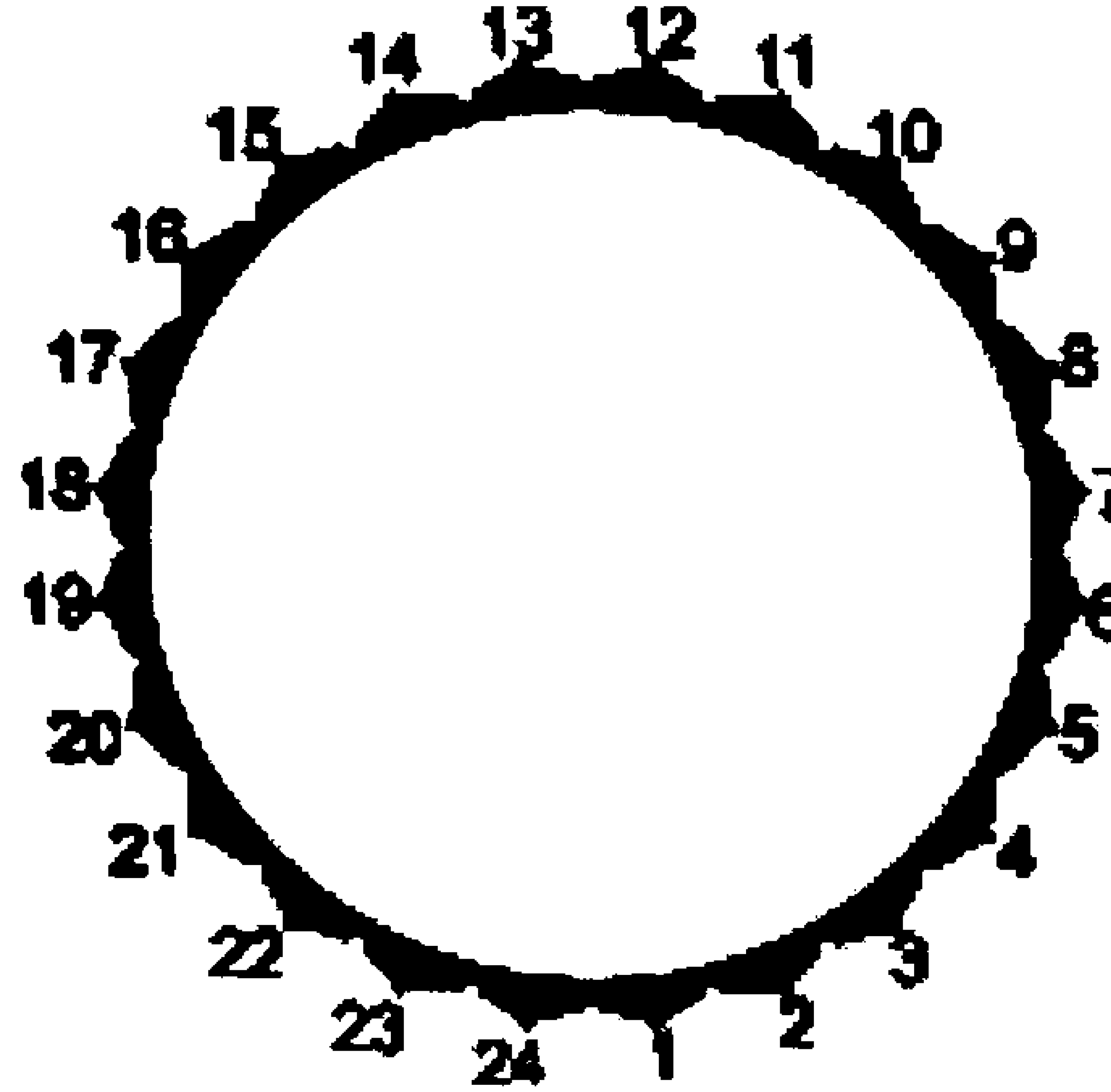

**पंचमावरणम्**

ॐ अं (अं) असितांगभैरवाय नमः, असितांगभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 1 पूर्वकोणे,
ॐ रुं (इं) रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 2 अग्निकोणे,
ॐ चं (उं) चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 3 दक्षिणकोणे,
ॐ क्रों (ऋं )क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 4 नैर्ऋत्यकोणे,
ॐ उं (लृं) उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 5 पश्चिमकोणे,
ॐ कं (एं) कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 6 वायुकोणे,
ॐ भीं (ओं) भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 7 उत्तरकोणे,
ॐ सं (अं) संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवमावाहयामि स्थापयामि - 8 ईशानकोणे।

ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।5।।
अनेन पंचमावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।5।
(कुछ विद्वानों के मत में यह आवरण नहीं है)।

**9.2-6 अथ षष्ठावरण पूजा** - (चतुर्विंशतिदल कमल में पूर्वादि विपरीत क्रम यानि चित्र में दर्शाये क्रम से -)

चित्र संख्या 11




**01 ॐ विं विष्णुमायायै नमः, विष्णुमायामावाहयामि स्थापयामि,** **02 ॐ चें चेतनायै नमः, चेतनामावाहयामि स्थापयामि,**
**03 ॐ बुं बुद्ध्यै नमः, बुद्धिमावाहयामि स्थापयामि,** **04 ॐ निं निद्रायै नमः, निद्रामावाहयामि स्थापयामि,**
**05 ॐ क्षुं क्षुधायै नमः, क्षुधामावाहयामि स्थापयामि,** **06 ॐ छां छायायै नमः, छायामावाहयामि स्थापयामि,**

07 ॐ शं शक्त्यै नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि,
08 ॐ तृं तृष्णायै नमः, तृष्णामावाहयामि स्थापयामि,
09 ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः, क्षान्तिमावाहयामि स्थापयामि,
10 ॐ जां जात्यै नमः, जातिमावाहयामि स्थापयामि,
11 ॐ लं लज्जायै नमः, लज्जामावाहयामि स्थापयामि,
12 ॐ शां शान्त्यै नमः, शान्तिमावाहयामि स्थापयामि,
13 ॐ श्रं श्रद्धायै नमः, श्रद्धमावाहयामि स्थापयामि,
14 ॐ कां कान्त्यै नमः, कान्तिमावाहयामि स्थापयामि,
15 ॐ लं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि,
16 ॐ धृं धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि,
17 ॐ वृं वृत्त्यै नमः, वृत्तिमावाहयामि स्थापयामि,
18 ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः, स्मृतिमावाहयामि स्थापयामि,
19 ॐ दं दयायै नमः, दयामावाहयामि स्थापयामि,
20 ॐ तुं तुष्ट्यै नमः, तृष्टिमावाहयामि स्थापयामि,
21 ॐ पुं पुष्ट्यै नमः, पृष्टिमावाहयामि स्थापयामि,
22 ॐ मां मात्रे नमः, मातरमावाहयामि स्थापयामि,
23 ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः, भ्रान्तिमावाहयामि स्थापयामि,
24 ॐ चिं चित्त्यै नमः, चित्तिमावाहयामि स्थापयामि।

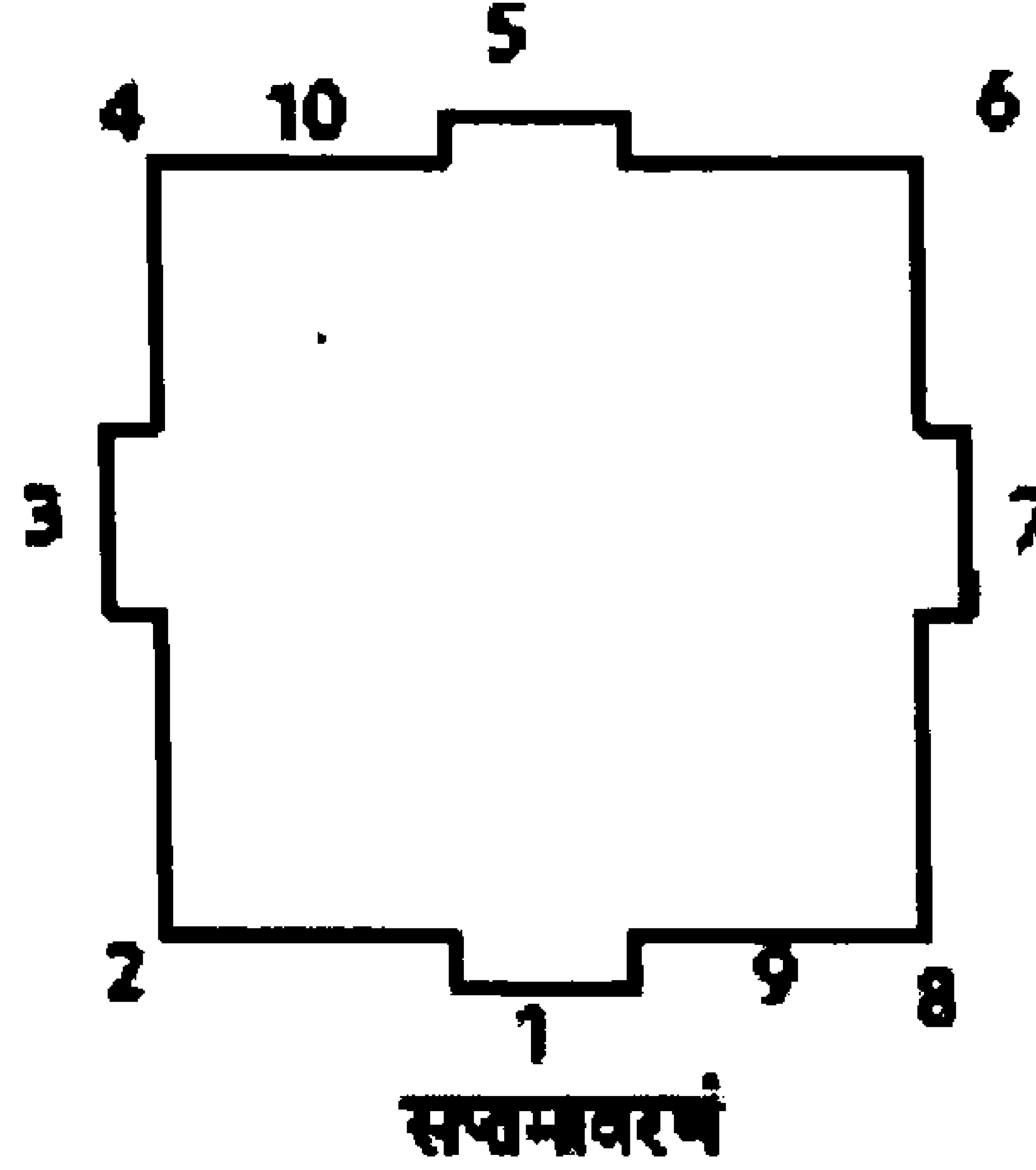
ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावारणार्चनम्।।6।।

अनेन षष्ठावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।।6।।

(कुछ विद्वानों के मत में यह पंचम आवरण है)।

**9.2-7 अथ सप्तमावरण पूजा** - (भूगृह/भूपुर के <u>**प्रथम परिधि**</u> में चित्र में दर्शाये क्रम से -)

चित्र संख्या 12




सप्तमावरणं

**01 ॐ लं इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि,** **02 ॐ रं अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि,**

**03 ॐ मं यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि,** **04 ॐ क्षां निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि,**

**05 ॐ वं वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि,** **06 ॐ यं वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि,**

**07 ॐ सं सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि,** **08 ॐ हं रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि,**

**09 ॐ ब्रं** (अं) **ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि,**

**10 ॐ ह्रीं शेषाय** (अनन्ताय) **नमः, शेषमा** (अनन्तमा) **वाहयामि स्थापयामि।**

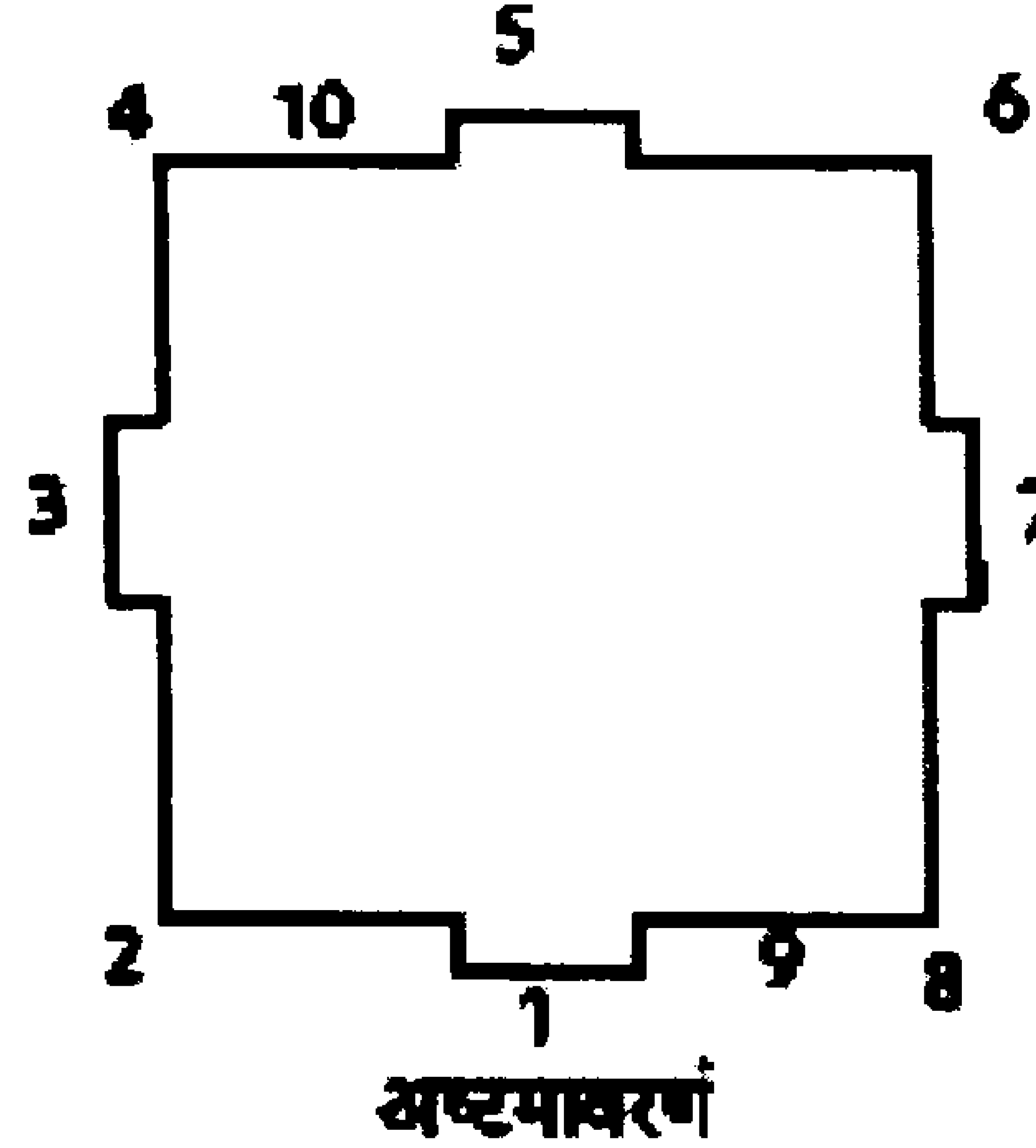
ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावारणार्चनम्।।7।।

अनेन सप्तमावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।7।

(सभी विद्वानों के मत में यह सप्तम आवरण है)।

**9.2-8 अथ अष्टमावरण पूजा** – (भूगृह/भूपुर के द्वितीय परिधि में चित्र में दर्शाये क्रम से –)

चित्र संख्या 13




01 ॐ वं वज्राय नमः , वज्रमावाहयामि स्थापयामि, 02 ॐ शं शक्त्यै नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि,

03 ॐ दं दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि, 04 ॐ खं खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि,

05 ॐ पां पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि, 06 ॐ अं अंकुशाय नमः, अंकुशमावाहयामि स्थापयामि,

**07 ॐ गं गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि, 08 ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि,**
**09 ॐ पं पद्माय नमः, पद्ममावाहयामि स्थापयामि, 10 ॐ चं चक्राय नमः, चक्रमावाहयामि स्थापयामि।**
**ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावारणार्चनम्।।8।।**
**अनेन अष्टमावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।8।**

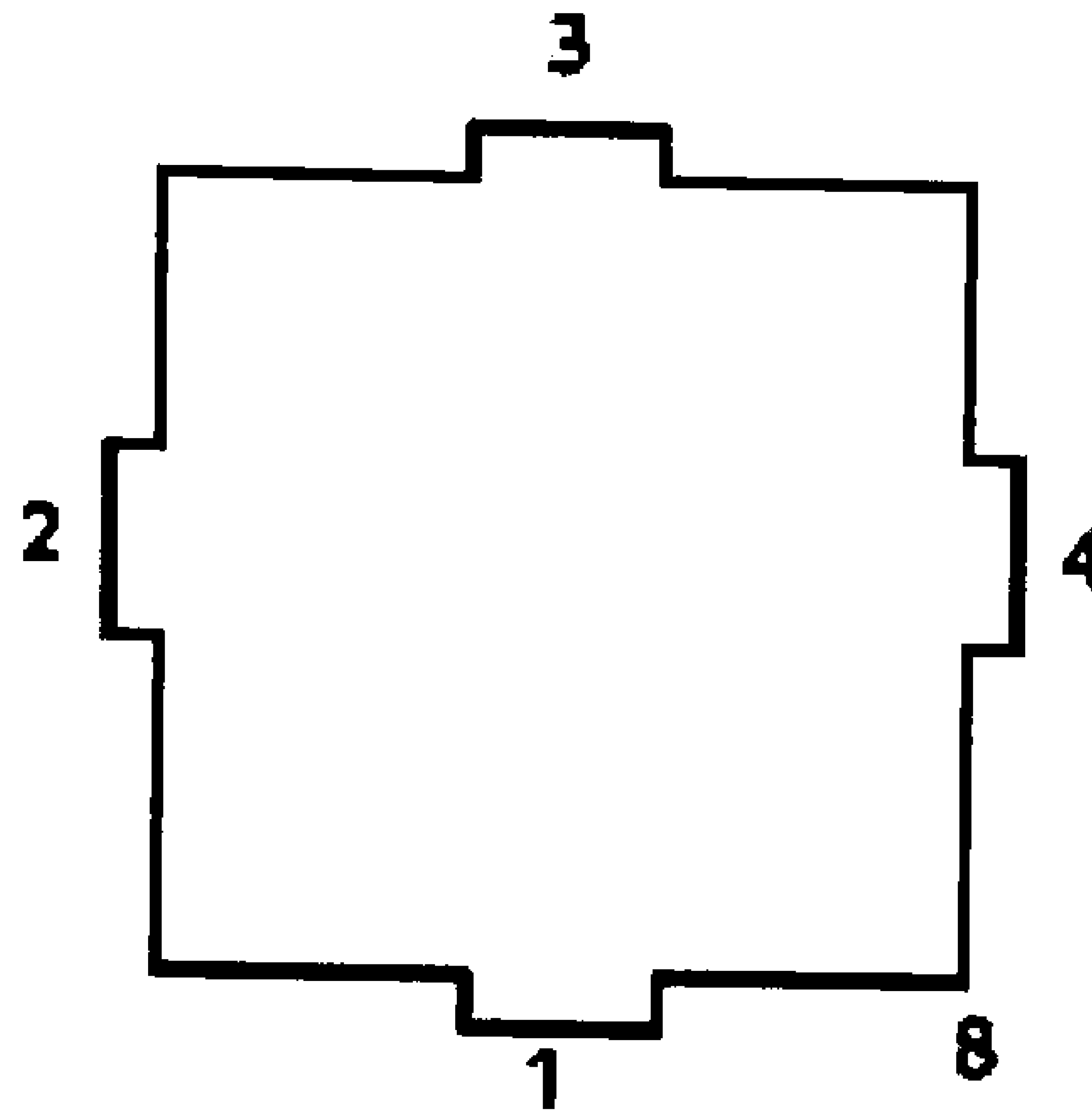
देवी के अन्य अस्त्रों को भी इसी आवरण में स्थापित करें -

**'ॐ अं अक्षमालायै नमः, अक्षमालामावाहयामि स्थापयामि 11।**
**ॐ सुं सुराभाजनाय नमः, सुराभाजनमावाहयामि स्थापयामि** अथवा **ॐ कुं कुण्डिकायै नमः, कुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि12।**
**ॐ शं शंखाय नमः, शंखमावाहयामि स्थापयामि 13। ॐ पं परशवे नमः, परशुमावाहयामि स्थापयामि 14।**
**ॐ धं धनुषे नमः, धनुरावाहयामि स्थापयामि 15। ॐ चर्माय नमः, चर्ममावाहयामि स्थापयामि 16।**
**ॐ घं घण्टायै नमः घण्टामावाहयामि स्थापयामि 17। ॐ सां सायकाय नमः, सायकमावाहयामि स्थापयामि 18।**

(सभी विद्वानों के मत में यह अष्टम आवरण है)। इन आयुधों का ध्यान कर इनकी मुद्राओं को भी दर्शायें।

**9.2-9 अथ नवमावरण पूजा** - (भूगृह/भूपुर की <u>तृतीय परिधि</u> में चित्र में दर्शाये क्रम से -)

चित्र संख्या 14




नवमावरणं

01 ॐ गं गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि, 02 ॐ क्षें क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि,
03 ॐ वं वटुकाय नमः, वटुकमावाहयामि स्थापयामि, 04 ॐ यों योगिन्यै नमः, योगिनीमावाहयामि स्थापयामि।
05 ॐ दुं दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि – मध्ये। 06 ॐ विं विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।
07 ॐ शिं शिवाय नमः, शिवमावाहयामि स्थापयामि। 08 ॐ सूं सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।
09 ॐ गं गणेशाय नमः, गणेशमावाहयामि स्थापयामि – निर्ऋतौ।

ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।9।।

अनेन नवमावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।9।'

(कुछ विद्वानों के मत में यह षष्ठ आवरण है अतः उनके अनुसार नवम आवरण यह है –

**ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः, कादम्बरीदेवीमावाहयामि स्थापपयामि 1। ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः, उल्कादेवीकरालीदेवीं चावाहयामि स्थापयामि 2। ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः, रक्ताक्षीदेवीमावाहयामि स्थापयामि 3। ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः, श्वेताक्षीदेवीमावाहयामि स्थापयामि 4। ॐ अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः, हरिताक्षीदेवीमावाहयामि स्थापयामि 5। ॐ गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः, यक्षिणीदेवीमावाहयामि स्थापयामि 6। ॐ शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः, कालीदेवीमावाहयामि स्थापयामि 7। ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः, सुरज्येष्ठादेवीमावाहयामि स्थापयामि 8। ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः, सर्पराज्ञीदेवीमावाहयामि स्थापयामि 9। ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावारणार्चनम्।।9।। अनेन नवमावरणार्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम्।।9।।')**

'**ॐ यन्त्रस्थावाहित आवरणदेवताभ्यो नमः**' इस मन्त्र से पंचोपचार पूजन करे। तत्पश्चात् देवी को यन्त्र के मध्य में स्थित त्रिकोण में स्थापित कर उसके दाहिने भाग में – '**ॐ कालाय नमः, ॐ रुद्राय नमः**' और देवी के बाये भाग में – '**ॐ मृत्यवे नमः, ॐ विनायकाय नमः**' मन्त्रों से आवाहनादि पूर्वक पुष्पार्चन करें। इसके बाद देवी की सहस्रनामावली से कुंकुम अथवा पुष्प अथवा कामना के अनुसार विहित द्रव्य से अर्चना करें (चतुर्थ्यन्त नामावली केलिये इसी ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 318 देखें)।

## 9.3 अथ नवदुर्गापूजनम्

1. ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः शैलपुत्र्यै नमः, शैलपुत्रीमावाहयामि स्थापयामि।

2. ॐ त्रिपुरां त्रिगुणाधारां ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्। त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।2।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मचारिण्यै नमः, ब्रह्मचारिणीमावाहयामि स्थापयामि।

3. ॐ कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शिवाम्। कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।3।।

ॐ भूर्भुवःस्वः चन्द्रघण्टायै नमः चन्द्रघण्टामावाहयामि स्थापयामि।

4. ॐ अणिमादिगुणोपेतां मकाराकारचक्षुषाम्। अनन्तशक्तिसंपन्नां कामाक्षीं पूजयाम्यहम्।।4।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कूष्माण्डायै नमः, कूष्माण्डामावाहयामि स्थापयामि।

5. ॐ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजिनीम्। अनन्तगुणसंपन्नां चण्डिकां पूजयाम्यहम्।।5।।

ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दमात्रे नमः, स्कन्दमातरमावाहयामि स्थापयामि।

6. ॐ सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवैर्नमस्कृताम्। सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।।6।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कात्यायन्यै नमः, कात्यायनीमावाहयामि स्थापयामि।

7. ॐ चण्डवीरां चण्डमायां रक्तबीजप्रभंजिनीम्। समस्तलोकजननीं गायत्रीं पूजयाम्यहम्।।7।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्र्यै नमः, कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामि।

8. ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णांगीं सुखसौभाग्यदायिनीम्। कल्याणकारिणीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।।8।।

ॐ भूर्भुवःस्वः महागौर्यै नमः, महागौरीमावाहयामि स्थापयामि।

9. ॐ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये सर्वकष्टविनाशिनीम्। सर्वकामप्रदां देवीं सिद्धिदां पूजयाम्यहम्।।9।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धिदात्र्यै नमः, सिद्धिदात्रीमावाहयामि स्थापयामि।

अथ नवदुर्गा ध्यानम् -

'ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।1।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।1।।

प्रधानसाधारविकल्पसत्तास्वभावभावाद् भुवनत्रयस्य।

सा विद्यया व्यक्तमपीह माया ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यम्।।2।।'

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै भगवत्यै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीरूपायै जगदम्बायै नवदुर्गादेव्यै नमः, ध्यानं समर्पयामि।'

## 10 धूपादि अवशिष्ट उपचाराः

8.11 धूपम् -

'ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तम्पंचदशर्चं ञ्च श्रीकामः सततं जपेत्।।1।।

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽअस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितमᳫसस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।1।।
दशांगगुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम्। समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम्।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
धूपमाघ्रापयामि समर्पयामि।'

**8.12 दीपम्** - (घण्टी बजाते हुये)

'ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।1।।
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।2।।
घृतवर्तिसामयुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्। दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
दीपं दर्शयामि समर्पयामि।'

**8.13/1 नैवेद्यम्** - (घण्टी बजाते हुये)

'ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।1।।
ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳫशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्पयन्।।2।।
अन्नं बहुविधं (चतुर्विधं)स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्। नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।1।।

**ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।**' नैवेद्य को जल से अभ्युक्षण करके गन्ध व पुष्प (तुलसी/बेलपत्ता) से आच्छादित करें। धेनुमुद्रा से नैवेद्य के अमृत होने की भावना कर योनिमुद्रा दर्शाये। ततपश्चात् घण्टी बजाकर ग्रास मुद्रा दर्शाये व प्राणादि आहुति मुद्राओं को दर्शाते हुये निम्न मन्त्रों से अर्पण करें –

**'ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय ज्ञवहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा।**

**मध्ये मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोषनार्थे पुनर्नैवेद्यं निवेदयामि –**

**ॐ आर्द्रां यः करिणीम्यष्टिम्पिंगलाम्पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।1।।**

**हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि, पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।'**

## 8.13/2 करोद्वर्तनम् –

**'ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युत।।1।।**

**करोद्वर्तनकं देवि सुगन्धैः परिवासितैः। गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।1।।**

**ॐ भूभुर्वःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,**

**करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।'**

## 8.13/3 ऋतुफलम् –

**'ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुषपिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वꣳहसः।।1।।**

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै। भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वरि।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
फलानि समर्पयामि।'

8.13/4 ताम्बूलम् -

'ॐ ताम्मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यम्प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयम्पुरुषानहम्।।1।।
ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नम्पुरुाम्पशुम्।।2।। अथवा
ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतोऽअंकसम्परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा।।1।।
पूगीफलादिसहितं कर्पूरेण च संयुतम्। ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वरि।।1।। अथवा
एलालवंगकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासितम्। वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि।। अथवा
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
ताम्बूलं समर्पयामि।'

8.13/5 दक्षिणा -

'ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।1।।

दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता। अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वरि।।1।। अथवा

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि। स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।1।।

अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य त्रिभुवनकमनीये पूजयित्वा च वस्त्रैः।

मिलितविविधमुक्तैर्दिव्यलावण्ययुक्तां जननि कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि।।2।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दक्षिणां समर्पयामि।'

## अथ राजोपचाराः

क. छत्रम् - 'ॐ ध्रुवाऽअसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽअस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।

घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।।1।।

छत्रं देवि जगद्धात्रि घर्मवातप्रनाशनम्। गृहाण हे महामाये सौभाग्यं सर्वदा कुरु।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, छत्रं समर्पयामि।'

ख. चामरम् - 'ॐ अहाव्यग्ने हविरस्येते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः। वाजसनिꣳरयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्।1।

चामरं हे महादेवि चमरीपुच्छनिर्मितम्। गृहीत्वा पापराशीनां खण्डनं सर्वदा कुरु।।1।।

ॐ भूभुर्वःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, चामरं समर्पयामि।'

ग. दर्पणम् - 'ॐ रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः। अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः।।1।।

दर्पणं विमलं रम्यं शुद्धबिम्बप्रदायकम्। आत्मबिम्बप्रदर्शार्थमर्पयामि महेश्वरि।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दर्पणं समर्पयामि।'

घ. तालवृन्तम् - 'ॐ इडामग्ने पुरुदꣳसꣳसनिं गोः शश्वत्तमꣳहवमानाय साध।

स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।।1।।

रौप्येण दण्डेन युतेन शब्दैर्युक्तेन वै रौप्यसुकिंकिणीनाम्।

सुतालवृन्तेन तवांगकानि मातः सुमन्दं परिवीजयामि।।1।। अथवा

बहिर्बर्हकृताकारं मध्यदण्डसमन्वितम्। गृह्यतां व्यजनं दुर्गे देहस्वेदापनुत्तये।।1।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, तालवृन्तं समर्पयामि।'

8.13/6 आरार्तिक्यम् -

'ॐ ये देवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्येकादशस्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।1।

इदꣳहविः प्रजननं मेऽअस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।

अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽअस्मासु धत्त।।2।।

आ रात्रि पार्थिवꣳरजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठसऽआ त्वेषां वर्तते तमः।।3।।

अग्निर्देवता वातो देवाता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या
देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।4।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं। सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।1।।

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री। ॐ जय अम्बे गौरी।।1।।

मांग सिन्दुर विराजत टीको मृगमदको। उज्ज्वलसे दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको। ॐ जय अम्बे गौरी।।2।।

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्तपुष्प गलमाला, कण्ठन पर साजै। ॐ जय अम्बे गौरी।।3।।

केहरि वाहन राजत खड्ग खपरधारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी। ॐ जय अम्बे गौरी।।4।।

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती। ॐ जय अम्बे गौरी।।5।।

शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती। धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती। ॐ जय अम्बे गौरी।।6।।

चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे। ॐ जय अम्बे गौरी।।7।।

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमलारानी। आगम निगम बखानी, तुम शिवपटरानी। ॐ जय अम्बे गौरी।।8।।

चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरों। बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू। ॐ जय अम्बे गौरी।।9।।

तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख संपत्ति करता। ॐ जय अम्बे गौरी।।10।।

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी। मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी। ॐ जय अम्बे गौरी।।11।।

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती। श्रीमालकेतु में राजत, कोटिरतन ज्योती। ॐ जय अम्बे गौरी।।12।।

श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख संपत्ति पावै। ॐ जय अम्बे गौरी।।13।।

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री। ॐ जय अम्बे गौरी।।14।।

8.14 नमस्कारः -

'ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।1।।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइद्ध्मःशरद्धविः।।2।।

दुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम्। सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा शिवाम्।।1।।

सर्वदेवमयीं देवीमीश्वरीं शंकरप्रियाम्। विश्वेश्वरीं विश्ववन्द्यां चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।2।।

विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां विन्ध्यस्थाननिवासिनीम्। कालीं लक्ष्मीं सरस्वतीं दुर्गां च प्रणमाम्यहम्।।3।।

महादुर्गप्रशमनीं महाभयविनाशिनीम्। सर्वसंपत्प्रदां देवीं तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्।।4।।

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे। नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते शंकरप्रिये।।5।।

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे। साष्टंगोऽयं प्रणामस्ते प्रसन्नेन मया कृतः।।6।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, नमस्कारं समर्पयामि।'

8.15/1 प्रदक्षिणा -

'ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।।

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम्।।2।।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः। तेषा७ंसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।3।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।1।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति। तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।2।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै भगवत्यै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः,
प्रदक्षिणां समर्पयामि।'

8.15/2 प्रदक्षिणा पर विचार -

'एका चण्ड्यां रवौ सप्त तिस्रो दद्याद्विनायके। चतस्रः विष्णवे देया शिवस्यार्द्धा प्रदक्षिणा।।

बाहुभ्यां च सजानुभ्यां शिरसा मनसा धिया। पंचांगकः प्रणामः स्यात्सर्वत्र प्रवराविमौ।।'

अर्थात् देवी को एक, सूर्य को सात, गणेश को तीन, विष्णु को चार और शिव को आधा प्रदक्षिणा लगाकर प्रणाम करने का नियम है। दोनों बाहु, दोनों जानु, सिर, मन और बुद्धि से प्रणाम करने को पंचांग नमस्कार का विधान सकल कर्मों में कहा गया है। अतः अष्टांग और पंचांग - ये दोनों प्रकार का नमस्कार श्रेष्ठ हैं।

8.16/1 पुष्पांजलिः -

'ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।1।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।2।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै भगवत्यै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।'

8.16/2 मन्त्रपुष्पांजलिः -

'ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय ते नमः।।2।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति।।3।।

तदप्येश श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।4।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।।5।।

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमारी च धीमहि। तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्।।6।।

सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः।
बिल्वप्रवालतुलसीदलमंजरीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद।।1।।
मन्त्रविद्भिर्बुधवरैः श्रद्धापूर्वं समर्पितः। मन्त्रपुष्पांजलिरियं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।2।। अथवा

नानासुगन्धयुक्तं च यथाकालोद्भवं तथा। मया पुष्पांजलिर्दत्ता गृहाण परमेश्वरि।।2।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।'

8.16/3 वरप्रार्थना -

'रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे। पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।।1।।

विश्वेश्वरि विश्वपूज्ये पुत्रपौत्रप्रदायिनि। आयुरारोग्यमैश्वर्यं सुखशान्तिं च देहि मे।।2।।

भूतप्रेतपिशाचेभ्यः रक्षोभ्यः परमेश्वरि। देवेभ्यो मानुशेभ्यश्च सर्वेभ्यो रक्ष मां सदा।।3।।

भूतप्रेतपिशाचेभ्यः रक्षोभ्यः परमेश्वरि। देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च सर्वेभ्यो रक्ष मां सदा।।4।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, वरप्रार्थनां समर्पयामि।'

8.16/4 क्षमायाचना -

'आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।1।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।

(पाठभेदः - मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।)।।2।।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।3।।

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। ततसर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।4।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।5।।
कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यन्मया कृतम्। तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरि।।6।।
दुर्गे देवि जगन्मातः सच्चिदानन्दरूपिणि। गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।7।।
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसंभवः। पाहि मां सर्वदा मातः सर्वपापहरा भव।।8।।
एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा, स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान्मेऽपराधान् क्षमस्व।
नूनं यत्तत्तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः, सानन्दं मे हृदयकमलं तेऽस्तु नित्यं निवासः।।9।।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः, पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।10।।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सर्वोपचारपूर्वकक्षमायाचनां समर्पयामि।'

## 11. अवशिष्टपूजाप्रकरणम् - भाग 1

### 11.1-1 नवग्रहादि देवातानां पूजनम्।।

1. ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।
ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ सवित्रे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सवित्रे इहागच्छ इह तिष्ठ।।

2. ॐ इमं देवा असपत्नᳫसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳫराजा ।
ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सोममावाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

3. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाᳫरेताᳫसि जिन्वति ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भौमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भौममावाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

4. ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्व मिष्टापूर्त्ते सᳫसृजेथा मयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । ॐ भूर्भुवःस्वः बुधाय नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः बुधमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो बुध इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

5. ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऋतः प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ भूर्भुवःस्वः बृहस्पतये नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो बृहस्पति इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

6. ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳫशुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु । ॐ भूर्भुवःस्वः शुक्राय नमः।

ॐ भूर्भुवःस्वः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

7. ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ भूर्भुवःस्वः शनैश्चराय नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

8. ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता । ॐ भूर्भुवःस्वः राहवे नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः राहुमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

9. ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजयथाः । ॐ भूर्भुवःस्वः केतवे नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः केतुमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

**11.1-2 अथ अधिदेवतानां पूजनम् -** (ग्रहदक्षिणपार्श्वे आधिदेवतास्थापनम्)

1. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।
ॐ भूर्भुवःस्वः (ईश्वराय ) रुद्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

2. ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पक्त्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणा मुम्म इषाण सर्व लोकम्म इषाण । ॐ भूर्भुवःस्वः महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो महालक्ष्मी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

3. ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् । ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

4. ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्त्वा ।
ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ।

5. ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः । ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

6. ॐ सजोषा इन्द्रसगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँ रपमृधो नुदस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः। ॐ भूर्भुवःस्वःइन्द्रायनमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

7. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन ब्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि । ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः यममावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

8. ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः कालाय नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः कालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो काल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

9. ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय । ॐ भूर्भुवःस्वः चित्रगुप्ताय नमः ।।
ॐ भूर्भुवःस्वः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

**11.1-3 प्रत्यधिदेवतानां पूजनम् -** (ग्रहवामपार्श्वे)

1. ॐ अग्निं दूतम्पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे । देवां आसादयादिह । ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो अग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

2. ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः ।
देवीरापो यो व ऊर्मि प्रतूर्तिः ककुन्मान्वाजसास्तेनायं वाजꣳसेत । ॐ भूर्भुवःस्वः अद्भ्यो नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः अप आवाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो आपः इहागच्छ इह तिष्ठ।।

3. ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः । ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिव्यै नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो पृथिवी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

4. ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे । ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

5. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। हवयामि शुक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवा धात्त्विन्द्र।
ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

6. ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीष पूषासि घर्म्मायदीष्व । ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राण्यै नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्राणी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

7. ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्योविश्वारुपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।
ॐ भूर्भुवःस्वः प्रजापतये नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो प्रजापति इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

8. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पेभ्यो नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो सर्पाः इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

9. ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचो वेन आवः। सवुध्न्या उपमा अस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्चविवः।
ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

11.2 पंचलोकपालदेवतानाम् पूजनम्

राहोरुत्तरतः गणपतिम् शनेरुत्तरतः दुर्गाम् रवेरुत्तरतः वायुम् राहोर्दक्षिणतः ।।
आकाशम् केतुर्दक्षिणे अश्विनीकुमारश्च।

1. ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्। ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो गणपती इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

2. ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।
ॐ भूर्भुवःस्वः अम्बिकायै नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः अम्बिकामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अम्बिका इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

3. ॐ आनो नियुद्भिः शतिनिभिरध्वरꣳसहस्रिणीभि रुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातः स्वस्तिभिः सदा नः। ॐभूर्भुवःस्वः वायवे नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।ॐभूर्भुवःस्वः भो वायु इहागच्छ इह तिष्ठ।

4. ॐ घृतं घृतपावानः पिबतवसांवसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशः उद्दिशो दिग्भ्यःस्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशाय नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो आकाश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

5. ॐ यावाङ् कशामधुमत्यश्विना सुनृतावती । तया यज्ञम्मिमिक्षतम् । ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनीकुमाराभ्याम् नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वःअश्विनीकुमाराभ्यामावाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अश्विनीकुमार इहागच्छ इह तिष्ठ ।

## 11.3 अथ दशदिग्पालदेवतानां पूजनम्

1. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।
ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

2. ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे।देवां2आसादयादिह । ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो अग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ।।

3. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन ब्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।
ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः यममावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ।।

4. ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्त्यामन्विहितस्क्करस्याऽअन्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्त्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु
(ॐ एष ते निर्ऋते भागस्त जुषस्व स्वाहा)। ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो निर्ऋती इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

5. ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके । ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

6. ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः । ते अग्रेऽश्वमयुञ्जस्ते अस्मिन् षवमा दधुः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वायु इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

7. ॐ वयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतः। प्रजावन्तःसचेमहि। ॐ भूर्भुवःस्वः कुबेराय नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः कुबेरमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

8. ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसा मसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धःस्वस्तये। ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ॥

9. ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्चविवः।
ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

10. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।
ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पेभ्यो नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सर्पाः इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

## 11.4 अथ वास्तुदेवता पूजनम्

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवाभवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुशस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोष्पतये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो वास्तोष्पते इहागच्छेह तिष्ठ।

## 11.5 अथ क्षेत्रपालदेवता पूजनम्

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो3प्रतिष्ठ।

ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।

ॐ श्रीक्षेत्रपालदेवताभ्यो नमः।' – मन्त्र से पंचोपचार अथवा दशोपचार अथवा षोडशेपचार पूजन करें।

अनेन पूजनेन सूर्यादि नवग्रहा अधिदेवता प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल दशदिक्पाल वास्तु क्षेत्रपाल सुप्रतिष्ठिता भवन्तु।

## 11.6-1 सर्वतोभद्रमण्डपस्थदेवतानां पूजनमन्त्राः।।

'प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिः। खण्डेन्दुस्त्रिपात्कोणे तु शृंखला पंचभिः पदैः।।1।।

एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः। चतुर्विंषत्पदा वापी विंशत्या परिधिः पदैः।।2।।

मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम्। श्वेतेन्दुःशृंखला कृष्णावल्लीं नीलेन पूरयेत्।।3।।

भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीलवर्णकः। बाह्यानन्तरदलैः श्वेता कर्णिका पीतवर्णका।।4।।

परिध्यावेष्टितम्पद्मं बाह्ये सत्त्वरजस्तमः। तन्मध्ये स्थापयेद्देवान्ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान्।।5।।'

1. मध्ये कर्णिकायाम् – '**ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याऽउपमा अस्य विष्टाः सतश्च योनीमसतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

2. उत्तरे वाप्याम् – '**ॐ वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सोममावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।**

3. ईशान्यां खण्डेन्दौ – '**ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।**

4. पूर्वे वाप्यां – '**ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

5. आग्नेय्यां खण्डेन्दौ – '**ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳरक्षमाणस्तव व्रते।। ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ।।**

6. दक्षिणे वाप्याम् – '**ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः यममावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

7. नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ – 'ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

8. पश्चिमे वाप्याम् – 'ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा नऽआयुः प्रमोषीः।। ॐ भूर्भुवःस्वःवरुणाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

9. वायव्यां खण्डेन्दौ – 'ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वायुमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

10. वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे – 'ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा संजानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। व्यन्तु वयोक्तꣳरिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पाऽग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो अष्टवसव इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

11. सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे – 'ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो एकादशरुद्रा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

12. ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे – '**ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आ वोऽर्वाचीसुमतिर्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येश्यस्त्वा।। ॐ भूर्भुवःस्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो द्वादशादित्या इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

13. ईशानाग्निमध्ये भद्रे – '**ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनिकुमाराभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनिकुमारावावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो अश्विनिकुमारा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

14. अग्नियममध्ये भद्रे – '**ॐ विश्वे देवासऽआगत शृणुता मऽइमꣳहवम्। एदं बर्हिर्नि षीदत। उपयाम गृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य ऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपैतृक विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सपैतृक विश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो सपैतृकविश्वेदेवा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

15. यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे – '**ॐ अभित्त्यं देवꣳसवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्त्यसवꣳरत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो सप्तयक्षा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

16. निर्ऋतिवरुणमध्ये भद्रे – 'ॐ नमोऽअस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टकुल(भूत)नागेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टकुल(भूत)नागानावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो अष्टकुल(भूत)नागा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

17. वरुणवायुमध्ये भद्रे – 'ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम। स न इन्द्रं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो गन्धर्वाप्सराः इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

18. ब्रह्मसोममध्ये वाप्यां– 'ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्त्यं महि जातं तेऽअर्वन्।। ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

19. तदुत्तरे – 'ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः नन्दीश्वराय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः नन्दीश्वरमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो नन्दीश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।

20. तदुत्तरे – 'ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोशधीः।। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः भो शूल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

21. तदुत्तरे – '**ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो महाकाल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

22. ब्रह्मेशानमध्ये शृंखलायाम् – '**ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यꣳहाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो दक्षादि सप्तगणा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

23. ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम् – '**ॐ अम्बे अम्बिकेम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

24. तत्पूर्वे – '**ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णावे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

25. ब्रह्माग्निमध्ये शृंखलायाम्– '**ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै** (पितृभ्यो) **नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधामा** (पितृना) **वाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्वधे** (पितर) **इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

26. ब्रह्मयममध्ये वाप्याम् – '**ॐ परं मृत्योऽअनु परेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान्।। ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो मृत्युरोगा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

27. ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृंखलायाम् – 'ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो गणपाते इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

28. ब्रह्मवरुणमध्ये वाप्याम् – 'ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे संजायसे पुनः।। ॐ भूर्भुवःस्वःअद्भ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः आपमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो आपः इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

29. ब्रह्मवायुमध्ये शृंखलायाम् – 'ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः। स सुगोपातमो जनः।। ॐ भूर्भुवःस्वः मरुद्भ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मरुत आवाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो मरुत इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

30. ब्रह्मणः पादमूले – 'ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छ। नः शर्म सप्रथाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिव्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

31. तदुत्तरे – 'ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।। ॐ भूर्भुवःस्वः गंगादिसप्त सरिद्भ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गंगादिसप्तसरित आवाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो गंगादिसप्तसरित इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

32. तदुत्तरे – 'ॐ समुद्रोऽअसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा। मारुतोऽअसि मरुतां गणः शम्भूर्मयोभूरभि वाहि स्वाहा। अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो सप्तसागरा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

33. कर्णिकापरिधौ - '**ॐ प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसि चऽइयानाः। ताऽआववन्नृन्नधरागुदक्ता अहिर्बुध्न्यमनु रीयमाणाः। विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि।। ॐ भूर्भुवःस्वः मेरवे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मेरुमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो मेरो इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

34. सत्त्वपरिधौ क्रमेण उत्तरे- '**ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः गदायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गदामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो गदे इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

35. सत्त्वपरिधावेव क्रमेण ईशान्ये - '**ॐ त्रिꣳशद्धाम विराजति वाक्पतंगाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः।। ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिशूलाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो त्रिशूल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

36. सत्त्वपरिधावेव क्रमेण पूर्वे - '**ॐ महाँ2 इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्महेन्द्राय त्वा।। ॐ भूर्भुवःस्वः वज्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वज्रमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वज्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

37. सत्त्वपरिधावेव क्रमेण आग्नेय्याम् - '**ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽअर्थश्च म एमश्च मऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो शक्ते इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

38. सत्त्वपरिधावेव क्रमेण दक्षिणे – 'ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात्।। ॐ भूर्भुवःस्वः दण्डाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दण्डमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो दण्ड इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

39. सत्त्वपरिधावेव क्रमेण नैर्ऋत्याम् – 'ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुसते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिꣳहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः।। ॐ भूर्भुवःस्वः खड्गाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः खड्गं आवाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो खड्ग इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

40.सत्त्वपरिधावेव क्रमेण पश्चिमे – 'ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदबाधमं विमध्यमꣳश्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम।। ॐ भूर्भुवःस्वः पाशाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः पाशमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो पाश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

41. सत्त्वपरिधावेव क्रमेण वायव्याम् – 'ॐ अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च मऽउपाꣳशुश्च मेऽअनतर्यामश्च मऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च मऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः अंकुशाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अंकुशमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो अंकुश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

42. रक्तपरिधौ क्रमेण उत्तरे – 'ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्स्व।। ॐ भूर्भुवःस्वः गौतमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गौतममावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो गौतम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

43. रक्तपरिधावेव क्रमेण ईशान्याम् – '**ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳस्वारादन्तर्यामोऽअन्तर्यामात्पंचदशः पंचदशाद् बृहद्भारद्वाजऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः।। ॐ भूर्भुवःस्वः भरद्वाजाय नमः। ॐभूर्भुवःस्वः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो भरद्वाज इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

44. रक्तपरिधावेव क्रमेण पूर्वे – '**ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिनऽ एकविꣳशाद्वैराजं विश्वामित्रऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः।। ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वामित्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो विश्वामित्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

45. तत्रैव क्रमेण आग्नेय्याम् – '**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद् देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः काश्यपाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः काश्यपमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो काश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

46. रक्तरिधावेव क्रमेण दक्षिणे – '**ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्याऽ ऋक्सामाक्षुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः।। ॐ भूर्भुवःस्वः जमदग्नये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो जमदग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

47. रक्तरिधावेव क्रमेण नैर्ऋत्याम् – '**ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वासन्तः प्राणाय नो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्र्यादुपाꣳशुरुपाꣳशोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वसिष्ठयाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वसिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ ।।**

48. रक्तरिधावेव क्रमेण पश्चिमे – 'ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत।। ॐ भूर्भुवःस्वः अत्रये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो अत्रि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

49. रक्तरिधावेव क्रमेण वायव्ये – 'ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अरुन्धत्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो अरुन्धति इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

50. कृष्णरिधौ क्रमेण पूर्वे – 'ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व।। ॐ भूर्भुवःस्वः ऐन्द्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो ऐन्द्रि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

51. कृष्णरिधावेव क्रमेण आग्नेय्याम् – 'ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः कौमार्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो कौमारि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

52. कृष्णरिधावेव क्रमेण दक्षिणे – 'ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाग्घतः।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राह्म्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्राह्मि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

53. कृष्णरिधावेव क्रमेण नैर्ऋत्याम् – 'ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽअदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं परीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काशं गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्हा वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मीन्हराभिः

स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्याᳬसमुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना।। ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वाराहीमाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वाराहि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

54. कृष्णरिधावेव क्रमेण पश्चिमे – 'ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मा नयति कश्चन। स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः चामुण्डायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो चामुण्डे इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

55. कृष्णरिधावेव क्रमेण वायव्यम् – 'ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।। ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णव्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वैष्णवि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

56. कृष्णरिधावेव क्रमेण सोमे – 'ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वर्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो माहेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

57. कृष्णरिधावेव क्रमेण ईक्कान्याम् – 'ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मा मऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि।। ॐ भूर्भुवःस्वःवैनायक्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवःस्वः भो वैनायकि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञᳬसमिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मो 3 प्रतिष्ठ ।। अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता।

**प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले देवतैः सह।। ब्रह्माद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। ॐ ब्रह्मादिदेवेभ्यो नमः** - मन्त्र से यथाशक्ति पंचोपचार/दशोपचार/षोडशोपचार पूजन करें। **अनेन पूजनेन सर्वतोभद्रमण्डपस्थब्रह्मादिदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम्।** अथवा नाममन्त्रों से भी आवाहनादिकर्म कर सकते हैं -

**1. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः । ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।**

**2. ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सोममावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।**

**3. ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।**

**4. ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।**

**5. ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो अग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ।**

**6. ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः यममावाहयामि स्थापयामि ।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।।**

7. ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो निर्ऋति इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

8. ॐ भूर्भुवःस्वःवरुणाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

9. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वायु इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

10. ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अष्टवसून् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

11. ॐ भूर्भुवःस्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो एकादश रुद्रान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

12. ॐ भूर्भुवःस्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐभूर्भुवःस्वः द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो द्वादशादित्यान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

13. ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनिकुमाराभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनिकुमारावावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अश्विनिकुमारान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

14. ॐ भूर्भुवःस्वःसपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सपैतृकविश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सपैतृकविश्वान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

15. ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सप्तयक्षान् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

16. ॐ भूर्भुवःस्वः भूतनागेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः भूतनागानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भूतनागान् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

17. ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाप्सरानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गन्धर्वाप्सराः इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

18. ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

19. ॐ भूर्भुवःस्वः नन्दीश्वराय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः नन्दीश्वरमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो नन्दीश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ।

20. ॐ भूर्भुवःस्वः शूलाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो शूल इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

21. ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो महाकाल इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

22. ॐ भूर्भुवःस्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो दक्षादिसप्तगणान् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

23. ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो दुर्गा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

24. ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो विष्णु इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

25. ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै (पितृभ्यो) नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधामावाहयामि (पितृनावाहयामि) स्थापयामि
ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्वधा (पितृन्) इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

26. ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो मृत्युरोगान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

27. ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गणपति इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

28. ॐ भूर्भुवःस्वःअद्भ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः आपमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो आपः इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

29. ॐ भूर्भुवःस्वः मरुद्भ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मरुतानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो मरुतान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

30. ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिव्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पृथिवी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

31. ॐ भूर्भुवःस्वःगंगादिसप्तसरिद्भ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गंगादिसप्तसरितानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गंगादिसप्तसरितान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

32. ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो सप्तसागरान् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

33. ॐ भूर्भुवःस्वः मेरवे नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मेरुमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो मेरु इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

34. ॐ भूर्भुवःस्वः गदायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गदामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गदा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

35. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिशूलाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो त्रिशूल इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

36. ॐ भूर्भुवःस्वः वज्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वज्रं मावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वज्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

37. ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो शक्ति इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

38. ॐ भूर्भुवःस्वः दण्डाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः दण्डमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो दण्ड इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

39. ॐ भूर्भुवःस्वः खड्गाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः खड्गमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो खड्ग इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

40. ॐ भूर्भुवःस्वः पाशाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः पाशमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो पाश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

41. ॐ भूर्भुवःस्वः अंकुशाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अंकुशमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अंकुश इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

42. ॐ भूर्भुवःस्वः गौतमाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः गौतममावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो गौतम इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

43. ॐ भूर्भुवःस्वः भरद्वाजाय नमः। ॐभूर्भुवःस्वः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो भरद्वाज इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

44. ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वामित्राय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो विश्वामित्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

45. ॐ भूर्भुवःस्वः काश्यपाय नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः काश्यपमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो काश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

46. ॐ भूर्भुवःस्वः जमदग्नये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो जमदग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

47. ॐ भूर्भुवःस्वः वसिष्ठये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वसिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
48. ॐ भूर्भुवःस्वः अत्रये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अत्रि इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
49. ॐ भूर्भुवःस्वः अरुन्धत्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो अरुन्धती इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
50. ॐ भूर्भुवःस्वः ऐन्द्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ऐन्द्री इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
51. ॐ भूर्भुवःस्वः कौमार्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो कौमारी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
52. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राह्म्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राहमीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्राहमी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
53. ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो वाराही इहागच्छ इह तिष्ठ ।।
54. ॐ भूर्भुवःस्वः चामुण्डायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवःस्वः भो चामुण्डा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

55. ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णव्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो वैष्णवी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

56. ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वर्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो माहेश्वरी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

57. ॐ भूर्भुवःस्वःवैनायक्यै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो वैनायकी इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ्थ्ठसमिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो3प्रतिष्ठ ।

ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।

अनेन पूजनेन सर्वतोभद्रमण्डपस्थदेवताः साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्ताम् न मम ।

## 11.6-2 गौरीतिलकमण्डल/एकलिंगतोभद्रमण्डलपूजनम्

चित्र संख्या 3 क व 3 ख, पृष्ठ संख्या 48 में – 1, 2, 3. आदि संख्या से अंकित क्रम से पूजन करें।

1. पूर्वे- ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वानां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिनऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः।

ॐ भूर्भुवःस्वः असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि, स्थापयामि।।1।।

2. आग्नेये- ॐ शिवत्रऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्याऽअरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः श्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवमावाहयामि, स्थापयामि।।।2।।

3. दक्षिणे- ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पाश्‍र्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।
ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवमावाहयामि, स्थापयामि।।।3।।

4. नैर्ऋत्ये- ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवोऽअदित्यै भसज्जीमूता हृदयौपशेनान्तरिक्ष पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यान्दिवं वृकाभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहान् वल्मीकान् क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्नतीर्ह्रदान् कुक्षिभ्याꣳसमुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना।
ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवमावाहयामि, स्थापयामि।।4।।

5. पश्चिमे- ॐ उन्नतऽऋषभो वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः। शितिपृष्ठास्तऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषाऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः।
ॐ भूर्भुवःस्वः उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवमावाहयामि, स्थापयामि।।5।।

6. वायव्ये- ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः।
ॐ भूर्भुवःस्वः कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवमावाहयामि, स्थापयामि।।6।।

7. उत्तरे - ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।
ॐ भूर्भुवःस्वः भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवमावाहयामि, स्थापयामि।।7।।

8. ईशाने- ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।
ॐ भूर्भुवःस्वः संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवमावा., स्था., पू., न.।।8।।

पुनः पूर्वादि क्रम से अष्ट नागदेवताओं का पूजन करें।

9. पूर्वे- ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि, स्थापयामि।।9।।

10. आग्नेये- ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारञ्च हराणि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा।
ॐ भूर्भुवःस्वः वासुकये नमः, वासुकिमावाहयामि, स्थापयामि।10।।

11. दक्षिणे- ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः।
ॐ भूर्भुवःस्वः तक्षकाय नमः, तक्षकमावाहयामि, स्थापयामि।।11।।

12. नैर्ऋत्ये- ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसोद गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां। कृकवाकुः सावित्रो हꣳसो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्ल्यकः।
ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः, कुलिशमावाहयामि, स्थापयामि।।12।।

13. पश्चिमे- ॐ सोमाय कुलङ्गऽआरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कुक्कुटस्तेऽनुमस्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः।

ॐ भूर्भुवःस्वः कर्कोटकाय नमः, कर्कोटकमावाहयामि, स्थापयामि।13।।

14. वायव्ये- ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्। उपयाम गृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे।

ॐ भूर्भुवः स्वः शंखपालाय नमः, शंखपालमावाहयामि, स्थापयामि।।14।।

15. उत्तरे- ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञꣳसविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्। ॐ भूर्भुवःस्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावाहयामि, स्थापयामि।15।।

16. ईशाने- ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद् धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याꣳसौर्यामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थ्यौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः।

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्वतराय नमः, अश्वतरमावाहयामि, स्थापयामि।।16।।

अब ईशानादिदिगन्तरालों में देवताओं का पूजन करें -

17. ईशान पूर्व मध्ये- ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलिने नमः, शूलिनमावाहयामि, स्थापयामि।।17।।

18. पूर्व अग्नि मध्ये- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।
ॐ भूर्भुवःस्वः चन्द्रमौलिने नमः, चन्द्रमौलिनमावाहयामि, स्थापयामि।।18।।

19. अग्नि यम मध्ये- ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिषऽएकवीरःशतꣳ सेनाऽजयत्साकमिन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वृषभध्वजाय नमः, वृषभध्वजमावाहयामि, स्थापयामि।19।।

20. यम निर्ऋति मध्ये- ॐ सुगावो देवाः सदनाऽअकर्मयऽआजग्मेदꣳसवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीꣳष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय नमः, त्रिलोचनमावाहयामि, स्थापयामि।।20।।

21. निर्ऋति वरुण मध्ये- ॐ रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते।।
ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तिधराय नमः, शक्तिधरमावाहयामि, स्थापयामि।21।।

22. वरुण वायु मध्ये- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः महेश्वराय नमः, महेश्वरमावाहयामि, स्थापयामि।।22।।

23. वायु सोम मध्ये- ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।
ॐ भूर्भुवःस्वः शूलपाणये नमः, शूलपाणिमावाहयामि, स्थापयामि।।23।।

24. सोम ईशान मध्ये- ॐ चन्द्रमाऽप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳहरिरेति कनिक्रदत्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः महादेवाय नमः, महादेवमावाहयामि, स्थापयामि।।24।।

अब परिधि और शृंखलाओं में पूजन करें।

25. परिधौ- **ॐ भूर्भुवःस्वः परिधये नमः, परिधिमावाहयामि, स्थापयामि।।25।।**

26. परिधिसमन्तात्- **ॐ भूर्भुवःस्वः चतुः पुरिभ्यो नमः, चतुःपुरीरावाहयामि, स्थापयामि।।26।।**

27. आग्नेयकोणस्थशृंखलायां- **ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः ऋग्वेदाय नमः, ऋग्वेदमावाहयामि, स्थापयामि।।27।।**

28. नैर्ऋत्यकोणस्थशृंखलायां- **ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽयक्ष्मामावस्तेन ईशत माघसꣳसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि। ॐ भूर्भुवःस्वः यजुर्वेदाय नमः, यजुर्वेदमावाहयामि, स्थापयामि।।28।।**

29. वायव्यकोणस्थशृंखलायां- **ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।**
**ॐ भूर्भुवःस्वः सामवेदाय नमः, सामवेदमावाहयामि, स्थापयामि।।29।।**

30. ईशानकोणस्थशृंखलायां- **ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।**
**ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेदाय नमः, अथर्ववेदमावाहयामि, स्थापयामि।।30।।**

तत्पश्चात् पूर्वादि क्रम से वापियों में पूजन करें।

31. पूर्वे- ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। ॐ भूर्भुवःस्वः भवसहितभवान्यै नमः, भवसहितभवानीमावाहयामि, स्थापयामि।।31।।

32. आग्नेये- ॐ अग्निꣳहृदयेनाशनिꣳहृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्टुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्।

ॐ भूर्भुवःस्वः शर्वसहितशर्वाण्यै नमः, शर्वसहितशर्वाणीमावाहयामि, स्थापयामि।।32।।

33. दक्षिणे- ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तः पाश्वर्य्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।

ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतिसहितपाशुपत्यै नमः, पशुपतिसहितपाशुपतीमावाहयामि, स्थापयामि।।33।।

34. नैर्ऋत्ये- तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियजिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानसहितेशान्यै नमः, ईशानसहितेशानीमावाहयामि, स्थापयामि।।34।।

35. पश्चिमे- ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।

ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसहितोग्रायै नमः, उग्रसहितोग्रामावाहयामि, स्थापयामि।।35।।

36. वायव्ये- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।

ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रसहितरुद्राण्यै नमः, रुद्रसहितरुद्राणीमावाहयामि, स्थापयामि।।36।।

37. उत्तरे- ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। ॐ भूर्भुवःस्वः भीमसहितभीमायै नमः, भीमसहितभीमामावाहयामि, स्थापयामि।।37।

38. ईशाने- ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः। ॐ भूर्भुवःस्वः महत्सहितमहत्यै नमः, महत्सहितमहतीमावाहयामि, स्थापयामि।।38।।

अथवा नाममन्त्रों से भी आवाहनादि कर सकते हैं –

1. ॐ भूर्भुवःस्वः असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, नमस्करोमि।1।।
2. ॐ भूर्भुवःस्वः रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवमा., स्था., पू., न.।।2।।
3. ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवमावा., स्था., पू., न.।।3।।
4. ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवमावा., स्था., पू., न.।।4।।
5. ॐ भूर्भुवःस्वः उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवमावा., स्था., पू., न.।।5।।
6. ॐ भूर्भुवःस्वः कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवमावा., स्था., पू., न.।।6।।
7. ॐ भूर्भुवःस्वः भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवमावा., स्था., पू., न.।।7।।
8. ॐ भूर्भुवःस्वः संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवमावा., स्था., पू., न.।।8।।
9. ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावा., स्था., पू., न.।।9।।
10. ॐ भूर्भुवःस्वः वासुकये नमः, वासुकिमावा., स्था., पू., न.।।10।।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः तक्षकाय नमः, तक्षकमावा., स्था., पू., न.।।11।।

12. ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः, कुलिशमावा., स्था., पू., न.।।12।।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः कर्कोटकाय नमः, कर्कोटकमावा., स्था., पू., न.।।13।।
14. ॐ भूर्भुवः स्वः शंखपालाय नमः, शंखपालमावा., स्था., पू., न.।।14।।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावा., स्था., पू., न.।।15।।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः अश्वतराय नमः, अश्वतरमावा., स्था., पू., न.।।16।।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः शूलिने नमः, शूलिनमावा., स्था., पू., न.।।17।।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः चन्द्रमौलिने नमः, चन्द्रमौलिनमावा., स्था., पू., न.।।18।।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः वृषभध्वजाय नमः, वृषभध्वजमावा., स्था., पू., न0।।19।।
20. ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय नमः, त्रिलोचन- मावा., स्था., पू., न.।।20।।
21. ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तिधराय नमः, शक्तिधरमावा., स्था., पू., न.।।21।।
22. ॐ भूर्भुवःस्वः महेश्वराय नमः, महेश्वरमावा., स्था., पू., न.।।22।।
23. ॐ भूर्भुवःस्वः शूलपाणये नमः, शूलपाणिमावा., स्था., पू., न.।।23।।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः महादेवाय नमः, महादेवमावा., स्था., पू., न.।।24।।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः परिधये नमः, परिधिमावा., स्था., पू., न.।।25।।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः चतुःपुरिभ्यो नमः, चतुःपुरीरावा., स्था., पू., न0।।26।।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः ऋग्वेदाय नमः, ऋग्वेदमावा., स्था., पू., न.।।27।।

28. ॐ भूर्भुवःस्वः यजुर्वेदाय नमः, यजुर्वेदमावा., स्था., पू., न.।।28।।

29. ॐ भूर्भुवःस्वः सामवेदाय नमः, सामवेदमावा., स्था., पू., न.।।29।।

30. ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेदाय नमः, अथर्ववेदमावा., स्था., पू., न.।।30।।

31. ॐ भूर्भुवःस्वः भवसहितभवान्यै नमः, भवसहितभवानीमावा., स्था., पू., न.।।31।।

32. ॐ भूर्भुवःस्वः शर्वसहितशर्वाण्यै नमः, शर्वसहितशर्वाणीमा., स्था., पू., न.।।32।।

33. ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतिसहितपाशुपत्यै नमः, पशुपतिसहितपाशुपतीमा., स्था., पू., न.।।33।।

34. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानसहितेशान्यै नमः, ईशानसहितेशानीमावा., स्था., पू., न.।34।

35. ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसहितोग्रायै नमः, उग्रसहितोग्रामावा., स्था., पू., न.।।35।।

36. ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रसहितरुद्राण्यै नमः, रुद्रसहितरुद्राणीमावा., स्था., पू., न.।36।

37. ॐ भूर्भुवःस्वः भीमसहितभीमायै नमः, भीमसहितभीमामावा., स्था., पू., न.।37।

38. ॐ भूर्भुवःस्वः महत्सहितमहत्यै नमः, महत्सहितमहतीमावा., स्था., पू., न.।।38।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो3प्रतिष्ठ।
ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।
अनेन पूजनेन एकलिंगोभद्रमण्डपस्थदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

**11.7 अखण्डदीपपूजनम् -**

गन्धपुष्पाक्षत आदि से दीपक केलिये आसन तैयार कर उस पर दीपक को स्थापित कर दीपक को प्रज्वलित करे -

**'ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवी सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् स्वाहा।'**

गन्धपुष्पाक्षत आदि से पूजा करे- **'ॐ श्रीज्वालामालिनी कर्मसाक्षिणी प्रत्यक्षदीपराजाय नमः।।'**

प्रार्थना पूर्वक पुष्पार्पण करे - **'भो दीपदेवि रूपस्त्वं कर्मसाक्षिण्यविघ्नकृत्। यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।**

**दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा। यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिरा।।**

**सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वतस्तिमिरापहः। स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।'**

**11.8 ज्योतिःपूजनम् -**

**'ॐ ज्योतिःस्वरूपायै दुर्गादेव्यैनमः, ॐ कुलदेवीस्वरूपायै दुर्गादेव्यैनमः।'**

इन दो मन्त्रों से पाद्य, अर्घ्य, आचमन, गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन कर प्रार्थना करें -

**'ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।1।।**

**ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।2।।**

**सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्ये। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।1।।**

**साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।2।।**

**भक्त्या दीपं प्रयच्छामि दुर्गायै दुःखदारिणि। त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।3।।'**

अब ज्योति का ध्यान कर पुष्पार्पण करे –

**'प्रधानसाधारविकल्पसंज्ञा स्वभावभावाद्भुवनत्रयस्य। सा विद्यया व्यक्तमपीह माया ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यम्।।'**

**11.9 जयन्ती पूजनम्** –

**'जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।1।।**

**सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते।।2।।**

**शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देविनारायणि नमोऽस्तु ते।।3।।**

**सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।4।।'**

**11.10 धान्यकलशस्थापनम्** –

सर्वतोभद्रमण्डल और अखण्डदीप के बीच मृत्तिका में यव को प्रक्षिप्त कर पूर्वोक्त कलशस्थापन विधि से मृन्मयघट की स्थापना करें।

**11.11 नारिकेलबलिदानम्** – एक नारियल का पुष्पाक्षतकुंकुमादि से पंचोपचार पूजन करे – **'ॐ नारिकेलबलये नमः'** देवी के सामने अर्पण करे – **'ॐ नारिकेलबलिं तुभ्यं समर्पयामि'** नवार्णवमन्त्र से वीरासन में बैठकर एकहाथ से एक ही बार में नारियल को फोड़ें और देवी को अर्पण करें।

**11.12 सप्तशतीपुस्तकपूजनम्** –

**'ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः।।1।।**

**नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।1।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।।'** – गन्ध आदि से पंचोपचार पूजन करे।

**11.13 पाठकब्राह्मणपूजनम्** –

दुर्गापाठकरनेवाले, जपकरनेवाले और आचार्य आदि का गन्ध, अक्षत आदि से विशेष पूजन कर दक्षिणा देके आशीर्वाद ग्रहण करें।

## 12 अवशिष्टपूजनप्रकरणम् भाग 2

**12.1/1 कुमारीपूजन विषयक विचार** – (देवीपुराणे)

**ब्रह्मोवाच** –

**'न तथा तुष्यते शक्र होमदानजपेन तु। कुमारीभोजनेनात्र यथा देवीप्रसीदति।।**

**प्रक्षाल्य पादौ सर्वासां कुमारीणां च वासव। सुलिप्ते भूतले रम्ये तत्र ता आसने स्थिताः।।**

**पूजयेद् गन्धपुश्पैश्च स्रग्भिश्चापि मनोरमैः। पूजयित्वा विधानेन भोजनं तासु दापयेत्।।**

**तास्तृप्तास्तु यदा सर्वास्तदा त्वाचमनं दद्यात्। आचम्य चाक्षतान्दत्त्वा त्वया क्षन्तव्यमित्युत।।**

**दातुः शिरसि दातव्याः कन्यकाभिरथाक्षताः। तेनापि प्रणिपातस्तु कर्तव्यो भक्तिपूर्वकः।।**

**अनेन विधिना शक्र देवी क्षिप्रम्प्रसीदति। ददाति विविधान्कामान्मनोभिष्टान्सुराधिप।।'**

अर्थात् ब्रह्माजी ने कहा – हे इन्द्र! देवी होम, दान, जप आदि से उतनी प्रसन्न नहीं होती है जितनी कन्यों के पूजन पूर्वक भोजन कराने से होती है। हे वासव! परिशुद्ध व अलंकृत भूमि पर आसन पर बैठी हुयी सभी कन्याओं के पैर को धोकर गन्ध, अक्षत, मनोरम पुष्प और माला

आदि से पूजन करें। विधि पूर्वक पूजन करके उनके समक्ष भोजन परोसें। जब वे सब तृप्त हो जायें उन्हें आचमन प्रदान करें और स्वयं आचमन कर उनके हाथों में अक्षत देकर ज्ञताज्ञात न्यूनाधिकता केलिये प्रार्थना करें - '**त्वया क्षन्तव्यम्**', कन्यायें यजमान के सिर पर '**अस्तु**' कहकर अक्षतों को ड़ालें। यजमान भक्तिपूर्वक साष्टांग नमस्कार करें। हे शक्र! हे देवराज! इस विधि से कन्या पूजन पूर्वक भोजन कराने पर देवी शीघ्र ही प्रसन्न होकर सब प्रकार की मनोकामनाओं को देती है।

कन्याप्राप्त्यभावे - (स्कन्दपुराणे)

**'यथोक्तालाभे तु या च पुष्पिणी विवाहितापि। तावत्पूज्याऽसन्तानापि कन्यात्वमुपजायते।।'**

अर्थात् उपरि वर्णित प्रकार की कन्या प्राप्त न होने पर पुष्पवती विवाहिता की पूजा करें भले उसकी कोई सन्तान न हो, उसमें भी अवश्य कन्यात्व उत्पन्न होगा और उसकी पूजा से देवी अवश्य प्रसन्न होगी।

**12.1/2 कुमाकीविषयक विचार:**

**'द्विवर्षाद्या दशाब्दान्ताः कुमारी परिपूजयेत्। एकाब्दायाः प्रीत्यभावो रुद्राब्दा तु विवर्जिता।।1।।**
**तासां नाममन्त्रैः देवी भावना च पूजा कार्या। नाधिकांगी न हीनांगी कुष्ठिनी च व्रणांकिताम्।।2।।**
**अन्धा काणा केकरा च कुरूपां रोमयुक्तां च। दासीजातां रोगयुक्तां दुष्टां कन्यां न पूजयेत्।।3।।**
**विप्रां सर्वेष्टसिद्ध्यै च यशसे क्षत्रियोद्भवाम्। वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत्।।4।।'**

अर्थात् दोवर्ष से दसवर्ष पर्यन्त की आयु की कन्या को ही कन्या पूजन में वरण करें। ग्यारह वर्ष की से प्रीतिहानिहोगी और बारह वर्ष की तो कभी वरण न करें। उनका नाममन्त्रों से देवी की भावना करते हुये पूजा करें। अधिक अंगोंवाली, कम अंगोंवाली, कुष्ठरोगवाली, घावों से युक्त अंगोंवाली, अन्धी, काणी, भेंगी आंखवाली, कुरूपा, रोमयुक्त शरीरवाली, दासीपुत्री, रोगिणी और दुष्ट कन्या की पूजा न करें।

सकल कामनाओं की सिद्धि केलिये ब्राह्मण की, यश प्राप्ति केलिये क्षत्रिय की, धन लाभ केलिये वैश्य की तथा पुत्र प्राप्ति केलिये शूद्र की कन्या का पूजन करें।

**'द्विवर्षा सा कुमार्युक्ता त्रिमूर्तिर्हायनत्रिका। चतुरब्दा तु कल्याणी पंचवर्षा तु रोहिणी।।1।।**
**षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्तहायनी। अष्टवर्षा शाम्भवी स्याद्दुर्गा तु नवहायनी।।2।।**
**सुभद्रा दशवर्षोक्ता नाममन्त्रैः प्रपूजयेत्। तासामावाहने मन्त्रः प्रोच्यते शंकरोदितः।।3।।'**

अर्थात् दोवर्षवाली को कुमारी, तीनवर्षवाली को त्रिमूर्ति, चारवर्षवाली को कल्याणी, पांचवर्षवाली को रोहिणी, छःवर्षवाली को कालिका, सातवर्षवाली को चण्डिका, आठवर्षवाली को शाम्भवी, नौवर्षवाली को दुर्गा और दसवर्षवाली को सुभद्रा – इन नाममन्त्रों से पूजा करें, ऐसे शंकर भगवान् कहते हैं।

**12.2-1** सर्व प्रथम गणेश पूजन करें –

**'ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम।**
**आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।1।।**
**ॐ गं गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि, भो गणपते इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

गन्ध, अक्षत, पुष्प, माला, आदि से पूजा कर दक्षिणा देकर प्रणाम करे –

**'ॐ खर्वस्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।**
**दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।'**

12.2-2 तदनन्तर वटुक पूजन करें -

**'ॐ देवीर्द्वारऽइन्द्रꣳसंघाते वीड्वीर्यामन्नवर्धयन्। आ वत्सेन तरुणेन कुमारेण च**
**मीवतापार्वाणꣳरेणुककाटं नुदन्तां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।।1।।**
**ॐ वं वटुकाय नमः, वटुकमावाहयामि स्थापयामि, भो वटुक इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'**

गन्ध, अक्षत, पुष्प, माला, आदि से पूजा कर दक्षिणा देकर प्रणाम करे -

**'करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती।**
**क्रतुसमयसपर्याद्विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।'**

12.2-3 तत्पश्चात् कन्याओं में मां भगवती का ध्यान पूर्वक आवाहन करें -

**'दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।**
**दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।1।।**
**मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं(देवीं)मातृणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्।।2।।'**

अब प्रत्येक कन्या का पूजन करें । कन्याओं में मां भगवती का ध्यान करें -

**'दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।**
**दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।'**

अब प्रत्येक कन्याओं का पूजन करें -

1. कुमारीदेवी – जगत्पूज्यां जगद्वन्द्यां सर्वशक्तिस्वरूपिणीम्। नवदुर्गात्मिकां देवीं कुमारीं पूजयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः कुमार्यै नमः, कुमारीमावाहयामि स्थापयामि।।1।।

2. त्रिमूर्तिदेवी – त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपिणीम्। त्रिलोकवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिमूर्त्यै नमः, त्रिमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि।।।2।।

3. कल्याणीदेवी – कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्। कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः कल्याण्यै नमः, कल्याणीमावाहयामि स्थापयामि।।3।।

4. रोहिणीदेवी – अणिमादिगुणोपेतामकाराद्यक्षरात्मिकाम्। अनन्तां शक्तिसंपन्नां रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः रोहिण्यै नमः, रोहिणीमावाहयामि स्थापयामि।।4।।

5. कालिकादेवी – कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्। कामदां करुणोपेतां कालिकां पूजयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः कालिकायै नमः, कालिकामावाहयामि स्थापयामि।।5।।

6. चण्डिकादेवी – चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजिनीम्। पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ।।
ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिकायै नमः, चण्डिकामावाहयामि स्थापयामि।।6।।

7. शाम्भवीदेवी – सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्। सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः शाम्भव्यै नमः, शाम्भवीमावाहयामि स्थापयामि।।7।।

8. दुर्गादेवी - **दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम्। पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।।8।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।।8।।**

9. सुभद्रादेवी - **सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्। सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।।**

**ॐ भूर्भुवःस्वः सुभद्रायै नमः, सुभद्रामावाहयामि स्थापयामि।।9।।**

इस प्रकार आवाहन करके पाद्य, अर्घ्य, आचमन, वस्त्र, अलंकारादि देकर गन्ध, अक्षत, पुष्प, माला, आदि से पूजा कर दक्षिणा देकर प्रणाम करे - - '**नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।**' तत्पश्चात् सब को भोजन/प्रसाद देकर प्रसन्न करें।

**12.3 उत्तरपूजनम्** -

'**ॐ अद्य इत्यादि देशकालौ संकीर्त्य प्रतिपदि गणपत्यादिस्थापितानां देवानां नारिकेल** (कुष्माण्डं वा) **बलिसहितं उत्तरपूजनमहं करिष्ये।**' यथोपचार गणपत्यादि की पूजा करके नारिकेल (अथवा कूष्माण्ड) को हाथ में लेकर पूजा करके जीवन्यासादि करने के अनन्तर - '**ॐ महामाये जगन्मातः सर्वकामप्रदायिनी। ददामि नारिकेलं बलिम्प्रसीद वरदा भव।।**' आधा भाग को देवी के समक्ष स्थापित कर - '**ॐ प्रणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।**' इन पांच आहुतियों को ज्योतिरग्नि में दें। शेष आधा भाग को अपने गृह (घर/भवन) के मुख्य द्वार के बाहर दोनों तरफ दो भाग कर रखें।

# 13. अभिषेकः-

## 13.1 अथ अभिषेकः -

(यदि हवन नहीं करना है तो इससे आगे बताये कर्म करें अन्यथा हवन के बाद प्राप्त क्रम के अनुसार करें।)

एकस्मिन् पात्रे वरुणोदकं गृहीत्वा अविधुरा चत्वारो ब्राह्मणाः दूर्वाऽऽम्रपल्लवैः सकुटुम्बं वामभागस्थितां पत्नीं यजमानं चाभिषिञ्चेयुः - अर्थात् विप्र एक पात्र में प्रधानकलश एवं अन्यकलशों के जल को मिलाकर दूर्वा, कुशा व पंचपल्लवों से सपरिवार यजमान को पूर्वाभिमुख बिठाकर निम्न मन्त्रों से अभिषेक करें -

(सर्वप्रथम नवग्रह के मन्त्रों से -)

'**ॐ आकृष्णेन** (सत्येन - कृष्णयजुर्वेद) **रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।।** (- सूर्य),

**ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु।।** - (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद)- **आप्यायस्व स मे तु ते विश्वतः। सोम वृष्ण्यं भवा वाजस्यसंगथे।।** (- चन्द्र),

**ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति।।** (- मंगल),

**ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्वे संसृजेथा मयञ्च। अस्मिन्सधास्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।** (-शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद -) **ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृह्य नमिष्ठा पूर्तेसंसृजे धाम यं च। पुनः कृण्वंस्त्वा पितरं युवानमन्वातांसि त्वसि नत्तु मे तम्।।** (- बुध),

**ॐ बृहस्पते अतियदर्यो आर्हद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेशु। यद्दीदयच्छ वस ऋत प्रजाततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम्।।** (- गुरु),

**ॐ शुक्रन्तेऽअन्यद्यजतन्तेऽअन्यद्विषु रूपेऽहनि द्यौरिवासि। विश्वा हि मायाऽवसि स्वधा वो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।** (- शुक्र),

**ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।** - (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) - **ॐ शमग्निरग्निभिस्करच्छन्नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वा त्वरपा अपस्रिधः।।** (- शनि),

**ॐ कया नश्चित्र आभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।** (- राहु),
**ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।'** (- केतु)। (अब निम्न 13 वैदिक मन्त्रों से -)
**'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।1।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।2।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि।।3।। शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृतꣳसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।।4।। जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदाऽअंगुलीरंगानि मित्रं मे सहः।।5।। बाहू मे बलमिन्द्रियꣳहस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम।।6।। पृष्ठो मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी। ऊरूऽअरत्नी जानुनी विशो मेऽअंगानि सर्वतः।।7।। नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जंघाभ्यां घर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।।8।। प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु। प्रत्यंगेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति**

तिष्ठामि पृष्ठे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे।।9।। त्रयो देवाऽएकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधसः। बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।।10।। प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽनुवाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्काराऽआहुतिभिराहुतयो मे कामान्समर्धयन्तु ।।11।। धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।।12।। त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँहिपाहि श्रृणुधीः गिरः। रक्षा तोकमुत्मना।।13।। (तदनन्तर वैदिक मार्जन मन्त्रों से –) 'ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः।1। ॐ ता न ऊर्जे दधातन।2। ॐ महेरणाय चक्षसे।3। ॐ यो वः शिवतमो रसः।4। ॐ तस्य भाजयते हनः।5। ॐ उशतीरिव मातरः।6। ॐ तस्मा अरंगमाम वः।7। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ।8। ॐ आपो जनयथा च नः।9। (तत्पश्चात् वैदिक शान्त्यादि मन्त्रों से –) ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।1।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽ भयं नः पशुभ्यः।।2।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।3।। आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।।4।। पंच नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।5।। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नऽआसुव।।6।।' (पौराणिक मार्जनमन्त्रों से –)

सुरास्त्वामभिसिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथः तथा संकर्षणो विभुः।1।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते। अखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।2।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।3।

कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः। बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः।4।
एतास्त्वामभिसिंचन्तु देवपत्न्यैः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।5।
ग्रहास्त्वामभिसिंचन्तु राहुकेतुश्च पूजिताः। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।6।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्यश्चाप्सरसां गणाः।7।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। सरितः सागराः शैलाः तीर्थानि जलदा नदाः।8।
एते त्वामभिसिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये। सिद्धिर्भवतु ते देव यशो वीर्यं च सर्वदा।9।

इति अभिषिच्य **अमृताभिषेकोऽस्तु** इति वदेयुः ।। ततः शान्तिपाठं ब्रूयुः ।

**ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।**
**ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः ।।**
**ॐ शन्तिः शान्तिः शान्तिः।।'**

**13.2 यजमान के तिलक, रक्षाबन्धन व आशीर्वादः**

*अथ तिलकः -*

**'आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये।।**
**श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।'**

*तिलक पर अक्षत लगायें –*

'येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्।।'

*अथ रक्षाबन्धनम् –*

'ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्य मानाः।
तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।'

*अथ आशीर्वादः –*

'ॐ पुनस्त्वा दित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्राह्मणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।1।। दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्।।2।। विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व। श्रद्धस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वामश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारपऽएधते गृहे।।3।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वास्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।4।। श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।5।। शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा। ऋद्धिरस्तुवृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः।।6।। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः। निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।7।।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।8।।
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रस्तथैव च। आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।।9।।'

### 13.3 यजमानपत्नी के रक्षाबन्धन व आशीर्वादः -

*अथ रक्षाबन्धनम् -*

'ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽधिरोचने दिवः।।'

*अथ आशीर्वादः -*

'ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मे दाः पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः सुषदा पश्चाद् देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः। विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि।।1।। यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे। तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षतिं मयि गृह्णाम्यक्षतिम्।।2।। श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।।3।।'

## 14 अथ प्रकीर्ण प्रकरणम्

### 14.1 अथ श्री दत्तात्रेयोपनिषत्

ओमिति व्याहरेत्। ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय स्मरणमात्रसंतुष्टाय महाभयनिवारणाय महाज्ञान प्रदाय चिदानन्दात्मने बालोन्मत्तपिशाचवेषायेति महायोगिनेऽवधूतायेति अनुसूयानन्दवर्धनायात्रि पुत्रायेति सर्वकामफलप्रदाय ओमिति व्याहरेत्। भयबन्धमोचनायेति ह्रीमिति व्याहरेत्। सकल विभूतिदायेति क्रोमिति व्याहरेत्। साध्याकर्षणायेति सौरिति व्याहरेत्। सर्वमनःक्षोभणायेति श्रीमिति व्याहरेत्। महोमिति व्याहरेत्। चिरञ्जीविने वषडिति व्याहरेत्। वशीकुरु वशीकुरु वौषडिति

व्याहरेत्। आकर्षयाकर्षय हुमिति व्याहरेत्। विद्वेषय विद्वेषय फडिति व्याहरेत्। उच्चााटयोच्चाटय ठठेति व्याहरेत्। स्तम्भय स्तम्भय खखेति व्याहरेत्। मारय मारय नमः संपन्नाय नमः संपन्नाय स्वाहा पोषय पोषय परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्राँश्छिन्धि छिन्धि ग्रहान्निवारय निवारय व्याधीन्निवारय निवारय दुःखं हरय हरय दारिद्र्यं विद्रावय विद्रावय देहं पोषय पोषय चित्तं तोषय तोषयेति सर्वमन्त्र सर्वयन्त्रसर्वतन्त्रसर्वपल्लवस्वरुपायेति ॐ नमः शिवायेत्युपनिषत् ।

**14.2 अथ श्री भगवती स्तोत्रम्**

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे ।
जय शुंभनिशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्त्तिहरे ।।
जय चन्द्र दिवाकर नेत्र धरे, जय पावक भूषित वक्त्र वरे ।
जय भैरव देह निलीन परे, जय अन्धक दैत्त्य विशेष करे ।।
जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तक पाप हरे ।
जय देवि पितामह विष्णु नते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते ।।
जय षण्मुख सायुध ईश नुते, जय सागरगामिनि शंभुनुते ।
जय दुःख दरिद्रविनाशकरे, जय पुत्र कलत्र विवृद्धि करे ।।
जय देवि समस्त शरीरधरे, जय नाक विदर्शिनि दुःख हरे ।
जय व्याधि विनाशिनि मोक्ष करे, जय वाञ्छितदायिनी सिद्धिवरे ।।
एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः । गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ।।

## 14.3 अथ श्री चण्डिका स्तोत्रम्

या देवी खड्गहस्ता सकलजनपदा व्यापिनी विश्वदुर्गा, श्यामाङ्गी शुक्लपाशा द्विजगणगणिता ब्रह्मदेहार्ध वासा ।
ज्ञानानां साधयन्ति यतिगिरिगमन ज्ञानदिव्य प्रबोधा, सा देवी दिव्य मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा।। 1 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं चर्ममुण्डे शवगमनहते भीषणे भीमवक्त्रे, क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्तिर्विकृतस्तनमुखे रौद्रदंष्ट्राकराले ।
ॐ कां कीं कूं कालधारि भ्रमसि जगदिदं भक्षयन्ति ग्रसन्ति, हुंकारोच्चारयन्ति प्रदहतुदुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा।। 2 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्र रुपे त्रिभुवननमिते पाशहस्ते त्रिनेत्रे, रां रीं रुं रङ्ग रङ्गे किलि किलितरवा शूलहस्ते प्रचण्डे ।
ॐ लां लीं लूं लम्बजिह्वे हसतिकहकहा शुद्धघोराट्टहासैः, कङ्काली कालरात्रिःप्रदहतुदुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा।। 3 ।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररुपे घघ घघ घटितेघुर्घुराराव घोरे, निर्मांषी शुष्कजंघे पिबतुनरवसा धूम्र धूम्रायमाने ।
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ति सकल भुवि तले यक्षगन्धर्व नागैः, क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्तिप्रदहतुदुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा।। 4 ।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं चण्डवर्गे हरिहरनमिते रुद्रमूर्तिश्च कीर्तिः, चन्द्रादित्यौ च कर्णौ जडमुकुटशिरोवेष्टितां केतुमालाम्।
स्त्रक्सर्वौ चोरगेन्द्रौ शशि किरणनिभा तारको हारकण्ठे, सा देवी दिव्यमूर्तिःप्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।। 5 ।।

ॐ खं खं खं खड्गहस्ते वरकनकनिभे सूर्यकान्ति स्वतेजो, विद्युज्ज्वालावलीनां नवनिशितमहा कृत्तिका दक्षिणेन् ।
वामेहस्ते कपालं वरविमल सुरापूरितं धारयन्ति, सा देवी दिव्य मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा।। 6 ।।

ॐ हुं हुं फट् कालरात्रिं रुरुसुरमथनी धूम्रमारी कुमारी, ह्रां ह्रीं ह्रूं हत्तिशोरौक्षपितुकिलिकिला शब्दअट्टाट्टहासे ।
हाहा भूतप्रभूते किलिकिलितमुखा कीलयन्ति ग्रसन्ति, हुंकारोच्चारयन्ति प्रदहतुदुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा ।। 7 ।।

ॐ भृङ्गी काली कपाली परिजनसहिते चण्डि चामुण्डनित्या, रों रों रोंकारनित्ये शशिकरधवले कालकूटेदुरन्ते।
हुं हुं हुंकारकारी सुरगणनमिते कालकारी विकारी, त्रैलोक्यं वश्यकारी प्रदहतुदुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा ।। 8 ।।
ॐ वन्दे दण्डप्रचण्डा डमरुरुणि मणिष्टोपटङ्कारघंटै, नृत्यन्ती याऽट्टपातैरटपटविभवैर्निर्मला मंत्रमाला।
सुक्षौ कुक्षौ वहन्ति खरखरित सखा चार्चिनिः प्रेतमाला, उच्चैस्तैश्चाट्टहासैर्घुरुघुरितरवा चर्ममुण्डा प्रचण्डा।। 9 ।।
ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखिगमना त्वं च देवी कुमारी, त्वं चक्री चक्रहस्ता घुरघुरितरवा त्वं वराहस्वरुपा।
रौद्रे त्वं चर्ममुण्डा सकलभुवि तले संस्थिते स्वर्गमार्गे, पाताले शैलश्रृंगे हरिहरनमिते देवि चण्डी नमस्ते।। 10 ।।
रक्ष त्वं मुण्डधारी गिरिगुहविवरे पर्वते निर्झरे वा, संग्रामे शत्रुमध्ये विश विश भविशे संकटे कुत्सिते वा ।
व्याघ्रे चौरे च सर्पेप्युदधि भूतले वह्निमध्ये च दुर्गे, रक्षेत्सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्ड प्रचण्डा ।। 11 ।।
इत्येवं बीजमन्त्रैः स्तवनमतिशिवं पातकव्याधिनाशम्, प्रत्यक्षं दिव्यरुपं ग्रहगणमथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ।
इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मंत्रशक्तिश्च नित्यम्, मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्रसिद्धिम् ।। 12 ।।
अनेन पाठेन चण्डिकास्तोत्रोक्तदेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्तां न मम् ।।

## 14.4 अथ देवीप्रशंसा

सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः, आदिदेवीमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम्।।
तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जपेत्, पटलं पद्धतिर्वर्म तथा नामसहस्त्रकम् ।।
स्तोत्राणि चेति पञ्चाङ्गम् देवतोपासने स्मृतम्, कवचं देवतागात्रं पटलं देवता शिरः ।।

पद्धतिर्देवहस्तौ तु मुखं साहस्त्रकं स्मृतम्, स्तोत्राणि देवतापादौ पञ्चाङ्गंपञ्चभिः स्मृतम् ।।
जपो होमस्तर्पणं च मार्जनं विप्रभोजनम्, आराधनं पञ्चविधं देवतानां प्रकीर्तितम् ।।
यथा पञ्चाङ्गैः सहितं त्वेशाङ्गं कथ्यते बुधैः, हृदयं दीपदानं च स्तवराजादिकं तथा ।।

दुर्गापूजन महात्म्यम् उक्तं च पाद्मे सृष्टिखण्डे -

भीष्म उवाचः-

चण्डिकाऽनुग्रहा दैत्या गताः शिष्टा रसातलम्, तद्वदस्व महाप्राज्ञ चण्डिकापूजने फलम् ।।
यथा संपूज्यते देवी तुष्टा यच्छति यत्फलम्, श्रोतुं कौतुहलं मेऽद्य तद्वदस्व सविस्तरम् ।।

पुलस्त्य उवाचः-

शृणुष्व नृप शार्दूल चण्डिकापूजने फलम्, तत्कृत्वा स्वर्गभुङ्मर्त्य पश्चान्मोक्षं लभेद् ध्रुवम् ।।
यत्पूजने फलं देव्या न तत्क्रतुशतैरपि, लभ्यते नितरां तात तीर्थदानव्रतादिभिः ।।
चण्डिकां पूजयेद्भक्त्या यो नरः प्रत्यहं नृप, न समस्तत्फलं वक्तुं साक्षोव: पितामहः।।
अश्वमेध सहस्राणि वाजपेयशतानि च, चण्डिकापूजनस्यैवलक्षांशेनापि नो समः ।।
स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थपः, यः सदा पूजयेुर्गां नानापुष्पानुलेपनैः ।।
धूपैर्दीपैस्तथा भोज्यैःप्रणमेद्वाऽपि भाविनीम्, स योगी स मुनिः श्रीमांस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता।।
वर्षमेकं तु यो दुर्गां पूजयेद्विजितेन्द्रियः, एकाहारो महाबाहो सोऽग्निष्टोमफलं लभेत् ।।
पौर्णमास्यां नवम्यां च अष्टम्यां नराधिप । स्नापयित्वा शुभां दुर्गां वाजपेयफलं लभेत् ।।

शुक्लपक्षे नवम्यां तु अष्टम्यां परमेश्वरीम्, त्रिकालं पूजयेद्यास्तु चतुर्दश्यां नराधिप ।।
स गच्छति परं स्थानं यत्र देवी व्यवस्थिता, क्रीडित्वा सुचिरं कालं राजा भवति भूतले ।।
नवम्यां सोपवासस्तु यः पूजयति चण्डिकाम्, दशानामश्वमेधानाम् फलं प्राप्नोति मानवः।।
जितेन्द्रियो ब्रह्मचारी शुचिर्भूत्वा तु यो नरः,चण्डिकां पूजयेद्भक्त्या स याति परमां गतिम् ।।
स्नानोपवासनियमैः पूजाजागरमार्जनैः, सर्वकालेषु सर्वेषु चाण्डिकां यः प्रपूजयेत् ।।
विमानवरमारुह्य ध्वजमालाकुलं नृप, ब्रह्मलोकं नरो गत्वा मोदते शाश्वतीः समाः।।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यथाविभवविस्तरैः, पूजयेत्सततं दुर्गां महापुण्यफलेच्छया ।।
अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखे नृप, मासैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यं विधिना पूज्य चाण्डिकाम् ।।
तत्फलं लभते वीर नवम्यां कार्त्तिकस्य तु, मासिचाश्वयुजे वीर शुक्लपक्षे त्रिशूलिनीम् ।।

**14.5 अथ चण्डिका मालामन्त्रः ।।**

ॐ अस्य श्रीचण्डिकामालामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीचण्डिका देवता, ॐ ह्रः बीजम्, ॐ सौं शक्तिः, ॐ ह्रौं कीलकम्, ॐ मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृत कायिकवाचिकमानसिक ज्ञाताज्ञात अखिलपापक्षयार्थं राजद्वारे सभायां व्यापारे यशोविजयलाभादिप्राप्तये आधिदैविक-आधिभौतिक-आध्यात्मिकत्रिविधपाप ताप उपशमनार्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्मीचिरकालसंरक्षणार्थं अप्राप्तविद्याप्राप्त्यर्थं प्राप्तविद्या चिरकालसंरक्षणार्थं अप्राप्तपदप्राप्त्यर्थं प्राप्तपदचिरकालसंरक्षणार्थं सर्वारिष्टशान्त्यर्थं सर्वाभीष्टप्राप्त्यर्थं मनोभिलषितकामना प्राप्त्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरुपिणी चण्डिकादेवताप्रसाद द्वारा जन्मलग्नतः

वर्षलग्नतः गोचरतः एकेचित चतुर्थ-अष्टम-द्वादश भावस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं यत्सर्वारिष्टं तत्श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रसाद द्वारा विनाशार्थं (शमनार्थं वा) अखिलपापतापरोगशोक-दुःखदारिद्र्यविनाशार्थं जरामृत्युपीडापरिहारार्थं मम (अमुकयजमानस्य वा ) शरीरेऽमुकपीडानिरासद्वारा मम (यजमानस्य) शरीरे स्थितस्य रोगस्य समूलनाशनेन अपमृत्युनिवारणार्थं क्षिप्रमारोग्यप्राप्त्यर्थं सद्यः आरोग्यताप्राप्त्यर्थं तथा च समस्त अभिलषितकामना सिद्ध्यर्थं विषमस्थानस्थितसकलारिष्टनिवृत्तये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरुपिणी चण्डिकादेवताप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजनवश्यार्थं श्रीचण्डिकामालामन्त्रजपे विनियोगः ।

अथ न्यासः

ॐ ह्रां फां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं फीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं फूं शिखायै वषट् ।

ॐ ह्रैं फैं कवचाय हुम् । ॐ ह्रौं फौं नेत्र त्रयाय वौषट् । ॐ ह्रः फः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घनश्यामलां मालादामविभूषितामभयदामार्द्रैकरक्षैः शुभैः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं वरमन्त्रराजसहितामानन्दपूर्णात्मिकां श्रीशैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे ॥

अथ माला मन्त्रः

ॐ ह्रः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री जय जय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविन्दे गायत्री सावित्री सरस्वती महि कृताभरणे भैरवरूपधारिणी प्रकटित दंष्ट्रोग्रवदने घोराननयने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते महाट्टहासाद्धवलीकृतदिगन्तरे सर्वयुगपरि पूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीये भूतवेतालपरिवृते प्रकम्पितधराधरे

मधुकैटभमहिषासुरधूम्रलोचन चण्डमुण्डरक्तबीज शुम्भनिशुम्भदैत्यनिकृते कालरात्रि महामाये शिवे नित्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्रि आग्नेयि नैऋति वारुणि वायव्ये कौबेरि ईशान्येब्रह्मविष्णुशिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके माहेश्वरी कौमारी वाराहीन्द्राणी ईशानी महालक्ष्मी इति स्थिते महोग्रविषमहाविषोरगफणामणिमुकुटरत्नमहाज्वालामल मणिमहाहिहारबाहुकहोत्तमाङ्गनवरत्ननिधिकोटितत्वबाहुजिहवा वाणीशब्दस्पर्शरुपरसगन्धात्मिके क्षितिसाहसमध्यस्थिते महोज्ज्वलमहाविषोपविषगन्धर्व विद्याधराधिपते ।। ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लींकारा हस्ते ॐ आं ह्रीं क्रौं अनग्नेऽनग्ने पाते प्रवेशय प्रवेशय ॐ द्रां द्रीं शोषय शोषय ॐ द्रां द्रीं होमय होमय ॐ क्लां क्लीं दीपय दीपय ॐ ब्लूं ब्लूं संतापय संतापय ॐ सौं सौं उन्मादय उन्मादय ॐ म्लैं म्लैं मोहय मोहय ॐखां खां शोधय शोधय ॐ द्यां द्यां उन्मादय उन्मादय ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय आवेशय ॐस्त्रीं स्त्रीं उच्छादय उच्छादय ॐस्त्रीं स्त्रीं आकर्षय आकर्षय ॐ हुं हुं आस्फोटय आस्फोटय ॐ त्रुं त्रुं त्रोटय त्रोटय ॐ छां छां छेदय छेदय ॐ कूं कूं उच्चाटय उच्चाटय ॐ हूं हूं हन हन ॐ ह्रीं ह्रीं मारय मारय ॐघ्रीं घ्रीं घर्षय घर्षय ॐ स्वीं स्वीं विध्वंसय विध्वंसय ॐ प्लूं प्लूं प्लावय प्लावय ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय भ्रामय ॐ म्रां म्रां दर्शय दर्शय ॐ दां दां दिशो बन्धय दिशो बन्धय ॐ दीं दीं वर्त्तिनामेकाग्रचित्ता विशिकुरुतेऽङ्गे ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐफ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा मम सकलमनोरथं देहि देहि सर्वोपद्रवं निवारय निवारय अमुकं वशं कुरु कुरु भूतप्रेतपिशाचबह्मराक्षसयक्ष यमदूतशाकिनीसर्पश्वापद तस्करादिकं नाशय नाशय मारय मारय भञ्जय भञ्जय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा ।। जपो नित्यं एक विंशति शतं जप पूर्वकं आदौ सुवासिन्याः पूजां कृत्वा पश्चाज्जपं कुर्य्यात् । एवमेकविंशतिशतजाप्येन स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा, राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रुसंकटे । शत्रोरुच्चाटने चैव सर्वकार्याणि साधयेत् ।। अनेन अथर्वणागमसंहितोक्तेन चण्डिकामालामन्त्रनिरुपणोक्तेन पाठेन अनादिशक्तिचण्डिकामालामन्त्रदेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।

## 14.6 अथ श्री देवीसहस्रनामावलिः

**ॐ अस्य श्रीदुर्गासहस्रनामस्तोत्रस्य भगवान्महादेवर्षिः, अनुष्टुप्छन्दः, भगवती दुर्गादेवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीदुर्गा कृपाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

अथ ऋष्यादिन्यासः -

**ॐ भगवान्महादेवर्षये नमः - शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः - मुखे, ॐ श्रीभगवती दुर्गादेवतायै नमः -हृदये , ॐ ऐं बीजाय नमः - गुह्ये, ॐ ह्रीं शक्तये नमः - पादयोः, ॐ क्लीं कीलकाय नमः - नाभौ, ॐ श्रीदुर्गाकृपाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।**

| | अथ करन्यासः | अथ अंगन्यासः |
|---|---|---|
| ॐ ऐं नमः | अंगुष्ठाभ्यां नमः | हृदयाय नमः |
| ॐ ह्रीं नमः | तर्जनीभ्यां नमः | शिरसे स्वाहा |
| ॐ क्लीं नमः | मध्यमाभ्यां नमः | शिखायै वषट् |
| ॐ ऐं नमः | अनामिकाभ्यां नमः | कवचाय हुम् |
| ॐ ह्रीं नमः | कनिष्ठिकाभ्यां नमः | नेत्रत्रयाय वौषट् |
| ॐ क्लीं नमः | करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः | अस्त्राय फट् |

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम् -

'ॐ ह्रीं कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां, शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं, ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

001 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाविद्यायै नमः
002 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जगन्मात्रे नमः
003 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः
004 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवप्रियायै नमः
005 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विष्णुमायायै नमः
006 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शुभायै नमः
007 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शान्तायै नमः
008 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धायै नमः
009 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धसरस्वत्यै नमः
010 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षमायै नमः
011 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कान्त्यै नमः
012 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रभायै नमः
013 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्योत्स्नायै नमः
014 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पार्वत्यै नमः
015 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वमंगलायै नमः
016 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हिंगुलायै नमः
017 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डिकायै नमः
018 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दान्तायै नमः
019 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्मायै नमः
020 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लक्ष्म्यै नमः
021 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हरिप्रियायै नमः
022 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिपुरानन्दिन्यै नमः
023 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नन्दायै नमः
024 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुनन्दायै नमः
025 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरवन्दितायै नमः
026 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यज्ञविद्यायै नमः
027 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महामायायै नमः
028 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदमात्रे नमः
029 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुधायै नमः
030 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धृत्यै नमः
031 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीत्यै नमः
032 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रियायै नमः
033 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रसिद्धायै नमः
034 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृडान्यै नमः
035 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विन्ध्यवासिन्यै नमः
036 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धविद्यायै नमः
037 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाशक्त्यै नमः
038 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पृथ्व्यै नमः
039 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नारदसेवितायै नमः

040 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुरुहूतप्रियायै नमः
041 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कान्त्यै नमः
042 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामिन्यै नमः
043 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्मलोचनायै नमः
044 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रह्लादिन्यै नमः
045 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महामात्रे नमः
046 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दुर्गमायै नमः
047 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दुर्गार्तिनाशिन्यै नमः
048 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्वालामालिन्यै नमः
049 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुगोत्रायै नमः
050 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्योत्यै नमः
051 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुमुदवासिन्यै नमः
052 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दुर्गमायै नमः
053 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दुर्लभायै नमः
054 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विद्यायै नमः
055 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वर्गत्यै नमः
056 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुरवासिन्यै नमः
057 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपर्णायै नमः
058 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शाम्बर्यै नमः
059 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मायायै नमः
060 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मदिरायै नमः
061 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृदुहासिन्यै नमः
062 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नारायण्यै नमः
063 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महानिद्रायै नमः
064 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं योगनिद्रायै नमः
065 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रभावत्यै नमः
066 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रज्ञायै नमः
067 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपरिमितायै नमः
068 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्राज्ञायै नमः
069 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तारायै नमः
070 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मधुमत्यै नमः
071 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मधवे नमः
072 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षीरार्णवसुतायै नमः
073 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बालायै नमः
074 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बालिकायै नमः
075 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिंहगामिन्यै नमः
076 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ॐकारायै नमः
077 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुधाकारायै नमः
078 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चेतनायै नमः
079 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोपनायै नमः
080 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षित्यै नमः
081 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अर्धबिन्दुधरायै नमः
082 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धीरायै नमः
083 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विश्वमात्रे नमः
084 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कलावत्यै नमः
085 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्मावत्यै नमः
086 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुवस्त्रायै नमः
087 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रवृद्धायै नमः

088 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सरस्वत्यै नमः
089 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जितमात्रे नमः
090 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जितेन्द्रायै नमः
091 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शारदायै नमः
092 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हंसवाहिन्यै नमः
093 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुण्डासनायै नमः
094 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जगद्धात्र्यै नमः
095 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बुद्धमात्रे नमः
096 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जनेश्वर्यै नमः
097 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं राजलक्ष्म्यै नमः
098 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वषट्कारायै नमः
099 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुधाकारायै नमः
100 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुधात्मिकायै नमः
101 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं राजनित्यै नमः
102 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रयीवार्तायै नमः
103 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दण्डनीत्यै नमः
104 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रियावृत्त्यै नमः
105 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सद्भूत्यै नमः
106 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तारिण्यै नमः
107 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रद्धायै नमः
108 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सद्गत्यै नमः
109 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्परायणायै नमः
110 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिन्धवे नमः
111 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मन्दाकिन्यै नमः
112 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गंगायै नमः
113 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यमुनायै नमः
114 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सरस्वत्यै नमः
115 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गोदावर्यै नमः
116 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विपाशायै नमः
117 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कावेर्यै नमः
118 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शतह्रदायै नमः
119 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शरय्वै नमः
120 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रभागायै नमः
121 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कौशिक्यै नमः
122 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गण्डक्यै नमः
123 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवायै नमः
124 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नर्मदायै नमः
125 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कर्मनाशायै नमः
126 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चर्मण्वत्यै नमः
127 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदिकायै नमः
128 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेत्रवत्यै नमः
129 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वितस्तायै नमः
130 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरदायै नमः
131 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरवाहनायै नमः
132 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यै नमः
133 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पतिव्रतायै नमः
134 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं साध्व्यै नमः
135 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुचक्षुषे नमः

136 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुण्डवासिन्यै नमः
137 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एकचक्षुषे नमः
138 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सहस्राक्ष्यै नमः
139 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुश्रोण्यै नमः
140 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भगमालिन्यै नमः
141 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सेनाश्रेण्यै नमः
142 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पताकायै नमः
143 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सव्यूहायै नमः
144 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं युद्धकांक्षिण्यै नमः
145 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पताकिन्यै नमः
146 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दयायै नमः
147 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रम्भायै नमः
148 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विपञ्च्यै नमः
149 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पंचमप्रियायै नमः
150 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं परायै नमः
151 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं परकलायै नमः
152 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कान्तायै नमः
153 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिशक्त्यै नमः
154 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मोक्षदायिन्यै नमः
155 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐन्द्र्यै नमः
156 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं माहेश्वर्यै नमः
157 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्राह्म्यै नमः
158 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कौमार्यै नमः
159 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कमलासनायै नमः
160 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इच्छायै नमः
161 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भगवत्यै नमः
162 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धेन्वै नमः
163 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामधेन्वै नमः
164 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृपावत्यै नमः
165 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वज्रायुधायै नमः
166 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वज्रहस्तायै नमः
167 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्ड्यै नमः
168 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डपराक्रमायै नमः
169 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गौर्यै नमः
170 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुवर्णवर्णायै नमः
171 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्थितिसंहारकारिण्यै नमः
172 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एकायै नमः
173 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनेकायै नमः
174 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महेज्यायै नमः
175 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शतबाहवे नमः
176 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाभुजायै नमः
177 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भुजंगभूषणायै नमः
178 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भूषायै नमः
179 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं षट्चक्रक्रमवासिन्यै नमः
180 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं षट्चक्रभेदिन्यै नमः
181 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्यामायै नमः
182 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कायस्थायै नमः
183 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कायवर्जितायै नमः

184 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुस्मितायै नमः
185 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुमुख्यै नमः
186 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षामायै नमः
187 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूलप्रकृत्यै नमः
188 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईश्वर्यै नमः
189 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अजायै नमः
190 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बहुवर्णायै नमः
191 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै नमः
192 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्तायै नमः
193 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नीलायै नमः
194 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सितायै नमः
195 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्यामायै नमः
196 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृष्णायै नमः
197 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पीतायै नमः
198 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कर्बुरायै नमः
199 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षुधायै नमः
200 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तृष्णायै नमः
201 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जरायै नमः
202 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वृद्धायै नमः
203 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तरुण्यै नमः
204 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करुणालयायै नमः
205 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कलायै नमः
206 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काष्ठायै नमः
207 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मुहूर्तायै नमः
208 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निमेषायै नमः
209 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालरूपिण्यै नमः
210 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुवर्णायै नमः
211 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रसनायै नमः
212 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नासायै नमः
213 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चक्षुषे नमः
214 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्पर्शवत्यै नमः
215 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रसायै नमः
216 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गन्धप्रियायै नमः
217 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुगन्धायै नमः
218 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुस्पर्शायै नमः
219 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मनोगत्यै नमः
220 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृगनाभ्यै नमः
221 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृगाक्ष्यै नमः
222 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कर्पूरामोदधारिण्यै नमः
223 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्मयोन्यै नमः
224 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुकेश्यै नमः
225 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुलिंगिन्यै नमः
226 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भगरूपिण्यै नमः
227 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं योनिमुद्रायै नमः
228 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महामुद्रायै नमः
229 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं खेचर्यै नमः
230 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वर्गगामिन्यै नमः
231 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मधुश्रियै नमः

232 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं माधवीवल्ल्यै नमः 233 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मधुमत्तायै नमः 234 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मदोद्धतायै नमः
235 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मातंग्यै नमः 236 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शुकहस्तायै नमः 237 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुष्पबाणायै नमः
238 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईक्षुचापिण्यै नमः 239 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्ताम्बरधराक्ष्यै नमः 240 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्तपुष्पावतंसिन्यै नमः
241 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शुभ्राम्बरधरायै नमः 242 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आधारायै नमः 243 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाश्वेतायै नमः
244 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वसुप्रियायै नमः 245 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुवेण्यै नमः 246 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्महस्तायै नमः
247 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मुक्ताहारविभूषणायै नमः 248 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कर्पूरामोदिन्यै नमः 249 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्वासायै नमः
250 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्मिन्यै नमः 251 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्ममन्दिरायै नमः 252 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं खड्गिन्यै नमः
253 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चक्रहस्तायै नमः 254 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भुशुण्डीपरिघायुधायै नमः 255 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चापिन्यै नमः
256 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पाशहस्तायै नमः 257 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिशूलवरधारिण्यै नमः 258 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुबाणायै नमः
259 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शक्तिहस्तायै नमः 260 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मयूरवरवाहनायै नमः 261 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरायुधधरायै नमः
262 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धीरायै नमः 263 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वीरपानमदोत्कटायै नमः 264 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वसुधायै नमः
265 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वसुधारायै नमः 266 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयायै नमः 267 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शाकम्भर्यै नमः
268 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवायै नमः 269 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विजयायै नमः 270 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयन्त्यै नमः
271 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुस्तन्यै नमः 272 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शत्रुनाशिन्यै नमः 273 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कूर्मायै नमः
274 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुपर्वायै नमः 275 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाक्ष्यै नमः 276 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामवन्दितायै नमः
277 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जालन्धरायै नमः 278 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनन्तायै नमः 279 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामरूपनिवासिन्यै नमः

280 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अन्तर्वर्त्यै नमः 281 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं देवशक्त्यै नमः 282 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरदायै नमः
283 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरधारिण्यै नमः 284 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शीतलायै नमः 285 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुशीलायै नमः
286 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बालग्रहविनाशिन्यै नमः 287 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामबीजवत्यै नमः 288 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यायै नमः
289 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यधर्मपरायणायै नमः 290 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्थूलमार्गस्थितायै नमः 291 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूक्ष्मायै नमः
292 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूक्ष्मबुद्ध्यै नमः 293 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रबोधिन्यै नमः 294 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं षट्कोणायै नमः
295 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिकोणायै नमः 296 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्र्यक्षायै नमः 297 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
298 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वृषप्रियायै नमः 299 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वृषारूढायै नमः 300 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महिषासुरघातिन्यै नमः
301 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शुम्भदर्पहरायै नमः 302 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दृप्तायै नमः 303 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीप्तपावकसन्निभायै नमः
304 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कपालभूषणायै नमः 305 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काल्यै नमः 306 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कपालवरधारिण्यै नमः
307 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कपालकुण्डलायै नमः 308 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीर्घायै नमः 309 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवदूत्यै नमः
310 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं घनस्वन्यै नमः 311 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धिदायै नमः 312 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बुद्धिदायै नमः
313 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नित्यायै नमः 314 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यमार्गप्रबोधिन्यै नमः 315 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूलाधारायै नमः
316 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निराकारायै नमः 317 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वह्निकुण्डकृताश्रयायै नमः 318 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वायुकण्डासनासिन्यै नमः
319 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निराधारायै नमः 320 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निराश्रयायै नमः 321 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कम्बुग्रीवायै नमः
322 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वसुमत्यै नमः 323 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं छत्रछायाकृतालयायै नमः 324 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुण्डलिन्यै नमः
325 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जगद्गर्भायै नमः 326 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भुजंगाकारशायिन्यै नमः 327 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै नमः

| | | |
|---|---|---|
| 328 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नाभिनालमृणालिकायै नमः | 329 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वल्लितन्तुसमुत्थानायै नमः | 330 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं षड्रसास्वादलोलुपायै नमः |
| 331 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्वासोच्छ्वासगतये नमः | 332 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जिह्वाग्राहिण्यै नमः | 333 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वनसंश्रयायै नमः |
| 334 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तपस्विन्यै नमः | 335 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तपःसिद्धायै नमः | 336 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तपस्यै नमः |
| 337 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तपःप्रियायै नमः | 338 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तपोनिष्ठायै नमः | 339 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तपोयुक्तायै नमः |
| 340 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तपसःसिद्धिदायिन्यै नमः | 341 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सप्तधातुमयीमूर्त्यै नमः | 342 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सप्तधात्वन्तराश्रयायै नमः |
| 343 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं देहपुष्ट्यै नमः | 344 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मनस्तुष्ट्यै नमः | 345 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रत्नपुष्ट्यै नमः |
| 346 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बलोद्धातायै नमः | 347 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं औषध्यै नमः | 348 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैद्यमात्रे नमः |
| 349 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रव्यशक्त्यै नमः | 350 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रभाविन्यै नमः | 351 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैद्यविद्यायै नमः |
| 352 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चिकित्सायै नमः | 353 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुपथ्यायै नमः | 354 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रोगनाशिन्यै नमः |
| 355 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृगयायै नमः | 356 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृगमांसादायै नमः | 357 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृगत्वचे नमः |
| 358 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृगलोचनायै नमः | 359 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वागुरायै नमः | 360 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बन्धरूपायै नमः |
| 361 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधरूपायै नमः | 362 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधोद्यतायै नमः | 363 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वन्दिन्यै नमः |
| 364 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वन्दिस्तुताकारायै नमः | 365 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काराबन्धविमोचिकायै नमः | 366 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शृंखलायै नमः |
| 367 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कलहायै नमः | 368 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विद्यायै नमः | 369 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दृढबन्धविमोक्षिण्यै नमः |
| 370 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अम्बिकायै नमः | 371 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अम्बालिकायै नमः | 372 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अम्बायै नमः |
| 373 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वस्थायै नमः | 374 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं साधुजनार्चितायै नमः | 375 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कौलिक्यै नमः |

| | | |
|---|---|---|
| 376 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुलविद्यायै नमः | 377 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुकुलायै नमः | 378 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुलपूजितायै नमः |
| 379 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कालचक्रभ्रमायै नमः | 380 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रान्तायै नमः | 381 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विभ्रमायै नमः |
| 382 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रमनाशिन्यै नमः | 383 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वात्याल्यै नमः | 384 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मेघमालायै नमः |
| 385 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुवृष्ट्यै नमः | 386 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सस्यवर्धिन्यै नमः | 387 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अकारायै नमः |
| 388 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इकारायै नमः | 389 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उकारायै नमः | 390 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐंकाररूपिण्यै नमः |
| 391 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रींकारबीजरूपायै नमः | 392 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लींकाराम्बररूपिण्यै नमः | 393 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वाक्षरमयीशक्त्यै नमः |
| 394 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अक्षरार्णवमालिन्यै नमः | 395 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिन्दूरायै नमः | 396 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अरुणवर्णायै नमः |
| 397 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिन्दूरतिलकप्रियायै नमः | 398 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वश्यायै नमः | 399 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वश्यबीजायै नमः |
| 400 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लोकवश्यविभाविन्यै नमः | 401 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नृपवश्यायै नमः | 402 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नृपसेव्यायै नमः |
| 403 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नृपवश्यकर्यै नमः | 404 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रियायै नमः | 405 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महिष्यै नमः |
| 406 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नृपमान्यायै नमः | 407 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नृपाज्ञायै नमः | 408 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नृपनन्दिन्यै नमः |
| 409 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नृपधर्ममय्यै नमः | 410 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धन्यायै नमः | 411 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धनधान्यविवर्धिन्यै नमः |
| 412 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चातुर्वर्ण्यमय्यै नमः | 413 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नीत्यै नमः | 414 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुर्वर्णैः पूजितायै नमः |
| 415 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वधर्ममयीशक्त्यै नमः | 416 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुराश्रमवासिन्यै नमः | 417 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्राह्मण्यै नमः |
| 418 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षत्रियायै नमः | 419 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैश्यायै नमः | 420 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शूद्रायै नमः |
| 421 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आचारवरवर्णजायै नमः | 422 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदमार्गरतायै नमः | 423 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यज्ञायै नमः |

| | | |
|---|---|---|
| 424 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदविश्वविभाविन्यै नमः | 425 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्रशस्त्रधारिण्यै नमः | 426 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै नमः |
| 427 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुमेधायै नमः | 428 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यमेधायै नमः | 429 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः भद्रकाल्यै नमः |
| 430 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपराजितायै नमः | 431 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गायत्र्यै नमः | 432 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुकृत्यै नमः |
| 433 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सन्ध्यायै नमः | 434 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सावित्र्यै नमः | 435 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिपदाश्रयायै नमः |
| 436 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिसन्ध्यायै नमः | 437 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिपदायै नमः | 438 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धात्र्यै नमः |
| 439 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुस्वरायै नमः | 440 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सामगायिन्यै नमः | 441 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पांचाल्यै नमः |
| 442 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालिकायै नमः | 443 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बालायै नमः | 444 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बालक्रीडायै नमः |
| 445 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सनातन्यै नमः | 446 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गर्भधारायै नमः | 447 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धरायै नमः |
| 448 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शून्यायै नमः | 449 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गर्भाशयनिवासिन्यै नमः | 450 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरारिघातिन्यै नमः |
| 451 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृत्यायै नमः | 452 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पूतनायै नमः | 453 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तिलोत्तमायै नमः |
| 454 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लज्जायै नमः | 455 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रसवत्यै नमः | 456 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नन्दायै नमः |
| 457 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भवान्यै नमः | 458 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पापनाशिन्यै नमः | 459 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पट्टाम्बरधरायै नमः |
| 460 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गीतायै नमः | 461 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुगीतायै नमः | 462 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गानगोचरायै नमः |
| 463 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सप्तस्वरमयीतन्त्र्यै नमः | 464 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं षड्जमध्यमधैवतायै नमः | 465 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूर्च्छनाग्रामसंस्थायै नमः |
| 466 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वस्थानायै नमः | 467 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वस्थानवासिन्यै नमः | 468 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शत्रुमार्गायै नमः |
| 469 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादेव्यै नमः | 470 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैष्णव्यै नमः | 471 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुलपुत्रिकायै नमः |

472 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अट्टाट्टहासिन्यै नमः
473 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रेतायै नमः
474 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रेतासननिवासिन्यै नमः
475 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गीतनृत्यप्रियायै नमः
476 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामायै नमः
477 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तुष्टिदायै नमः
478 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुष्टिदायै नमः
479 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षमायै नमः नमः
480 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निष्ठायै नमः
481 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यप्रियायै नमः
482 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रज्ञायै नमः
483 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लोकेशायै नमः
484 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरोत्तमायै नमः
485 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सविषायै नमः
486 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्वालिन्यै नमः
487 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्वालायै नमः
488 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विषमोहार्तिनाशिन्यै नमः
489 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विषायै नमः
490 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नागदमन्यै नमः
491 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुरुकुल्लायै नमः
492 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अमृतोद्भवायै नमः
493 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भूतभीतिहरायै नमः
494 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्षायै नमः
495 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भूतावेशनिवासिन्यै नमः
496 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्षोघ्न्यै नमः
497 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं राक्षस्यै नमः
498 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रात्र्यै नमः
499 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीर्घनिद्रायै नमः
500 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दिवागत्यै नमः
501 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रिकायै नमः
502 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रकान्त्यै नमः
503 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूर्यकान्त्यै नमः
504 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निशाचर्यै नमः
505 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं डाकिन्यै नमः
506 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शाकिन्यै नमः
507 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिक्षायै नमः
508 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हाकिन्यै नमः
509 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चक्रवर्तिन्यै नमः
510 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवायै नमः
511 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवप्रियायै नमः
512 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वांगायै नमः
513 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सकलायै नमः
514 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वनदेवतायै नमः
515 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गुरुरूपधरायै नमः
516 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गुर्व्यै नमः
517 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृत्युमार्यै नमः
518 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विशारदायै नमः
519 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महामार्यै नमः

520 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विनिद्रायै नमः
521 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तन्द्रायै नमः
522 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृत्युविनाशिन्यै नमः
523 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रमण्डलसंकाशायै नमः
524 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै नमः
525 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अणिमादिगुणोपेतायै नमः
526 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुस्पृहायै नमः
527 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामरूपिण्यै नमः
528 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अष्टसिद्धिप्रदायै नमः
529 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रौढायै नमः
530 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दुष्टदानवघातिन्यै नमः
531 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनादिनिधनायै नमः
532 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुष्ट्यै नमः
533 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुर्बाहायै नमः
534 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुर्मुख्यै नमः
535 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुःसमुद्रवसनायै नमः
536 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुर्वर्गफलदायै नमः
537 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काशपुष्पप्रतीकाशायै नमः
538 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शरत्कुमुदलोचनायै नमः
539 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भूतभव्यभविष्यायै नमः
540 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शैलजायै नमः
541 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शैलवासिन्यै नमः
542 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वाममार्गरतायै नमः
543 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वामायै नमः
544 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिववामांगवासिन्यै नमः
545 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वामाचारप्रियायै नमः
546 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तुष्ट्यै नमः
547 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लोपामुद्रायै नमः
548 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रबोधिन्यै नमः
549 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भूतात्मने नमः
550 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं परमात्मने नमः
551 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भूतभावविभाविन्यै नमः
552 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मंगलायै नमः
553 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुशीलायै नमः
554 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं परमार्गप्रबोधिन्यै नमः
555 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षायै नमः
556 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षिणामूर्त्यै नमः
557 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुदक्षायै नमः
558 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हरिप्रियायै नमः
559 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं योगिन्यै नमः
560 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं योगनिद्रायै नमः
561 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं योगांगध्यानशालिन्यै नमः
562 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं योगपट्टधरायै नमः
563 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मुक्तायै नमः
564 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मुक्तानां परमागतये नमः नमः
565 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नारसिंह्यै नमः
566 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुजन्मने नमः
567 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः

568 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धर्मदायै नमः
569 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धनदायै नमः
570 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामदायै नमः
571 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मोक्षदायै नमः
572 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्युतये नमः
573 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं साक्षिण्यै नमः
574 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षणदायै नमः
575 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आकांक्षायै नमः
576 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षजायै नमः
577 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोटिरूपिण्यै नमः
578 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रतवे नमः
579 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कात्यायन्यै नमः
580 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वस्थायै नमः
581 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वच्छन्दायै नमः
582 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कविप्रियायै नमः
583 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यागमायै नमः
584 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बहिःस्थायै नमः
585 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काव्यशक्त्यै नमः
586 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कवित्वदायै नमः
587 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मेनापुत्र्यै नमः
588 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यै नमः
589 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं साध्व्यै नमः
590 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मैनाकभगिन्यै नमः
591 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तडिते नमः
592 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौदामिन्यै नमः
593 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुधामायै नमः
594 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुधाम्न्यै नमः
595 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धामशालिन्यै नमः
596 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौभाग्यदायिन्यै नमः
597 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दिवे नमः
598 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुभगायै नमः
600 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्युतिवर्धिन्यै नमः
600 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रियै नमः
601 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रियै नमः
602 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृतिवसनायै नमः
603 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृत्तिकायै नमः
604 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालनाशिन्यै नमः
605 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्तबीजवधोयुक्तायै नमः
606 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुतन्तवे नमः
607 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बीजसन्तत्यै नमः
608 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जगज्जीवायै नमः
609 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जगद्बीजायै नमः
610 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः
611 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामीकरायै नमः
612 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रायै नमः
613 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं साक्षात्षोडशीकलायै नमः
614 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यत्तत्पदानुबन्धायै नमः
615 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यक्षिण्यै नमः

616 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धनदार्चितायै नमः
617 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चित्रिण्यै नमः
618 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चित्रमायायै नमः
619 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विचित्रायै नमः
620 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः
621 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै नमः
622 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मुण्डहस्तायै नमः
623 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डवधोद्यतायै नमः
624 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अष्टम्यै नमः
625 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एकादश्यै नमः
626 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पूर्णायै नमः
627 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नवम्यै नमः
628 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुर्दश्यै नमः
629 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उमायै नमः
630 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कलशहस्तायै नमः
631 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पूर्णकुम्भधरायै नमः
632 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धरायै नमः
633 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अभीरवे नमः
634 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भैरव्यै नमः
635 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भीरवे नमः
636 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भीमायै नमः
637 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिपुरभैरव्यै नमः
638 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाचण्डायै नमः
639 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रौद्रायै नमः
640 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाभैरवपूजितायै नमः
641 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निर्मुण्डायै नमः
642 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हस्तिन्यै नमः
643 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डायै नमः
644 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करालदशनाननायै नमः
645 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करालायै नमः
646 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विकरालायै नमः
647 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं घोरघर्घरनादिन्यै नमः
648 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्तदन्तायै नमः
649 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊर्ध्वकेश्यै नमः
650 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बन्धूककुसुमारुणायै नमः
651 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कादम्बर्यै नमः
652 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पलाशायै नमः
653 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काश्मीरकुंकुमप्रियायै नमः
654 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षान्त्यै नमः
655 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बहुसुवर्णायै नमः
656 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रत्यै नमः
657 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बहुसुवर्णदायै नमः
658 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मातंगिन्यै नमः
659 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरारोहायै नमः
660 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मत्तमातंगगामिन्यै नमः
661 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हंसायै नमः
662 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हंसगत्यै नमः
663 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हंस्यै नमः

664 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हंसोज्ज्वलशिरोरुह्यै नमः 665 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पूर्णचन्द्रप्रतीकाशायै नमः 666 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्मितास्यायै नमः

667 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुकुण्डलायै नमः 668 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मष्यै नमः 669 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लेखन्यै नमः

670 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लेखायै नमः 671 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुलेखायै नमः 672 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लेखकप्रियायै नमः

673 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शंखिन्यै नमः 674 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शंखहस्तायै नमः 675 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जलस्थायै नमः

676 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जलदेवतायै नमः 677 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुरुक्षेत्रायै नमः 678 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वन्यै नमः

679 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काश्यै नमः 680 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मथुरायै नमः 681 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कांच्यै नमः

682 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अवन्तिकायै नमः 683 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अयोध्यायै नमः 684 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्वारकायै नमः

685 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मायायै नमः 686 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तीर्थायै नमः 687 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तीर्थकर्यै नमः

688 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रियायै नमः 689 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिपुरायै नमः 690 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अप्रमेयायै नमः

691 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोशस्थायै नमः 692 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोशवासिन्यै नमः 693 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कौशिक्यै नमः

694 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुशावर्तायै नमः 695 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोशाम्बायै नमः 696 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोशवर्धिन्यै नमः

697 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोशदायै नमः 698 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पद्मकोशाक्ष्यै नमः 699 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुसुम्भकुसुमप्रियायै नमः

700 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तोतुलायै नमः 701 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वर्तुलायै नमः 702 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोट्यै नमः

703 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोटस्थायै नमः 704 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कोटराश्रयायै नमः 705 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वयम्भुवे नमः

706 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वरूपायै नमः 707 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरूपायै नमः 708 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रूपवर्धिन्यै नमः

709 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तेजस्विन्यै नमः 710 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुदीक्षायै नमः 711 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बलदायै नमः

712 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बलदायिन्यै नमः
713 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकोशायै नमः
714 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महागर्तायै नमः
715 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बुद्धये नमः
716 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सदसदात्मिकायै नमः
717 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाग्रहहरायै नमः
718 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौम्यायै नमः
719 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विशोकायै नमः
720 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लोकनाशिन्यै नमः
721 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सात्त्विकायै नमः
722 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्त्वसंस्थायै नमः
723 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं राजस्यै नमः
724 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रजोत्तमायै नमः
725 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तामस्यै नमः
726 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तमोयुक्तायै नमः
727 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गुणत्रयविभाविन्यै नमः
728 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अव्यक्तायै नमः
729 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्यक्तरूपायै नमः
730 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदविद्यायै नमः
731 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शाम्भव्यै नमः
732 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कल्याण्यै नमः
733 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शांकर्यै नमः
734 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कल्पायै नमः
735 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मनःसंकल्पसंतत्यै नमः
736 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वलोकमयीशक्त्यै नमः
737 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वश्रवणगोचरायै नमः
738 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वज्ञानवत्यै नमः
739 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वांछायै नमः नमः
740 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वप्रबोधिन्यै नमः
741 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जागृत्यै नमः
742 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुषुप्त्यै नमः
743 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वप्नावस्थायै नमः
744 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तुरीयकायै नमः
745 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्वरायै नमः
746 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मन्दगतये नमः
747 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मन्दायै नमः
748 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मदिरामोदमोदिन्यै नमः
749 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पानभूम्यै नमः
750 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पानपात्रायै नमः
751 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पानदानकरोद्यतायै नमः
752 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आघूर्णायै नमः
753 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अरुणनेत्रायै नमः
754 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं किंचिदव्यक्तभाषिण्यै नमः
755 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आशापूरायै नमः
756 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीक्षायै नमः
757 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीक्षादीक्षितपूजितायै नमः
758 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नागवल्ल्यै नमः
759 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नागकन्यायै नमः

760 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भोगिन्यै नमः
761 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भोगवल्लभायै नमः
762 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वशास्त्रमय्यै नमः
763 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुस्मृत्यै नमः
764 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धर्मवादिन्यै नमः
765 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रुतिस्मृतिधरायै नमः
766 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्येष्ठायै नमः
767 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रेष्ठायै नमः
768 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पातालवासिन्यै नमः
769 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मीमांसायै नमः
770 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तर्कविद्यायै नमः
771 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुभक्त्यै नमः
772 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भक्तवत्सलायै नमः
773 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुनाभ्यै नमः
774 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यातनायै नमः
775 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यात्यै नमः
776 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गम्भीरायै नमः
777 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अभाववर्जितायै नमः
778 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नागपाशधरामूर्त्यै नमः
779 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अगाधायै नमः
780 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नागकुण्डलायै नमः
781 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुचक्रायै नमः
782 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चक्रमध्यस्थायै नमः
783 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चक्रकोणनिवासिन्यै नमः
784 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वमन्त्रमय्यै नमः
785 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विद्यायै नमः
786 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वमन्त्राक्षरायै नमः
787 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मधुश्रवसे नमः
788 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्रवन्त्यै नमः
789 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रामर्यै नमः
790 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रमरालयायै नमः
791 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मातृमण्डलमध्यस्थायै नमः
792 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मातृमण्डलवासिन्यै नमः
793 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुमारजनन्यै नमः
794 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूरायै नमः
795 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुमुख्यै नमः
796 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्वरनाशिन्यै नमः
797 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अतीतायै नमः
798 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विद्यमानायै नमः
799 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भाविन्यै नमः
800 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीतिमंजर्यै नमः
801 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वसौख्यवतीशक्त्यै नमः
802 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आहारपरिणामिन्यै नमः
803 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पंचभूतनिदानायै नमः
804 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भवसागरतारिण्यै नमः
805 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अक्रूरायै नमः
806 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्रहवत्यै नमः
807 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विग्रहायै नमः

808 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्रहवर्जितायै नमः
809 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रोहिणीभूमिगर्भायै नमः
810 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालभुवे नमः
811 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालवर्तिन्यै नमः
812 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कलंकरहितायै नमः
813 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नार्यै नमः
814 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चतुष्षष्ट्यभिधायिन्यै नमः
815 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जीर्णायै नमः
816 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जीर्णवस्त्रायै नमः
817 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नूतनायै नमः
818 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नववल्लभायै नमः
819 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अजरायै नमः
820 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रतिप्रीत्यै नमः
821 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अतिरागविवर्धिन्यै नमः
822 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पंचवातगतिभिन्नायै नमः
823 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पंचश्लेष्माशयधरायै नमः
824 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पंचवित्तवतीशक्त्यै नमः
825 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पंचस्थानविभाविन्यै नमः
826 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उदक्यायै नमः
827 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वृषस्यन्त्यै नमः
828 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्र्यहःप्रसविण्यै नमः
829 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रजःशु क्रधराशक्त्यै नमः
830 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जरायुर्गर्भधारिण्यै नमः
831 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिकालज्ञायै नमः
832 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिलिंगायै नमः
833 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिमूर्तिपुरवासिन्यै नमः
834 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अगारायै नमः
835 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवतत्त्वायै नमः
836 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामतत्त्वायै नमः
837 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रागिण्यै नमः
838 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्राच्यै नमः
839 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपाच्यै नमः
840 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रतीच्यै नमः
841 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उदीच्यै नमः
842 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विदिशे नमः
843 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दिशायै नमः
844 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अहंकृत्यै नमः
845 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अहंकारायै नमः
846 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बालमायायै नमः
847 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बलप्रियायै नमः
848 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्रुचे नमः
849 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्रुवायै नमः
850 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सामिधेन्यै नमः
851 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुश्रद्धायै नमः
852 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्राद्धदेवतायै नमः
853 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मात्रे नमः
854 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मातामह्यै नमः
855 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तृप्त्यै नमः

856 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पितृर्मात्रे नमः 857 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पितामह्यै नमः 858 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्नुषायै नमः

859 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दौहित्रिण्यै नमः 860 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुत्र्यै नमः 861 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पौत्र्यै नमः

862 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नप्त्र्यै नमः 863 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वस्रे नमः 864 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रियायै नमः

865 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्तनदायै नमः 866 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्तनधारायै नमः 867 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विश्वयोन्यै नमः

868 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्तनन्धय्यै नमः 869 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिशूत्संगधरायै नमः 870 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दोलायै नमः

871 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दोलाक्रीडायै नमः 872 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अभिनन्दिन्यै नमः 873 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उर्वश्यै नमः

874 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कदल्यै नमः 875 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं केकायै नमः 876 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विशिखायै नमः

877 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिखिवर्तिन्यै नमः 878 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं खट्वांगधारिण्यै नमः 879 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं खड्गबाणपुंखानुवर्तिन्यै नमः

880 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लक्षप्राप्तिकरायै नमः 881 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लक्ष्यै नमः 882 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुलक्षायै नमः

883 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शुभलक्षणायै नमः 884 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वर्तिन्यै नमः 885 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुपथाचारायै नमः

886 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं परिखायै नमः 887 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्वनिर्वृत्त्यै नमः 888 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्राकारवलयायै नमः

889 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेलायै नमः 890 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मर्यादायै नमः 891 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महोदध्यै नमः

892 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पोषण्यै नमः 893 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शोषणीशक्त्यै नमः 894 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीर्घकेश्यै नमः

895 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुलोमशायै नमः 896 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ललितायै नमः 897 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मांसलायै नमः

898 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तन्व्यै नमः 899 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदवेदांगधारिण्यै नमः 900 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नरासृक्पानमत्तायै नमः

901 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नरमुण्डास्थिभूषणायै नमः 902 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अक्षक्रीडारत्यै नमः 903 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सार्यै नमः

904 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सारिकाशुकभाषिण्यै नमः 905 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शाबर्यै नमः 906 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गारुडीविद्यायै नमः
907 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वारुण्यै नमः 908 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वरुणार्चितायै नमः 909 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वाराह्यै नमः
910 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तुण्डहस्तायै नमः 911 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरायै नमः 912 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मीनमूर्त्यैनमः
913 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धरामूर्त्यै नमः 914 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वदान्यायै नमः 915 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रतिमाश्रयायै नमः
916 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अमूर्त्यै नमः 917 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निधिरूपायै नमः 918 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शालग्रामशिलायै नमः
919 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शुचये नमः 920 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्मृतिसंस्काररूपायै नमः 921 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुसंस्कारायै नमः
922 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं संसृत्यै नमः 923 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्राकृतायै नमः 924 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदभाषायै नमः
925 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गाथायै नमः 926 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गीत्यै नमः 927 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रहेलिकायै नमः
928 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इडायै नमः 929 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पिंगलायै नमः 930 ॐ ऐं ह्रीं क्लीपिंगलायै नमः
931 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुषुम्नायै नमः 932 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूर्यवाहिन्यै नमः 933 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शशिश्रवायै नमः
934 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तालुस्थायै नमः 935 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काकिन्यै नमः 936 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मृतजीविन्यै नमः
937 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अणुरूपायै नमः 938 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बृहद्रूपायै नमः 939 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लघुरूपायै नमः
940 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गुरुस्थिरायै नमः 941 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्थावर्यै देव्यै नमः 942 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जंगमायै देव्यै नमः
943 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृतकर्मफलप्रदायै नमः 944 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विषयायै नमः 945 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रान्तदेहायै नमः
946 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निर्विषायै नमः 947 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जितेन्द्रियायै नमः 948 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चित्स्वरूपायै नमः
949 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चिदानन्दायै नमः 950 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं परब्रह्मावबोधिन्यै नमः 951 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निर्विकारायै नमः

952 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निर्वैरायै नमः
953 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रत्यै नमः
954 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्यायै नमः
955 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अधिवर्तिन्यै नमः
956 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पुरुषायै नमः
957 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अज्ञानभिन्नायै नमः
958 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षान्त्यै नमः
959 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कैवल्यदायिन्यै नमः
960 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विविक्तसेविन्यै नमः
961 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्राज्ञायै नमः
962 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जनितायै नमः
963 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बहुश्रुतायै नमः
964 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निराहारायै नमः
965 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं समस्तैकायै नमः
966 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वलोकसेवितायै नमः
967 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सेव्यसेव्यायै नमः
968 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रियायै नमः
969 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सेव्यायै नमः
970 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सेवाफलविवर्धिन्यै नमः
971 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कलौ कल्किप्रियायै नमः
972 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शीलायै नमः
973 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै नमः
974 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यंचायै नमः
975 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धनुषे नमः
976 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यष्ट्यै नमः
977 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं खड्गधरायै नमः
978 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धरारथायै नमः
979 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अश्वप्लुतायै नमः
980 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वल्गायै नमः
981 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सृण्यै नमः
982 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मत्तवारुणायै नमः
983 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वीरसुवे नमः
984 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदमात्रे नमः
985 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वीरश्रिये नमः
986 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वीरनन्दिन्यै नमः
987 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयश्रिये नमः
988 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयदीक्षायै नमः
989 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयदायै नमः
990 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयवर्धिन्यै नमः
991 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षेमंकर्यै नमः
992 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धिरूपायै नमः
993 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सत्कीर्त्यै नमः
994 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पथिदेवतायै नमः
995 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौभाग्यायै नमः
996 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शुभाकारायै नमः
997 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः
998 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतीर्थमयीमूर्त्यै नमः
999 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वदेवमयीप्रभायै नमः

1000 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वसिद्धिप्रदायकशक्त्यै नमः 1001 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वमंगलसंज्ञितायै नमः।

अनेन दुर्गासहस्रनामावली द्वारा कृत पुष्पाद्यर्चनेन ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिगुणात्मिकाया भगवत्यः महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् न मम।

## 14.7 दुर्गामानसपूजा ।।

उद्यच्चन्दनकुंकुमारुणपयोधाराभिराप्लावितां, नानानर्घ्यमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणाम्बिके।
आमृष्टां सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो, मातः सुन्दरि भक्तकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात्।।1।।
देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनं, चंचत्कांचनसंचयाभिरचितं चारुप्रभाभास्वरम्।
एतच्चम्पककेतकीपरिमलं तैलं महानिर्मलं, गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणााम्बिके।।2।।
पश्चाद्देवि गृहाण शम्भुगृहिणि श्रीसुन्दरि प्रायशो, गन्धद्रव्यसमूहनिर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलं।
तत्केशान् परिशोध्य कंकितकया मन्दाकिनीस्रोतसि, स्नात्वा प्रोज्ज्वलगन्धकं भवतु हे श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे।।3।।
सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां, सचन्दनसकुंकुमागुरुभरेण विभ्राजिताम्।
महापरिमलोज्ज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां, गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुन्दरि श्रीपदे।।4।।
गन्धर्वाऽमरकिन्नरप्रियतमासन्तानहस्ताम्बुज, प्रस्तारैर्ध्रियमाणमुत्तमतरं काश्मीरजापिंजरम्।
मातुर्भास्वरभानुमण्डललसत्कान्तिप्रदानोज्ज्वलं, चैनन्निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदम्।।5।।
स्वर्णाकल्पितकुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका, मध्ये सारसनानितम्बफलके मंजीरमंघ्रिद्वये।

हारो वक्षसि कंकणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके, विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम्।।6।।
ग्रीवायां धृतकान्तिकान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं, सिन्दूरं विलसल्ललाटफलके सौन्दर्यमुद्राधरम्।
राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदलश्रीमोचने लोचने, तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे।।7।।
अमन्दतरमन्दरोन्मथितदुग्धसिन्धूद्भवं, निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दरि श्रीपदे।
गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुरबिम्बमादिद्रुमै, र्विनिर्मितमधच्छिदे रतिकराम्बुजस्थायिनम्।।8।।
कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधाशाराभिराप्लावितं, चंचच्चम्पकपाटलादिसुरभिद्रव्यैः सुगन्धीकुतम्।
देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहारत्नादिकुम्भव्रजै, रम्भः शाम्भवि सम्भ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके।।9।।
कह्लारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालती, मल्लीकैरवकेतकादिकुसुमै रक्ताश्वमारादिभिः।
पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिणा नानारसस्रोतसा, ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये।।10।।
मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजः कर्पूरशैलेयजै, र्माध्वीकैः सह कुंकुमैः सुरचितैः सर्पिर्भिरामिश्रितैः।
सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत्प्रीतये, धूपोऽयं सुरकामिनीविरचितः श्रीचण्डिके त्वन्मुदे।।11।।
घृतद्रवपरिस्फुरद्रुचिररत्नयष्ट्यान्वितो, महातिमिरनाशनः सुरनितम्बिनीनिर्मितः।
सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वित, स्तव त्रिपुरसुन्दरि स्फुरति देवि दीपो मुदे।।12।।
जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं, युक्तं हिंगुमरीचजीरसुरभिद्रव्यान्वितैर्व्यंजनैः।
पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसंमिश्रितं, नैवेद्यं सुरकामिनीविरचितं श्रीचण्डिके त्वन्मुदे।।13।।
लवंगकलिकोज्ज्वलं बहुलनागवल्लीदलं, सजातिकोमलफलं सघनसारपूगीफलम्।

सुधामधुरमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं, गृहाण मुखपंकजे स्फुरितमम्ब ताम्बूलकम्।।14।।
शरत्प्रभवचन्द्रमःस्फुरितचन्द्रिकासुन्दरं, गलत्सुरतरंगिणीललितमौक्तिकाडम्बरम्।
गृहाण नवकांचनप्रभवदण्डखण्डोज्ज्वलं, महात्रिपुरसुन्दरि प्रकटमातपत्रं महत्।।15।।
मातस्त्वन्मुदमातनोतु सुभगस्त्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं, शुभ्रं चामरमिन्दुकुन्दसदृक्षं प्रस्वेददुःखापहम्।
सद्योऽगस्त्यवसिष्ठनारदशुक्रव्यासादिवाल्मीकिभिः, स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेदध्वनिः।।16।।
स्वर्गांगणे वेणुमृदंगशंखभेरीनिनादैरुपगीयमाना। कोलाहलैराकलिता तवाऽस्तु विद्याधरीनृत्यकलासुखाय।
देवि भक्तिरसभावितवृत्ते प्रीयतां यमद कुतोऽपि लभ्यते। तत्र लौल्यमपि सत्फलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम् 17
द/ एतैः सप्तशभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितैः। यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात्।।18।।

।। इति श्रीदुर्गामानसपूजा समाप्ता।।

## 14.8 सूर्यादि नवग्रहाणां वैदिक मन्त्राः -

**सूर्य** आकृष्णेनेतिमन्त्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरा ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, सूर्यो देवता, घ्रीं बीजं, णीं शक्तिः, सूं कीलकम्, सूर्यप्रीतये सूर्यमन्त्रजपे विनियोगः।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।।

**चन्द्रमा** इमं देवा इति मन्त्रस्य वरुण गौतम ऋषिः, गायत्री छन्दः, सोमो देवता, सां बीजं, सीं शक्तिः, सूं कीलकं, सोमप्रीतये सोममन्त्रजपे विनियोगः।।

ॐ इमन्देवाऽअसपत्नथ्ठसुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाथ्ठराजा ।।

भौम अग्निर्मूर्धेतिमन्त्रस्य विरूप ऋषिः, गायत्री छन्दः, अंगारको देवता, अं बीजं, गं शक्तिः, रं कीलकं, अंगारकप्रीतये, अंगारकमंत्रजये विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाथ्ठरेताथ्ठसि जिन्वति ।।

बुध उद्बुध्येतिमन्त्रस्य बुधर्षिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बुद्धोदेवता, यं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, बुधप्रीतये बुधमंत्रजपे विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सथ्ठसृजेथामयं च। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा याजमानश्च सीदत।।

वृहस्पति बृहस्पतेतिमन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकं, बृहस्पतिप्रीतये गुरुमंत्रजपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु । यीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।।

शुक्र अन्नात्परीतिमंत्रस्य भरद्वाज ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, शुक्रो देवता, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकं, शुक्रप्रीतये, शुक्रमंत्रजपे विनियोगः।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापति हि। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानथ्ठशुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु ।।

शनि शन्नोदेवीतिमंत्रस्य शिरिपृष्ठ ऋषिः, उष्णिक्छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजं, नं शक्ति, मं कीलकं, शनिप्रीतये, शनिमंत्रजपे, विनियोगः।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः ॥

राहू कयानश्चित्रेतिमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवता, रां बीजं, ह्रीं शक्ति, रूं कीलकं, राहुप्रीतये, राहुमंत्रजपे, विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥

केतु केतुमिति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः, गायत्री छन्दः, केतुर्देवता, कां बीजं, कीं शक्तिः, कूं कीलकं, केतुप्रीतये, केतुजपे विनियोगः।

ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥

# 15 विविधविषयाः

## 15.1 कुछ विशिष्ट निर्णय

1) सर्वतोभद्रमण्डल आदि के मध्य में कलश स्थापन विचार- देव आदि प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठामयूख आदि महानिबन्धों में सर्वतोभद्रमण्डल पर कलश स्थापन करना श्शास्त्रसम्मत नहीं है, किन्तु। मात्र लोकाचार है, न करने पर किसी प्रकार की क्षति नहीं हैं। देव को शय्या से जाग्रत करने पर सर्वतोभद्र पर स्थापित करने का विधान हैं, वहां देव प्रतिमा की

स्थापना न करके कलश पर सुवर्ण प्रतिमा की स्थापन की विधि है। इस उद्देश्य से स्थापित होने वाले देवता की सुवर्ण प्रतिमाओं के पूजन के लिये कलश की स्थापना आवश्यक होगी।

2) योगिनी पूजन विचार-ग्रन्थान्तर में कहा गया है- अकृत्वा योगिनीपूजा यः करोति तदाधमः। जपं होमं तथा दानं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्। भस्मीभवति तत्सर्वं योगिनीपूजनं बिना। तस्मात्सर्व प्रयत्नेन योगिनीं पूजयेत मखे।

3) ग्रह होम में द्रव्यों का विचार- ग्रह होम में अर्कादि समिधा, तिल-चरु और घृत ये चारों हवनीय द्रव्य हैं। सम्प्रदायों वाले इन चारों द्रव्यों से ही हवन करते हैं।

4) भिन्न-भिन्न कुण्डीपक्ष में विचार- अष्टोत्तरशत पक्ष में पांचों कुण्डों में इक्कीस आवृत्ति से हवन होता है। बाइस आवृत्ति में आचार्य आदि कुण्डत्रय में ही नवग्रहों का होम होता है। पश्चिम और उत्तर कुण्डों में नहीं होता। ग्रहों के अष्टोत्तरशत आहुति पक्ष में अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताओं के लिए अट्ठाइस-अट्ठाइस संख्या से होम होता है। इससे पांचों कुण्डों में पांच आवृत्तियों में हवन कर छठी आवृत्ति में आचार्य आदि कुण्डत्रय में ही हवन करे। न पश्चिमोत्तर कुण्डत्रय में।

5) नवकुण्डी में अष्टाहुति पक्ष नहीं है। वहां पर नौ कुण्डों में तीन-तीन होता रहते हैं। सूर्यादि नव ग्रहों के लिये नव ग्रहों के लिये प्रतिदेवता प्रथमावृत्ति में, द्वितीयावृत्ति में, तृतीयावृत्ति में मन्त्रों से हवन करें। चतुर्थावृत्ति में आचार्य कुण्ड में ही तीन होतागण हवन करते हैं।

6) मत्स्य पुराण के वचन से नवकुण्डी पक्ष में बत्तीस ऋत्विज होते हैं। पंच कुण्डी पक्ष में सोलह, एक कुण्डी पक्ष में

आठ ऋत्विज होते हैं। आचार्य आदि छः महाऋत्विज भिन्न होते हैं। नव कुण्डी पक्ष में आठ ब्रह्मा-आठ द्वारपाल (ऋत्विज) आठ जापक और आठ होता होते हैं।आचार्य कुण्ड में आचार्य ही होता है। पंच कुण्डी पक्ष में चार ब्रह्मा, चार द्वारपाल, चार जापक और चार होता होते हैं। एक कुण्डी पक्ष में चार द्वारपाल तथा चार जापक होते हैं, होता स्वयं आचार्य रहते हैं। आहुति पक्ष में अत्यधिक कुण्डों के कारण अनेक प्रकार की जटिलताएं पैदा रहती हैं। सुन्दर विधान एक कुण्डी पक्ष में ही उपयुक्त हैं।

## 15.2 कुछ विचारणीय बातें

1) देवताओं के प्रीत्यर्थ प्रज्वलित दीप को कभी भी बुझाना नहीं चाहिये।

2) शालग्राम एवं वाणलिंग के पूजन करने के समय आवाहन तथा विसर्जन नहीं होता।

3) जो मूर्ति प्रतिष्ठित हो चुकी है उस का आवाहन तथा विसर्जन नहीं होता।

4) समस्त देवी-देवताओं का षोडशोपचार पूजन पुरुषसूक्त से हो सकता है।

5) कमल का पुष्प पांच रात तक, विल्वपत्र दस रात तक, तुलसीपत्र ग्यारह रात्रि तक पड़े रहने पर प्रक्षालन करके पूजन में प्रयोग किया जा सकता है। शिवलिंग पर विल्वपत्र उल्टा-सीधा, छिन्न-भिन्न एवं सूखे पत्र का चूर्ण भी चढ़ाया जा सकता है।

6) पञ्चामृत स्नान में यदि सभी वस्तुएं उपलब्ध न हो सकें तो मात्र दुग्ध स्नान से ही पञ्चामृत का फल मिल जाता है।

7) ज्योति से ज्योति नहीं जलानी चाहिये।

8) अक्षत यव को भी कहते हैं, शालग्राम प्रतिमा पर यव चढ़ाने चाहियें। अर्घ्य पात्र में यव का ही प्रयोग होना चाहिये।

9) सोमवती अमावस्या, रविवार युक्त सप्तमी, भौमवार युक्त चतुर्थी, गुरुवार युक्त अष्टमी के दिन किया गया पुण्य अक्षय हो जाता है।

10) होलिका के पर्व पर चतुर्दशी, पूर्णिमा, एवं प्रतिपदा के तीनों दिनों में, तथा दीपावली, चतुर्दशी, अमावस्या एवं प्रतिपदा के दिनों में, कृष्ण जन्माष्टमी के समय - सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी के दिनों में तीनों सन्ध्याओं के समय में निरन्तर जप-पाठ करने से मन्त्रसिद्धि हो जाती है।।

## 15.3 एक शाबर मन्त्र

**ॐ नमो नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, सत्तर सौ पीर, बावन भैरव, चौंसठ योगिनी, तेरह सौ तंत्र, चौदह सौ मंत्र, अठारह सौ पर्वत, नौ सौ नदी, निंन्यान्वे नाले, गुरु गोरखनाथ सबके रखवाले, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मंत्र, ईश्वरोवाच।।**

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अवंचक परिजन अर्थात् छल-कपट रहित व्यवहार करने वाले कुटुम्बी-जन और सेवक-वर्ग का सब केलिए और विशेष रुप से सुखी-सफल गृहस्थी के लिए बहुत महत्त्व है। परिजन शब्द के दो अर्थ होते हैं- एक तो परिवार के सदस्य अर्थात् रक्त-सम्बन्ध वाले कुटुम्बी जन और दूसरे परिजन अर्थात् आस-पास रहने वाला वर्ग। शंकराचार्य के स्त्रोत आनन्दलहरी के तीसवें श्लोक की व्याख्या में लिखा है।।

## 15.4 चौबीस अवतार

| | | |
|---|---|---|
| 1. सनकादि महर्षियों का अवतार | 2. वराहावतार | 3. नारदावतार |
| 4. नर-नारायणावतार | 5. कपिलावतार | 6. दत्तात्रेयावतार |

| | | |
|---|---|---|
| 7. यज्ञावतार | 8. ऋषभावतार | 9. पृथुअवतार |
| 10. मत्स्यावतार | 11. कूर्मावतार | 12. धन्वन्तरी अवतार |
| 13. मोहिनी अवतार | 14. नृसिंहावतार | 15. वामनावतार |
| 16. परशुरामावतार | 17. व्यासावतार | 18. श्रीरामावतार |
| 19. श्रीबलदेवावतार | 20. श्री कृष्णावतार | 21. हरि अवतार |
| 22. हंसावतार | 23. बुद्धावतार | 24. कल्कि अवतार |

## 15.5 चौदह मनु

| | | |
|---|---|---|
| 1. स्वायंभु व मनु | 2. स्वारोचिष मन | 3. उत्तम मनु |
| 4. तामस मनु | 5. रेवत मनु | 6. चाक्षुष मनु |
| 7. वैवस्वत मनु | 8. सावर्णि मनु | 9. दक्ष सावर्णि मनु |
| 10. ब्रह्म सावर्णिमनु | 11. धर्म सावर्णि मनु | 12. रुद्र सावर्णि मनु |
| 13. देव सावर्णि मनु | 14. इन्द्रसावर्णि मनु | |

## 15.6 चौदह रत्न

| | | |
|---|---|---|
| 1. काल कूट विष | 2. काम धेनु गाय | 3. उच्चैश्रवा घोड़ा |
| 4. ऐरावत हाथी | 5. कौस्तुभ मणि | 6. कल्प वृक्ष (पारिजात:) |
| 7. आप्सराऐं | 8. लक्ष्मी जी | 9. वारुणी देवी |
| 10. समस्त औषधियों सहित धन्वन्तरी | 11. चन्द्रमा | 12. धनुष |
| 13. शंख | 14. अमृतकलश | |

(चित्र संख्या 15 क)

**विश्वकर्मप्रकाशोक्तसरजस्कं वास्तुमण्डलम् 64 पद**



(चित्र संख्या 15 ख)

**यजुर्वेदीय प्रासाद वास्तुमण्डलम् 64 पद**

## 15.3 नवरात्र पूजा सामग्री।।

| क्र.सं. | नवरात्र पूजा सामग्री |
|---|---|
| 1. | रोली |
| 2. | मोली (कलावा) |
| 3. | धूप |
| 4. | अगरबत्ती |
| 5. | कपूर (डली वाला) |
| 6. | पान के साबुत पत्ते |
| 7. | सुपारी |
| 8. | लौंग |
| 9. | इलायची |
| 10. | जायफल |
| 11. | जावित्री |
| 12. | पुष्प |
| 13. | पुष्प मालाएँ |
| 14. | फल |
| 15. | मिठाई |
| 16. | नारियल (पानी वाले ) छीले हुए |
| 17. | बादाम गिरी |
| 18. | काजू |
| 19. | किशमिश |
| 20. | छुआरे |
| 21. | गिरी गोला |
| 22. | इत्र, गुलाल |
| 23. | तांबे का कलश + कटोरी (ध्क्कन) |
| 24. | पूर्ण पात्र का बर्तन चावल भरकर |
| 25. | भगवान के वस्त्र |
| 26. | ब्राह्मण के वस्त्र (धोती, कुर्ता, तोलिया, बनियान, चादर) |
| 27. | लाल वस्त्र (नारियल के लिए) |

28. पीला वस्त्र (पूजा की चौकी के लिए)
29. गंगा जल
30. रुई की बत्तियाँ
31. माचिस
32. घी
33. आटा
34. हल्दी (पिसी)
35. हल्दी (साबुत)
36. पंचपल्लव
37. पंचरत्न
38. पंचामृत - दूध, शहद, दही, घी, चीनी
39. सर्वौषधी
40. सप्तमृत्तिका
41. जौ (बोने केलिये)
42. बालू (रेत)
43. देवी का यन्त्र/मूर्ति/फोटो
44. पंचगव्य - गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी, कुशोदक
45. दीपक
46. सरसों तेल
47. सौभाग्यद्रव्याणि
48. भगवती के श्रृंगार
49. दूर्वा, बिल्व पत्र
50. गुलाब जल

| क्र.सं. | नान्दी श्राद्ध के लिए सामग्री |
|---|---|
| 1. | जनेऊ की गुच्छी |
| 2. | एक मर्दाना धोती |
| 3. | एक जनाना धोती |
| 4. | फल - मिठाई |
| 5. | आँवला |
| 6. | मुनक्का |
| 7. | सौंठ |
| 8. | जौं |

| क्र.सं. | भद्र के लिए दालें |
|---|---|
| 1. | लाल दाल (मसूर धुली) |
| 2. | सफेद दाल (उड़द धुली) |
| 3. | काली दाल (साबुत उड़द) |
| 4. | पीली दाल (अरहर) |
| 5. | हरी दाल (साबुत मूँग) |
| 6. | चावल |

## 15.4 चित्र सूची

| क्र.सं. | प्रकाशित पुस्तकों की सूची | मूल्य |
|---|---|---|
| 1. | शिवपूजापद्धतिप्रकाशः | मुफ्त |
| 2. | योगपंचदशी | 100 |
| 3. | सर्वदर्शनसारः | 175 |
| 4. | श्रीचक्रपूजापद्धतिप्रकाशः | 250 |
| 5. | वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः | 120 |
| 6. | शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् | 120 |
| 7. | श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः | 250 |
| 8. | श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधिः | 250 |

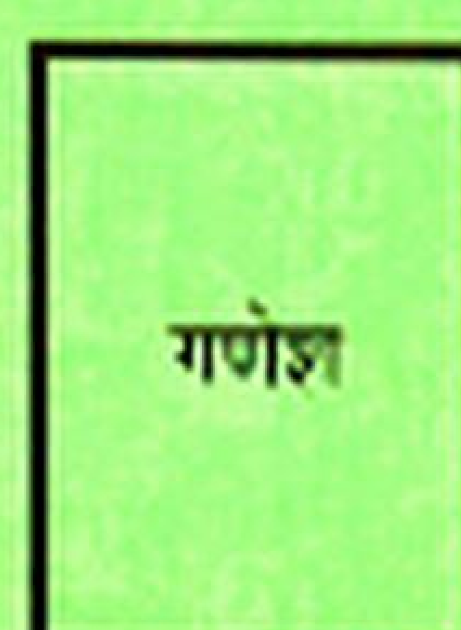
| क्र.सं. | प्रकाशित पुस्तकों की सूची | मूल्य |
|---|---|---|
| 9. | उणादिकोशः | 30 |
| 10. | शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्) | मुफ्त |
| 11. | शिव-शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्) | मुफ्त |
| 12. | Holistic Yoga | 220 |
| 13. | An Advatik View of Kantian Thoughts | 560 |
| 14. | Wisdom of Yoga | Free |

| क्र.सं. | स्वा. शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी के डी वि डी | मूल्य |
|---|---|---|
| 1. | लघुसिद्धान्तकौमुदी, अर्थसंग्रह, सांख्यकारिका, तर्कसंग्रह। | 25 |
| 2. | वेदान्तपरिभाषा, योगसूत्र, मानमेयोदय, मानमनोहर, तर्कभाषा, शिवसूत्र। | 25 |
| 3. | ब्रह्मसूत्रं, 1 भगवद्गीता 1-8। | 25 |
| 4. | 1 भगवद्गीता 9-10, 1 ईश से छान्दोग्य 1-5। | 25 |
| 5. | 1 छान्दोग्य 6-8 व बृहदारण्यक, 2 भगवद्गीता 1-6। | 25 |
| 6. | 2 भगवद्गीता 7-18, 2 ईश से मुण्डक तक। | 25 |
| 7. | 2 माण्डूक्य से ऐतरेय तक व अंग्रेजी में छान्दोग्य व बृहदारण्यक 1-5 तक। | 25 |

| क्र.सं. | स्वा. शान्तिधर्मानन्द स[illegible] के डी वि डी | |
|---|---|---|
| 8. | श्रीमद्भागवतम् 1-23। | |
| 9. | श्रीमद्भागवतम् 24-34, भागवतकथा- शान्तिधर्मानन्दजी, ठाकुरजी, काशिकानन्दजी, रामानंदजी व विश्वात्मानंदजी। | 25 |
| 10. | भागवतकथा-पराशरजी, पंचदशी, सिद्धान्तबिन्दु व शिवदृष्टिः 1-7। | 25 |
| 11. | शिवदृष्टिः- 8, प्रवचनसंग्रहः, उपदेशसाहस्री, त्रिपुरोपनिषद्, षड्दर्शनसूत्रपाठः, सिद्धान्तकौमुदी 1-4। | 25 |
| 12. | सिद्धान्तकौमुदी 5-10, चित्सुखी 1-6, न्यायसिद्धान्तमुक्तावली 1-2, व्याकरण महाभाष्यं 1-6 | 25 |

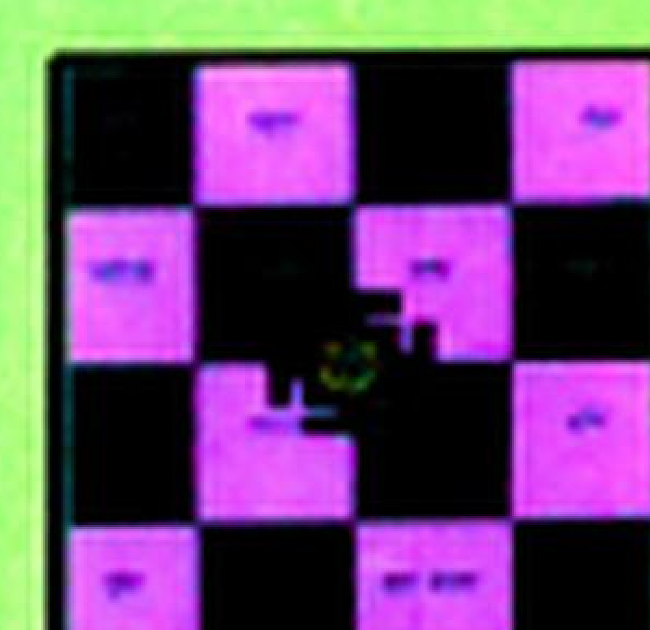

नवग्रहेभ्यो नमः


सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः








षोडशमातृकाभ्यो नमः


चतुःषष्ठीयोगिनीभ्यो नमः

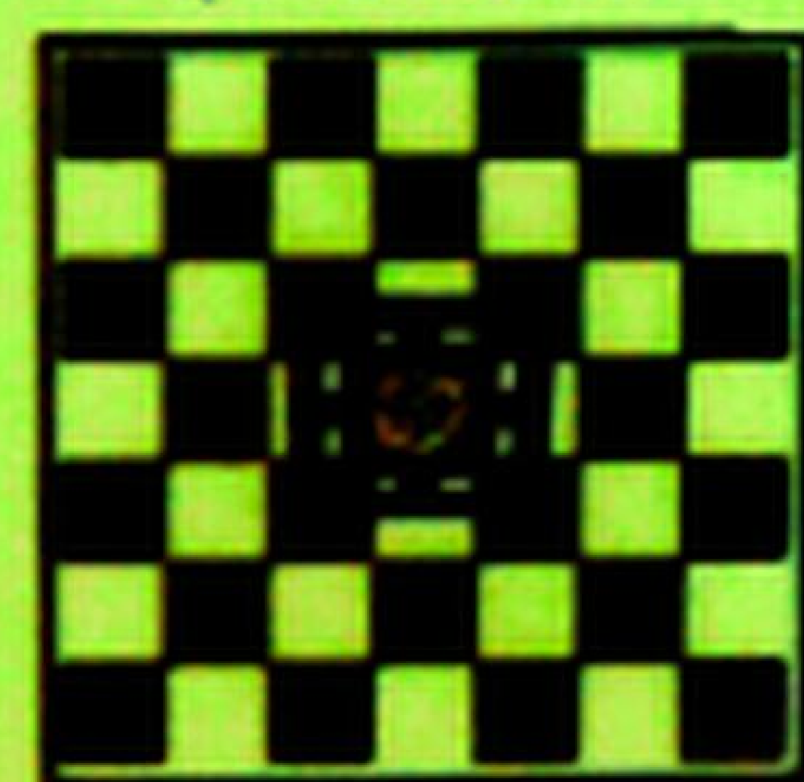
सर्वतोभद्रमण्डलम्



गौरीतिलकमण्डलम् - एकलिंगतोभद्रम्



क्षेत्रपालेभ्यो नमः



वास्तुपुरुषेभ्यो नमः

